साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2024-2025

अध्यक्ष : डॉ. माधव कौशिक
उपाध्यक्ष : प्रो. कुमुद शर्मा
सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 4

परियोजनाएँ एवं योजनाएँ 8

2024-2025 की प्रमुख गतिविधियाँ 12

पुरस्कार

-साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 15

-साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2024 19

-साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2024 23

-साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 27

कार्यक्रम

-साहित्योत्सव 2025 31

-अकादेमी प्रदर्शनी 2024 का उद्घाटन 32

-संवत्सर व्याख्यान 33

पुरस्कार अर्पण

-साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह 34

-साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह 42

-साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह 45

-साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह 48

-साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह 51

-साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पित 53

-प्रेमचंद महत्तर सदस्यता अर्पित 62

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम 63

कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम 70

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि 82

साहित्य अकादेमी द्वारा 1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक आयोजित कार्यक्रमों की सूची 151

वर्ष 2024-2025 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद्, वित्त समिति,
क्षेत्रीय मंडलों और भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें 184

वर्ष 2024-2025 में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनियाँ/पुस्तक मेले 187

1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक प्रकाशित पुस्तकें 196

वार्षिक लेखा 2024-2025 233

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन, भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने सात दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलिप्त है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक (कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों एवं 100 से अधिक परिसंवादों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंत: अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों

में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा अगरतला में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ैलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, इनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुन: अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुन: अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सामान्य परिषद् को 2023-2028 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2023 में श्री माधव कौशिक अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलत: अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी

की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यता प्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित 22 भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं— असमिया, बाङ्ला, बर', डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम् मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिऴ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय 10 भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4. डी.एल. ख़ान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी ओड़िआ और संताली में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : साहित्य अकादेमी के बेंगलुरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलत: स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, बेंगळूरु में स्थानांतरित कर दिया गया। 2024 में अकादेमी का यह कार्यालय ज्ञान ज्योतिनगर, मल्लतहल्ली, बेंगळूरु 560056 में स्थानांतरित हो गया है। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम् और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळूरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिऴ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालई, तेनामपेट, चेन्न-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री अनुभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्रों से भी

की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट (www. sahitya-akademi.gov.in) पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियों, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं लेखकों की लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों, भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रभावी घटनाओं, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक नमूना होगा, जो आम पाठकों के लिए रुचिकर होगा और साहित्यिक अनुसंधानकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी ही तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी द्वारा अब तक 175 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध है।

अकादेमी से किए जाने वाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लेमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2015 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो, वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक करार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळूरु में तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर* का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। पंचम खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है— विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटने वाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िआ बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादक-मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा-निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादक-मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी के एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन गई है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु प्रामाणिक शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में

साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फ़ोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत : शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। डोगरी-हिंदी-राजस्थानी शब्दकोश 2012 में प्रकाशित हुआ। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश 2014 में प्रकाशित हुआ तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश 2018 में प्रकाशित हुआ। कन्नड-तेलुगु द्विभाषी शब्दकोश 2019 में प्रकाशित हुआ। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िआ, मैथिली-ओड़िआ तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफ़ाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है।

यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॅंकबरॅक, मिसिंग, बोंगचर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिजिटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 14,378 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2024-2025 में पुस्तकालय के 285 नए सदस्य बने हैं तथा 3,517 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1.8 लाख से भी अधिक है तथा अकादेमी

के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर कुल 2.6 लाख (लगभग) पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूजर फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने "सामग्री आधारित पूर्ण पाठ खोज प्रणाली" की एक नई सेवा भी शुरू की है, जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजिटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपीएसी (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ सूची उपलब्ध करा सकता है। "हूज' हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स" जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/SA Search System/sauser पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी गृह पत्रिका में प्रकाशित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की खरीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकन्वर्जन कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपीएसी (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

पी.ओ.एस.एच. अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता तथा बेंगळूरु एवं उप-कार्यालय चेन्नै में भी हुई। संबंधित समिति की रिपोर्ट के अनुसार, इस संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई।

वर्ष 2024-2025 की गतिविधियाँ

- साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2024 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान 2021 एवं 2023 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्याताएँ प्रदत्त।
- प्रेमचंद महत्तर सदस्यता प्रदत्त।
- साहित्योत्सव 2025 के अंतर्गत 112 कार्यक्रम आयोजित।
- देशभर में कुल 592 कार्यक्रमों का आयोजन।
  - 12 'अस्मिता', 01 'आविष्कार', 07 पुरस्कार/महत्तर सदस्यातएँ, 03 'बाल साहिती', 06 'पुस्तक परिचर्चा', 07 'सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम', 01 'दलित चेतना', 'एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' के अंतर्गत 20, 112 'साहित्योत्सव कार्यक्रम', 'ग्रामालोक' के अंतर्गत 45, 22 'कथासंधि', 20 'कविसंधि', 05 भाषा सम्मेलन, 'साहित्य मंच' शृंखला के अंतर्गत 90, 02 लोक : विविध स्वर, 09 'लेखक से भेंट', 43 'विविध कार्यक्रम', 04 'मुलाक़ात', 06 'बहुभाषी कवि/लेखक सम्मिलन', 16 'नारी चेतना', 01 'परिचर्चा', 04 'व्यक्ति और कृति', 06 'कवि सम्मिलन', 02 'प्रवासी मंच', 02 'संवाद', 20 'संगोष्ठियाँ' (जन्मशतवार्षिकी), 16 'संगोष्ठियाँ', 13 'परिसंवाद' (जन्मशतवार्षिकी), 59 'परिसंवाद', 14 'मेरे झरोखे से', 03 'अनुवाद कार्याशालाएँ', 04 'लेखक सम्मिलन', 17 'युवा साहिती' आदि विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- 516 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2024-2025 में 118 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- साहित्य अकादेमी ने 7.32 करोड़ रुपए की पुस्तकों की बिक्री की।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 3,517 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 5 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 175 हो गई है।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 3 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024

18 दिसंबर 2024 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2024 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 23 भाषाओं में 23 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के अनुसार की गई अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2018 से 31 दिसंबर 2022 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 से सम्मानित लेखक

असमिया : समीर ताँती, ***फरिङ्बुरे बाटर कथा जाने*** (कविता-संग्रह)

बोडो : अरन राजा, ***सोरनि थाखाय*** (उपन्यास)

डोगरी : (स्वर्गीय) चमन अरोड़ा, ***इक होर अश्वत्थामा*** (कहानी-संग्रह)

अंग्रेजी : इस्तेरीन कीरे, ***स्पिरिट नाइट्स*** (उपन्यास)

गुजराती : दिलीप झवेरी, ***भगवाननी वातो*** (कविता-संग्रह)

हिंदी : गगन गिल, ***मैं जब तक आयी बाहर*** (कविता-संग्रह)

कन्नड : के.वी. नारायण, ***नुडिगल अलिवु*** (साहित्यिक समालोचना)

कश्मीरी : सोहन कौल, ***साइकेट्रिक वार्ड*** (उपन्यास)

कोंकणी : मुकेश थळी, ***रंग तरंग*** (निबंध-संग्रह)

मैथिली : महेंद्र मलंगिया, ***प्रबंध संग्रह*** (निबंध-संग्रह)

मलयाळम् : के. जयकुमार, ***पिंगलकेशिनी*** (कविता-संग्रह)

मणिपुरी : हाओबाम सत्यबती देवी, ***माईनु बोरा नुङ्शी शिरोल*** (कविता-संग्रह)

मराठी : सुधीर रसाळ, ***विंदांचे गद्यरूप*** (साहित्यिक समालोचना)

नेपाली : युवा बराल 'अनन्त', ***छिचिमिरा*** (कहानी-संग्रह)

ओड़िआ : वैष्णव चरण सामल, ***भूति भक्ति विभूति*** (निबंध-संग्रह)

पंजाबी : पॉल कौर, ***सुन गुनवंता सुन बुधिवंता : इतिहासनामा पंजाब*** (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : मुकुट मणिराज, ***गांव अर अम्मा*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : दीपक कुमार शर्मा, ***भास्करचरितम्*** (कविता-संग्रह)

संताली : महेश्वर सोरेन, ***शेचेद सावँतारेन आन्ध मानमि*** (नाटक-संग्रह)

सिंधी : हुंदराज बलवाणी, ***पुज़ों*** (कविता-संग्रह)

तमिळ : ए.आर. वेंकटाचलपति, ***वा.उ.चि. युम तिरुनेल्वेली एलुचियम्, 1908*** (कथेतर शोध साहित्य)

तेलुगु : पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण, ***दीपिका*** (साहित्यिक समालोचना)

उर्दू : अतीक़ुल्लाह, ***बैनउल-उलूमी तनक़ीद*** (साहित्यिक समालोचना)

बाङ्ला में कोई पुरस्कार नहीं



समीर ताँती



दिलीप झवेरी



मुकेश थळी



अरन राजा



गगन गिल



महेंद्र मलंगिया



(स्वर्गीय) चमन अरोड़ा



के.वी. नारायण



के. जयकुमार



इस्तेरीन कीरे



सोहन कौल



हाओबाम सत्यबती देवी



सुधीर रसाळ



मुकुट मणिराज



ए.आर. वेंकटाचलपति



युवा बराल 'अनन्त'



दीपक कुमार शर्मा



पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण



वैष्णव चरण सामल



महेश्वर सोरेन



अतीक़ुल्लाह



पॉल कौर



हुंदराज बलवाणी

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

श्री ज्ञान पुजारी
प्रो. तरणी डेका
प्रो. ननी गोपाल महंत

बोडो

डॉ. अनिल कुमार बर'
डॉ. विश्वजीत ब्रह्म
श्री फुकन च. बसुमतारी

डोगरी

डॉ. सुषमा रानी
डॉ. वीणा गुप्ता
डॉ. जितेंद्र उधमपुरी

अंग्रेज़ी

प्रो. शर्मिष्ठा पांजा
प्रो. राजुल भार्गव
श्री राणा नायर

गुजराती

श्री कमल वोरा
श्री हरीश मीनाश्रु (हरीश कृष्णराम दवे)
श्रीमती वर्षा दास

हिंदी

श्रीमती मृदुला गर्ग
श्री रामवचन राय
डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय

कन्नड

श्री ओ.एल. नागभूषण स्वामी
डॉ. हलमने राजशेखर
डॉ. सरजू कातकर

कश्मीरी

प्रो. बशर बशीर
डॉ. गौरीशंकर रैणा
श्रीमती नसीम शफाई

कोंकणी

श्री गुरुदत बंटवलकर (गुरु बालिगा)
श्री दिलीप बोरकर
श्रीमती हेमा पुंडलिक नाईक

मैथिली

श्री श्री बुद्धिनाथ मिश्र
श्री वशिष्ठ नारायण झा (ऋषि वशिष्ठ)
श्री गंगानाथ झा 'गंगेश'

मलयाळम्

श्री प्रभा वर्मा
डॉ. कवडियार रामचंद्रन
डॉ. एम. कृष्णन नम्पूथिरी

मणिपुरी

प्रो. हुइरेम बिहारी सिंह
डॉ. माखनमणि मोंगसाबा
सुश्री सोरोखैबम गंभिनी

मराठी

श्री हरिश्चंद्र थोराट
श्री वसंत आबाजी डहके
डॉ. विद्या देवधर

नेपाली

श्री खेमराज नेपाल
श्री लोकनाथ उपाध्याय
डॉ. उदय छेत्री

ओड़िआ

श्री देवदास छोटराय
श्री शांतनु कुमार आचार्य
श्रीमती पारमिता शतपथी

पंजाबी

श्री बलदेव सिंह
डॉ. कुलदीप सिंह दीप
श्री स्वर्णजित सवी

राजस्थानी

श्री भंवर सिंह सामौर
डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास
डॉ. राजेश कुमार व्यास

संस्कृत

प्रो. ए. रामुलु
प्रो. हरिदत्त शर्मा
डॉ. सरोजा भाटे

संताली

श्री बादल हेम्ब्रम
श्रीमती दुखिनी मुर्मु
श्री श्याम बसरा

सिंधी

श्री ढोलण राही
श्री भगवान बाबाणी
श्री हीरो ठाकुर

तमिळ

डॉ. एस. बालसुब्रमण्यम (भारतीबालन)
श्री इमायम
श्री मरैमलै इलक्कुवनर

तेलुगु

प्रो. राचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी
श्री के. श्रीनिवास
श्री जे.एस. मूर्ति (विहारी)

उर्दू

प्रो. अब्दुस्समद
श्री प्रीतपाल सिंह बेताब
श्री शीन काफ़ निज़ाम

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2024

7 मार्च 2025 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में 2024 के साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार के लिए 21 भाषाओं में 21 पुस्तकों के चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के अनुसार की गई अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नेपाली और संस्कृत भाषाओं के पुरस्कार बाद में घोषित किए गए। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने अनुवाद पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2018 से 31 दिसंबर 2022 के मध्य) प्रकाशित कृतियों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2024 से सम्मानित लेखक

असमिया : अंजन शर्मा, ***प्राचीन कामरूपर इतिहास*** (*अर्ली हिस्ट्री ऑफ़ कामरूप*—अंग्रेज़ी, इतिहास पुस्तक) कनकलाल बरुआ

बाङ्ला : बासुदेब दास, ***सउदागरेर पुत्र नौका बेये जाये*** (*साउदर पुतेके नाउ मेलि जाय*—असमिया, उपन्यास) होमेन बोरगोहाईं

बोडो : उत्तरा बैसोमुथियारी, ***कांचन*** (*कांचन*—असमिया, उपन्यास) अनुराधा शर्मा पुजारी

डोगरी : अर्चना केसर, ***तमस*** (*तमस*—हिंदी, उपन्यास) भीष्म साहनी

अंग्रेज़ी : अनीसुर रहमान, ***हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी : द वंडरफुल वर्ल्ड ऑफ़ उर्दू ग़ज़ल्स*** (*हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी*—उर्दू ग़ज़लकारों की चयनित ग़ज़लें)

गुजराती : रमणीक अग्रावत, ***कुमारजीव*** (*कुमारजीव*—हिंदी, कविता) कुँवर नारायण

हिंदी : मदन सोनी, ***सैयद हैदर रज़ा : एक अप्रतिम कलाकार की यात्रा*** (*सैयद हैदर रज़ा : द जर्नी ऑफ़ एन आइकोनिक आर्टिस्ट*—अंग्रेज़ी, जीवनी) यशोधरा डालमिया

कन्नड : सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी, ***विदिशा प्रहसन*** (*मालविकाग्निमित्रम्*—संस्कृत, नाटक) कालिदास

कश्मीरी : गुलाम नबी आतश, ***अख़ इंसान, अख़ गरेह, अख़ दुनिया*** (*ओरु महिधान ओरु वीदु ओरु उलागम*—तमिऴ, उपन्यास)

कोंकणी : मिलिंद म्हामल, ***भारतीय तत्वज्ञानाची रूपरेखा,*** (*आउटलाइन ऑफ़ इंडियन फ़िलॉसफ़ी*—अंग्रेज़ी, दर्शनशास्त्र) एम. हिरियन्ना

मैथिली : केष्कर ठाकुर, ***आरण्यक*** (*आरण्यक*—बाङ्ला, उपन्यास) बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय

मलयाळम् : के.वी. कुमारन, ***यानम*** (*यात्रा*—कन्नड, उपन्यास) एस.एल. भैरप्पा

मणिपुरी : सोईबमचा इंद्रकुमार, ***युराङ्न्बी*** (*मधुबाला*—हिंदी, कविता-संग्रह) हरिवंश राय बच्चन

मराठी : सुदर्शन आठवले, ***द डिफ़िकल्टी ऑफ़ बीइंग गुड*** (*द डिफ़िकल्टी ऑफ़ बीइंग गुड*—अंग्रेज़ी, साहित्यिक समालोचना) गुरचरण दास

ओड़िआ : सुभाष सतपथी, ***कोकिशीआलीर एकक नृत्य*** (*लोन फ़ॉक्स डांसिंग*—अंग्रेज़ी, आत्मकथा) रस्किन बॉन्ड

पंजाबी : चंदन नेगी, ***तेरे लयी*** (*तुम्हारे लिए*—हिंदी, उपन्यास) हिमांशु जोशी

राजस्थानी : सोहनदान चारण, ***भीलां रौ भारथ*** (*भीलों नुं भारथ*—गुजराती, लोक महाकाव्य) भगवानदास पटेल

संताली : नाजीर हेम्ब्रम, ***हेन्दे सादोम*** (*डार्क हॉर्स*—हिंदी, उपन्यास) नीलोत्पल मृणाल

सिंधी : (स्वर्गीय) शोभा लालचंदाणी, ***डॉलर नूंहं*** (*डॉलर बहू*—हिंदी, उपन्यास) सुधा मूर्ति

तमिऴ : पी. विमला, ***एनदु आण्गल*** (*एंटे आणुंगल*—मलयाळम्, आत्मकथा) नलिनी जमीला

तेलुगु : तुर्लपाटि राजेश्वरी, ***ईतचेट्टु देवुडु*** (*दादी बुढ़ा*—ओड़िआ, उपन्यास) गोपीनाथ महांति

उर्दू में कोई पुरस्कार नहीं।

नेपाली और संस्कृत में अनुवाद पुरस्कार बाद में घोषित किए जाएँगे।



अंजन शर्मा



अनीसुर रहमान



गुलाम नबी आतश



बासुदेब दास



रमणीक अग्रावत



मिलिंद म्हामल



उत्तरा बैसोमुथियारी



मदन सोनी



केष्कर ठाकुर



अर्चना केसर



सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी



के.वी. कुमारन



सोईबमचा इंद्रकुमार



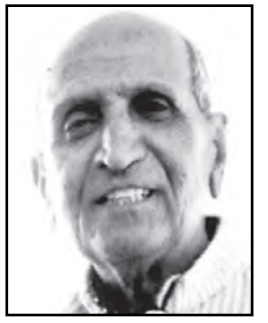
चंदन नेगी



(स्वर्गीय) शोभा लालचंदाणी



सुदर्शन आठवले



सोहनदान चारण



पी. विमला



सुभाष सतपथी



नाजीर हेम्ब्रम



तुर्लपाटि राजेश्वरी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2024 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

डॉ. बंदिता गोस्वामी सइकिया
प्रो. बिभाष चौधरी
श्री पार्थ प्रतिम हाज़रिका

बाङ्ला

श्री अरुण सोम
श्री रंजन बंद्योपाध्याय
श्री अमिताभ गुप्ता

बोडो

श्री बापू राम बर'
श्री गोबिंदा नार्जरी
श्री ऋतुराज बसुमतारी

डोगरी

श्री जगदीप दुबे
श्री पूरनचंद्र शर्मा
डॉ. रतन बसोतरा (रतन लाल शर्मा)

अंग्रेज़ी

डॉ. (श्रीमती) अरुणा चक्रवर्ती
श्री असीम सिद्दीक़ी
डॉ. सचिन केतकर

गुजराती

श्रीमती अरुण जडेजा
डॉ. मनोज छाया
डॉ. नरेश शुक्ल

हिंदी

डॉ. दामोदर खडसे
श्री गिरधर राठी
डॉ. जे.एल. रेड्डी

कन्नड

डॉ. धरणेंद्र कुरकुरी
श्रीमती पुष्पा एच.एल.
डॉ. ना. दामोदर शेट्टी

कश्मीरी

श्री अब्दुल गनी बेग अतहर
श्री फ़ारूक़ फैयाज़
श्री माखनलाल पंडित

कोंकणी

श्री अशोक एस. कामत
डॉ. किरण बुडकुले
प्रो. (डॉ.) जिट लोबो

मैथिली

डॉ. खुशी लाल झा
श्री महेंद्र मलंगिया
प्रो. (डॉ.) रंजीत कुमार सिंह

मलयाळम्

डॉ. चंद्रबोस आर
डॉ. जोबिन जोस चमक्कला
श्री सुनील नालियथ

मणिपुरी

प्रो. चुङखम यशवंत
डॉ. आर.के. मोबी सिंह
डॉ. सैखम रवींद्र सिंह

मराठी

श्री निशिकांत ठकार
श्रीमती प्राची गुजरपाध्ये—खांडेपारकर
श्रीमती निशा संजय डांगे

ओड़िआ

श्रीमती मोनालिसा जेना
श्रीमती प्रवासिनी महाकुड
श्री अमरेश पटनायक

पंजाबी

श्री बलबीर माधोपुरी
श्री पवन हरचदंपुरी
डॉ. तरविंदर कौर

राजस्थानी

श्री भंवर लाल सुथार
डॉ. महिपाल सिंह राव
श्री मुकुट मणिराज

संताली

डॉ. (श्रीमती) दमयंती बेसरा
श्री महेश्वर सोरेन
श्रीमती सारो हांसदा

सिंधी

श्री खीमण यू. मूलाणी
श्री विक्रम साहनी
श्रीमती इंदिरा पूनावाला

तमिळ

श्री इंद्रन
डॉ. जी. सुंदर
डॉ. एस. भक्तवत्सला भारती

तेलुगु

श्री अमरेंद्र दसारी
श्री गुडीपति वेंकटेश्वरलु
श्री ए. कृष्णा राव (कृष्णुडू)

उर्दू

डॉ. जावेद अनवर
डॉ. शम्स इक़बाल
श्रीमती ज़किया मशहदी

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2024

15 जून 2024 को केवाडिया, गुजरात में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2024 के साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार के लिए 24 भाषाओं में 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के अनुसार की गई अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2018 से 31 दिसंबर 2022 के मध्य) प्रकाशित कृतियों पर दिया गया। प्रारंभिक दस वर्षों अर्थात् 2010 से 2019 तक, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं पाई जाती थी, तो यह पुरस्कार किसी लेखक को उसके समग्र बाल साहित्य में योगदान के आधार पर दिया जाता था।

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2024 से सम्मानित लेखक

असमिया : रंजु हाजरिका, ***बिपन्न बिस्मय खेल*** (उपन्यास)

बाङ्ला : दीपान्विता रॉय, ***महीदादुर एंटिडोट*** (उपन्यास)

बोडो : भार्जिन जेक'भा मोसाहारी, ***बुहुमा बयनिबो*** (कविता-संग्रह)

डोगरी : बिशन सिंह दर्दी, ***कुक्कड़ू-कड़ूं*** (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : नंदिनी सेनगुप्ता, ***द ब्लू हॉर्स एंड अदर अमेजिंग एनिमल्स स्टोरीज़ फ्रॉम इंडियन हिस्ट्री*** (ऐतिहासिक गल्प)

गुजराती : गिरा पिनाकिन भट्ट, ***हसती हवेली*** (कहानी-संग्रह)

हिंदी : देवेंद्र कुमार, ***इक्यावन बाल कहानियाँ*** (कहानी-संग्रह)

कन्नड : बी.आर. कृष्णमूर्ति (कृष्णमूर्ति बिळिगेरे), ***छुमंत्र्यातरायना कथेगळु*** (कहानी-संग्रह)

कश्मीरी : मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबर, ***सोन् गोब्रेयो*** (कविता-संग्रह)

कोंकणी : हर्षा सद्गुरू शेटे, ***एक आशिल्लें बायूल*** (उपन्यास)

मैथिली : नारायणजी, ***अनार*** (कहानी-संग्रह)

मलयाळम् : उन्नी अम्मायंबळम, ***अल्गोरिथांगाळुडे नाडु*** (उपन्यास)

मणिपुरी : क्षेत्रिमयुम सुवदनी, ***मालेम अतिया*** (उपन्यास)

मराठी : भारत सासणे, ***समशेर आणि भूतबंगला*** (उपन्यास)

नेपाली : बसंत थापा, ***देश र फुच्चे*** (कविता-संग्रह)

ओड़िआ : मानस रंजन सामल, ***गप कलिका*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : कुलदीप सिंह दीप, ***मैं जल्लिआँवाला बाग बोलदा हाँ*** (नाटक)

राजस्थानी : प्रह्लाद सिंह 'झोरड़ा', ***म्हारी ढाणी*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : हर्षदेव माधव, ***बुभुक्षितः काकः*** (कहानी-संग्रह)

संताली : दुगाई टुडु, ***मिरु आड़ाङ*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : लाल होतचंदाणी 'लाचार', ***दोस्तन जी दोस्ती*** (कहानी-संग्रह)

तमिळ : *युमा वासुकि,* ***दन्वियिन पिरंदनाल*** (कहानी-संग्रह)

तेलुगु : पामिदिमुक्कला चंद्रशेखर आज़ाद, ***माया लोकम्*** (उपन्यास)

उर्दू : शम्सुल इस्लाम फ़ारूक़ी, ***बर्फ़ का देस अंटार्कटिका*** (कहानी-संग्रह)



रंजु हाजरिका



नंदिनी सेनगुप्ता



मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबर



दीपान्विता रॉय



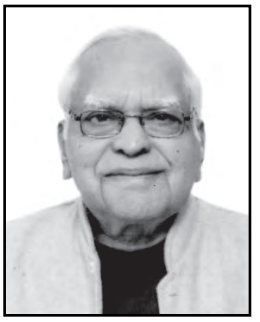
गिरा पिनाकिन भट्ट



हर्षा सद्गुरू शेटे



भार्जिन ज़ेक'भा मोसाहारी



देवेंद्र कुमार



नारायणजी



बिशन सिंह दर्दी



बी.आर. कृष्णमूर्ति
(कृष्णमूर्ति बिळिगेरे)



उन्नी अम्मायंबलम



क्षेत्रिमयुम सुवदनी



कुलदीप सिंह दीप



लाल होतचंदाणी 'लाचार'



भारत सासणे



प्रह्लाद सिंह 'झोरड़ा'



युमा वासुकि



बसंत थापा



हर्षदेव माधव



पामिदिमुक्कला चंद्रशेखर आज़ाद



मानस रंजन सामल



दुगाई टुडु



शम्सुल इस्लाम फ़ारूक़ी

बाल साहित्य पुरस्कार 2024 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

सुश्री मणिकुंतला भट्टाचार्य
श्री अतनु भट्टाचार्य
डॉ. मृणाल चंद्र कलिता

बाङ्ला

श्रीमती अर्पिता घोष
श्री पंकज कुमार साहा
श्री सुशांत जाना

बोडो

सुश्री अंजलि बसुमतारी (अंजू)
प्रो. भैरबी बर'
श्री गोबिंद बर'

डोगरी

डॉ. ज्ञान सिंह
श्री कृष्ण शर्मा
प्रो. राधा रानी

अंग्रेज़ी

प्रो. उज्ज्वल जाना
प्रो. सुमन्यु सत्पथी
प्रो. स्मिता अग्रवाल

गुजराती

श्री हरेष ढोलकिया
श्री कुमारपाल देसाई
डॉ. रक्षाबेन प्रह्लादराव दवे

हिंदी

श्री देवेन्द्र मेवाड़ी
श्री एकांत श्रीवास्तव
श्री प्रकाश मनु

कन्नड

डॉ. एच.एस. वेंकटेश मूर्ति
डॉ. अप्पागेरे सोमशेखर
श्री शंकर सिहिमोग्गे

कश्मीरी

प्रो. एजाज़ मोहम्मद शेख
श्री सैयद अख्तर हुसैन (मंसूर)
श्री सैयद नज़ीर हुसैन

कोंकणी

डॉ. प्रकाश आर. वज़ारिकर
श्री के. गोकुलदास प्रभु
श्री हिलेरी सी.डी. सिल्वा

मैथिली

श्री अमलेंदु शेखर पाठक
डॉ. मंत्रेश्वर झा
श्री विवेकानंद ठाकुर

मलयाळम्

डॉ. अजयन पनयारा
डॉ. के. श्रीकुमार
प्रो. लिस्सी मैथ्यू

मणिपुरी

डॉ. कोइजम शांतिबाला
श्री क्षेत्री राजेश्वर सिंह
श्री आर.के. भुबनसना सिंह

मराठी

श्री राजीव तांबे
श्री विजय प्रभाकर नगरकर
श्री विनोद शिरसथ

नेपाली

डॉ. जीवन नामदुंग
डॉ. कबिता लामा
डॉ. खगेन शर्मा

ओड़िआ

श्री तरुण कुमार साहू
श्री बीरेंद्र महांति
सुश्री ममता दाश

पंजाबी

डॉ. मनमोहन
श्री सतपाल भीखी
प्रो. सुरजीत जज

राजस्थानी

श्री अनुराग हर्ष
डॉ. मंगत बादल
डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'

संस्कृत

डॉ. अरुणा रंजन मिश्र
प्रो. गिरीश नाथ झा
डॉ. पी.सी. मुरलीमाधवन

संताली

श्री बोयहा बिस्वनाथ टुडू
श्री दाशरथि सोरेन
श्री लक्ष्मीनारायण हाँसदा

सिंधी

श्री नामदेव ताराचंदाणी
श्री शत्रुघ्न जसवाणी
सुश्री आशा चंद पंजाबी

तमिळ

श्री आयशा इरा. नटरासन (इरा. नटरासन)
डॉ. निर्मला मोहन
डॉ. आर. कामरासु

तेलुगु

डॉ. च. लक्ष्मण चक्रवर्ती
श्री डी.के. चाडुवुला बाबू
डॉ. पी.एस. गोपालकृष्ण

उर्दू

डॉ. अलाउद्दीन ख़ान
श्री हक्कानी अल क़ासमी
डॉ. शफ़ी अय्यूब (शफ़ी उज़्ज़मां ख़ान)

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024

15 जून 2024 को गुजरात में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2024 के साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार के लिए 24 भाषाओं में 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा निर्धारित नियमों और प्रक्रिया के अनुसार की गई अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मति अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 से सम्मानित लेखक

असमिया : नयनज्योति शर्मा, ***जाल कटा जुई*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : सुतपा चक्रवर्ती, ***देराजे हलुद फुल, गतजन्म*** (कविता-संग्रह)

बोडो : सेल्फ् मेइड् राणी बर', ***साइख्लुम*** (कहानी-संग्रह)

डोगरी : हीना चौधरी, ***इक रंग तेरे रंगें चा*** (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : के. वैशाली, ***होमलेस : ग्रोइंग अप लेस्बियन एंड डिस्लेक्सिक इन इंडिया*** (संस्मरण)

गुजराती : रिंकु राठौड़, ***"...तो तमे राजी?"*** (ग़ज़ल-संग्रह)

हिंदी : गौरव पाण्डेय, ***स्मृतियों के बीच घिरी है पृथ्वी*** (कविता-संग्रह)

कन्नड : श्रुति बी.आर., ***ज़ीरो बैलेंस*** (कविता-संग्रह)

कश्मीरी : मोहम्मद अशरफ़ भट, ***ऐन बदस*** (समालोचनात्मक तथा शोध लेख)

कोंकणी : अद्वैत चंद्रकांत साळगांवकार, ***पेडण्याचा सामारां*** (निबंध-संग्रह)

मैथिली : रिंकी झा ऋषिका, ***नदी घाटी सभ्यता*** (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : श्यामकृष्ण आर., ***मीशक्कल्लन*** (कहानी-संग्रह)

मणिपुरी : वाइखोम चींखैङानबा, ***अशिबा तुरेल*** (कविता-संग्रह)

मराठी : देवीदास महादेव सौदागर, ***उसवण*** (उपन्यास)

नेपाली : सूरज चापागाईं, ***क्यानभासको को क्षितिज*** (कविता-संग्रह)

ओड़िआ : संजय कुमार पंडा, ***हु बाड़आ*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : रणधीर, ***खत जो लिखणों रहि गए*** (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : सोनाली सुथार, ***सुध सोधूं जग आंगणै*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : मुनिपार्श्वसुंदरविजय, ***हंसरत्नमहाकाव्यम्*** (महाकाव्य)

संताली : अंजन कर्मकार, ***जाङ्वाहा*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : गीता प्रदीप रुपाणी, ***पेपर पर्या*** (निबंध-संग्रह)

तमिऴ : लोकेश रघुरामन, ***विष्णु वंधार*** (कहानी-संग्रह)

तेलुगु : रमेश कार्तिक नायक, ***धावळो-गोर बंजारा कथाळु*** (कहानी-संग्रह)

उर्दू : मुहम्मद जावेद अहमद, ***स्टेपनी*** (कहानी-संग्रह)



नयनज्योति शर्मा



के. वैशाली



मोहम्मद अशरफ़ भट



सुतपा चक्रवर्ती



रिंकु राठौड़



अद्वैत चंद्रकांत साळगांवकर



सेल्फ् मेइड् राणी बर'



गौरव पाण्डेय



रिंकी झा ऋषिका



हीना चौधरी



श्रुति बी.आर.



श्यामकृष्णन आर.



वाइखोम चींखैङानबा



रणधीर



गीता प्रदीप रुपाणी



देवीदास महादेवी सौदागर



सोनाली सुथार



लोकेश रघुरामन



सूरज चापागाईं



मुनिपार्श्वसुंदरविजय



रमेश कार्तिक नायक



संजय कुमार पंडा



अंजन कर्मकार



मुहम्मद जावेद अहमद

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- डॉ. रत्नोत्तमा दास
- श्री प्रणब कुमार बर्मन
- डॉ. प्राणजित बोरा

बाङ्ला
- श्री हर्ष दत्त
- श्री शुभ बंद्योपाध्याय
- श्री स्वप्नमय चक्रवर्ती

बोडो
- डॉ. अजीत बर'
- डॉ. इंदिरा बर'
- श्री शांतिराम बसुमतारी

डोगरी
- श्री नरिंदर सिंह चिब
- श्री नरसिंह देव जमवाल
- श्री टी.आर. मगोत्रा 'सागर'

अंग्रेज़ी
- श्री तपन बसु
- प्रो. के.सी. बराल
- डॉ. कविता शर्मा

गुजराती
- श्री भगवानदास पटेल
- सुश्री कीर्तिदा शाह
- श्री मणिलाल एच. पटेल

हिंदी
- प्रो. चित्तरंजन मिश्र
- प्रो. लालचंद गुप्त मंगल
- श्री सुधांशु गुप्त

कन्नड
- प्रो. बसवराज पी. दोनूर
- डॉ. आरती एच.एन.
- प्रो. एस.जी. सिद्धरमैय्या

कश्मीरी
- श्री अवतार किशन भट
- श्री आयश आरिफ़
- श्री फैयाज़ दिलबर

कोंकणी
- श्री नेरी नाज़रथ
- श्रीमती ग्वादालूप डायस
- डॉ. जयंती नायक

मैथिली
- डॉ. नरेंद्र नाथ झा
- श्री प्रदीप बिहारी
- श्रीमती सुष्मिता पाठक

मलयाळम्
- डॉ. अजितन मेनॅथ
- डॉ. श्रीकुमार ए.जी.
- डॉ. ई.वी. रामकृष्णन

मणिपुरी
- डॉ. नाओरेम अहंजाओ मितेइ
- श्रीमती निंगोमबम सुनीता
- श्री नोंगथोम्बम प्रेमचंद

मराठी
- श्री किरण गुरव
- डॉ. शरणकुमार लिम्बाले
- श्री श्रीकांत उम्रिकर

नेपाली
- श्री जीवन राणा
- श्री केवल चंद्र लामा
- श्री टी.बी. चंद्र सुब्बा

ओड़िआ
- प्रो. गिरिबाला महांति
- डॉ. हिरण्यमयी मिश्र
- श्री नित्यानंद साहू

पंजाबी
- डॉ. आतम सिंह रंधावा
- डॉ. परमजीत सिंह ढींगरा
- श्री लाभ सिंह खीवा

राजस्थानी
- डॉ. अनीता जैन 'विपुला'
- डॉ. कप्तान बोरावड़
- डॉ. मदन सिंह राठौड़

संस्कृत
- प्रो. सी.एस. राधाकृष्णन
- प्रो. गोपबंधु मिश्र
- प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी

संताली
- श्री गणेश मरांडी
- श्रीमती जोबा मुर्मु
- डॉ. सुनाराम सोरेन

सिंधी
- श्री बलदेव मटलाणी
- श्री चुन्नी लाल वाधवाणी
- श्री कन्हैयालाल लेखवाणी

तमिळ
- डॉ. के. पंचांगम
- डॉ. एम. तिरुमलई
- श्री मालन वी. नारायणन

तेलुगु
- प्रो. सूर्या धनंजय
- श्री आर. सीतारामाराव
- श्री शिखामणि (के. संजीव राव)

उर्दू
- श्री आदिल रज़ा मंसूरी
- डॉ. सैय्यद ऐजाज़ुद्दीन शाह
- डॉ. अंजुम बाराबंकवी

कार्यक्रम



साहित्योत्सव 2025

1985 में शुरू हुआ साहित्योत्सव- साहित्य अकादेमी का वार्षिक साहित्य महोत्सव-भारत का सबसे प्रतिष्ठित, सबसे लंबा और समावेशी उत्सव है। विगत वर्ष, 2024 में अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव विश्व का सबसे बड़ा साहित्योत्सव था, जिसमें 175 से अधिक भाषाओं के 1100 से अधिक साहित्यकारों की भागीदारी रही। इस अवसर पर, साहित्य अकादेमी को "वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकार्ड्स, लंदन" से एक ही दिन में कई भाषाओं में लेखकों और कवियों द्वारा सबसे बड़े रीडिंग रिले के आयोजन के लिए मान्यता पत्र प्रदान किया गया। साथ ही, साहित्य अकादेमी ने विश्व का सबसे बड़ा साहित्यिक महोत्सव आयोजित कर एक विश्व रिकॉर्ड भी बनाया और इस अद्भुत उपलब्धि हेतु "आइंस्टीन वर्ल्ड रिकॉर्ड" प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

साहित्योत्सव 2025 की प्रमुख विशेषता साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 का वितरण समारोह रहा, जिसमें विख्यात अंग्रेज़ी नाटककार महेश दत्तानी मुख्य अतिथि थे।

इस वर्ष साहित्योत्सव का विषय था—"भारतीय साहित्यिक परंपराएँ : विरासत और विकास", जिसमें विविध अभिव्यक्तियों की खोज की गई। इस दौरान हाशिये पर पड़ी आवाज़ों को मंच देने के लिए एलजीबीटीक्यू कवियों के काव्य-पाठ, आदिवासी कहानियों का वाचन, तथा दलित साहित्य : मूक आवाज़ों को स्वर जैसे सत्र आयोजित किए गए।

साहित्योत्सव के अन्य चर्चित सत्रों में शामिल थे - भारतीय दार्शनिक साहित्य, भारतीय साहित्य में नदियाँ, भारतीय शास्त्रीय भाषाएँ और सांस्कृतिक विरासत, "भारत" की संकल्पना और कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं साहित्य सृजन, अनूदित साहित्य का महत्त्व, बाल साहित्य लेखकों की चुनौतियाँ।

इस वर्ष साहित्योत्सव में दो साहित्यिक दिग्गजों —ओमचेरी एन. एन. पिल्लै तथा मोहन राकेश की जन्मशताब्दी को विशेष संगोष्ठियों के माध्यम से स्मरण किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय था — "भारतीय साहित्यिक परंपराएँ : विरासत और विकास"। कुछ अन्य प्रमुख आयोजन थे—प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक उपमन्यु चटर्जी द्वारा संवत्सर व्याख्यान, बाङ्ला कवि सुबोध सरकार के साथ लेखक से भेंट, हिंदी कथा लेखक जीतेन्द्र भाटिया के साथ कथासंधि, साथ ही पूर्व वर्षों के लोकप्रिय आयोजन जैसे—युवा साहिती, अस्मिता, बहुभाषी कहानी-पाठ तथा कवि सम्मिलन।

इस वर्ष साहित्योत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी आकर्षण का केंद्र रहीं, जिनमें राकेश चौरसिया द्वारा बाँसुरी वादन, फौज़िया दस्तानगो और ऋतेश यादव द्वारा 'दास्तान-ए-महाभारत' प्रस्तुति तथा नलिनी जोशी द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन शामिल था।

अकादेमी प्रदर्शनी 2024 का उद्घाटन

7 मार्च 2025, नई दिल्ली



श्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव के 41वें संस्करण– एशिया के सबसे बड़े साहित्योत्सव का उद्घाटन भारत सरकार के संस्कृति और पर्यटन मंत्री माननीय श्री गजेंद्र सिंह शेखावत द्वारा 7 मार्च 2025 को किया गया। साहित्योत्सव का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य भारत को एक सूत्र में बाँधने वाला सबसे सशक्त माध्यम है। भारतीय साहित्य की जीवंतता और गतिशीलता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि तकनीकी प्रगति और अनुवाद के विस्तार के साथ भारतीय साहित्य अब वैश्विक स्तर पर पहुँचने की कगार पर है। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय साहित्य मार्गदर्शक शक्ति की भाँति है, जो हर युग और परिस्थिति में प्रासंगिक बना रहता है और भविष्य में भी बना रहेगा।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी की विगत वर्ष की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए बताया कि अकादेमी ने 484 पुस्तकें प्रकाशित कीं तथा 459 साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2024 का फीता काटकर तथा दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक तथा संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती अमृता प्रसाद सरभाई भी उपस्थित थीं।

संवत्सर व्याख्यान : ध्यान देने योग्य कुछ बातें

9 मार्च 2025, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने ब्रह्मपुत्र सभागार में उपस्थित साहित्यकारों का स्वागत किया और बताया कि यह "संवत्सर व्याख्यान" का 38वाँ संस्करण है, जिसे इस वर्ष प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक एवं 1983 बैच के सेवानिवृत्त भारतीय सिविल सेवक श्री उपमन्यु चटर्जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने कहा कि अकादेमी प्रत्येक वर्ष प्रतिष्ठित विद्वानों से उनके अनुभवों और विचारों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त करती है। अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक एवं उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने अतिथि वक्ता को साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें तथा शॉल भेंट कर सम्मानित किया।

'ध्यान देने योग्य कुछ बातें' जैसे अमूर्त विषय पर दिए गए इस सहज, मुक्त व्याख्यान में श्रोताओं ने अत्यंत



संवत्सर व्याख्यान देते हुए श्री उपमन्यु चटर्जी

रुचि और एकाग्रता से उपमन्यु चटर्जी की साहित्यिक यात्रा को सुना—जिसमें उनके प्रारंभिक अंग्रेज़ी शिक्षा से बाङ्ला साहित्य की ओर झुकाव और पुनः अंग्रेज़ी लेखन की ओर लौटने की कहानी शामिल थी। उनके प्रमुख उपन्यास हैं—"इंग्लिश, अगस्त : एन इंडियन स्टोरी", "द लास्ट बर्डन", "द मैमरीज ऑफ़ द वेलफेयर स्टेट" तथा "वेट लॉस"। उन्हें 2008 में फ्रांस के प्रतिष्ठित सम्मान "ओफ़िफ़सिएर डे आई'ओर्डर आर्ट्स एट डेस लेटत्रेस" से सम्मानित किया जा चुका है तथा उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी प्राप्त है।

पुरस्कार अर्पण समारोह

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह

12 जुलाई 2024, बेंगळूरु



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. चंद्रशेखर कंबार तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने 12 जुलाई 2024 को बेंगळूरु में आयोजित समारोह में पुरस्कार विजेताओं को अपना प्रतिष्ठित अनुवाद पुरस्कार 2023 प्रदान किया। प्रत्येक अनुवाद पुरस्कार विजेता को उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा 50,000/- रुपए की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई।

अनुवाद पुरस्कार 2023 के विजेता थे - लक्ष्यज्योति गगै सन्दिकै (असमिया), मृण्मय प्रामाणिक (बाङ्ला), अम्बिकागिरी हाज'वारी (बोडो), सुषमा रानी (डोगरी), (स्वर्गीय) नबनीता देव सेन (अंग्रेज़ी), मीनल जयंतीलाल दवे (गुजराती), रीता रानी पालीवाल (हिंदी), के.के. गंगाधरन (कन्नड), गुलज़ार अहमद राथर (कश्मीरी), सुनेत्रा गजानन जोग (कोंकणी), मेनका मल्लिक (मैथिली), पी.के. राधामणि (मलयाळम्), लाइश्रम सोमोरेन्द्रो (मणिपुरी), अभय सदावर्ते (मराठी), छत्रमान सुब्बा (नेपाली), बंगाली नंद (ओड़िआ), जगदीश राय कुलरियाँ (पंजाबी), भंवर लाल 'भ्रमर' (राजस्थानी), नागरत्ना हेगडे (संस्कृत), वीर प्रताप मुर्मू (संताली), भगवान बाबाणी 'बंदो' (सिंधी), कन्नैयण दक्षिणामूर्ति (तमिळ), सुरेंद्र नागराजू 'एलानाग' (तेलुगु) तथा मोहम्मद अहसन 'अहसन अय्यूबी' (उर्दू)।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने मंच पर उपस्थित विशिष्ट अनुवादकों तथा गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए कहा कि भारत एक ऐसा देश है, जहाँ बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक समाज एक साथ रहते हैं। एक भाषाई समाज से दूसरे भाषाई समाज में ज्ञान के संचार में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। गौरवग्रंथों का अनुवाद उनके बीच साहित्यिक जुड़ाव को बढ़ाता है। अनुवाद मानव जीवन तथा भारत जैसे साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप से सक्रिय राष्ट्र के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि साहित्य अकादेमी

24 भारतीय भाषाओं के अनुवादकों को सम्मानित कर रही है तथा अंतर-भाषा अनुवाद को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकादेमी अनुवादकों के अनुवादों को प्रकाशित करके तथा अनुवाद पुरस्कार प्रदान करके उन्हें सम्मानित कर उन्हें बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्तमान समारोह ऐसे ही एक सार्थक प्रयास का 36वाँ संस्करण है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अनुवादक मिशनरियों की तरह काम करते हैं। उन्हें भाषाओं से प्रेम होता है तथा वे अन्य भाषाओं की साहित्यिक कृतियों को अपनी मातृभाषाओं में पुन: रचते हैं। उन्होंने भारतीय साहित्यिक परिदृश्य की एकता को दोहराया, यद्यपि यह कई भाषाओं के माध्यम से संप्रेषित होती है। अनुवाद एक कठिन प्रक्रिया है, क्योंकि इसके लिए स्रोत और लक्ष्य भाषाओं का गहन ज्ञान होना आवश्यक है। अनुवादक रचनात्मक साहित्यिक कृतियों के अनुवाद के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में जागरूकता का हस्तांतरण करते हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने 22 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए तथा उन्हें बधाई दी। अंग्रेज़ी का अनुवाद पुरस्कार (स्वर्गीय) नवनीता देव सेन के परिवार के प्रतिनिधि ने प्राप्त किया। राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार विजेता श्री भंवर लाल 'भ्रमर' कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके।

प्रख्यात कन्नड लेखक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. चंद्रशेखर कंबार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि लेखक अपनी भूमि और साहित्य की संस्कृतियों, विश्वासों, संघर्षों तथा आनंद का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए अनुवादक को मूल पाठ के सार से भटके बिना इन तत्त्वों को अपने अनुवाद में समाहित करना एक बड़ी चुनौती है। अनुवाद का काम हमें क्षेत्रीय आस्वाद को जानने में सक्षम बनाता है तथा क्षेत्रीय सद्भाव को बढ़ावा देता है। अनुवाद का यह माध्यम वर्तमान वैश्विक स्थिति में समय की माँग है क्योंकि विश्वभर में ग्रंथों को समझने तथा व्याख्या करने की अत्यंत आवश्यकता है जिससे समस्त पहलुओं को बेहतर ढंग से जाना जा सके।

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित अनुवादकों का संगम है। अनुवादों में राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर साहित्यिक परिदृश्य में आए बदलाव परिलक्षित होते हैं।

अनुवादक सम्मिलन

13 जुलाई 2024, बेंगळूरु



सत्र की अध्यक्षता करतीं प्रो. कुमुद शर्मा

पूर्वाह्न 10:30 बजे प्रारंभ हुए कार्यक्रम में डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया तथा उन्होंने साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष, प्रो. कुमुद शर्मा को सत्र की अध्यक्षता हेतु आमंत्रित किया।

प्रो. कुमुद शर्मा ने अनुवाद की प्रक्रिया, उसकी कला और उससे जुड़ी चुनौतियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए पुरस्कार प्राप्त अनुवादकों को उनके अनुभव साझा करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहा कि केवल लेखक या कवि ही रचनात्मक नहीं होता, बल्कि अनुवादक भी

सृजनकर्ता होता है। चूँकि साहित्य स्वयं एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, इसलिए अनुवाद भी उसी रचनात्मकता को समेटे होता है। अत: अनुवादक केवल अनुवादक नहीं, बल्कि एक सृजनशील लेखक भी होता है।

इसके बाद विभिन्न भाषाओं के पुरस्कार विजेताओं ने अपने अनुवाद अनुभव साझा किए।

श्रीमती लक्ष्यज्योति गगै सन्दिकै को असमिया भाषा में *मोर जीवनटो* (तेम्सुला आओ कृत अंग्रेज़ी आत्मकथा *वन्स अपॉन अ लाइफ : बर्न्ट करी एंड ब्लडी रैग्स*) के अनुवाद हेतु सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक उन्हें "जीवन की अनिश्चित किंतु असीम संभावनाओं" और "लेखिका की ईमानदारी व सच्चाई" के कारण आकर्षित कर गई।

डॉ. मृण्मय प्रामाणिक को बाङ्ला में शरण कुमार लिंबाले की मराठी कृति *दलित साहित्याचे सौंदर्यशास्त्र* के अनुवाद हेतु पुरस्कार मिला। उन्होंने बताया कि दलित सौंदर्यशास्त्र विषय पढ़ाते हुए यह पुस्तक उनके सामने आई और जब उन्होंने पाया कि इसका बाङ्ला में कोई अनुवाद नहीं है, तो इसकी तत्काल आवश्यकता महसूस की।

श्री अंबिकागिरी हाज'वारी को बोडो भाषा में असमिया उपन्यास *शान्तनुकुलनन्दन* (लेखिका : पूरबी बरमुदै) के अनुवाद *शान्थनु फोलेरनि फिसाज्ला* हेतु सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि असम के बोडो समुदाय से होने के कारण वे दोनों भाषाओं में दक्ष हैं और यह सम्मान दोनों भाषाओं के लिए गर्व की बात है।

डॉ. सुषमा रानी को डोगरी भाषा में बलदेव सिंह के पंजाबी उपन्यास *ढामां दिल्ली दे किंगरे* के अनुवाद *ढां दिल्ली दे किंगरे* के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि इस उपन्यास का अनुवाद उनके लिए विशेष रूप से आनंद का विषय था क्योंकि नायक दुल्ला भट्टी की कथा डुग्गर क्षेत्र से गहराई से जुड़ी हुई है। उपन्यास की ऐतिहासिक प्रामाणिकता के लिए लेखक को कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी।

श्री वीर प्रताप मुर्मू को संताली भाषा में प्रेमचंद के हिंदी उपन्यास *प्रतिज्ञा* के अनुवाद के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने अनुवाद की प्रक्रिया का संक्षेप में विवरण देते हुए कहा कि अनुवाद उतना सरल नहीं जितना प्रतीत होता है।

डॉ. मीनल जयंतीलाल दवे को गुजराती में तेलुगु उपन्यास *स्वेच्छा* (लेखिका : पी. ललितकुमारी) के अनुवाद के लिए सम्मान मिला। उन्होंने गुजराती में अनुवाद की यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्हें बार-बार प्रश्नों का सामना करना पड़ता है—"अनुवाद क्यों? और किसके लिए?" और इसका सरल उत्तर है : उन भाषाओं के साहित्य को पढ़ पाना जिन्हें हम नहीं जानते।

डॉ. रीता रानी पालीवाल को हिंदी में *पशु, पंछी, मनुष्य और प्रकृति : महाभारत से कथाएँ* (मूल अंग्रेज़ी शीर्षक : *बड्र्स, बीस्ट्स, मैन एंड नेचर : टेल्स फ्रॉम महाभारत,* लेखिका : कविता ए. शर्मा) के अनुवाद हेतु पुरस्कार मिला। उन्होंने कहा, "हम सभी विभिन्न भारतीय भाषाओं में सक्रिय होकर, विशेष रूप से अपनी मातृभाषाओं में, एक साझी सांस्कृतिक-साहित्यिक विरासत, एक साझी अनुभूति तथा संवेदना साझा करते हैं।"

श्री के.के. गंगाधरन को कन्नड में मलयाळम् *कथेगळु* संकलन के लिए पुरस्कार मिला, जिसमें मलयाळम् की प्रमुख कहानियों का अनुवाद प्रस्तुत है। उन्होंने कहा कि उनके लिए अनुवाद एक जुनून है, और वे स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें कन्नड और मलयाळम् दोनों भाषाओं के साहित्य से जुड़ने और कर्नाटक एवं केरल की जनता द्वारा सराहे जाने का अवसर मिला।

डॉ. गुलज़ार अहमद राथर, जिन्होंने कन्नड उपन्यास *चोमाना डूडी* (लेखक : शिवराम कारंत) का कश्मीरी

में *चूमा सुंद डोल* शीर्षक से अनुवाद किया, कश्मीरी अनुवाद पुरस्कार विजेता हैं। उन्होंने कहा कि अछूतपन और शोषण जैसे विषयों से संबंधित यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अनुवाद को कला बताते हुए कहा कि "यह कला आज के समय में, जब विभिन्न संस्कृतियों के बीच गहन संवाद हो रहा है, अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।"

श्रीमती सुनेत्रा गजानन जोग, जिन्होंने मलाती राव कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *डिसऑर्डरली वुमेन* का कोंकणी में *अस्ताव्यस्त बायलो* शीर्षक से अनुवाद किया है, ने कहा कि "अनुवाद का अर्थ है मूल भाषा में लेखक की मंशा को पूरी तरह समझना और उसे बिना मूल साहित्य की आत्मा को प्रभावित किए, दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाना।"

श्रीमती मेनका मल्लिक, जिन्होंने मत्स्येंद्र प्रधान कृत इसी नाम के नेपाली उपन्यास का *नीलकंठ* शीर्षक से मैथिली अनुवाद किया है, ने अपनी भूमि, लोगों तथा संस्कृति का एक जीवंत चित्र जादुई शब्दों के जाल में पिरोते हुए प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत और नेपाल के बीच के सांस्कृतिक संबंधों की प्रशंसा की और बताया कि वे एक नेपाली हैं, जिनका विवाह मैथिली परिवार में हुआ है, इसलिए वे दोनों भाषाओं को अपनी मातृभाषा मानती हैं।

डॉ. पी.के. राधामणि, जिन्होंने अमृता प्रीतम कृत हिंदी उपन्यास *अक्षरों के साए* का मलयाळम् में *अक्षरंगलुटे निष़लिल* शीर्षक से अनुवाद किया है ने अपने उद्‌बोधन में मलयाळम् और हिंदी दोनों भाषाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और कहा कि ये भाषाएँ उन्हें यह मंच और प्रतिष्ठा प्रदान करने में सहायक रहीं। उन्होंने यह भी कहा कि आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस आधारित अनुवाद उपकरण उपयोगी अवश्य हैं, किंतु मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति में अभी भी उनकी सीमाएँ हैं।

श्री लाइश्रम समरेन्द्र, जिन्होंने गुरदयाल सिंह कृत पंजाबी उपन्यास *अन्ने घोड़े दा दान* का मणिपुरी में *मित्तांबा सगोलगी मिंदा अडम्बा कतपियु* शीर्षक से अनुवाद किया है ने कहा कि "मेरे लिए साहित्य जीवन की सुंदरता को खोजने की यात्रा है—सत्य की तलाश का रहस्य। साहित्य के माध्यम से मुझे इस जटिल जीवन में शांति मिलती है। पुस्तकें मुझे भौतिकवादी जीवन-दृष्टि से ऊपर उठाती हैं और तब वह पुस्तक—चाहे वह साहित्यिक हो, धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक या ऐतिहासिक—मेरी सच्ची मित्र बन जाती है।"

श्री छत्रमान सुब्बा, जिन्होंने लक्ष्मीनंदन बोरा कृत इसी नाम के असमिया उपन्यास का नेपाली में *कायाकल्प* शीर्षक से अनुवाद किया है ने कहा कि "भारत की परंपरा हर भाषा का सम्मान करने और उसके विकास के लिए निरंतर प्रयास करती रही है। हम सभी में विविधता में एकता का सूत्र है। आज के उत्तर-आधुनिक युग में अनुवाद अनिवार्यता बन गया है।"

श्री बंगाली नंद, जिन्होंने नेल्लुरी केशवस्वामी कृत तेलुगु पुस्तक *नेल्लुरी केशवस्वामी उत्तम कथालु* का ओड़िआ में *नेल्लुरी केशवस्वामींक श्रेष्ठ गल्प* शीर्षक से अनुवाद किया है, ने भारत में भाषाओं और बोलियों की संख्या के आँकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा कि "भाषा दो भिन्न भाषा-समूहों के लोगों के बीच सांस्कृतिक समझ में अवरोध बन जाती है।"

श्री जगदीश राय कुलरियाँ, जिन्होंने शरद पगारे कृत इसी नाम के हिंदी उपन्यास का पंजाबी में *गुलारा बेगम* शीर्षक से अनुवाद किया है ने हरिवंश राय बच्चन को उद्धृत करते हुए कहा कि "अनुवाद दो भाषाओं के बीच मित्रता का सेतु है।"

डॉ. नागरत्ना हेगडे, जिन्होंने सुधा मूर्ति कृत कन्नड *मक्काळिगागि नन्न मेच्चिना कथेगळु* कहानी-संग्रह का संस्कृत में *रुचिरा: बालकथा:* शीर्षक से अनुवाद किया है ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि यह अनुवाद केवल राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचने वाला नहीं है, बल्कि संस्कृत को जनसामान्य तक पहुँचाने का भी एक साधन है।

भगवान बाबाणी 'बंदो', जिन्होंने मति नंदी कृत बाङ्ला उपन्यास *सादा खाम का सिंधी में सादो लिफ़ाफ़ो* शीर्षक से अनुवाद किया है ने बताया कि उन्होंने 1990 के दशक में अनुवाद कार्य शुरू किया था, जब सिंधी और हिंदी के बीच कोई शब्दकोश भी उपलब्ध नहीं था।

श्री कन्नैयण दक्षिणामूर्ति, जिन्होंने ममंग दाई कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *द ब्लैक हिल* का तमिळ में *करुंकुंद्रम* शीर्षक से अनुवाद किया है ने तिरुवल्लुवर को उद्धृत करते हुए कहा कि "बुद्धिमत्ता यह है कि विषय को सरल शब्दों में समझाया जाए तथा दूसरों द्वारा कहे गए शब्दों के सूक्ष्म अर्थों को समझा जाए।" यह अनुवादकों पर भी लागू होता है।

श्री सुरेंद्र नागराजू 'एलानाग', जिन्होंने पवन के. वर्मा कृत जीवनी *ग़ालिब : द मैन, द टाइम्स* का तेलुगु में *ग़ालिब नाति कलाम* शीर्षक से अनुवाद किया है, वे डॉक्टर होते हुए भी साहित्य में रुचि रखते हैं तथा समय निकालकर अनुवाद करते हैं। उनके अनुवाद मुख्यत: अंग्रेज़ी से तेलुगु में हैं।

डॉ. मोहम्मद अहसन 'अहसन अय्यूबी', जिन्होंने हिंदी लेखिका चित्रा मुद्गल कृत इसी नाम के हिंदी उपन्यास का उर्दू में पोस्ट बॉक्स नंबर 203 : नाला सोपारा शीर्षक से अनुवाद किया है ने अनुवाद की तकनीक, शिल्प और चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि "अनुवाद में अनुवादक की स्वतंत्रता सीमित होती है।"

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. कुमुद शर्मा ने सभी पुरस्कार विजेताओं द्वारा अनुवाद की कला, आवश्यकता और महत्त्व पर दिए गए विचारों को पुन: दोहराया। उन्होंने कहा कि यह यात्रा यहीं समाप्त नहीं होती, बल्कि यही इसकी शुरुआत है।

डॉ. के. श्रीनिवास राव ने अध्यक्ष तथा सभी अनुवादकों को इस अत्यंत समृद्ध अनुभव से परिपूर्ण सत्र के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि अब वे साहित्य अकादेमी परिवार का हिस्सा हैं और वे भविष्य में भी अकादेमी के प्रयासों में निरंतर सहयोग देते रहेंगे।

अभिव्यक्ति

13 जुलाई 2024, बेंगळूरु



(बाएँ से दाएँ) श्री प्रणब कुमार बर्मन, श्री विवेक षणभाग, डॉ. माधव कौशिक, प्रो. कुमुद शर्मा, डॉ. मनु बालिगर, श्री एंटनी बारकुर एवं श्री एम.एस. वेंकटेशमूर्ति

'अभिव्यक्ति' के उद्घाटन सत्र के दौरान मंच पर उपस्थित – साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. मनु बालिगर ने आरंभिक वक्तव्य तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात कन्नड लेखक श्री विवेक षणभाग कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। कविता-पाठ के लिए आमंत्रित कवि थे – श्री प्रणब कुमार बर्मन (असमिया), डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति (कन्नड) तथा श्री एंटनी बारकुर (कोंकणी)। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष डॉ. कुमुद शर्मा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

डॉ. माधव कौशिक ने अतिथियों का पारंपरिक अंगवस्त्रम् तथा पुस्तक भेंट कर स्वागत किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम के मूल विचार तथा शीर्षक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए कहा कि इसका सामान्य अर्थ है—अभिव्यक्त करना। किसी समुदाय की संस्कृति विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती है—भाषा, साहित्य, चित्रकला, नृत्य आदि। ये न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं, बल्कि संरक्षण और प्रचार के साधन भी हैं। साहित्य स्वयं एक अभिव्यक्ति की प्रक्रिया है, जो लेखक के विचारों, दर्शन, प्रतिभा, विचारधारा तथा अन्य विविध पहलुओं को उजागर करता है। 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह का एक वार्षिक भाग है, जिसके अंतर्गत हम देश की विभिन्न भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक प्रतिभाओं को सुनते हैं – चाहे वह लेखन हो या कविता।

डॉ. मनु बालिगर ने कार्यक्रम में भाग लेने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, "अभिव्यक्ति का अर्थ है विचारों की स्वतंत्रता। किंतु आज का वातावरण हमें इस पर विचार करने को बाध्य करता है। विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए माध्यम आवश्यक है – अक्षर, रूप, शब्द, जो कविता, नाटक, कहानी, सिनेमा, पत्रकारिता आदि बन जाते हैं। आदि मानव ने संकेतों और ध्वनियों के माध्यम से अभिव्यक्ति की यात्रा शुरु की, जिससे मौखिक साहित्य जन्मा। इतिहास में विभिन्न कालखंडों में लेखकों, कलाकारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर शासनकर्ताओं ने अंकुश लगाया। आज हम इस स्वतंत्रता के उपयोग में संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों पर निर्भर हैं। अभिव्यक्ति हमारे संविधान की नींव है।"

मुख्य अतिथि श्री विवेक षणभाग ने श्रोताओं को बताया कि उनकी मातृभाषा कोंकणी है, किंतु वे लेखन कन्नड में करते हैं। उन्होंने भाषा और सृजनात्मक प्रक्रिया के संबंधों की सूक्ष्मताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति विशेषकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रतीक है, परंतु अभिव्यक्ति से अधिक महत्त्वपूर्ण है – सोचने की स्वतंत्रता है। उन्होंने यह भी कहा कि अनुवादक का भी लेखक की भाँति भाषा से गहरा संबंध होना चाहिए। उन्होंने अच्छे अनुवाद की कई आवश्यक शर्तों पर चर्चा की और बताया कि बहुभाषी लेखकों की संख्या बहुत कम है। शिक्षक के रूप में अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों के बीच भाषा के प्रयोग की चुनौतियों पर भी चर्चा की।

डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि सुबह से अब तक की कार्यवाही एक बौद्धिक साधना के समान रही। उन्होंने कहा कि डॉ. मनु बालिगर तथा श्री विवेक षणभाग ने 'अभिव्यक्ति' के कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं को उजागर किया है। उन्होंने अपने छात्र जीवन की एक स्मृति साझा की जब उनके पिता ने उनसे पूछा कि वे इतनी पुस्तकें क्यों इकट्ठा कर रहे हैं, तब उन्हें ज्ञात था कि वे लेखक बनना चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी शिक्षा कविता नहीं सिखा सकती। यदि किसी व्यक्ति

में संवेदनशीलता और करुणा नहीं है, तो वह कवि नहीं बन सकता। केवल कवि ही भविष्यद्रष्टा की भाषा बोल सकते हैं। अभिव्यक्ति का सबसे सुंदर रूप कविता है। उन्होंने कहा कि जहाँ असहमति का सम्मान होता है, वहीं अभिव्यक्ति अपने सर्वोत्तम रूप में प्रकट होती है, और यही मानव सभ्यता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों तथा पुरस्कार विजेताओं का आभार व्यक्त किया।

इसके बाद कविता-पाठ सत्र आयोजित किया गया जिसमें श्री प्रणब कुमार बर्मन, डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति तथा एंटनी बारकुर ने अपनी-अपनी मूल भाषाओं में कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा उनके अनुवाद भी प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का समापन डॉ. कुमुद शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने कहा कि रचनात्मक क्षेत्र केवल साहित्य या कविता तक सीमित नहीं है, इसमें ललित और प्रदर्शन कलाएँ भी सम्मिलित हैं। जब हम रचनात्मक प्रयासों की दुनिया में प्रवेश करते हैं तो पाते हैं कि कलाकार अपने औजार हमेशा धारदार रखते हैं। कवि के लिए उसकी संवेदना ही उसका औजार है। साहित्य में दो पक्ष होते हैं – अनुभूति और अभिव्यक्ति। लेखक जो दुनिया देखता है, उसका अनुभव करता है और उसे अभिव्यक्त करता है।

कवि सम्मिलन

15 जुलाई 2024, बेंगळूरु



प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. एच.एस. शिवप्रकाश

'कवि सम्मिलन' कार्यक्रम में डॉ. के. श्रीनिवास राव ने सत्राध्यक्ष डॉ. एच.एस. शिवप्रकाश का परिचय प्रस्तुत किया। वे प्रसिद्ध कन्नड लेखक, नाटककार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता हैं तथा साहित्यिक एवं अकादमिक जगत का प्रतिष्ठित नाम हैं। उन्होंने श्री अर्नब साहा (बाङ्ला), सुश्री मैत्रेयी करनूर (अंग्रेज़ी), श्री देवेंद्र मेवाड़ी (हिंदी), सुश्री दीपदमल्ली (कन्नड) तथा श्री सेबस्टियन (मलयाळम्) को अपनी कविताएँ प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। सभी कवियों ने अपनी कविताएँ अपनी-अपनी मूल भाषाओं में पढ़ीं, साथ ही उनका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

इनके बाद श्री आर.के. भुबन सिंह (मणिपुरी), श्री सूर्य मिश्र (ओड़िआ), श्री जनार्दन हेगड़े (संस्कृत), श्रीमती रश्मि रमाणी (सिंधी), श्री बी. भास्करन (तमिळ), श्रीमती अंबिका अनंत (तेलुगु) तथा डॉ. माहिर मंसूर (उर्दू) को भी अपनी कविताएँ प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया।

कविताओं में पर्यावरण चेतना, सभ्यताओं के परिवर्तन, मानवीय स्वभाव तथा उसकी कमज़ोरियाँ, मानवीय प्रयास, हमारे चारों ओर की दुनिया की सच्चाई, संबंध, तथा मानवीय विचार और जीवन के विविध रंगों जैसे अनेक विषयों को समाहित किया गया था। प्रस्तुत सभी कविताएँ प्रभावशाली थीं, जिनमें काव्यात्मकता, सौंदर्यबोध, कल्पनाशक्ति, रूपक तथा विरोधाभासों का सुंदर समावेश था। कवियों ने अपने भीतर और बाहर की दुनिया, भावनाओं की गहराइयों तथा अपने अनुभवों को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

अंत में, अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. शिवप्रकाश ने अपनी कुछ कविताएँ भी पढ़ीं। उन्होंने कहा कि वे इस बात से आश्वस्त हैं कि "कविता इस दुनिया में सफल नहीं हो सकती, पर वह अवश्य जीवित रह सकती है।"

यह बात थोड़ी विरोधाभासी लग सकती है, किंतु इसका गूढ़ अर्थ है। उन्होंने श्रोताओं के धैर्य की सराहना करते हुए कहा कि इससे कविता के भविष्य की कुछ उम्मीद बनती है। उन्होंने साहित्य अकादेमी को उसके नए भवन के लिए बधाई दी। उन्होंने 12वीं सदी के कन्नड कवि नागचंद्र का उल्लेख करते हुए कहा कि कवि में समभाव होना आवश्यक है।

उन्होंने 'अभिव्यक्ति' विषय पर हुए विचार-विमर्श की भी सराहना की और कहा कि विषय पर बहुत कुछ कहा जा चुका है तथा एक सच्चे कवि की भाँति वे मानते हैं कि "जितना अधिक आप बोलते हैं, उतना ही कम आप जानते हैं।"

कार्यक्रम के अंत में डॉ. के. श्रीनिवास राव ने सभी कवियों, विशिष्ट अतिथियों, पुरस्कार विजेताओं तथा उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद किया।

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह

14 नवंबर 2024, लखनऊ



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

14 नवंबर 2024 को लखनऊ के भागीदारी भवन के सभागार में साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किए गए। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विख्यात विद्वान एवं साहित्यकार प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित थे। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई, जिसके पश्चात् मुख्य अतिथि प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित को पुष्पगुच्छ एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया तथा उन्हें साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भेंट की गईं।

अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि अकादेमी के 70 वर्ष के इतिहास में यह पहला अवसर है, जब यह आयोजन लखनऊ में आयोजित हुआ है। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व को आकार देने, उनकी कल्पनाशीलता को विकसित करने तथा बड़े होने पर उन्हें बेहतर नागरिक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि बच्चों के लिए लिखना कोई आसान काम नहीं है। इसमें न केवल बच्चों के नज़रिए से लिखना होता है, बल्कि बाल-पाठक की रुचि को जीवंत तथा मनोरंजक बनाए रखना भी होता है। कुछ दशक पूर्व लेखन की यह विधा काफी लोकप्रिय थी। यद्यपि, हाल के दिनों में बाल साहित्य की मात्रा काफी कम हो गई है। इसके महत्त्व और बच्चों पर इसके प्रभाव को देखते हुए इस विधा को पुनर्जीवित करना ज़रूरी है।

मुख्य अतिथि प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने युगों से चले आ रहे बाल साहित्य पर बात की और कहा कि ऐसे साहित्य को वर्तमान समय के अनुकूल होना चाहिए। उन्होंने बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने में प्रकाशक मुंशी नव किशोर प्रेस तथा श्री अमृत लाल नागर के प्रयासों की विशेष रूप से सराहना की। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य लिखने के लिए बच्चों के मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है।

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि बाल साहित्य पाठकों को बड़े होने पर जीवन का सामना करने के लिए तैयार करता है, क्योंकि बचपन में ही साहित्य पढ़ने से उनकी नींव तैयार हो जाती है। ऐसा साहित्य उन्हें बेहतर नागरिक बनाता है। बाल साहित्य पुरस्कार विजेता थे : रंजु हाज़रिका (असमिया), दीपान्विता राय (बाङ्ला), भार्जिन ज़ेक'भा मोसाहारी (बोडो), बिशन सिंह 'दर्दी' (डोगरी), नंदिनी सेनगुप्ता (अंग्रेज़ी), गिरा पिनाकिन भट्ट (गुजराती), देवेंद्र कुमार (हिंदी), कृष्णमूर्ति बिळिगेरे (कन्नड), मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबर (कश्मीरी), हर्षा सद्गुरू शेटये (कोंकणी), नारायणजी

(मैथिली), उन्नी अम्मायंबळम (मलयाळम्), क्षेत्रिमयुम सुवदनी (मणिपुरी), भारत सासणे (मराठी), बसंत थापा (नेपाली), मानस रंजन सामल (ओड़िआ), कुलदीप सिंह दीप (पंजाबी), प्रह्लाद सिंह 'झोरड़ा' (राजस्थानी), हर्षदेव माधव (संस्कृत), दुगाई टुडु (संताली), लाल होतचंदानी 'लाचार' (सिंधी), युमा वासुकि (तमिऴ), पामिदिमुक्कला चंद्रशेखर आज़ाद (तेलुगु), शम्सुल इस्लाम फ़ारूक़ी (उर्दू)। प्रत्येक पुरस्कार विजेताओं को ताम्रफलक तथा 50,000/- रुपए का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिंदी, उर्दू तथा सिंधी पुरस्कार विजेता अस्वस्थता के कारण समारोह में शामिल नहीं हो सके तथा अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता के स्थान पर उनके प्रतिनिधि ने उनका पुरस्कार ग्रहण किया।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2024, लखनऊ



सत्र की अध्यक्षता करतीं साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा

15 नवंबर 2024 को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के निराला सभागार में लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने की। उन्होंने कहा कि आज के बच्चे टीवी और मोबाइल से सब कुछ सीख रहे हैं, जिससे वे समय से पहले ही वयस्क बनते जा रहे हैं। ऐसे डिजिटल युग में बच्चों को पुस्तकों से जोड़ना एक बड़ी चुनौती है, और यह सराहनीय है कि आज के लेखक इस ज़िम्मेदारी को निभा रहे हैं। उन्होंने शिक्षण संस्थानों में बाल अध्ययन केंद्रों की स्थापना की आवश्यकता पर बल दिया।

बाल साहित्य पुरस्कार 2024 के विजेताओं ने लेखन के अपने अनुभवों को साझा किया, जिससे यह बात सामने आई कि प्रत्येक सृजक की अपनी विशेष प्रक्रिया तथा अनुभव होते हैं, जिनसे उनकी रचनाएँ आकार लेती हैं। बाल साहित्य लिखना कठिन कार्य है, तथा डिजिटल युग में यह चुनौती और भी बढ़ गई है।

रंजु हाज़रिका (असमिया) ने कहा कि बच्चों का साहित्य पूरी दुनिया में एक जैसा होता है, और इसकी नींव मौखिक कथा परंपरा में है। दीपान्विता राय (बाङ्ला) ने बताया कि उन्होंने जानबूझकर परी कथाओं से दूरी बनाई और अपने बच्चों की कहानियों को समसामयिक मुद्दों से जोड़ा। बिशन सिंह 'दर्दी' (डोगरी) ने कहा कि उनकी पुरस्कार प्राप्त पुस्तक *कुक्कडू कडू* का उद्देश्य बच्चों में मातृभाषा डोगरी के प्रति रुचि जगाना है। गिरा पिनाकिन भट (गुजराती) ने बताया कि उनकी पुस्तक *हसती हवेली* किशोरों की भावनाओं, चंचलता और आत्म-अभिव्यक्ति को जीवंत करती है।

कृष्णमूर्ति बिळिगेरे (कन्नड) ने बच्चों को स्वतंत्रता देने की आवश्यकता पर बल दिया। हर्षा सद्गुरू शेटये (कोंकणी) ने बताया कि वे स्वयं अपनी पुस्तक बयुल की नायिका हैं, जिसमें उनके ग्रामीण और शहरी जीवन के बचपन के अनुभव झलकते हैं। नारायणजी (मैथिली) ने कहा कि उनकी पुस्तक मिथिला क्षेत्र के उन वृद्धों पर केंद्रित है जो अकेलेपन में बच्चों के बीच आत्मीयता खोजते हैं। भारत सासणे (मराठी) ने बताया कि रहस्य, साहस, रोमांच और जिज्ञासा किशोर मन को गहराई से प्रभावित करती है, इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने समशेरे कुलुफघरे नामक पात्र का निर्माण किया।

कुलदीप सिंह दीप (पंजाबी) ने बताया कि उनका नाटक *मैं जल्लिआँवाला बाग बोलदा हाँ* स्वतंत्रता संग्राम

के कई गुमनाम नायकों को बच्चों के सामने प्रस्तुत करता है। प्रह्लाद सिंह 'झोरड़ा' (राजस्थानी) ने कहा कि बच्चों की मानसिकता को ध्यान में रखते हुए कविता आधारित साहित्य रचना एक चुनौती है। बच्चे शब्दों से अधिक लय से प्रभावित होते हैं। उनकी रचनाओं में राजस्थान की संस्कृति, प्रकृति, रीति-रिवाज़, त्यौहार और ऐतिहासिक नायक शामिल हैं। हर्षदेव माधव (संस्कृत) ने कहा कि उन्होंने परंपरागत *पंचतंत्र* और *हितोपदेश* से आगे बढ़ते हुए आश्चर्य, मनोरंजन और सांस्कृतिक मूल्यों से युक्त कहानियाँ गढ़ी हैं, जो बच्चों की कल्पनाशक्ति को आनंद देती हैं।

बाल साहित्य पुरस्कार विजेता जैसे - भार्जिन ज़ेक'भा मोसाहारी (बोडो), मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबर (कश्मीरी), उन्नी अम्मायंबळम (मलयाळम्), क्षेत्रिमयुम सुवदनी (मणिपुरी), बसंत थापा (नेपाली), मानस रंजन सामल (ओड़िआ), दुगाई टुडु (संताली), युमा वासुकि (तमिऴ) तथा पामिदिमुक्कला चंद्रशेखर आज़ाद (तेलुगु) ने भी अपने लेखकीय अनुभव साझा किए।

द्वितीय सत्र में "बाल लेखन : अतीत, वर्तमान और भविष्य" विषय पर परिचर्चा तथा कविता-पाठ आयोजित हुआ।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ओड़िआ विद्वान दाश बेनहुर ने कहा कि बच्चों का साहित्य 18वीं सदी में नहीं, माँ द्वारा गाई गई लोरियों के रूप में प्रारंभ हुआ था। बच्चों के लिए लिखते समय लेखक को माँ की भांति सोचना चाहिए।

बाङ्ला लेखक उल्लास मलिक ने बाङ्ला बाल साहित्य के इतिहास को रेखांकित किया। स्थानीय लेखक ज़ाकिर अली रजनीश ने कहा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कई बाल कहानियाँ बच्चों के लिए लाभकारी नहीं रहीं। हिंदी बाल साहित्य अभी भी नैतिकता और उपदेशात्मकता में उलझा हुआ है। मलयाळम् लेखक के. श्रीकुमार ने कहा कि मलयाळम् बाल साहित्य के सामने अनेक नई चुनौतियाँ हैं। मराठी लेखिका सविता करंजकर ने दादी-नानी की कहानियों को प्राचीन बाल साहित्य की नींव बताया। उन्होंने कहा कि श्यामची आई मराठी साहित्य की कालजयी रचना है। फास्टर फेणे जैसे पात्र बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। मराठी में बच्चों के लिए कई पत्रिकाएँ हैं, जिन्हें ख़ूब पसंद किया जाता है। उन्होंने कहा कि मराठी बाल साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है।

कविता-पाठ सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने की। उन्होंने कहा कि जब समाज में विघटन होता है, तब साहित्य ही उस रिक्तता को भरता है। अब हर विधा में अनंत संभावनाएँ हैं। बच्चों के लिए लिखते समय लेखक को दृश्य, श्रव्य और मुद्रित माध्यमों के लिए भिन्न-भिन्न उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।

लता हीराणी ने अपनी गुजराती कविता बात चली है गाँव-गाँव में, चमक चाँद पर जाएगी का हिंदी अनुवाद सहित पाठ किया। सुरेंद्र विक्रम ने पापा कहते बनो डॉक्टर, माँ कहती इंजीनियर, जैसी बच्चों के दबावों को दर्शाने वाली कविता तथा खेल-खेल में सुनाई। मणिपुर के खोइसनाम मोंगोल ने बच्चों के व्यवहार को दर्शाने वाली दो संक्षिप्त लयात्मक कविताएँ प्रस्तुत कीं।

वुरीमल्ला सुनंदा ने अपनी तेलुगु रचना काश मेरे पास दो पंख होते तथा इसी को कहते क्या हल्ला-हल्ला, हिंदी अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं, जिनमें बच्चों की कल्पनाशीलता और प्रकृति प्रेम झलकता है। कानपुर के उर्दू कवि श्री शोएब निज़ाम ने पतंग नज़्म – सर-सर—सर-सर पर फैलाए, छुट्टी का मौसम तथा टिक-टिक-टिक-टिक चलती जाए लाइन से जैसी कविताओं के माध्यम से बच्चों की छुट्टियों की खुशी और समय पालन की महत्ता को प्रस्तुत किया। उन्होंने ग्रीष्म ऋतु का काव्यात्मक चित्रण भी किया।

अंत में, साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि प्रस्तुत कविताओं की भाषा और विषय यह सिद्ध करते हैं कि 21वीं सदी में भी सरलता बच्चों को आकर्षित करती है।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह

12 जनवरी 2025, भुवनेश्वर



मुख्य अतिथि श्री जेरी पिंटो तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी द्वारा 12 जनवरी 2025 को उत्कल विश्वविद्यालय, वाणी विहार, भुवनेश्वर, ओड़िशा के महाराजा कृष्णचंद्र गजपति सभागार में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह आयोजित किया गया।

अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक द्वारा 22 युवा लेखकों को पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रत्येक पुरस्कार में ताम्रपट्ट, तथा 50,000/- रुपए की राशि का चेक प्रदान किया गया। पुरस्कार प्रदान करने से पूर्व, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव द्वारा प्रशस्तिपत्रों का वाचन किया गया। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने समस्त पुरस्कार विजेताओं का पुष्पगुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया। युवा पुरस्कार 2024 विजेता थे—असमिया नयनज्योति शर्मा (असमिया), सुतपा चक्रवर्ती (बाङ्ला), सेल्फ् मेइड् राणी बर' (बोडो), हीना चौधरी (डोगरी), वाजेसिंह राठौड़ 'शर्वरी' (गुजराती), श्रुति बी.आर. (कन्नड), अद्वैत चंद्रकांत साळगांवकार (कोंकणी), रिंकी झा ऋषिका (मैथिली), श्यामकृष्णन आर. (मलयाळम्), वाइखोम चीङ्खैङानबा (मणिपुरी), देवीदास सौदागर (मराठी), सूरज चापागाईं, (नेपाली), संजय पंडा (ओड़िआ), रणधीर (पंजाबी), सोनाली सुथार (राजस्थानी), अंजन कर्मकार (संताली), गीता प्रदीप रुपाणी (सिंधी), लोकेश रघुरामन (तमिऴ), रमेश कार्तिक नायक (तेलुगु) तथा मो. जावेद महमद (उर्दू)। इनमें से मो. अशरफ़ भट और मुनि पार्श्वसुंदर विजयजी समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

स्वागत वक्तव्य में डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि युवा लेखक किसी भी देश और विश्व की भाषा एवं साहित्य के ध्वजवाहक होते हैं। उन्होंने बताया कि युवा साहिती, नवोदय योजना और यात्रा अनुदान जैसी योजनाएँ युवाओं को व्यापक मंच प्रदान करती हैं। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि युवा लेखक भारतीय साहित्य का भविष्य हैं। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के प्रसिद्ध वाक्य का उल्लेख किया—"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो"। उन्होंने कहा कि लेखक कभी नहीं रुकता। जब तक मानव सभ्यता चलती रहेगी, साहित्य भी चलता रहेगा। उन्होंने कहा कि भारत की विविधता ही इसकी विशिष्ट पहचान है—यहाँ 24 भाषाएँ समृद्ध रूप से पनप रही हैं जबकि यूरोप में केवल 5-6 भाषाएँ ही प्रमुख हैं। मुख्य

अतिथि के रूप में प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि जेरी पिंटो ने युवा लेखकों को मान्यता दिए जाने के इस आयोजन में शामिल होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अनुवाद कार्य विभिन्न भाषाओं के बीच सेतु बना सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि आज के युवाओं को आधुनिक पुस्तकालयों तथा विशाल प्रदर्शनियों का लाभ मिल रहा है। लेखन के लिए उम्र कोई सीमा नहीं है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास अपनी भाषा, बोली और साहित्य है, जो कई देशों के पास नहीं है।

समाहार वक्तव्य में प्रो. कुमुद शर्मा ने युवाओं को सही मार्गदर्शन दिए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनके विचारों को उद्धृत किया और कहा कि युवाओं को अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि सोशल मीडिया के इस युग में लेखकों को बिना किसी बाधा के अपनी पहचान बनाने का बड़ा मंच मिल रहा है। उन्होंने युवाओं की देश के भविष्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका की ओर ध्यान आकृष्ट किया। समारोह में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान तथा साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

पुरस्कृत लेखकों से भेंट

13 जनवरी 2025, भुवनेश्वर



सत्र की अध्यक्षता करतीं प्रो. कुमुद शर्मा

साहित्य अकादेमी द्वारा युवा पुरस्कार विजेताओं से भेंट समारोह का आयोजन 13 जनवरी 2025 को भुवनेश्वर, ओड़िशा के मधुसूदन मार्ग स्थित यूनिट-9, बुद्ध मंदिर के सम्मलेन कक्ष में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा उन प्रतिभागियों का उल्लेख किया जो कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके। उन्होंने मुनि पार्श्वसुंदर विजयजी का वक्तव्य पढ़कर सुनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने युवा पुरस्कार विजेताओं की सराहना करते हुए कहा कि ये युवा लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक मुद्दों से प्रेरणा लेकर साहित्य सृजन में लगे हैं। उन्होंने बताया कि ये लेखक तमाम चुनौतियों के बावजूद रचनात्मकता के माध्यम से परिवर्तन लाने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी यात्रा दृढ़ता और युवाओं द्वारा नेतृत्व किए गए प्रयासों के प्रभाव को दर्शाती है।

कार्यक्रम में पुरस्कार विजेताओं ने अपने साहित्यिक अनुभव साझा किए : नयनज्योति शर्मा (असमिया) ने बताया कि प्रारंभ में उनका साहित्यिक झुकाव अनुकरण से हुआ, महान लेखकों की शक्ति से प्रभावित होकर उन्होंने एक वैकल्पिक संसार रचना चाहा। गाँव में पले-बढ़े होने के कारण शहरी जीवन से सामंजस्य बिठाना कठिन था, किंतु साहित्य ने उनका दृष्टिकोण बदला। सुतपा चक्रवर्ती (बाङ्ला) ने बाङ्ला कविता-संग्रह के लिए पुरस्कार मिलने पर आभार जताया तथा अपने साहित्यिक मूल की स्मृति को सँजोने की बात कही। सेल्फ् मेइड् राणी बर' (बोडो) ने अपनी समुदाय की आवाज़ बुलंद करने और सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने में साहित्य की भूमिका बताई। हीना चौधरी (डोगरी) ने अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम तथा विचारों को व्यक्त करने में भाषा की शक्ति पर प्रकाश डाला। के. वैशाली (अंग्रेज़ी) ने कहा

कि उन्हें लेखन से अपनी पहचान और सत्य को खोजने में सहारा मिला, भले ही डिस्लेक्सिया और डिसग्राफिया जैसी चुनौतियाँ रहीं। रिंकू वाजेसिंह राठौड़ (गुजराती) ने अपने संघर्ष की कहानी साझा की — एक महिला के रूप में शिक्षा और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए। उन्होंने बताया कि उनकी कविता हाशिये पर पड़े वर्गों की आवाज़ बन चुकी है। गौरव पांडेय (हिंदी) ने कहा कि उनकी साहित्यिक यात्रा उनके पिता की शिक्षाओं तथा माता की लेखनी से प्रेरित रही। उनकी रचनाओं में दया, प्रेम और संबंधों की जटिलताएँ प्रमुख हैं। श्रुति बी.आर. (कन्नड) ने कविता को बहती नदी जैसा बताया, जो व्यक्तिगत और सार्वभौमिक अनुभवों को प्रतिबिंबित करती है। अद्वैत चंद्रकांत साळगांवकार (कोंकणी) ने गोवा के पेडने क्षेत्र की बोलियों की विविधता और समृद्धता को रेखांकित किया। रिंकी झा ऋषिका (मैथिली) ने कहा कि उनकी कविताएँ उनके दादा और प्रकृति से प्रेरित हैं, तथा स्त्री जीवन की अनकही बातों को स्वर देती हैं। श्यामकृष्णन आर. (मलयाळम्) ने मलयाळम् साहित्य की समृद्ध परंपरा का उल्लेख किया। वाइखोम चीङ्खैङानवा (मणिपुरी) ने अपनी साहित्यिक यात्रा में अपने पिता की भूमिका पर प्रकाश डाला। देवीदास सौदागर (मराठी) ने रेडीमेड कपड़ों के कारण दर्जियों को आ रही कठिनाइयों तथा अपनी पारिवारिक परंपरा को लेखन के माध्यम से जीवंत बनाए रखने की बात कही। सूरज चापागाईं (नेपाली) ने कहा कि उन्होंने यह पुरस्कार नेपाली साहित्य के संरक्षण में लगे लोगों को समर्पित किया है। संजय कुमार पंडा (ओड़िआ) ने अपने गाँव, ईराम, द्वारा उनकी साहित्यिक यात्रा पर पड़े प्रभाव की बात कही तथा अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की आवश्यकता जताई। रणधीर (पंजाबी) ने कविता की उत्पत्ति और मानव अनुभव से इसके संबंध पर अपने विचार व्यक्त किए। सोनाली सुथार (राजस्थानी) ने अपनी साहित्यिक यात्रा को दैवी प्रेरणा बताया। अंजन कर्मकार (संताली) ने संताली गाँव के अपने बचपन तथा वहाँ की सांस्कृतिक विरासत का स्मरण करते हुए कवि रामेश्वर मुर्मु को धन्यवाद दिया। गीता प्रदीप रुपाणी (सिंधी) ने साहित्य को भावनाओं और विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति बताया। लोकेश रघुरामन (तमिऴ) ने साहित्य में प्रकृति, करुणा तथा पारिस्थितिक कारकों की भूमिका पर बल दिया। रमेश कार्तिक नायक (तेलुगु) ने अपनी रचनाओं में आदिवासी समुदाय तथा बंजारा समाज के इतिहास को उकेरा। मो. जावेद अहमद (उर्दू) ने अपनी लेखन प्रक्रिया और प्रेरणाओं पर अपने विचार साझा किए। समारोह के अंत में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह

8 मार्च 2025, नई दिल्ली



मुख्य अतिथि श्री महेश दत्तानी तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह 8 मार्च 2025 को सायं 5:30 बजे नई दिल्ली स्थित कमानी सभागार में आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात अंग्रेज़ी नाटककार एवं रंगकर्मी श्री महेश दत्तानी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई। तत्पश्चात् साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक से अनुरोध किया कि वे मुख्य अतिथि का औपचारिक रूप से स्वागत करें। अपने स्वागत वक्तव्य में डॉ. श्रीनिवास राव ने कहा कि साहित्यिक सृजन की सामाजिक और नृवंशविज्ञान संबंधी समझ आवश्यक है ताकि समाज में साहित्य की भूमिका और लेखकों द्वारा समुदायों के प्रति किए गए योगदान को समझा जा सके। अन्य मानवीय अभिव्यक्तियों की तुलना में साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ पाठकों को दूरस्थ संस्कृतियों तथा भूभागों तक ले जाती हैं तथा उन्हें अन्य परंपराओं और क्षेत्रों की जानकारी प्रदान करती हैं। उन्होंने अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त उल्लेख भी किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि विगत सात दशकों में विविध भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन में अकादेमी की भूमिका सराहनीय रही है। साहित्योत्सव भाषायी विविधता की दृष्टि से सबसे बड़ा साहित्यिक आयोजन है। लेखक समाज के शब्दशिल्पी होते हैं जो समाज को आकार देते हैं। यह समारोह साहित्यिक रचनाशीलता का प्रतिबिंब है। तत्पश्चात् डॉ. कौशिक ने 23 भारतीय भाषाओं के लेखकों को साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किए। पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखक थे - समीर ताँती (असमिया), अरन राजा उर्फ़ अकन बसुमतारी (बोडो), इस्तेरीन कीरे (अंग्रेज़ी), दिलीप झवेरी (गुजराती), गगन गिल (हिन्दी), के.वी. नारायण (कन्नड), सोहन कौल (कश्मीरी), मुकेश थळी (कोंकणी), महेंद्र मलंगिया (मैथिली), के. जयकुमार (मलयाळम्), हाओबाम सत्यबती देवी (मणिपुरी), सुधीर रसाळ (मराठी), युव बराल 'अनंत' (नेपाली), वैष्णव चरण सामल (ओड़िआ), पॉल कौर (पंजाबी), मुकुट मणिराज (राजस्थानी), दीपक कुमार शर्मा (संस्कृत), महेश्वर सोरेन (संताली), हुंदराज बलवाणी (सिंधी), ए. आर. वेंकटाचलपति (तमिळ), पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण (तेलुगु) और अतीक़ुल्लाह (उर्दू)। (स्व.) चमन लाल

अरोड़ा (डोगरी) और इस्तेरीन कीरे (अंग्रेज़ी) के पुरस्कार उनके परिजनों ने प्राप्त किए। इस वर्ष बाङ्ला भाषा में कोई पुरस्कार नहीं दिया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव द्वारा पुरस्कार प्रशस्तियाँ पढ़ी गईं तथा उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने पुष्पगुच्छ भेंट किए।

मुख्य अतिथि श्री महेश दत्तानी ने अपने संबोधन में समस्त पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा साहित्य अकादेमी को एशिया के सबसे बड़े साहित्यिक महोत्सव के आयोजन के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि दुनिया में कोई और देश इतनी भाषायी विविधता के रचनाकारों को सम्मानित करने का प्रयास नहीं करता। भारत भाषाओं की जादुई भूमि तथा कथाओं का देश है। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विविध भाषाओं और संस्कृतियों के संरक्षण में भूमिका की सराहना की।

समारोह के समापन पर साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि साहित्य अतीत और वर्तमान को जोड़ने की कड़ी है। यह वह सूत्र है जो मानवता को सभी रंगों में जोड़ता है। कार्यक्रम का समापन श्री राकेश चौरसिया द्वारा बाँसुरी पर आत्मीय हिंदुस्तानी संगीत तथा फ्यूजन की प्रस्तुति से हुआ।

लेखक सम्मिलन

9 मार्च 2025, नई दिल्ली



पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा

सत्र की शुरुआत में प्रो. कुमुद शर्मा ने 2024 के पुरस्कार विजेताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक लेखक की अपनी यात्रा, भावना और प्रेरणा होती है। समीर ताँती (असमिया) ने प्रकृति के प्रति आभार जताते हुए उसके साथ अपने उत्तर-पूर्वी जुड़ाव की बात कही और प्राकृतिक संरक्षण व स्वतंत्रता की आवश्यकता पर बल दिया। अरन राजा उर्फ़ अकन बसुमतारी (बोडो) ने अपने गाँव की सामाजिक संरचना को लेखन की प्रेरणा बताया। इस्तेरीन कीरे (अंग्रेज़ी) ने अपनी पुस्तक *स्पिरिट नाइट्स* लिखने की प्रक्रिया में दूरस्थ जनजातियों के साथ काम करने और अंधकार विषय की चुनौतियों को साझा किया। दिलीप झवेरी (गुजराती) ने अपनी पुस्तक

भगवानन्नी वातो की अवधारणा पर बात की। गगन गिल (हिंदी) ने कविता लेखन की कठिनाइयों और वर्षों की साधना को रेखांकित किया।

के.वी. नारायण (कन्नड) ने 1970 के दशक की वैचारिक पृष्ठभूमि तथा साहित्यिक आलोचना पर अपने विचार व्यक्त किए। सोहन कौल (कश्मीरी) ने अपने उपन्यास साइकेट्रिक वार्ड लेखन की कठिन परिस्थितियों तथा कश्मीरी साहित्य के पुनरुत्थान की आवश्यकता पर बल दिया। मुकेश थळी (कोंकणी) ने रविंद्र केलकर से मिली प्रेरणा का उल्लेख किया। महेंद्र मलंगिया (मैथिली) ने मैथिली की परंपरा और अपनी पुस्तक के निबंध विद्यापति का उगना पर चर्चा की। के. जयकुमार (मलयाळम्) ने कविता को अपने समय का प्रतिबिंब बताया तथा अपने जीवन में इसकी निरंतर उपस्थिति पर प्रकाश डाला। हाओबाम सत्यबती देवी (मणिपुरी) ने अपनी पुस्तक माईनु बोरा नुङ्शी शिरोल के 20 वर्षों के लेखकीय अनुभव को साझा किया। सुधीर रसाळ (मराठी) ने मराठी में आलोचना और सिद्धांत से जुड़ाव की आवश्यकता पर बल दिया। युवा बराल 'अनन्त' (नेपाली) ने लेखन से मिले स्पष्ट दृष्टिकोण और अपने लेखक बनने की यात्रा साझा की। वैष्णव चरण सामल (ओड़िआ) ने सांस्कृतिक रूप से प्रभावशाली, बाज़ार से असंबद्ध साहित्य की आवश्यकता पर बल दिया। पॉल कौर (पंजाबी) ने कहा कि जबसे उन्होंने स्वयं को जाना, कविता से साक्षात्कार हुआ, तब से वे कविता में जीती हैं। मुकुट मणिराज (राजस्थानी) ने राजस्थान के सैन्य और सांस्कृतिक इतिहास व भाषा के संरक्षण पर चर्चा की। दीपक कुमार शर्मा (संस्कृत) ने कालजयी संस्कृत साहित्य तथा अपनी पुस्तक के साथ दी गई अंग्रेज़ी अनुवाद की भूमिका पर प्रकाश डाला। महेश्वर सोरेन (संताली) ने संताली भाषा और लिपि के इतिहास और अपने बचपन से ही उससे जुड़ाव का उल्लेख किया। हुंदराज बलवाणी (सिंधी) ने उस भाषा की बात की जिसे मात्र एक सौ अथवा दो सौ पचास वर्षों पूर्व ही अक्षर प्राप्त हुए हैं तथा जिसकी लिपि आज भी चर्चा का विषय है। ए.आर. वेंकटाचलपति (तमिऴ) ने अपनी पुस्तक की ऐतिहासिक घटनाओं, दंगों की नाटकीयता तथा उसके निबंध से पुस्तक बनने की प्रक्रिया को साझा किया। पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण (तेलुगु) ने प्रगतिशील लेखक संघ के साथ अपने कार्य तथा प्रेरणास्रोत लेखकों का स्मरण किया।

सत्र का समापन करते हुए प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि हर लेखक जीवन को अलग नज़रिए से देखता है और कांटों के बीच सुंदरता तलाशता है।

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान 2021 एवं 2023
अर्पण समारोह

29 अगस्त 2024, नई दिल्ली



भाषा सम्मान पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष और सचिव

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी द्वारा वर्ष 2021 एवं 2023 के प्रतिष्ठित भाषा सम्मान एक भव्य समारोह में प्रदान किए गए, जो नई दिल्ली स्थित रवींद्र भवन के प्रथम तल सभागार में सायं 5:00 बजे आयोजित किया गया। यह सम्मान प्रतिवर्ष दो श्रेणियों में प्रदान किया जाता है—एक श्रेणी में कालजयी और मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए लेखकों/विद्वानों को, तथा दूसरी श्रेणी में उन भाषाओं के लिए जिन्हें अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं है। पुरस्कार स्वरूप, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा उत्कीर्ण ताम्रपत्र तथा ₹1,00,000/- की राशि प्रदान की जाती है।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उपस्थित गणमान्य अतिथियों, पुरस्कार विजेताओं, मीडिया प्रतिनिधियों तथा विद्वानों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत का समस्त ज्ञान मानवता के कल्याण हेतु है तथा यह सभी के लिए है। हमारी ज्ञान परंपरा वैश्विक है। उन्होंने आगे कहा कि किसी भी भाषा का लोप समाज की संस्कृति का लोप होता है। बीते दशकों में कालजयी और मध्यकालीन साहित्य लुप्तप्राय हो रहा था, इसलिए अकादेमी ने भाषा सम्मान की स्थापना की तथा भारत की भाषाओं को संरक्षित करने हेतु सतत प्रयास कर रही है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भाषा सम्मान हमारी परंपरा को सम्मानित करने के सामान है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा का उत्सव भी है। उन्होंने कहा कि इन भाषाविदों ने कालजयी और मध्यकालीन साहित्य को आमजन तक उनकी अपनी भाषा में पहुँचाने का अद्वितीय

कार्य किया है, अत: अकादेमी उन्हें सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती है।

इसके पश्चात् डॉ. के. श्रीनिवास राव ने पुरस्कार विजेताओं की प्रशस्तियाँ पढ़ीं तथा डॉ. माधव कौशिक ने उन्हें *भाषा सम्मान* प्रदान किए।

पुरस्कार अर्पण के पश्चात् पुरस्कार विजेताओं ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए। प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल, *2021 के भाषा सम्मान प्राप्तकर्ता (उत्तर भारत, कालजयी और मध्यकालीन साहित्य)* ने अपने बाल्यकाल की जिज्ञासाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि किस प्रकार उन्होंने ईश्वर, संसार, परिवार आदि से जुड़े मौलिक प्रश्नों को समझने की दिशा में कार्य किया। उन्होंने *अकथ कहानी प्रेम की* और *कबीर ग्रंथावली* जैसे अपने प्रमुख साहित्यिक कार्यों पर भी विस्तार से चर्चा की।

प्रो. बेतावोलु रामब्रह्मम, *2021 के भाषा सम्मान प्राप्तकर्ता (दक्षिण भारत, कालजयी और मध्यकालीन साहित्य)* ने सुझाव दिया कि अकादेमी को प्रत्येक भाषा तथा प्रत्येक साहित्य विधा के लिए *भाषा सम्मान* स्थापित करना चाहिए। साथ ही, उन्होंने सभी भारतीय भाषाओं को समाहित करते हुए व्यापक शब्दकोश प्रकाशित करने का सुझाव दिया, ताकि नवीनतम तकनीकों जैसे- आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस तथा मशीन ट्रांसलेशन का अधिकतम उपयोग हो सके।

श्री अवतार सिंह, *2023 के भाषा सम्मान प्राप्तकर्ता (उत्तर भारत)* ने कहा कि उन्होंने सरकारी और व्यक्तिगत दायित्वों के बावजूद सामाजिक और बौद्धिक सरोकारों से कभी दूरी नहीं बनाई। उन्होंने कहा कि कागज़ का महत्त्व चाहे समाप्त हो जाए, किंतु लेखन का महत्त्व हमेशा बना रहेगा।

डॉ. के.जी. पॉलोस, *2023 के भाषा सम्मान प्राप्तकर्ता (दक्षिण भारत)* ने कहा कि यह सम्मान उन्हें उस कारण के पहचान के रूप में प्राप्त हुआ है जिसे उन्होंने अपने जीवन भर अत्यधिक जुनून से आगे बढ़ाया है। यह संस्कृत भाषा और उसमें निहित संस्कृति का प्रचार तथा नाट्यशास्त्र और उसकी परंपरा का अध्ययन है, जैसा कि दक्षिण में, विशेष रूप से केरल में, किया जाता है।

श्री रेंथलेई लालरावना, *संयुक्त भाषा सम्मान विजेता (मिज़ो)* ने मिज़ो भाषा के संवर्धन, संरक्षण और प्रचार में उनके योगदान को स्वीकार किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने नवसाक्षरों हेतु अध्ययन सामग्री, साहित्य, ऐतिहासिक कथा, सामाजिक कार्यों, सामान्य ज्ञान, जीवनी और स्वास्थ्य शिक्षा पर अपने कार्यों की जानकारी दी।

श्री रोज़ामा चावंगथु, *संयुक्त भाषा सम्मान विजेता (मिज़ो)* ने अपने साहित्यिक कार्यों पर चर्चा करने के पश्चात् अपनी पत्नी के साथ हुए संवाद को साझा किया — उन्होंने कहा कि "मैं लंबे समय से ईश्वर से प्रार्थना करता रहा हूँ कि मेरी आयु कम से कम 90 वर्ष हो। मेरी पत्नी ने पूछा, तुम लंबी उम्र क्यों चाहते हो? मैंने उत्तर दिया, यदि मैं जल्दी मर गया, तो मेरी मृत्यु के बाद नई पीढ़ी मिज़ो की सुंदर भाषा को विकृत कर देगी। मैं अपनी भाषा की रक्षा के लिए लंबा जीना चाहता हूँ। तब मेरी पत्नी ने कहा, तुम्हारा यह जीने का कारण अपने परिवार के लिए नहीं है। मैंने कहा, नहीं, यह भाषा के लिए है।"

महत्तर सदस्यताएँ प्रदत्त

रस्किन बॉन्ड को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

11 मई 2024, मसूरी



श्री रस्किन बॉन्ड को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान "साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता" 11 मई 2024 को प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक एवं विद्वान श्री रस्किन बॉन्ड को प्रदान की गई। उनकी अस्वस्थता के कारण यह सम्मान बॉन्ड को साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक तथा साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उनके मसूरी स्थित निवास पर प्रदान किया। इस अवसर पर बॉन्ड के सुपुत्र भी उपस्थित थे। 19 मई 1934 को हिमाचल प्रदेश के कसौली में जन्मे रस्किन बॉन्ड 50 वर्षों से भी अधिक समय से लेखन की दुनिया में सक्रिय हैं तथा उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन किया है। उनकी शुरुआती कृतियों में कहानी-संग्रह तथा उपन्यास के साथ-साथ कुछ आत्मकथात्मक रचनाएँ भी शामिल हैं। बाद में उन्होंने कथेतर गद्य, रोमांस तथा बाल पुस्तकें भी लिखीं। उनकी पसंदीदा विधाएँ निबंध और कहानियाँ हैं। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं में *वैग्रांट्स इन द वैली, वन्स अपॉन ए मॉनसून टाइम, एंग्री रिवर, स्ट्रेंजर्स इन द नाइट, ऑल रोड्स लीड टू गंगा, टेल्स ऑफ़ फोस्टरगन, लेपर्ड ऑन द माउंटेन* तथा *टू मच ट्रबल* शामिल हैं। 1978 की हिंदी फ़िल्म *जुनून रस्किन* के ऐतिहासिक उपन्यास *अ फ्लाइट ऑफ़ पिजन्स* (1857 का भारतीय विद्रोह) पर आधारित थी। उनकी कहानियों के रूपांतरण दूरदर्शन पर टी.वी. धारावाहिक *एक था रस्टी* के रूप में प्रसारित किए जा चुके हैं तथा उनकी कई कहानियाँ - "द नाइट ट्रेन एट देओली", "टाइम स्टॉप्स एट शामली" तथा "आवर ट्रीज़ स्टिल ग्रो इन देहरा" - भारत में स्कूली

पाठ्यक्रम के शामिल हैं। 2005 में, उनके लोकप्रिय बाल उपन्यास द *ब्लू अम्ब्रेला* पर फ़िल्म बनाई गई थी। उन्हें उनके कहानी-संग्रह "आवर ट्रीज़ स्टिल ग्रो इन देहरा" के लिए 1992 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें भारत सरकार द्वारा 1999 में पद्म श्री तथा 2019 में पद्म भूषण तथा 2012 में साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

23 अगस्त 2024, रायपुर



श्री विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात हिंदी कवि और लेखक श्री विनोद कुमार शुक्ल को 23 अगस्त 2024 को अपने सर्वोच्च सम्मान - साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया। उनकी अस्वस्थता के कारण, यह संक्षिप्त सम्मान समारोह रायपुर में उनके निवास पर आयोजित किया गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने श्री विनोद कुमार शुक्ल को महत्तर सदस्यता प्रदान की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने महत्तर सदस्यता प्रशस्ति-पत्र पढ़ा। अपने स्वीकृति वक्तव्य में श्री विनोद कुमार शुक्ल ने कहा कि वह साहित्य अकादेमी के आभारी हैं कि उन्होंने उन्हें यह सर्वोच्च सम्मान देने के लिए यहाँ तक का सफर तय किया। उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि उन्हें इतना बड़ा सम्मान प्राप्त होगा। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि वह कृष्णा सोबती आदि जैसे अब तक के साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्राप्त करने वाले प्रतिष्ठित लेखकों में

स्वयं को पाकर हर्षित हैं। इस अवसर पर उन्होंने अपनी 2 कविताएँ भी पढ़ीं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि यह गर्व करने का अनूठा अवसर है, चूँकि श्री विनोद कुमार शुक्ल को सम्मानित करके अकादेमी स्वयं ही गौरवान्वित महसूस कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि शुक्ल की रचनाएँ इतनी व्यापक तथा उत्कृष्ट हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमेशा उनसे प्रेरित होती रहेंगी। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उनके सम्मान में महत्तर सदस्यता प्रशस्ति-पत्र पढ़ते हुए कहा कि विनोद कुमार शुक्ल ने कविता को कहानी के साथ जादुई ढंग से मिश्रित किया है। इस अनूठे संश्लेषण ने साहित्यिक विधाओं को पृथक् करने वाली सीमाओं को पार कर लिया है। उनके लेखन ने समृद्ध अंतर्दृष्टि भी प्रदान की, जिनमें स्थानीय और सार्वभौमिक जीवंत रूप परस्पर जुड़े हुए हैं। इस संबंध में, श्री विनोद कुमार शुक्ल को हमारे समय के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में से एक माना जाता है। उन्होंने मीडियाकर्मियों तथा श्री विनोद कुमार शुक्ल के शुभचिंतकों को भी महत्तर सदस्यता समारोह के दौरान उनकी अमूल्य उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त तथा संवाद कार्यक्रम

8 दिसंबर 2024, बेंगळूरु



डॉ. चंद्रशेखर कंबार को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता' प्रख्यात कन्नड लेखक और विद्वान डॉ. चंद्रशेखर कंबार को रविवार, 8 दिसंबर 2024 को अपराह्न 2:30 बजे साहित्य अकादेमी सम्मेलन कक्ष,

कला ग्राम के सामने, पुराना आउटर रिंग रोड, ज्ञानज्योति नगर, मल्लतहल्ली, बेंगळूरु में प्रदान किया गया। इस अवसर पर, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने डॉ. कंबार को उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा शॉल भेंट की तथा साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने उन्हें पुष्पगुच्छ भेंट किए।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा प्रशस्ति-पत्र का पाठ किया। उन्होंने कहा कि डॉ. कंबार कुशल कथाकार, नाटककार तथा फ़िल्म निर्देशक हैं। वे किसी भी विषय से कहानी और कविता रचने में सक्षम हैं तथा अपने साहित्यिक जादू से सभी को सम्मोहित करते हैं। पुरस्कारों, सम्मानों तथा उपलब्धियों से परे उनकी सरलता और सहजता ने उन्हें लेखकों, विद्वानों और आम जनता में अत्यंत लोकप्रिय बनाया है। कन्नड संस्कृति और भारतीय साहित्य को 6 दशकों तक समृद्ध करने में दिए गए बहुमूल्य योगदान के लिए साहित्य अकादेमी उन्हें अपना सर्वोच्च सम्मान प्रदान करके गौरवान्वित महसूस कर रही है।

डॉ. माधव कौशिक ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि डॉ. कंबार साहित्य, लोकसंस्कृति, सिनेमा, नाटक और अकादमिक दुनिया के पुरोधा हैं। वे सम्पूर्ण साहित्यकार हैं, जिनकी सोच मौलिक और दृष्टिकोण जनमानस का प्रतिनिधित्व करता है। वे कलम और कैमरे दोनों के माध्यम से जीवन को अभिव्यक्त करते हैं। इसीलिए साहित्य अकादेमी उन्हें महत्तर सदस्यता से सम्मानित कर स्वयं को सम्मानित अनुभव कर रही है।

अपने स्वीकृति वक्तव्य में डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि वह समकालीन जीवन की जटिलताओं से निपटने के लिए लोक संस्कृति और बोली की ओर वापस गए। इस प्रकार, उनके लेखन की मूल मिथकीय कल्पना उनके जीवन और लेखन के वैश्विक तथा राष्ट्रीय संदर्भों से अलग नहीं है। लेखन उनके लिए उतना ही स्वाभाविक है जितना श्वास लेना। वे जीवनपर्यंत लेखन करते रहेंगे। उन्होंने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव को इस सम्मान हेतु धन्यवाद दिया।

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि डॉ. कंबार की रचनाओं में सामाजिक सरोकार प्रमुख हैं। वे उत्कृष्ट और सच्चे कलाकार हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज और संस्कृति को समृद्ध किया है।

महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह के पश्चात् 'संवाद' कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड समालोचक एवं साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श के संयोजक डॉ. बसवराज कालगुड़ी ने की। उन्होंने कहा कि डॉ. कंबार ने यथार्थ और कल्पना के बीच की रेखाओं को सहजता से मिलाया है। उनके लेखन का मूल लोकतांत्रिक दृष्टिकोण है। कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं — प्रख्यात कन्नड लेखक एवं नाटककार प्रो. एच.एस. शिवप्रकाश तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. बसवराज कालगुड़ी ने डॉ. कंबार के जीवन, रचनाशीलता और उनके साहित्यिक योगदान को साझा किया।

वेद राही को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

12 दिसंबर 2024, मुंबई



श्री वेद राही को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव तथा साथ में हैं श्री नरेंद्र पाठक

प्रख्यात डोगरी लेखक, विचारक, कवि, निर्देशक और फ़िल्मकार वेद राही को साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता' प्रदान किया गया। स्वास्थ्य संबंधी कारणों से यह संक्षिप्त समारोह उनके ठाणे, मुंबई स्थित आवास पर आयोजित किया गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक तथा सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उत्कीर्ण ताम्रफ़लक भेंट कर उन्हें यह सम्मान प्रदान किया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य नरेंद्र पाठक भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सम्मान प्राप्त करने के पश्चात् वेद राही ने साहित्य अकादेमी को उनके घर आकर यह सम्मान देने के लिए आभार प्रकट किया।

डॉ. माधव कौशिक ने इस अवसर को गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि वेद राही का हिंदी, उर्दू तथा डोगरी में उत्कृष्ट एवं विपुल लेखन आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बना रहेगा।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने प्रशस्ति-पत्र का पाठ करते हुए कहा कि वेद राही बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने कहानी, पटकथा तथा संवाद लेखन में समान रूप से दक्षता दिखाई है और अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

मई 1933 में जन्मे वेद राही का मूल स्थान जम्मू-कश्मीर है। उनका पारिवारिक वातावरण ऐसा था जहाँ

लेखन, प्रकाशन तथा मुद्रण परंपरा की भांति था। इसी कारण वे स्वाभाविक रूप से साहित्य और पत्रकारिता की ओर अग्रसर हुए। वे विगत छह दशकों से उर्दू, डोगरी तथा हिंदी में निरंतर लेखन कर रहे हैं। उन्होंने 25 फ़िल्मों की पटकथा लिखी है तथा 5 का निर्देशन किया है।

उन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें 1983 में डोगरी कहानी-संग्रह 'आले' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार, 1971 में महाराष्ट्र गौरव सम्मान, श्रेष्ठ पटकथा लेखन पुरस्कार, जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी सम्मान, 1992 में दूरदर्शन धारावाहिक 'गुल, गुलशन, गुलफाम' के लिए एप्ट्रॉन श्रेष्ठ निर्देशक सम्मान, 2011 में केन्द्रीय हिंदी संस्थान का महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, 2015 में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार, 2018 में डोगरी कविता के लिए दीनूभाई पंत पुरस्कार तथा 2018 में कुसुमाग्रज राष्ट्रीय साहित्य सम्मान शामिल हैं।

अजीत कौर को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदत्त तथा संवाद कार्यक्रम

18 दिसंबर 2024, नई दिल्ली



श्रीमती अजीत कौर को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी द्वारा 18 दिसंबर 2024 को सायं 5:30 बजे नई दिल्ली स्थित अकादेमी के प्रथम तल सभागार में श्रीमती अजीत कौर को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करने हेतु विशेष समारोह का आयोजन किया गया। यह महत्तर सदस्यता साहित्य के क्षेत्र में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च सम्मान है। स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि श्रीमती अजीत कौर ने अपना जीवन साहित्य को समर्पित कर दिया है, तथा उनकी रचनाओं में जीवन के विविध आयाम समाहित हैं। वे

मूलत: मानवीय चिंतक हैं तथा अकादेमी परिवार में वे सभी के लिए मातृरूप समान हैं।

समारोह में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने श्रीमती अजीत कौर को शॉल तथा उत्कीर्ण ताम्रपत्र भेंट किया। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने पुष्पगुच्छ भेंट किए तथा डॉ. के. श्रीनिवास राव ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया।

श्रीमती अजीत कौर प्रख्यात पंजाबी कथाकार, पत्रकार, अर्थशास्त्री, सांस्कृतिक संरक्षक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने साहित्य एवं समाज दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। 1934 में लाहौर में जन्मी अजीत कौर विभाजन के बाद दिल्ली आ गईं। उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया तथा पत्रकारिता से कार्य-जीवन की शुरुआत करते हुए क्रांतिकारी पंजाबी साहित्य लेखन की दिशा में अग्रसर हुईं। उनके लेखन में जीवन की जटिलताओं को समाहित करने की शक्ति है तथा यह वैश्विक राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के प्रति सजगता प्रकट करता है। उनकी आत्मकथा *खानाबदोश* उनके अत्यंत संवेदनशील लेखन का उदाहरण है।

उनके लिए कहानी जीवन की कठोर सच्चाइयों का चित्रण है, जिसमें अनावश्यक अलंकार या आडंबर नहीं है। यही बात उन्हें उनकी समकालीन महिला लेखिकाओं से अलग करती है। उनके लेखन की यह सादगी और गहराई सआदत हसन मंटो, राजिंदर सिंह बेदी, इस्मत चुगताई और कुलवंत सिंह विरक जैसे साहित्यिक दिग्गजों की परंपरा में उन्हें खड़ा करती है।

उनकी प्रमुख कथा कृतियों में *गुलबानो, बुतशिकन, महक दी मौत, फालतू औरत, सवियां चिरियां, मौत अली बाबे दी, न मारो, अपने-अपने जंगल, नवंबर चौरासी, कसाई वाड़ा, काले खूह,* तथा *नहीं–सानूं कोई तकलीफ नहीं* शामिल हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं - *धुप्प वाला शहर, पोस्टमार्टम* और *गौरी*। उनकी रचनाओं पर देशभर के विश्वविद्यालयों में शोध हुए हैं, उनकी कृतियाँ कई भाषाओं में अनूदित हुई हैं, टेलीफिल्मों और टी.वी. धारावाहिकों में रूपांतरित की गई हैं। उन पर कई वृत्तचित्र भी बनाए गए हैं। दिल्ली की सांस्कृतिक धारा को समृद्ध करने में उनके द्वारा स्थापित एकेडेमी ऑफ़ फाइन आर्ट्स एंड लिटरेचर का विशेष योगदान रहा है। उन्हें पद्मश्री तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया है।

डॉ. माधव कौशिक ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा, "महत्तर सदस्यता प्रदान करना अकादेमी का सबसे महत्त्वपूर्ण और गरिमामय क्षण होता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम किसी ऋषि के ऋण का भुगतान कर रहे हों।" अजीत कौर के विषय में उन्होंने कहा कि वे ऐसी लेखिका हैं जो सभी लेखकों की माँ हैं। उन्होंने केवल भाषाओं को ही नहीं, बल्कि देशों और संस्कृतियों को भी जोड़ा है।

अजीत कौर ने महत्तर सदस्यता स्वीकार करते हुए कहा कि वे साहित्य अकादेमी की अत्यंत आभारी हैं और उन्हें ऐसा लग रहा है मानो आज अकादेमी ने उन्हें पद्म भूषण दे दिया हो। उन्होंने उस क्षण को भी याद किया जब उन्हें आत्मकथा *खानाबदोश* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था।

प्रो. कुमुद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि अकादेमी के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि उसने ऐसी लेखिका को सम्मानित किया जो मानवता का पक्ष लेती हैं, जीवन की कठोर सच्चाइयों और अनुभवों को शब्दों में ढालती हैं तथा पाठकों के दिलों को छू जाती हैं।

महत्तर सदस्यता कार्यक्रम के पश्चात् आयोजित 'संवाद' कार्यक्रम की अध्यक्षता पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने की। उन्होंने अजीत कौर से जुड़ी अपनी अनेक स्मृतियाँ साझा कीं। पंजाबी परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. वनीता ने कहा कि अजीत कौर आज तक की सबसे जीवंत, निर्भीक तथा प्रभावशाली महिला लेखिका हैं, जिन्होंने विश्व स्तर पर महिला विषयों पर ज़ोरदार बहस की है। अभिनेत्री कुलबीर बडेसरों ने कहा कि अजीत कौर की रचनाओं के प्रमुख विषय महिला मुद्दों के अलावा शांति और प्रेम बनाम युद्ध और पर्यावरणीय चेतना भी हैं।

प्राण किशोर कौल को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

27 दिसंबर 2024, पुणे



श्री प्राण किशोर कौल को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा सचिव, साथ में हैं संजय नाहर

साहित्य अकादेमी ने अपने सर्वोच्च सम्मान साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता को प्रख्यात कश्मीरी लेखक, निर्देशक, नाटककार, फ़िल्म निर्माता, प्रसारक तथा चित्रकार श्री प्राण किशोर कौल को 27 दिसंबर 2024 को पूर्वाह्न 11:00 बजे उनके पुणे स्थित निवास पर प्रदान किया। यात्रा संबंधी असुविधा के कारण श्री कौल समारोह में भाग नहीं ले सके, इसलिए अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक तथा सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उनके निवास पर जा कर यह सम्मान प्रदान किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. के. श्रीनिवास राव ने श्री प्राण किशोर कौल के साहित्यिक योगदानों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अन्य महान लेखकों की भाँति उनके लेखन का दायरा भी बहुआयामी है, जिसमें विविध विषयों की अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होंने मंचीय कलाओं के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है तथा उन्हें उन जीवित किंवदंतियों में माना जाता है जिन्होंने 1940 के दशक के अंत में कश्मीर में सांस्कृतिक क्रांति का आरंभ किया।

इसके पश्चात् डॉ. माधव कौशिक ने श्री कौल को उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा शॉल भेंट किए तथा डॉ. के. श्रीनिवास राव ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया।

श्री प्राण किशोर कौल, जो प्रख्यात कश्मीरी लेखक, निर्देशक, नाटककार, फ़िल्म निर्माता, प्रसारक तथा चित्रकार हैं, ने साहित्य और मंचीय कलाओं के क्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका जन्म

1926 में श्रीनगर, कश्मीर के मल्लापोरा, बाना मोहल्ला में मध्यमवर्गीय शिक्षित परिवार में हुआ था। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से 1947 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। नाट्यकला तथा रंगमंच के प्रति उनका आकर्षण मात्र 6-7 वर्ष की आयु में कश्मीरी नाटक *सतेच कहवात* के साथ शुरू हुआ तथा एस.पी. कॉलेज में पढ़ते समय उनका लेखन के प्रति गहरा जुड़ाव हुआ। वहीं से उन्हें प्रसारण में भी प्रवेश मिला।

उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियों में शामिल हैं : *शीन ता वतपोड, शीन, गुल गुलशन गुलफाम, मून ऑफ़ द सैफरन फील्ड्स, जून ज़र्रन ज़रन हेंज, रेडियो कश्मीर एंड माय डेज़ इन ब्रॉडकास्टिंग* तथा *संतोष इन सर्च ऑफ़ ट्रूथ*। कश्मीर में आधुनिक रंगमंच के जनक माने जाने वाले प्राण किशोर कौल ने पारंपरिक नाटकों के साथ-साथ ओपेरा, छाया नाटक तथा संगीतमय नाटकों की विधाओं को भी राज्य में स्थापित किया। रंगमंच के लिए उनके निर्देशित नाटक मंचीय प्रस्तुति की दृष्टि से उपयुक्त सिद्ध हुए। आकाशवाणी में वरिष्ठ निर्माता के रूप में उन्होंने 2000 से अधिक रेडियो नाटकों, वृत्तचित्रों तथा फीचर कार्यक्रमों का निर्माण किया। वे प्रख्यात उपन्यासकार भी हैं। उनका उपन्यास *गुल गुलशन गुलफाम,* जिसे उन्होंने स्वयं दूरदर्शन के लिए रूपांतरित किया, भारतीय टेलीविज़न के इतिहास में मील का पत्थर बन गया। फ़िल्म निर्माण में भी उनका योगदान ऐतिहासिक है — उन्होंने कश्मीरी भाषा की पहली फ़ीचर फ़िल्म *मैन्ज़रात* का निर्देशन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई लोकप्रिय टेलीविज़न धारावाहिकों जैसे- *जुनून, घुटन, नूरजहाँ* आदि में भी योगदान दिया। कुशल चित्रकार के रूप में उन्होंने बहुत कम उम्र में चित्रकला की शुरुआत की तथा इसमें भी विशिष्टता हासिल की। उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें पद्मश्री तथा उनके उपन्यास *शीन ता वतपोड* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार शामिल हैं।

डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि महत्तर सदस्यता प्रदान करना अकादेमी का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम होता है क्योंकि यह साहित्यकारों को दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। यह साहित्य के अमर व्यक्तित्वों को समर्पित होता है। उन्होंने कहा कि प्राण किशोर कौल जैसे महान लेखकों को सम्मानित कर साहित्य अकादेमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है तथा यह किसी ऋषि के ऋण से उऋण होने जैसा है।

श्री प्राण किशोर कौल ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे अकादेमी महत्तर सदस्यता प्राप्त कर अत्यंत सम्मानित तथा भावविभोर महसूस कर रहे हैं। उन्होंने अध्यक्ष तथा सचिव की उनके निवास पर सादर उपस्थिति को विशेष रूप से सराहा।

प्रेमचंद महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

19 नवंबर 2024, नई दिल्ली



प्रो. सफ़िकुन्नबी सामादी को प्रेमचंद महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी ने 19 नवंबर 2024 को नई दिल्ली स्थित अपने सभाकक्ष में प्रेमचंद महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह का आयोजन किया। यह महत्तर सदस्यता भारतीय साहित्य पर शोध करने वाले विद्वानों अथवा भारत के अलावा सार्क क्षेत्र के देशों के रचनात्मक लेखकों को प्रदान की जाती है। इस वर्ष की प्रेमचंद महत्तर सदस्यता बाङ्लादेश के प्रख्यात लेखक प्रो. सफ़िकुन्नबी सामादी को प्रदान की गई। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कार्यक्रम के अतिथियों तथा उपस्थित साहित्य प्रेमियों का स्वागत करते हुए बताया कि प्रो. सामादी चौथे बाङ्लादेशी लेखक हैं जिन्हें यह महत्तर सदस्यता प्रदान की जा रही है। उन्होंने प्रो. सामादी की साहित्यिक यात्रा तथा साहित्य जगत में उनके योगदान पर भी बात की।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने प्रो. सामादी को प्रेमचंद महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया, तत्पश्चात् डॉ. के. श्रीनिवास राव ने प्रो. सफ़िकुन्नबी सामादी पर प्रशस्ति-पत्र पढ़ा।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय साहित्य को अंतरराष्ट्रीय बनाने में मदद करने के लिए प्रो. सामादी को धन्यवाद दिया। उन्होंने विश्व नागरिक के विचार तथा उन्हें विश्व नागरिक बनाने में साहित्य और लेखकों की भूमिका के बारे में बात की और कहा कि उनके विचार में प्रो. सामादी सर्वश्रेष्ठ विश्व नागरिक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व नागरिक की अवधारणा लेखकों द्वारा ही स्थापित की गई थी। अगर लेखक न हों, तो विश्व नागरिकता शहरों से आगे नहीं बढ़ सकती। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य का समापन करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रो. सामादी दोनों देशों, यानी भारत और बाङ्लादेश के बीच एक सार्थक सेतु के रूप में काम करते रहेंगे।

प्रो. सफ़िकुन्नबी सामादी ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के प्रति उन्हें महत्तर सदस्यता प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने बाङ्ला और हिंदी में तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन करने के अपने समय की कहानियाँ सुनाईं, तथा मुंशी प्रेमचंद पर काम करने की अपनी मंशा बताई, जिनसे उनका पहली बार परिचय बाङ्ला के माध्यम से हुआ था। उन्होंने बाङ्लादेश तथा भारत के लोगों को जोड़ने की अपनी मंशा व्यक्त की तथा तमिळ, मलयाळम्, तेलुगु, पंजाबी और हरियाणवी जैसी भारतीय भाषाओं को बाङ्लादेशी जनता से परिचित कराने की आवश्यकता महसूस की। उन्होंने साहित्यिक अनुवाद को संस्कृति के अनुवाद की एक प्रथा तथा लोगों के बीच एक सेतु के रूप में भाषा पर बात की। उन्होंने अपने स्वीकृति वक्तव्य को इस विश्वास के साथ व्यक्त करते हुए समाप्त किया कि अगली पीढ़ी उनके अनुवाद तथा संपर्क के काम को आगे बढ़ाएगी। पुरस्कार अर्पण समारोह का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

साहित्य मंच : श्री मिंडौगस क्विएटकॉस्कस द्वारा "बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक शहर तथा सांस्कृतिक/ऐतिहासिक स्मृतियाँ" विषय पर व्याख्यान

21 मई 2024, नई दिल्ली



स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

साहित्य अकादेमी ने 21 मई 2024 को सायं 5:30 बजे रवींद्र भवन, नई दिल्ली के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर विल्मियस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया के फिलोलॉजी संकाय के डीन एवं लिथुआनिया के पूर्व संस्कृति मंत्री श्री मिंडौगस क्विएटकॉस्कस को पुस्तकें तथा *अंगवस्त्रम* भेंट कर सम्मानित किया गया। उनके साथ पधारी भारत में लिथुआनिया की राजदूत सुश्री दियाना मित्सकेविचेने को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि सभी मानवीय आकांक्षाओं का उद्देश्य एकता हो सकता है, किंतु पृथ्वी पर जीवन, मानव समाज और स्वयं ब्रह्मांड की प्रकृति विविधता पर आधारित है। इस कार्यक्रम के विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विल्मियस सदा से ही बहुसांस्कृतिक रहा है। यह शहर केवल लिथुआनिया का ही नहीं, बल्कि कई अन्य सभ्यताओं के इतिहास का भी हिस्सा रहा है। लिथुआनिया स्वयं कई संस्कृतियों का संगम रहा है। विल्मियस इस बात का उत्तम उदाहरण है कि किस प्रकार बहुसंस्कृतिवाद यूरोप में जीवंत समुदायों को जन्म देता है।

श्री क्विएटकॉस्कस ने 'बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक शहर तथा सांस्कृतिक/ऐतिहासिक स्मृतियाँ' विषय पर अपने व्याख्यान में विशेष रूप से लिथुआनियाई, लैटिन, पोलिश, जर्मन, रोमन और यहूदी संस्कृतियों की चर्चा की, जो विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराओं को जोड़ती हैं। उन्होंने लिथुआनिया के 4 प्रमुख लेखकों के बारे में विस्तार से बताया और यह भी बताया कि उनके साहित्यिक समूहों ने विल्मियस में बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक वातावरण तैयार किया। उन्होंने पावरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से विषय को प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का समापन प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ। अंत में, डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उपस्थित श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कई प्रतिष्ठित लेखक, विद्वान तथा साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

भारत और उज़्बेकिस्तान के लेखकों, कलाकारों और पत्रकारों के बीच संवाद

25 नवंबर 2024, नई दिल्ली



प्रतिभागियों का समूह चित्र

'सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम' के अंतर्गत 25 नवंबर 2024 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में उज़्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान और ताजिकिस्तान के लेखकों, पत्रकारों, विद्वानों और कलाकारों का विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों तथा विद्वानों से परिचय कराया गया।

कार्यक्रम में 9 विदेशी तथा 10 भारतीय लेखकों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने अंगवस्त्रम भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि ऐसे कार्यक्रम विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक एकता की नींव को और मजबूत करते हैं। उन्होंने पहले भी उज़्बेकिस्तान के साथ हुए साहित्यिक आदान-प्रदान का स्मरण किया और बताया कि दोनों देशों में लोक साहित्य की समृद्ध साझा परंपरा है, जिसे आपसी अनुवाद के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है।

सभी आमंत्रित अतिथियों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान की संभावनाओं पर विचार रखे तथा भारतीय और उज़्बेक संस्कृति की समानताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने लाज़गी और कथक की समानताओं का भी उल्लेख किया। भारतीय लेखकों द्वारा पूछे गए उज़्बेक साहित्य की वर्तमान प्रवृत्तियों पर प्रश्न के उत्तर में बताया गया कि वहाँ के लेखक अपनी सांस्कृतिक विरासत को पहचान देने की कोशिशों में लगे हैं। कुछ लेखकों ने अपनी कविताओं का पाठ भी किया।

उज़्बेक प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे : अस्रोर अलायराव, निलोफ़र युरीनोवा, सलीमखान मिर्जायेवा, गौहर मत्याकुबोवा, रिसोलत स्पावा, शखोल नरालियेवा, कहमिदुल्ला ताजिएव, उलुगबेक मक्सुदोव और उत्तकीर अलीमोव। प्रतिनिधिमंडल के साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय हिंदी-अंग्रेज़ी लेखिका शामीनाज़ बानो ने प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में उपस्थित भारतीय लेखक थे - गौरीशंकर रैणा (कश्मीरी), अभय के. (अंग्रेज़ी), एम.के. रैणा (कश्मीरी), रवेल सिंह (पंजाबी), अनामिका (हिंदी), देवेंद्र चौबे (हिंदी), मोहन हिमथाणी (सिंधी), सुकृता पॉल कुमार (अंग्रेज़ी) आदि। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक एवं राजनयिक श्री अमरेंद्र खटुआ ने की।

स्पेन और लैटिन अमेरिका के लेखकों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

29 नवंबर 2024, नई दिल्ली



स्पेन और लैटिन अमेरिका के लेखकों के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव

29 नवंबर 2024 को साहित्य अकादेमी में 'सांस्कृतिक आदान-प्रदान' कार्यक्रम के अंतर्गत स्पेन और लैटिन अमेरिका देशों के 6 लेखकों का दिल्ली में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों एवं विद्वानों से परिचय कराया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने सभी अतिथियों का अंगवस्त्रम देकर स्वागत किया। उन्होंने साहित्यिक आदान-प्रदान को साझा विचारों और दर्शन को प्रोत्साहित करने वाला माध्यम बताया और कहा कि ऐसे कार्यक्रम दोनों संस्कृतियों को समृद्ध करते हैं, वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देते हैं तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों की नींव मज़बूत करते हैं।

इस भावना की पुष्टि प्रो. ऑस्कर पुजोल ने भी की, जो कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने नई दिल्ली स्थित इंस्टीटूटो सेर्वांतेस और साहित्य अकादेमी के लंबे संबंधों की चर्चा की, जिससे दोनों देशों के बीच साहित्यिक सहयोग बढ़ा है। उन्होंने यह भी कहा कि स्पेनिश से सीधे भारतीय भाषाओं में अनुवाद के प्रयास, बिना अंग्रेज़ी को मध्यस्थ बनाए, संस्कृतियों को जोड़ने में अहम भूमिका निभा रहे हैं और इससे नए अनुवादक भी तैयार हो रहे हैं।

स्पेनिश प्रतिनिधिमंडल में स्पेन की 4 में से 3 भाषाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे, साथ ही एक स्वदेशी मैक्सिकन भाषा का प्रतिनिधित्व भी हुआ। श्री डेविड पुज, डोमिनिकन गणराज्य के राजदूत, ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

प्रो. शुभ्र मजूमदार ने स्पेनिश-लैटिन अमेरिका के लेखकों का परिचय दिया। इसके बाद माइकेस सांचेज (ज़ोके), तेरे इरास्तोरत्ज़ा (बास्क), देनिस एस्पान्योल (स्पेनिश), जुआन कार्लोस मिस्त्रे (स्पेनिश) तथा एडुआर्ड एसकोफेट (कैटलन) ने अपनी कविताएँ पढ़ीं। उनके पाठ के बाद प्रो. शुभ्र बंद्योपाध्याय ने उनकी अंग्रेज़ी में अनूदित कविताएँ पढ़ीं।

भारतीय लेखकों में शामिल थे - श्री मधुकर उपाध्याय (हिंदी), सुश्री विभा मौर्य (हिंदी), सुश्री हुमा कुरैशी (उर्दू), सुश्री रक्षंदा जलील (उर्दू), श्री अमरेंद्र खटुआ (अंग्रेज़ी), श्री सुरेश रैणा (कश्मीरी), सुश्री सुजाता चौधरी (ओड़िआ), श्री मुकुल कुमार (अंग्रेज़ी), श्री मोहन हिमथाणी (सिंधी), सुश्री वनीता (पंजाबी), श्री अभय के. (अंग्रेज़ी) और मुश्री रिंकल शर्मा (हिंदी) आदि।

साहित्य अकादेमी में लिथुआनियाई लेखक का कहानी-पाठ

31 जनवरी 2025



स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

31 जनवरी 2025 को साहित्य अकादेमी ने भारत में लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास के सहयोग से साहित्यिक संध्या का आयोजन किया, जिसमें प्रसिद्ध लिथुआनियाई लेखक, दार्शनिक और साहित्य आलोचक यारोस्लावास मेलनिकस ने अपने कहानी-संकलन द *लास्ट डे* से कहानी का पाठ किया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत में लिथुआनियाई दूतावास की माननीय राजदूत दियाना मित्सकेविचेने ने की।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने सभी का स्वागत अंगवस्त्रम और अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा, "सभी लेखक हमारे जीवन और हमारे आस-पास के वातावरण के बीच संबंध को समझने का प्रयास करते हैं। इस प्रक्रिया में हर लेखक उसे अलग-अलग दृष्टिकोण से देखता और लिखता है। यारोस्लावास मेलनिकस, दार्शनिक और चिंतक होने के नाते, मानव अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों को उठाते रहे हैं और उन्होंने तकनीकी विकास से आधुनिक समाज में आए परिवर्तनों को गहराई से महसूस कर लिखा है। वे इस परिवर्तन के हमारे नैतिक आचरण पर पड़ने वाले प्रभावों की भी पड़ताल करते हैं।"

माननीय राजदूत दिया मित्सकेविचेने ने साहित्य अकादेमी का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनका प्रयास रहेगा कि भविष्य में भी लिथुआनियाई साहित्य का अनुवाद भारत में हो और भारतीय साहित्य का अनुवाद लिथुआनियाई भाषा में किया जाए।

यारोस्लावास मेलनिकस ने अपने परिचय में बताया कि उनकी अब तक 15 पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनका अंग्रेज़ी, जर्मन और फ्रेंच में अनुवाद हो चुका है। हाल ही में उनकी कहानी पर आधारित एक फ़ीचर फ़िल्म भी वहाँ प्रदर्शित की गई है। इसके बाद उन्होंने अपनी कहानी

का एक अंश लिथुआनियाई भाषा में पढ़ा, जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद माननीय राजदूत द्वारा प्रस्तुत किया गया। फिर रेखा सेठी ने हिंदी में इस कहानी का पूरा अनुवाद 'क्या तुम मुझे माफ़ कर दोगे' शीर्षक से प्रस्तुत किया।

यह कहानी एक व्यक्ति द्वारा अपने घर में रात को अचानक घुसे एक नकाबपोश को गोली मारने और फिर मृतक व उसके परिवार के भावनात्मक परिवर्तनों पर आधारित थी। मानवीय भावनाओं की मार्मिक प्रस्तुति ने इस कहानी को विशिष्ट बना दिया। अंत में पाठकों ने लेखक से कहानी से संबंधित कई प्रश्न भी पूछे।

भारत-रूस लेखक सम्मिलन

4 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली



भारत-रूसी लेखकों के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी ने 4 फ़रवरी 2025 को भारत में रूसी संघ के दूतावास और रूसी भवन, नई दिल्ली के सहयोग से *भारत-रूस लेखक सम्मिलन* का आयोजन किया। इस सम्मिलन में "अनुवाद की कला : निष्ठा बनाम रचनात्मकता" विषय पर चर्चा हुई। रूस की ओर से भाग लेने वालों में सेर्गेई शारगुनोव, दिमित्री बाक, वासिली नात्सिनटोफ और अन्ना शिपिलोवा शामिल थे, जबकि भारत की ओर से हेम चंद्र पांडेय, पंकज मालवीय, रंजना सक्सेना, रंजना बनर्जी, किरण सिंह वर्मा और सोनू सैनी उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में कहा, "इस सम्मिलन के माध्यम से हम अनुवाद की क्षमताओं और सीमाओं पर चर्चा कर सकेंगे।" उन्होंने अनुवाद में सांस्कृतिक वातावरण की प्रस्तुति को चुनौतीपूर्ण बताते हुए कहा, "रचनात्मक अनुवाद के लिए अनुवादक को कुछ स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ताकि वह अनुवाद के साथ न्याय कर सके।" साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा, "आज का दिन भारत और रूस के लेखकों और अनुवादकों के लिए ऐतिहासिक है। आज हम अपने संबंधों के स्वर्णिम दिनों को याद करते हुए एक नई नींव रख सकते हैं, जिसमें हमारे लेखक केंद्र में होंगे।" उन्होंने कहा कि अनुवाद ने हमें पाषाण युग से अंतरिक्ष युग तक पहुँचाया है और आज की आवश्यकता है कि नई पीढ़ी को भी अनुवाद से जोड़ा जाए ताकि समकालीन लेखकों के कार्यों का अनुवाद हो सके।

इस अवसर पर विशेष अतिथि यूलिया अरायेवा, रूसी दूतावास की काउंसलर ने कहा कि रूस की भी भारत की तरह पुरानी कथाओं की परंपरा है। उन्होंने कहा कि अब केवल कालजयी ही नहीं बल्कि आधुनिक साहित्य का अनुवाद भी प्राथमिकता होना चाहिए। एक अन्य विशिष्ट अतिथि एलेना रेमिज़ोवा, रूसी भवन की निदेशक ने कहा कि एक-दूसरे के देश को समझने के लिए साहित्यिक कृतियों का अनुवाद आवश्यक है और इसके लिए वहाँ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना भी ज़रूरी है। इसके बाद भारतीय और रूसी लेखकों एवं अनुवादकों ने अनुवाद की दीर्घ प्रक्रिया पर विचार व्यक्त किए। रूस से आए कवि एवं अनुवादक अनिल जनविजय ने भी अपने विचार साझा किए। सभी का मत था कि समकालीन लेखकों की रचनाओं का भी अनुवाद होना चाहिए और इसके लिए नई पीढ़ी के अनुवादकों को तैयार करना आवश्यक है। सभी ने यह भी माना कि कविता का अनुवाद कठिन कार्य है और इसमें अत्यधिक सावधानी एवं संतुलन की आवश्यकता होती है।

पोलैंड की दानुता स्तासिक का व्याख्यान

6 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली



डॉ. दानुता स्तासिक के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

6 फ़रवरी 2025 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में 'सांस्कृतिक आदान-प्रदान' कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित *साहित्य मंच* में पोलैंड के वारसा विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई अध्ययन संकाय की ओरिएंटल स्टडीज विभाग की प्रमुख डॉ. दानुता स्तासिक ने हिंदी शिक्षण और अनुवाद से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने अपने विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे महत्त्वपूर्ण कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कुँवर नारायण की कविताओं और निबंधों के पोलिश अनुवाद और भारत यात्रा पर भी चर्चा की। साथ ही *रामायण* पर किए जा रहे अपने कार्यों की जानकारी भी दी।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उन्हें अंगवस्त्र तथा अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित श्रोताओं ने दनुता स्तासिक से हिंदी साहित्य के अनुवाद और पोलिश साहित्य से जुड़े प्रश्न पूछे।

ईरानी प्रकाशकों के प्रतिनिधिमंडल का साहित्य अकादेमी दौरा

7 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली



ईरान के प्रकाशकों के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

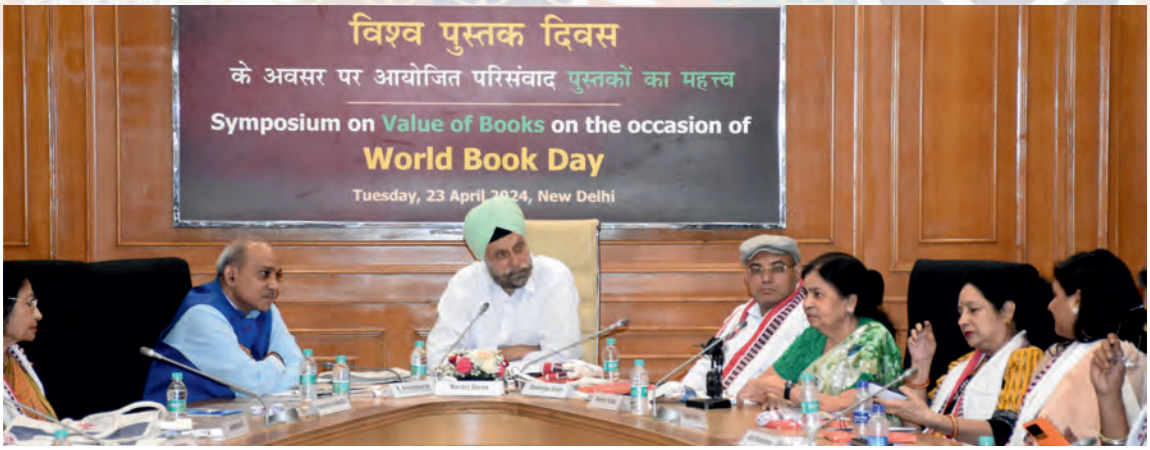
7 फ़रवरी 2025 को ईरानी प्रकाशकों का एक प्रतिनिधिमंडल नई दिल्ली स्थित साहित्य अकादेमी के मुख्यालय पधारा। इस दौरे का उद्देश्य फ़ारसी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद प्रक्रिया को सरल और तेज़ बनाना था। इस प्रतिनिधिमंडल में ईरान बुक एंड लिटरेचर हाउस के प्रबंध निदेशक श्री इब्राहीम सब्ज़ेह, अंतरराष्ट्रीय विभाग के प्रमुख श्री हुसैनअली सब्ज़ेह, ग्रीन पाम पब्लिकेशन के प्रबंध निदेशक हुसैन बहरामी तथा ईरान कल्चर सेंटर के कुछ अधिकारी शामिल थे।

सभी प्रतिनिधियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने किया। उन्होंने सुझाव दिया कि भारत और ईरान के बच्चों और युवाओं के साहित्य का परस्पर अनुवाद करके नई पीढ़ी के बीच गहरा जुड़ाव स्थापित किया जा सकता है। इस अवसर पर केवल अनुवाद ही नहीं, बल्कि दोनों देशों के साहित्य को सामान्य पाठकों तक पहुँचाने के लिए प्रकाशन और वितरण के उपायों पर भी चर्चा हुई। प्रतिनिधिमंडल ने भारत और ईरान के बीच प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों को स्मरण किया और इन्हें और अधिक सुदृढ़ करने की बात कही। उन्होंने साहित्य अकादेमी के 'किताब घर' का भी दौरा किया और वहाँ प्रदर्शित पुस्तकों तथा भारतीय साहित्यकारों पर बनी डॉक्यूमेंट्री फ़िल्मों में गहरी रुचि दिखाई।

कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम

विश्व पुस्तक दिवस पर पुस्तकों के महत्त्व पर परिसंवाद

23 अप्रैल 2024, नई दिल्ली



परिसंवाद की अध्यक्षता करते हुए श्री नवतेज सरना

23 अप्रैल 2024 को विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा 'पुस्तकों का महत्त्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता नवतेज सरना ने की। परिसंवाद में सुश्री अदिति महेश्वरी, श्री धनंजय सिंह, सुश्री इरा टाक, श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा, मेजर श्री अखिल प्रताप, सुश्री मौलिश्री, श्री संजय श्रोत्रिय, सुश्री शालीना चतुर्वेदी, सुश्री स्मिता सहगल, सुश्री सुजाता शिवेन, सुश्री सुमित्रा गुहा तथा सुश्री सुपर्णा देव ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने सभी का स्वागत अंगवस्त्र तथा अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि पुस्तकें हमारे जीवन का हिस्सा हैं और यह हमें एक नई दुनिया का विकल्प प्रस्तुत करती हैं। साहित्य अकादेमी अपने प्रकाशन के उत्तरदायित्वों को और अधिक परिष्कृत और सशक्त करती रहेगी।

प्रकाशक सुश्री अदिति महेश्वरी ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कारण हमारे देश में लेखन की विविधता सर्वोच्च है। उन्होंने विश्व पुस्तक मेलों के अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को पढ़ने की इच्छा विदेशों में तीव्रता से बढ़ी है। श्री धनंजय सिंह ने कहा कि पुस्तकें हमारे व्यक्तित्व को बदलती हैं और समय की सीमाओं को पार करती हैं। उन्होंने मांडूक्य उपनिषद् का उदाहरण देते हुए कहा कि शब्द दीपक के समान होते हैं और इन्हीं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को समझा जा सकता है। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका का भी उल्लेख किया।

श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा ने कहा कि पुस्तकें समाज को लिखे गए पत्र हैं, जिनमें सच्चाइयों की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य किसी दरिद्र को राजा बना सकता है और व्यक्ति को निडर और साहसी बनाता है। मेजर अखिल प्रताप ने कहा कि कोई भी तकनीक हमें पुस्तकों को छूने का जो सुख देती है, उसकी बराबरी नहीं कर सकती, इसलिए पुस्तकों का महत्त्व कभी कम नहीं होगा। उन्होंने

सुझाव दिया कि भारतीय सिनेमा को विभिन्न पुस्तकों की कहानियों को अपनाना चाहिए।

कथक नृत्यांगना सुश्री शालीना चतुर्वेदी ने कहा कि कथक हमारे लिए कथा कहने का माध्यम है। उन्होंने भरतमुनि द्वारा रचित *नाट्यशास्त्र* की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसमें हमारी संस्कृति के सभी प्रयासों का लेखा-जोखा दर्ज है। कवयित्री सुश्री स्मिता सहगल ने कहा कि पुस्तकें हमारे अतीत को सँजोती हैं और हमें विश्व की अनिश्चितताओं से जूझने के लिए तैयार करती हैं। अनुवादक श्रीमती सुजाता शिवेन ने कहा कि पुस्तकें हमारी भाषा को परिष्कृत करती हैं और हमारे विचारों को बदलती हैं। शास्त्रीय गायिका सुश्री सुमित्रा गुहा ने कहा कि संगीत साहित्य का विस्तार है और हमें पुस्तकों की विरासत अगली पीढ़ी को सौंपनी चाहिए। भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी सुश्री सुपर्णा देव ने कहा कि पुस्तकें हमें जीवन जीने की कला सिखाती हैं और इनके माध्यम से हम कई बुराइयों से उबर सकते हैं। हमारी सभ्यता पुस्तकों में जीवित है और यह हमें भविष्य का मार्ग दिखाती है।

अंत में परिसंवाद के अध्यक्ष, पूर्व राजनयिक और लेखक श्री नवतेज सरना ने कहा कि सभ्यता और संस्कृति का निर्माण पुस्तकालयों में होता है। इसलिए पुस्तकों को बचाने के लिए हमें संगठित प्रयास करने होंगे। यह कार्य केवल साहित्य अकादेमी का नहीं है। उन्होंने सुझाव दिया कि पुस्तकों के घर लाए जाने को उत्सव की भाँति मनाया जाना चाहिए, पुस्तकालयों की गिरती स्थिति पर ध्यान देना होगा और पूरे देश के लिए एक पुस्तकालय कानून बनाया जाना चाहिए, जिससे बजट की समस्या न आए।

साहित्य अकादेमी को श्रेष्ठ वृत्तचित्र पुरस्कार

27 अप्रैल 2024, इंफ़ाल, मणिपुर



पुरस्कार प्राप्त हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

27 अप्रैल 2024 को इंफ़ाल में आयोजित भव्य समारोह में 15वां मणिपुर राज्य फ़िल्म पुरस्कार प्रदान किया गया, जिसमें साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव को "ख. प्रकाश सिंह" पर बने अकादेमी के वृत्तचित्र के लिए पुरस्कार माननीय राज्यपाल श्रीमती अनुसूइया उइके से प्राप्त हुआ, जो इस समारोह की मुख्य अतिथि थीं। साहित्य अकादेमी को "सर्वश्रेष्ठ जीवनी/कला एवं संस्कृति फ़िल्म" श्रेणी में यह पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस प्रस्तुति समारोह की अध्यक्षता मणिपुर सरकार के मुख्य सचिव डॉ. विनीत जोशी, आई.ए.एस. ने की।

20वीं सदी के प्रतिष्ठित मणिपुरी लेखक ख. प्रकाश सिंह पर बनी इस फ़िल्म का निर्देशन मणिपुर के प्रसिद्ध

लेखक, फ़िल्म निर्देशक और विद्वान श्री अरिबम शर्मा ने किया, जिन्हें "सर्वश्रेष्ठ निर्देशक" का पुरस्कार मिला। साथ ही, श्रीमती चोङथम कमला को "सर्वश्रेष्ठ वॉयस ओवर" का पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

साहित्य अकादेमी ने अब तक भारत के प्रतिष्ठित लेखकों, कवियों और विद्वानों पर 172 वृत्तचित्र तैयार किए हैं, जो इसकी आर्काइव परियोजना के अंतर्गत बनाई गई हैं। यह पहली बार था, जब किसी लेखक पर बने साहित्य अकादेमी के वृत्तचित्र को राज्य स्तर का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

ब्रिक्स साहित्यिक सम्मेलन

11 से 14 सितंबर 2024, कज़ान, रूस



ब्रिक्स साहित्य मंच में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष और सचिव

ब्रिक्स साहित्य मंच 2024 का आयोजन 11 सितंबर 2024 को रूस के कज़ान शहर में हुआ। इसका उद्घाटन कज़ान के महापौर श्री इल्सुर मेतशिन ने किया। इस वर्ष के सम्मेलन का विषय था —*नई वास्तविकता में विश्व साहित्य : परंपराओं, राष्ट्रीय मूल्यों और संस्कृतियों का संवाद*।

यह सम्मेलन ब्रिक्स देशों के लेखकों, कवियों, दार्शनिकों, कलाकारों तथा विद्वानों का संगम बना। भारत की ओर से साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक तथा सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में डॉ. माधव कौशिक ने आज के समय में साहित्य की भूमिका पर प्रकाश डाला और बताया कि साहित्य किस प्रकार विभिन्न समाजों के बीच एकता और सहयोग को बढ़ावा देता है।

'भारत के लेखकों से भेंट' विषयक कार्यक्रम में, जिसका विषय था - *वोल्गा से गंगा तक : परंपरा और बहुसांस्कृतिकता का उत्सव,* डॉ. के. श्रीनिवास राव ने नदी-आधारित संस्कृतियों की चर्चा की और बताया कि यह संस्कृतियाँ बहुसांस्कृतिकता को बढ़ावा देती हैं, जिससे सामाजिक प्रगति होती है। डॉ. माधव कौशिक ने भारत और रूस की पारंपरिक साहित्यिक विरासत को अनेक सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध बताया।

दूसरे दिन साहित्य मंच का आयोजन हुआ जिसमें डॉ. के. श्रीनिवास राव और अनास्तासिया स्ट्रोकीना ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर डॉ. माधव कौशिक की हिंदी कविता पुस्तक का रूसी अनुवाद प्रो. सोनू सैनी द्वारा प्रस्तुत किया गया, जो भारत से ऑनलाइन जुड़े।

'अनुवाद का उत्तरदायित्व किसका है?' विषयक गोलमेज चर्चा में कई विद्वानों ने भाग लिया। 13 सितंबर को "साहित्यिक ब्रिक्स का भविष्य" कार्यक्रम में डॉ. के. श्रीनिवास राव ने साहित्य की एकीकृत प्रकृति की चर्चा की और ब्रिक्स देशों में नियमित साहित्यिक सम्मेलनों के आयोजन का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि इन भाषाओं के बीच अनुवादों में वृद्धि से परस्पर संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बल मिलेगा।

"इंटरनेट युग में पुस्तक मेलों पर चर्चा" कार्यक्रम में उन्होंने डिजिटल युग में पुस्तक मेलों के लाभ बताए तथा भारत एवं विश्व के प्रमुख पुस्तक मेलों नई दिल्ली,

फ्रैंकफर्ट, शारजाह, ग्वादलहारा — का उदाहरण प्रस्तुत किया। चर्चा में भाग लेने वालों ने विचार साझा करने की इस खुली प्रक्रिया की सराहना की और कहा कि इससे सभी देशों के साहित्यिक समुदाय का विकास संभव होगा। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों ने ब्रिक्स देशों के बीच और अधिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान की आशा जताई।

फ्रैंकफर्ट अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी

16–20 अक्तूबर 2024, फ्रैंकफर्ट, जर्मनी



भारतीय लेखकों के प्रतिनिधिमंडल के साथ साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी ने 16 से 20 अक्तूबर 2024 के बीच जर्मनी के फ्रैंकफर्ट में आयोजित 75वें फ्रैंकफर्ट अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। 'फ्रैंकफर्टर बुख़मेस्से' विश्व का सबसे बड़ा पुस्तक व्यापार मेला है, जो विश्व भर के प्रमुख प्रकाशकों और लेखकों को एक मंच पर लाता है। इस संस्करण में साहित्य अकादेमी ने अपने 100 प्रकाशनों का प्रदर्शन किया और विश्व के प्रतिष्ठित प्रकाशकों के साथ अनुवाद अनुमति के आदान-प्रदान पर कार्य किया। यह प्रयास भारत के बाहर भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने की अकादेमी की प्रतिबद्धता का हिस्सा था। पेशेवर प्रकाशन गतिविधियों के अतिरिक्त, साहित्य अकादेमी ने मेले के दौरान तीन साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया। 16 अक्तूबर 2024 को "भारत की साहित्यिक विरासत" विषय पर पैनल चर्चा आयोजित हुई, जिसमें प्रख्यात भारतीय लेखकों एवं विद्वानों यथा - प्रख्यात कवि एवं गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद के निदेशक और प्रोफ़ेसर बद्री नारायण, आईसीएसएसआर के सदस्य-सचिव प्रो.धनंजय सिंह और प्रख्यात मराठी लेखक और विद्वान श्री विश्वास पाटिल ने भाग लिया। 16 अक्तूबर की शाम को श्री विश्वास पाटिल के साथ "लेखक से भेंट" कार्यक्रम हुआ। 17 अक्तूबर को प्रो. बद्री नारायण के साथ "लेखक से भेंट" कार्यक्रम आयोजित हुआ। दोनों कार्यक्रमों का संचालन साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने किया। डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि जब भी अकादेमी इस मेले में भाग लेती है, वह भारतीय लेखकों के प्रतिनिधिमंडल को भी साथ भेजती है, जिससे उन्हें

विश्व साहित्य का प्रत्यक्ष अनुभव मिल सके और वे विभिन्न देशों के साहित्यिक मनीषियों से संवाद कर सकें।

प्रथम बोडोलैंड महोत्सव

16 नवंबर 2024, नई दिल्ली



साहित्य अकादेमी के पुस्तक स्टॉल पर
भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

प्रथम बोडोलैंड महोत्सव का उद्घाटन भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 16 नवंबर 2024 को एस.ए.आई. इंदिरा गाँधी स्टेडियम, नई दिल्ली में किया।

महोत्सव के दौरान उन्होंने साहित्य अकादेमी के पुस्तक स्टॉल का भी दौरा किया। यह द्वि-दिवसीय महोत्सव बोडो संस्कृति, भाषा और साहित्य की विरासत को प्रदर्शनी और विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से दर्शाने के लिए आयोजित किया गया था। यह महोत्सव "समृद्ध भारत के लिए शांति और सौहार्द" को समर्पित था तथा इसमें 5000 से अधिक बोडो प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही।

बोडो भाषा उन भाषाओं में से एक है, जिन्हें साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त है। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में बोडो भाषा के शामिल होने के बाद, अकादेमी ने 2010 से साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अनुवाद पुरस्कार तथा बाल साहित्य पुरस्कार, एवं 2011 से युवा पुरस्कार प्रदान करना शुरू किया है।

इसके अलावा, अकादेमी बोडो भाषा में नियमित रूप से पुस्तकें प्रकाशित कर रही है तथा क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन भी कर रही है।

साहित्य अकादेमी का 'पुस्तकायन'

6-15 दिसंबर 2024

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने परिसर में आयोजित वार्षिक पुस्तक मेले 'पुस्तकायन' के तीसरे संस्करण का उद्घाटन 6 दिसंबर 2024 को प्रख्यात लेखक एवं अमेरिका में भारत के पूर्व राजदूत श्री नवतेज सरना द्वारा किया गया। यह पहल विशेष रूप से बच्चों और युवाओं को अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करने हेतु की गई है।

उद्घाटन वक्तव्य में श्री नवतेज सरना ने कहा कि साहित्य अकादेमी भारतीय साहित्य का हृदय है, जो 24 भारतीय भाषाओं में साहित्य को बढ़ावा देकर 'विविधता में एकता' को प्रतिबिंबित करती है। उन्होंने कहा, "पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी मित्र हैं, और अच्छे मित्रों की भांति वे हमें एक बेहतर नागरिक बनने की दिशा में ले जाती हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे इंटरनेट, मोबाइल आदि से मिलने वाली जानकारी की गुणवत्ता और उपयोगिता को परखना आवश्यक है। उन्होंने विशेष रूप से बच्चों से आग्रह किया कि वे ज्ञानवर्धन और मन की शांति के लिए पुस्तकों का अध्ययन करें।

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की अतिरिक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, श्रीमती रंजना चोपड़ा ने अल्प समय में 'पुस्तकायन' के माध्यम से क्षेत्रीय साहित्य के प्रचार-प्रसार में साहित्य अकादेमी के प्रयासों की सराहना की।



(बाएँ से दाएँ) श्रीमती उमा नंदूरी, श्रीमती रंजना चोपड़ा, डॉ. कुमुद शर्मा, डॉ. माधव कौशिक, श्री नवतेज सरना, डॉ. के. श्रीनिवास राव

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम ने बच्चों और युवाओं को मुद्रण माध्यम के प्रति आकर्षित किया है। उन्होंने कहा कि यदि क्षेत्रीय साहित्य आज जीवंत है, तो उसका श्रेय साहित्य अकादेमी को जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि बच्चों को प्रिंट माध्यम से जोड़ना आवश्यक है ताकि वे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार हो सकें।

संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव श्रीमती उमा नंदूरी ने कहा कि 'पुस्तकायन' की बढ़ती लोकप्रियता यह दर्शाती है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में पुस्तकों के पठन-पाठन की संस्कृति फिर से जीवंत हो रही है। उन्होंने बच्चों से अपील की कि वे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम पर निर्भर होने के स्थान पर पुस्तकों की ओर रुझान बढ़ाएँ जो उन्हें अधिक बुद्धिमान और संतुलित बनाएँगी। उन्होंने मंत्रालय द्वारा आगामी 25 वर्षों के लिए की जा रही पहलों पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि 'पुस्तकायन' की विशिष्टता यह है कि यह लेखकों, पाठकों, प्रकाशकों तथा समीक्षकों को एक ही मंच पर एकत्र करता है। उन्होंने नई पीढ़ी को सलाह दी कि वे तकनीक को साधन के रूप में उपयोग करें, उसका गुलाम न बनें। उन्होंने पुस्तक मेलों को आधुनिक ज्ञान मंदिर कहा।

इससे पूर्व साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि पुस्तकें ज्ञान और समझ के क्षितिज को व्यापक बनाती हैं।

धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि सोशल मीडिया केवल जानकारी देता है, ज्ञान नहीं। उन्होंने कहा कि समय के साथ चलना ज़रूरी है, परंतु अतीत से जुड़े रहना और बेहतर भविष्य की योजना बनाना भी उतना ही आवश्यक है तथा इस प्रयास में पुस्तकों की भूमिका सर्वोपरि है।

विष्णुकांत शास्त्री रचना संचयन पुस्तक विमोचन

10 दिसंबर 2024, नई दिल्ली



(बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवास राव, डॉ. माधव कौशिक, श्री धर्मेंद्र प्रधान, श्री अरुणीश चावला, डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी तथा प्रो. कुमुद शर्मा

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित *विष्णुकांत शास्त्री रचना संचयन,* जिसका संकलन और संपादन डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने किया है, का विमोचन भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा 10 दिसंबर 2024 को नई दिल्ली स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय, तीन मूर्ति मार्ग में एक भव्य समारोह में किया गया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने मंच पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने अपने स्वागत वक्तव्य में श्री धर्मेंद्र प्रधान की गरिमामयी उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी उपस्थिति साहित्य के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है। उन्होंने बताया कि विष्णुकांत शास्त्री प्रख्यात लेखक, चिंतक, वक्ता एवं कुशल राजनीतिज्ञ थे, जिनका भारतीय साहित्य में अमूल्य योगदान रहा।

डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने विष्णुकांत शास्त्री के कृतित्व पर चर्चा करते हुए अपने सम्मान और कृतज्ञता को प्रकट किया। उन्होंने शास्त्री जी के हिंदी साहित्य पर प्रभाव, उनके अभिव्यक्ति के ढंग, देशभक्ति और परंपराओं के गौरव पर आधारित काव्य को रेखांकित किया। उन्होंने शास्त्री जी की रचनाओं से कुछ छंद भी पढ़ कर सुनाए।

डॉ. माधव कौशिक ने अपने संबोधन में कहा कि साहित्य अकादेमी ने ऐसी रचनाओं की शृंखला प्रकाशित की है, जो उन लेखकों पर आधारित हैं, जिन्होंने भारतीय साहित्य की आत्मा को वास्तव में समझा है। ये संग्रह केवल हिंदी में ही नहीं बल्कि अकादेमी की समस्त 24 भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशित किए जा रहे हैं।

माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने विष्णुकांत शास्त्री के जीवन और उनके राजनीतिक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पुस्तक जीवन की चुनौतियों का समाधान खोजने का माध्यम बन सकती है। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी सच्चे राष्ट्रभक्त और प्रभावशाली नेता थे।

उन्होंने यह भी कहा कि आज का यह पुस्तक विमोचन कार्यक्रम केवल एक पुस्तक का विमोचन नहीं है, बल्कि यह एक नई प्रवृत्ति की पावन शुरुआत है।

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए कहा कि शास्त्री जी की विचारधारा, जो उनकी साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्त होती है, देश पर स्थायी प्रभाव छोड़ती है। उन्होंने कहा कि शास्त्री जी ने उस संस्कृति की खोज में अपना जीवन समर्पित किया जिसे वे खोया हुआ मानते थे।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक *विष्णुकांत शास्त्री रचना संचयन* का औपचारिक विमोचन भी किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा महाकवि भारती की पुस्तक का विमोचन

11 दिसंबर 2024, नई दिल्ली



पुस्तक विमोचन समारोह में भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ अन्य गणमान्य अतिथिगण

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती की जयंती पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी समग्र कृतियों के अंतिम पाँच खंडों का विमोचन प्रधानमंत्री निवास पर आयोजित गरिमामय समारोह में किया। *काला वरिसयिल भारती पड़ैप्पुगल* शीर्षक से कालानुक्रम में प्रकाशित इन 23 खंडों का संकलन और संपादन श्री सीनी विश्वनाथन ने किया है, जो इस अवसर पर उपस्थित थे। इस पुस्तक विमोचन समारोह का आयोजन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा साहित्य अकादेमी के सहयोग से किया गया। विमोचन से पूर्व माननीय प्रधानमंत्री को इन खंडों के विषय में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

इस अवसर पर माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री इंद्रजीत सिंह, माननीय संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन, संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री अरुणीश चावला सहित अन्य अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक श्री श्रीनिवासन उपस्थित थे। विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखक भी समारोह में शामिल हुए। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में सीनी विश्वनाथन के 6 दशकों के कार्य की सराहना की और कहा कि उनका कार्य साहित्यिक जगत के लिए एक मानक सिद्ध होगा।

विविधता का अमृत महोत्सव

6-9 मार्च 2025, नई दिल्ली



साहित्य अकादेमी पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने 5 मार्च 2025 को राष्ट्रपति भवन में 'विविधता का अमृत महोत्सव' के दूसरे संस्करण का उद्घाटन किया। यह वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है जो भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत का उत्सव मनाता है और विभिन्न क्षेत्रों की अनूठी परंपराओं को प्रदर्शित करता है। इस वर्ष महोत्सव ने कर्नाटक, केरल, तमिळनाडु, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश सहित पाँच राज्यों तथा 2 केंद्र शासित प्रदेशों लक्षद्वीप और पुदुचेरी की जीवंत सांस्कृतिक विरासत को जानने का उत्तम अवसर प्रदान किया। राष्ट्रपति ने अपने वक्तव्य में प्रसन्नता व्यक्त की कि लगभग 500 कारीगर और बुनकर इस महोत्सव में भाग ले रहे हैं।

चार दिवसीय महोत्सव के दौरान राष्ट्रपति ने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित दक्षिण भारतीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियों तथा उनके हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवादों की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने उन्हें प्रदर्शनी के बारे में विस्तार से जानकारी दी। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत तथा वस्त्र मंत्री श्री गिरिराज सिंह भी उपस्थित थे। यह उत्सव 6 से 9 मार्च तक प्रतिदिन पूर्वाह्न 10:00 बजे से सायं 8:00 बजे तक आम जनता के लिए खुला था।

क्षितिज से परे : अखिल भारतीय लेखक उत्सव

27-28 मार्च 2025, अंडमान



प्रतिभागियों का समूह चित्र

साहित्य अकादेमी ने अंडमान और निकोबार प्रशासन के कला एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से 'क्षितिज से परे : अखिल भारतीय लेखक उत्सव' का आयोजन 27-28 मार्च 2025 को श्री विजयपुरम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में किया। इस महोत्सव का उद्घाटन माननीय उपराज्यपाल एवं द्वीप विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष, एडमिरल डी.के. जोशी (सेवानिवृत्त), पीवीएसएम, एवीएसएम, वायएसएम, एनएम, वीएसएम ने किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि प्रकृति की सुंदरता सदा लेखकों और कवियों को प्रेरणा देती है और अंडमान-निकोबार की प्राकृतिक संपदा निश्चित रूप से यहाँ आने वाले हज़ारों रचनाकारों को प्रेरित करेगी। उन्होंने यह भी बताया कि यह श्री विजयपुरम में अकादेमी का चौथा लेखक उत्सव है तथा अंडमान की विविधता में एकता की भावना की प्रशंसा की।

मुख्य सचिव डॉ. चंद्र भूषण कुमार ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि यह लेखक उत्सव अंडमान द्वीपों में साहित्यिक गतिविधियों की शुरुआत है तथा इसके पश्चात् पुस्तक मेले का आयोजन भी किया जाएगा। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि माननीय उपराज्यपाल की इच्छा है कि इस उत्सव को प्रशासन की वार्षिक गतिविधियों में शामिल किया जाए। उन्होंने कहा कि साहित्य हमें संवर्धित करता है और लोगों को जोड़ने की शक्ति रखता है।

धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कला एवं संस्कृति विभाग की सचिव सुश्री ज्योति कुमारी ने सभी प्रतिभागियों, उपराज्यपाल, मुख्य सचिव तथा साहित्य अकादेमी के सचिव का आभार प्रकट किया। उद्घाटन समारोह के दौरान कैलाशपति डांस अकादमी के कलाकारों ने एक रंगारंग शास्त्रीय नृत्य (सरस्वती वंदना) प्रस्तुत किया।

अकादेमी ने इस अवसर पर पुस्तक विक्रय केंद्र भी स्थापित किया जिसमें 2700 से अधिक शीर्षक विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध थे।

उत्सव के उद्घाटन सत्र के पश्चात 5 सत्र आयोजित किए गए : पोएट्री अनबाउंड : बहुभाषी कवि सम्मेलन, सागर संग कविता : लघु भारत की साहित्यिक लहरें, कहानियों की कालजयीता : विशिष्ट कथाओं की पहचान, कविता : आत्मा का दर्पण – कवि सम्मिलन तथा हास्य कवि सम्मेलन।

इन सत्रों में भाग लेने वाले प्रमुख रचनाकारों में शामिल थे : हरीश मीनाश्रु, शीन काफ़ निज़ाम, मणिकुंतला भट्टाचार्य, अंजू रंजन, जगदीश नारायण राय, आर. गोपालन, प्रणब कुमार सरकार, आयुष दुबे, लुकास रॉबर्ट, सुदर्शन राजा, प्रीति शेनॉय, बेन्यामिन, रश्मि चौधरी आदि।

संतविभूति प्रमुखस्वामी महाराज पुस्तक विमोचन समारोह

23 मार्च 2025, अहमदाबाद



'संतविभूति प्रमुखस्वामी महाराज' पुस्तक विमोचन समारोह में मंच पर उपस्थित गणमान्य अतिथिगण

एक भव्य साहित्यिक एवं आध्यात्मिक आयोजन के लिए, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधिनस्थ कार्य करने वाली साहित्यिक संस्थान साहित्य अकादेमी ने बी.ए.पी.एस. स्वामीनारायण रिसर्च इंस्टीट्यूट, दिल्ली के सहयोग से *संतविभूति प्रमुखस्वामी महाराज* पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम का आयोजन बी.ए.पी.एस. स्वामीनारायण मंदिर, अहमदाबाद में किया। इस अवसर पर भारत सरकार के माननीय संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस कार्यक्रम में अनेक विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया, जिनमें शामिल थे : साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव; साहित्य अकादेमी के उप सचिव (प्रकाशन) डॉ. एन. सुरेश बाबू; गुजरात के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान; पद्मश्री गौतमभाई पटेल; प्रतिष्ठित गुजराती कवि, लेखक एवं आलोचक श्री माधव रामानुज; 'पांचजन्य' के पूर्व संपादक एवं पूर्व सांसद श्री तरुण विजय; केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वारखेड़ी; प्रख्यात संस्कृत विद्वान प्रो. हरेकृष्ण सतपथी; लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो. मुरलीमनोहर पाठक; राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति; श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल के कुलपति प्रो. सुकांत कुमार सेनापति; आई.आई.टी खड़गपुर के पूर्व निदेशक श्री वीरेंद्रकुमार तिवारी; तथा गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी श्री भाग्येश झा।

महामहोपाध्याय भद्रेशदास स्वामी द्वारा लिखित यह पुस्तक प्रमुखस्वामी महाराज के विराट जीवन, कार्यों एवं विश्वव्यापी सेवाओं का सूक्ष्म एवं सारगर्भित चित्रण प्रस्तुत करती है। पुस्तक में उनके आध्यात्मिक प्रभाव, सेवानिष्ठ नेतृत्व और सनातन धर्म की वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए उनके योगदान का विशेष उल्लेख है।

समारोह के आरंभ में मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों ने दीप प्रज्वलन कर एवं प्रमुखस्वामी महाराज के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित की। इसके पश्चात् सभी अतिथियों ने अपने विचार साझा किए।

संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा - "प्रमुखस्वामी महाराज के विराट जीवन को एक पुस्तक में समाहित करना असंभव है। उनका दर्शन मेरे जीवन का सबसे पुण्यवान और सौभाग्यशाली क्षण था। वे ऐसे संत थे जिन्होंने जीवन का प्रत्येक क्षण जनकल्याण को समर्पित किया। वे ईश्वर के साक्षात दर्शन थे – असीम

शांति के प्रतीक, किंतु सहज, सरल और विनम्र। उन्होंने हर पल सेवा में लगाकर सनातन धर्म के संरक्षण में अमूल्य योगदान दिया। जब भारतीय संस्कृति को संबल की आवश्यकता थी, तब प्रमुखस्वामी महाराज ने संतों को दीक्षा दी, मंदिरों की स्थापना की, और शास्त्र परंपरा का प्रचार किया। उनकी वाणी अल्प में अमृतवत होती थी – जो सीधे हृदय को छूती थी। आज भारत की वैश्विक भूमिका में उनका विशेष योगदान है। इस पुस्तक के प्रकाशन को मैं स्वयं एवं मंत्रालय पर उनकी कृपा मानता हूँ।"

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा- "प्रमुखस्वामी महाराज 20वीं शताब्दी की महानतम आध्यात्मिक विभूतियों में से एक थे। वे सभी के लिए मार्गदर्शक और आत्मीय मित्र थे। उनका प्रेम नि:स्वार्थ था। उनके प्रयासों से बी.ए.पी.एस. ने आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में असंख्य सेवाएँ दीं। भद्रेशदास जी स्वामी द्वारा लिखित यह पुस्तक दिव्य जीवन और दर्शन का उज्ज्वल दस्तावेज़ है, जिसे साहित्य अकादेमी प्रकाशित कर अत्यंत गौरवान्वित है।"

गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. भाग्येश झा ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा - "प्रमुखस्वामी महाराज ने मुझे भी आशीर्वाद दिया। मैंने उनके 29 बार दर्शन किए। वर्ष 2000 में मैंने सारंगपुर में उनके साथ 24 घंटे बिताए। उस समय मैंने जाना कि वे एक क्षण भी अपने लिए नहीं, बल्कि समाज, धर्म और संस्कृति के लिए जीते थे। उनका सान्निध्य मेरे लिए पद्मभूषण से भी बड़ा सम्मान था। यह पुस्तक केवल पुस्तक नहीं – एक गुरु की कथा, एक कविता, शास्त्रों का सार और मानव जीवन का उद्देश्य है। वे इतने विशाल संगठन के प्रमुख थे, परंतु एक बालक समान सरल मुस्कान रखते थे। आज भी उनका सूक्ष्म स्वरूप यहाँ उपस्थित है।"

लेखक महामहोपाध्याय श्री भद्रेशदास स्वामी ने कहा- "प्रमुखस्वामी महाराज का जीवन केवल किसी एक कालखंड की बात नहीं – वह अमर ऐतिहासिक घटना थी। वे एक ऐसे संत थे जिनके हृदय, विचार और कर्म शुद्ध थे। अध्यात्म दर्शन में ऐसे संत को ही ब्रह्मस्वरूप कहा जाता है। उनके जीवन ने हम सबको ऊर्जा दी। *श्रीमद्भगवद्गीता* में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं – *'एषा ब्राह्मी स्थिति:'* – वही अवस्था प्रमुखस्वामी महाराज थे। वे 'स्थितप्रज्ञ' के जीवंत प्रतीक थे। उनका अस्तित्व चिरस्थायी है। आज महंत स्वामी महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज के प्रतिनिधि रूप में विराजमान हैं। यह पुस्तक भारत सरकार की ओर से प्रमुखस्वामी महाराज के चरणों में अद्वितीय काव्यांजलि है।"

इस अवसर पर मंचासीन सभी अतिथियों ने प्रमुखस्वामी महाराज और पुस्तक पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले विचार साझा किए। कार्यक्रम का समापन संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा पुस्तक के भव्य अनावरण के साथ हुआ, जिसे उपस्थित श्रद्धालुओं ने बड़े उत्साह से सराहा।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि

असमिया

शीलभद्र पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

14 फ़रवरी 2025, लखीमपुर, असम



(बाएँ से दाएँ) श्री दिगंत विश्व शर्मा, श्री राघव पराजुली, श्री बिमान चंद्र सेतिया और श्री क्षेत्रवासी नायक

साहित्य अकादेमी ने असम के लखीमपुर स्थित नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज (स्वायत्त) के असमिया विभाग के सहयोग से 14 फ़रवरी 2025 को नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज (स्वायत्त), लखीमपुर, असम में शीलभद्र पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बिमान चंद्र सेतिया ने की तथा साहित्य अकादेमी के कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के प्रभारी क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल के संयोजक दिगंत विश्व शर्मा ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने शीलभद्र की रचनात्मक प्रतिभा के गहन आत्ममंथनकारी पक्ष को रेखांकित किया तथा उनकी रचनाओं की सादगी को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के चिंतनशील संवाहक तथा उनमें निहित मानवता की गहराई को विश्लेषित किया। नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. राघव पराजुली ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का संचालन प्रो. (डॉ.) अरविंद राजखोवा ने किया, जो साहित्यिक समालोचक, स्तंभकार तथा असमिया विभाग के अध्यक्ष हैं। इस सत्र में डॉ. लोहित हाज़रिका, स्वप्नाली बरगोहाईं तथा डॉ. बी.डी. निशा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने शीलभद्र के उपन्यासों, उनकी कहानियों की कलात्मक सुंदरता तथा उनके संपूर्ण साहित्य का मूल्यांकन करते हुए विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. राजखोवा ने कहा कि शीलभद्र के साहित्य ने अविभाजित ग्वालपाड़ा ज़िले को असम और असमिया पहचान से जोड़ने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगोष्ठी का द्वितीय तथा अंतिम सत्र डॉ. रातुल कुमार लाहन ने संचालित किया, जो एक कवि तथा नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज में अर्थशास्त्र के सहायक प्रोफ़ेसर हैं। इस सत्र में डॉ. भास्कर भुइयां, डॉ. बर्नाली बर', डॉ. निपोन पैंगिंग तथा डॉ. रुणझुन बर' ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में मुख्य रूप से शीलभद्र की कहानियों की कलात्मक, सौंदर्यात्मक विशिष्टताओं तथा उनकी सामाजिक चेतना पर चर्चा की गई। संगोष्ठी का समापन वक्तव्य डॉ. धीरज पात्र ने प्रस्तुत किया, जिसे ज़िले के अनेक गणमान्य अतिथियों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में सुना।

महिम बर' पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

27 नवंबर 2024, नगाँव, असम



(बाएँ से दाएँ) सुश्री अनन्या हिलोइदारी, श्री मिलन नियोग, श्री अरिंदम बर' कटकी तथा सुश्री पूरबी चक्रवर्ती सुत

साहित्य अकादेमी ने ए.डी.पी. कॉलेज के सहयोग से 27 नवंबर 2024 को ए.डी.पी. कॉलेज, आर.आर. बी. रोड, साउथ हैबरगाँव, नगाँव, असम के कॉन्फ्रेंस हॉल में महिम बर' पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी अभिषेक रथ ने प्रस्तुत किया। प्रारंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल के संयोजक दिगंत विश्व शर्मा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने असमिया साहित्य को समृद्ध बनाने में महिम बर' की भूमिका पर प्रकाश डाला तथा उनके लेखन के दार्शनिक पक्षों की चर्चा की। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात असमिया विद्वान प्रभात बर' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने महिम बर' के जीवन और साहित्यिक योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। इंद्रधनुष युग से लेकर आज तक अपने रचनात्मक कार्यों के माध्यम से असमिया साहित्य को समृद्ध करने वाले महिम बर' ने असमिया साहित्य को विश्व साहित्य में प्रतिष्ठित स्थान दिलाया है। "रोंगा जिया" के कवि और "कथनीबाड़ी घाट" के रचयिता महिम बर' ने असमिया साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता ए.डी. पी. कॉलेज के प्राचार्य सदानंद पायेंग ने की। धन्यवाद ज्ञापन चित्तरंजन नाथ ने प्रस्तुत किया। प्रथम शैक्षणिक सत्र में अनन्या हिलोइदारी, पूरबी चक्रवर्ती सुत तथा मिलन नियोग ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि सत्र की अध्यक्षता अरिंदम बरकटकी ने की। द्वितीय सत्र में अमिया पात्र, साहिन जाफरी तथा उत्पल दास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा अध्यक्षता अजीत भराली ने की। सभी वक्ताओं ने महिम बर' के साहित्य का विश्लेषण करते हुए उनके अनेक ग्रंथों का संदर्भ प्रस्तुत किया। उन्होंने महिम बर' के जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा अन्य लेखकों पर पड़े उनके प्रभाव पर भी चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन मिलन नियोग ने किया। वक्ताओं ने महिम बर' की प्रमुख कृतियों के संदर्भ में उनके लेखन के विविध पक्षों को उजागर किया।

बाङ्ला

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 जुलाई 2024, कोलकाता



(बाएँ से दाएँ) श्री आलापन बंद्योपाध्याय, डॉ. के. श्रीनिवास राव, श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय, डॉ. माधव कौशिक तथा श्री ब्रात्य बसु

साहित्य अकादेमी ने 27-28 जुलाई 2024 को अपने क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के सभागार में नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षेप में नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला। पश्चिम बंगाल सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के माननीय मंत्री तथा साहित्य अकादेमी की बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक श्री ब्रात्य बसु ने आरंभिक वक्तव्य में नीरेंद्रनाथ की लेखनी की विशिष्ट विशेषताओं पर चर्चा की। श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में नीरेंद्रनाथ की लेखनी और व्यक्तित्व के प्रभावों पर प्रकाश डाला। श्री आलापन बंद्योपाध्याय ने अपने बीज-वक्तव्य में बताया कि किस प्रकार नीरेंद्रनाथ ने तत्कालीन बाङ्ला साहित्य को नया स्वरूप प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने नीरेंद्रनाथ को भारतीय साहित्य के महानतम लेखकों में स्थान प्राप्त करने की यात्रा पर प्रकाश डाला। साहित्य

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के प्रभारी अधिकारी श्री क्षेत्रवासी नायक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र का विषय था - *नीरेंद्रनाथ : व्यक्ति और उनका युग*। इस सत्र में प्रो. बारिदबरन घोष ने नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती के जीवन और लेखन से जुड़े रोचक प्रसंग साझा किए, प्रो. चिन्मय गुहा ने उनके भावप्रवण लेखन की जादुई शक्ति पर चर्चा की तथा शेखर बसु ने *आनंदमेला* पत्रिका में उनके संपादकत्व में कार्य करने के अनुभव साझा किए। द्वितीय सत्र सत्र का विषय था- *पत्रकार और संपादक के रूप में नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती"*। इस सत्र में हर्ष दत्त ने संपादक के रूप में उन्हें प्रस्तुत किया, प्रचेत गुप्त ने उनकी लेखनी के प्रभावों को साझा किया तथा प्रो. पवित्र सरकार ने यह बताया कि उन्होंने किस प्रकार साहित्यिक बाङ्ला भाषा में क्रांति उत्पन्न की। तृतीय सत्र सत्र का विषय था - *नीरेंद्रनाथ की गद्य रचनाएँ*। प्रो. रमण कुमार सरकार ने नीरेंद्रनाथ के लेखन की भावात्मक अपील पर बात की, प्रो. सोनाली चक्रवर्ती बनर्जी ने उनकी आत्मकथात्मक रचनाओं पर चर्चा की तथा प्रो. सुमिता चक्रवर्ती ने उनके गद्य की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला। चतुर्थ सत्र का विषय था - *नीरेंद्रनाथ की कल्पनात्मक दुनिया*। इस सत्र में प्रो. मधुश्री सेन सान्याल ने उनके जासूसी उपन्यासों पर, प्रो. प्रसून घोष ने उनके बाल साहित्य पर तथा प्रो. शिवली सरकार ने उनके यात्रा-वृत्तांतों पर विचार प्रस्तुत किए।

पंचम सत्र का विषय था - *कवि नीरेंद्रनाथ*। प्रो. तरुण मुखोपाध्याय ने उनकी कविता की विषयवस्तु पर प्रकाश डाला तथा प्रो. कृष्णरूप चक्रवर्ती ने उनकी कविताओं के पाठ की संभावनाओं पर चर्चा की। समापन वक्तव्य अभिरूप सरकार ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती पर आधारित वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया।

नारायण सान्याल पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

23 दिसंबर 2024, उत्तर दमदम, पश्चिम बंगाल



(बाएँ से दाएँ) श्री ब्रात्य बसु, प्रो. स्वागता दास महंत, श्री अंजन सिन्हा, प्रो. गोपा दत्त भौमिक तथा प्रो. देबलिना सेठ

साहित्य अकादेमी ने 23 दिसंबर 2024 को पश्चिम बंगाल के नॉर्थ दमदम स्थित सरोजिनी नायडू महिला कॉलेज के बाङ्ला विभाग के सहयोग से नारायण सान्याल पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र के दौरान साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी अभिषेक रथ ने सभी उपस्थितजनों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ब्रात्य बसु ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में नारायण सान्याल के साहित्यिक क़द और बाङ्ला साहित्य में उनके योगदान पर विस्तार से चर्चा की। कॉलेज की प्राचार्या प्रो. स्वागता दास महंत ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। बीज-वक्तव्य में प्रख्यात लेखिका एवं विद्वान प्रो. रोसिंका चौधुरी ने नारायण सान्याल की रचनाओं के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सान्याल के विविध विधाओं में रचे गए विपुल साहित्य की चर्चा करते हुए उसके गहन विवेचनात्मक पहलुओं पर विचार प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता रामकृष्ण मिशन आश्रम, नरेंद्रपुर के सचिव स्वामी शास्त्रज्ञानानंद ने की। उन्होंने बाङ्ला साहित्य की विषयवस्तु में विविधता लाने में नारायण सान्याल के योगदान को रेखांकित किया। धन्यवाद ज्ञापन सरोजिनी नायडू महिला कॉलेज में एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. श्रावणी बंद्योपाध्याय ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में प्रो. देबलिना सेठ, प्रो. गोपा दत्ता भौमिक तथा श्री शुभंकर डे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने नारायण सान्याल की रचनाओं की विभिन्न विधाओं की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला, जिनमें उनके उपन्यास, जासूसी लेखन, प्रकाशकों से उनके संबंध और समकालीन बाङ्ला साहित्यकारों से उनका जुड़ाव शामिल है। द्वितीय सत्र में प्रो. रंगन कांति जाना, श्री निहारुल इस्लाम तथा श्री बिनोद घोषाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने नारायण सान्याल की रचनाओं में चित्रित शरणार्थी विषयों पर चर्चा की, साथ ही उनके वास्तुकला और मूर्तिकला पर आधारित लेखन का विश्लेषण भी किया। अंतिम सत्र में प्रो. पलाश बरन पाल तथा श्री तपन बंद्योपाध्याय ने नारायण सान्याल के बाङ्ला लेखकों में स्थान, बाल साहित्य तथा अन्य पहलुओं पर विचार व्यक्त किए। श्री बंद्योपाध्याय ने उनकी रचनाओं की लोकप्रियता तथा उन पर विदेशी साहित्य के प्रभाव की भी चर्चा की। समापन वक्तव्य श्री अंजन सिन्हा ने प्रस्तुत किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सांत्वना चक्रवर्ती ने प्रस्तुत किया।

लाल बिहारी दे पर जन्म द्विशताब्दी परिसंवाद

1 अक्तूबर 2024, बर्दवान, पश्चिम बंगाल



(बाएँ से दाएँ) श्रीमती अनिंदिता बंद्योपाध्याय, श्री हिमाद्रि लाहिड़ी तथा सुश्री श्रावणी बसु

साहित्य अकादेमी ने बर्दवान विश्वविद्यालय के बाङ्ला विभाग के सहयोग से 1 अक्तूबर 2024 को बर्दवान विश्वविद्यालय, गोलापबाग स्थित बाङ्ला विभाग की गैलरी में लाल बिहारी दे पर जन्म द्विशताब्दी परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री अभिषेक रथ ने सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। इसके पश्चात् बर्दवान विश्वविद्यालय के बाङ्ला विभाग की प्रो. अनिंदिता बंद्योपाध्याय ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात बाङ्ला लेखक और विद्वान श्री मुस्ताक अहमद ने बीज-वक्तव्य में लाल बिहारी दे के जीवन, उनकी गतिविधियों तथा उनकी रचनाओं और उन पर अन्य विद्वानों द्वारा किए गए मूल्यांकन पर विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात बाङ्ला लेखक और

विद्वान श्री शक्तिनाथ झा ने इतिहासकार के रूप में लाल बिहारी दे की भूमिका पर गहन चर्चा की।

प्रथम सत्र में प्रो. श्राबणी बसु ने अपने आलेख में लाल बिहारी दे की रचना 'चंद्रमुखीर उपाख्यान' का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। असीस खास्तगीर का आलेख उनकी अनुपस्थिति में पढ़ा गया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. हिमाद्रि लाहिड़ी ने उन्नीसवीं शताब्दी के औपनिवेशिक बंगाल में अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली तथा उसे समृद्ध बनाने में लाल बिहारी दे के योगदान पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र में प्रो. अभिजीत कुमार घोष ने अपने आलेख में संपादक के रूप में लाल बिहारी डे के योगदान को रेखांकित किया तथा उनके द्वारा संपादित पुस्तकों के महत्त्व पर चर्चा की। प्रो. देबलिना सेठ ने लाल बिहारी दे और समकालीन विचारकों के बीच के वैचारिक सेतुओं को रेखांकित किया तथा महत्त्वपूर्ण कृतियों के संदर्भ में उनका विश्लेषण प्रस्तुत किया। प्रो. सैफुल्ला का आलेख लाल बिहारी दे की प्रतिष्ठित कृति 'फोकटेल्स ऑफ़ बंगाल' विषय पर आधारित था। उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण रचना की संरचना और भारतीय लोक साहित्य के अध्ययन में इसके स्थान पर विस्तार से चर्चा की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिंदिता बंद्योपाध्याय ने की।

बाङ्ला साहित्य और अनुवाद पर परिसंवाद

30 सितंबर 2024, कोलकाता



(बाएँ से दाएँ) प्रो. सोमा मुखोपाध्याय, श्री अभीक मजुमदार, श्री अभिजीत मुखर्जी तथा श्री अभिजीत गुप्ता

साहित्य अकादेमी ने जादवपुर विश्वविद्यालय के तुलनात्मक साहित्य विभाग के सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन ऑफ़ इंडियन लिटरेचर के सहयोग से 'बाङ्ला साहित्य और अनुवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 30 सितंबर 2024 को प्रोफ़ेसर अनीता बनर्जी मेमोरियल हॉल, ग्राउंड फ्लोर, यूजी आर्ट्स बिल्डिंग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता में किया।

कार्यक्रम का स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी अभिषेक रथ ने प्रस्तुत किया। आरंभिक वक्तव्य में सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन ऑफ़ इंडियन लिटरेचर के समन्वयक प्रो. सायंतन दासगुप्त ने साहित्य अकादेमी और सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन ऑफ़ इंडियन लिटरेचर के बीच अनुवाद गतिविधियों को बढ़ावा देने में लंबे सहयोग की चर्चा की। बीज-वक्तव्य में प्रख्यात विदुषी प्रो. शुभा चक्रवर्ती दासगुप्त ने बंगाल में अनुवाद के सिद्धांत और व्यावहारिक विकास के इतिहास पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र की विशिष्ट अतिथि प्रो. रूपा बंद्योपाध्याय, अधिष्ठाता, कला संकाय, जादवपुर विश्वविद्यालय थीं, उन्होंने अनुवाद के सिद्धांतों पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्राध्यक्ष प्रो. पार्थसारथी भौमिक, तुलनात्मक साहित्य विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय ने अनुवाद की व्यावहारिकता पर अपने विचार साझा किए।

प्रथम शैक्षणिक सत्र में प्रो. अर्जुनदेव सेन शर्मा ने मध्यकालीन युग में संस्कृत से बाङ्ला में किए गए अनुवादों पर आधारित दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद में उत्पन्न समस्याओं पर चर्चा की। सुश्री जया मित्रा ने आदिवासी साहित्य, विशेषकर भीली साहित्य के बाङ्ला अनुवादों और आदिवासी समाज की सरल जीवन दृष्टि पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री श्यामल भट्टाचार्य ने पंजाबी और डोगरी साहित्य के बाङ्ला अनुवादों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। द्वितीय शैक्षणिक सत्र में प्रो. अभिजीत मुखर्जी ने जापानी साहित्य के बाङ्ला अनुवाद में आने वाली समस्याओं और सांस्कृतिक संदर्भों पर चर्चा

की। प्रो. अभिजीत गुप्ता ने अनूदित साहित्य के प्रकाशन और प्रकाशकों को आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों पर प्रकाश डाला। प्रो. अभीक मजुमदार ने कविता के अनुवाद की संभावना और बाङ्ला में कविता अनुवाद के इतिहास पर बल देते हुए विचार व्यक्त किए। डॉ. सोमा मुखोपाध्याय ने तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद अध्ययन के बीच संबंधों पर बल दिया। सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन ऑफ़ इंडियन लिटरेचर की सह-समन्वयक डॉ. श्रद्धांजलि तामाङ ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

बोडो

बोडो बोलियाँ और वाचिक साहित्य पर संगोष्ठी

21–22 सितंबर 2024, गोगामुख, असम



उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री मंगल सिंह हाजोवारी

साहित्य अकादेमी ने बोडो राइटर्स अकादमी तथा नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड के सहयोग से 'बोडो बोलियाँ और वाचिक साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 21–22 सितंबर 2024 को ईको कैंप सभागार, सुबनसिरी नदी तट, गेरुकामुख, गोगामुख, धेमाजी, असम में किया।

स्वागत वक्तव्य प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्री बालेन वारी ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का उद्घाटन पद्मश्री श्री मंगल सिंह हाजोवारी द्वारा किया गया। बोरो-कछारी कल्याण स्वायत्त परिषद् के कार्यकारी सदस्य श्री प्रदीप सोरगियारी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो राइटर्स अकादमी के अध्यक्ष श्री राजेन बसुमतारी ने की। धन्यवाद ज्ञापन बोडो राइटर्स अकादमी के महासचिव श्री आनंद राम वारी ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में 'सांजारी बोडो बोली' विषय पर चर्चा हुई जिसकी अध्यक्षता श्री राजेन बसुमतारी ने की तथा वक्ता थे - श्री धनेश्वर नार्जरि। द्वितीय सत्र में 'माग्रा बोडो बोली' पर श्री मानव कुमार रामसियारी तथा सुश्री गीतिका बसुमतारी ने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता श्री कनिष्क हाजोवारी ने की। तृतीय सत्र में 'गोलपारिया बोडो बोली' विषय पर श्री शरद प्रसाद मुसाहारी तथा श्री अरुण चंद्र मुसाहारी ने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता श्री रानेन चंद्र मुसाहारी ने की। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता सुबुंगचा मोशाहारी ने की तथा वक्ता थे- श्री चिनेन बसुमतारी एवं श्री रूपनाथ हाजोवारी।

अगले दिन के प्रथम सत्र में 'कहानी कहने की वाचिक साहित्य परंपरा' विषय पर श्री मेशेंग अजवला

ब्रह्म गोयारी, श्री मतीन्द्र दैमारी तथा श्री शंकर खाकलारी ने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता राजेन बसुमतारी ने की। द्वितीय सत्र 'वाचिक साहित्य : वीरगाथाएँ' विषय पर आधारित था। श्री राजेन नार्जारी, श्री महेंद्र बर' तथा ब्व्हविशार ब्रह्म ने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता सुबुं मोसाहारी ने की। अंतिम शैक्षणिक सत्र 'ब्विसागु मेथाई का वाचिक साहित्य' विषय पर आधारित था। सर्वश्री बिस्वनाथ बसुमतारी, बिरंगा जे. मुसाहारी, नब कुमार ब्रह्म तथा श्री उमेश ब्रह्मा ने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता मानव कुमार रामसियारी ने की। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री राजेन बसुमतारी ने की तथा समापन वक्तव्य बोडो राइटर्स अकादमी के सचिव प्रदीप सोरगियारी ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन बोडो राइटर्स अकादमी के सचिव श्री सदानंद दैमारी ने प्रस्तुत किया।

आबौ खबाम राजा उत्तम चंद्र खेरकातारी के जीवन और कृतित्व पर परिसंवाद

24 अगस्त 2024, रुपही, बाक्सा, असम



(बाएँ से दाएँ) सीता राम बसुमतारी, बिक्रम बसुमतारी, क्षेत्रवासी नायक, डंबरुधर बसुमतारी, जयश्री बर' तथा द्वीमालु खेरकातारी

साहित्य अकादेमी ने बाथोन थुनलाइयारी गौथुम तथा आबौ खोबाम राजा उत्तम चंद्र खेरकातारी ट्रस्ट के सहयोग से 'आबौ खबाम राजा उत्तम चंद्र खेरकातारी के जीवन और कृतित्व' पर परिसंवाद का आयोजन 24 अगस्त 2024 को रुपही, बाक्सा, बीटीआर, असम में किया।

स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी अधिकारी क्षेत्रवासी नायक ने उत्तम चंद्र खेरकातारी के साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। परिसंवाद का उद्घाटन बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष प्रो. सीताराम बसुमतारी ने किया तथा खेरकातारी को बोडो साहित्य और संस्कृति का अग्रदूत बताया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य जयश्री बर' ने अपने बीज-वक्तव्य में इस प्रतिष्ठित लेखक के विशिष्ट योगदान को रेखांकित किया। सत्र की अध्यक्षता डंबरुधर बसुमतारी, अध्यक्ष, सालबाड़ी जिला बोडो साहित्य सभा ने की। धन्यवाद ज्ञापन दैमालु खेरकातारी, महासचिव, बाथवोन थुनलायारी गौथुम, रूपही एवं संयोजक, आबौ खबाम राजा उत्तम चंद्र खेरकातारी ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत किया गया।

प्रथम सत्र में डॉ. अरुण बर' ने अपने आलेख में खेरकातारी की कविता पर प्रकाश डाला, डॉ. रैरुब ब्रह्म ने उनके संपूर्ण साहित्यिक अवदान पर चर्चा की तथा सबिराम बर' ने उनके धार्मिक साहित्य में योगदान को रेखांकित किया। इस सत्र की अध्यक्षता जतिन्द्र गयारी, प्राचार्य, रूपही सीनियर सेकेंडरी स्कूल एवं अध्यक्ष, बाथोन थुनलाइयारी गौथुम ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता राजेन्द्र बसुमतारी, अध्यक्ष, आबौ खबाम राजा उत्तम चंद्र खेरकातारी ट्रस्ट ने की। इस सत्र में डॉ. मल्लिका बसुमतारी ने खेरकातारी के समाजसेवी योगदान पर आलेख प्रस्तुत किया। रसेन मोसाहारी तथा उदांस्ति नार्जारी ने खेरकातारी द्वारा रचित गीतों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक और साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

बोडो साहित्य में गुनेश्वर मुसाहारी का योगदान विषय पर परिसंवाद

8 फ़रवरी 2025, क'क्राझार, असम

साहित्य अकादेमी ने बोडोलैंड विश्वविद्यालय, क'क्राझार, असम के बोडो विभाग के सहयोग से 'बोडो साहित्य में



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री गणेश बर', अजित बर', भौमिक चंद्र बर' तथा सुश्री भवानी बाग्लारी

गुनेश्वर मुसाहारी का योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 8 फ़रवरी 2025 को बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग में किया।

परिसंवाद का आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री जयश्री बर', ने प्रस्तुत किया। परिसंवाद का उद्घाटन डॉ. बाबु लाल आहुजा, कुलपति, बोडोलैंड विश्वविद्यालय ने किया, जबकि डॉ. सुबुं बसुमतारी, कुलसचिव, बोडोलैंड विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। धन्यवाद ज्ञापन श्री अमरजित दैमारि, महासचिव, बोडो विभाग पूर्व छात्र संघ द्वारा प्रस्तुत किया गया। शैक्षणिक सत्र में अ जित बर', भबानी बाग्लारी, गणेश बर', खोमथा नार्जारी तथा सुश्री मणिका गयारी ने गुनेश्वर मुसाहारी के बोडो साहित्य में योगदान के विविध पक्षों और स्वरूपों पर आलेख प्रस्तुत किए। गुनेश्वर मुसाहारी ने बोडो भाषा में कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें प्रमुख हैं : *हा फिसा होउवा* (1981), *फेरेन्गा दाउ* (1983), *थुनलाय बिजिरनाय* (1993), *जापानी खोंथाय* (2007), *दाइना* (2008), *थुनलाय विद्या आरो गोहेना* (2008), *थुनलाय साओराय बिहुंग* (2008), *बोडो खोंथाय* (2010), *म्वनदांगथि* (2010), *बंदी* (2012) आदि। शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता श्री भौमिक चंद्र बर' ने की। परिसंवाद में विशेष रूप से गुनेश्वर मुसाहारी के रचनात्मक कार्यों की विशिष्टताओं पर चर्चा की गई।

डोगरी

पद्मा सचदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिसंवाद

17 दिसंबर 2024, नई दिल्ली



(बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवास राव, श्री ओम गोस्वामी, श्री विजय वर्मा तथा श्री मोहन सिंह

साहित्य अकादेमी द्वारा विख्यात डोगरी और हिंदी लेखिका, कवयित्री एवं अनुवादक (स्वर्गीय) पद्मा सचदेव जी पर "पद्मा सचदेव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" विषयक परिसंवाद का आयोजन 17 दिसंबर 2024 को नई दिल्ली में अकादेमी के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में पद्मा सचदेव से प्राप्त आत्मीय स्नेह को याद करते हुए उनकी साहित्यिक यात्रा और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पद्मा सचदेव केवल डोगरी या हिंदी की ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की सशक्त प्रतिनिधि थीं। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि पद्मा सचदेव का व्यक्तित्व बहुआयामी था, जैसा कि उनके विविध और विपुल लेखन में देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि डोगरी और पद्मा सचदेव आज एक-दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने डोगरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए लंबा संघर्ष किया। बीज-वक्तव्य में श्री विजय वर्मा ने पद्मा सचदेव

के आत्मीय और स्नेहिल व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी रचनाओं की विशिष्टता को रेखांकित किया। उन्होंने यह भी कहा कि पद्मा सचदेव ने डोगरी भाषा, साहित्य और संस्कृति को देश और विदेश में फैलाने का अविस्मरणीय कार्य किया है। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री ओम गोस्वामी ने कहा कि पद्मा सचदेव की साहित्यिक ऊँचाई का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि कई लेखकों ने उन्हें डोगरी साहित्यिक आकाश की 'ध्रुवतारा', डोगरी की 'ललद्यद' और 'हब्बा खातून' जैसे विशेषणों से संबोधित किया है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता नीलम सरीन ने की। इस सत्र में श्रीमती सरिता खजूरिया ने 'पद्मा सचदेव की कविताएँ' तथा श्रीमती सुषमा चौधरी ने 'पद्मा सचदेव की कहानियाँ और उपन्यास' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री शिवदेव सुशील ने की। इस सत्र में सुषमा रानी राजपूत ने 'हिंदी साहित्य में पद्मा सचदेव का योगदान' तथा खजूर सिंह ने 'डोगरी साहित्य में पद्मा सचदेव का योगदान' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक श्री अनुपम तिवारी ने किया। इस परिसंवाद में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

1980 से 2020 तक की डोगरी मुक्त छंद कविता की प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद

10 जून 2024, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर



(बाएँ से दाएँ) डॉ. सुचेता पठानिया, डॉ. सुषमा शर्मा, श्री दर्शन दर्शी, श्री मोहन सिंह तथा श्री प्रकाश प्रेमी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा डोगरी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय के सहयोग से '1980 से 2020 तक की डोगरी मुक्त छंद कविता की प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 10 जून 2024 को ज्ञान चंद स्मृति सेमिनार हॉल, उर्दू विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय में किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने स्वागत वक्तव्य एवं आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात डोगरी लेखक श्री प्रकाश प्रेमी ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुचेता पठानिया कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। प्रख्यात डोगरी साहित्यकार श्री दर्शन दर्शी ने सत्र की अध्यक्षता की। जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभाग की प्रोफ़ेसर सुषमा शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक श्री इंद्रजीत केसर ने की। इस सत्र में श्री पूरन चंद शर्मा तथा श्री शिवदेव सुशील ने क्रमशः 1980 से 1990 तथा 1990 से 2000 के बीच की डोगरी मुक्त छंद कविता की प्रवृत्तियों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने इन प्रवृत्तियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक श्री ध्यान सिंह ने की। श्री अशोक खजूरिया ने 2000 से 2010 तक की प्रवृत्तियों पर तथा श्री खजूर सिंह ठाकुर ने 2010 से 2020 तक की प्रवृत्तियों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों विद्वानों ने विषय के विविध पक्षों का समग्र चित्रण प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री ध्यान सिंह ने विषय के विभिन्न पहलुओं तथा डोगरी साहित्य में हो रहे उत्कृष्ट कार्यों पर प्रकाश डाला। अंत में, साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन सिंह ने सभी लेखकों, विद्वानों तथा आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले समस्त व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

अंग्रेज़ी

निस्सीम एजेकिल की जन्म शतवार्षिकी और भारतीय अंग्रेज़ी कविता पर उनके प्रभाव पर संगोष्ठी

1–2 अगस्त 2024, नई दिल्ली



(बाएँ से दाएँ) सुश्री विनीता अग्रवाल, श्री जैरी पिंटो तथा प्रो. मालाश्री लाल

प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी कवि निस्सीम एजेकिल की जन्म शतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 1-2 अगस्त 2024 को नई दिल्ली में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि निस्सीम एजेकिल भारतीय कविता का महान नाम हैं तथा उनका महत्त्वपूर्ण योगदान भुलाया नहीं जा सकता। साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. मालाश्री लाल ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि निस्सीम एजेकिल ने भारतीय अंग्रेज़ी कविता को नई दिशा दी। सुश्री नीलोफर भरूचा, सह-निदेशक, एमएमआईएएस ने अपने वक्तव्य में एजेकिल की शिक्षण पद्धति की रोचक विशेषताओं को विस्तार से समझाया। प्रख्यात चित्रकार पद्म भूषण श्री जतिन दास ने मुंबई में निस्सीम एजेकिल के साथ बिताए पलों की स्मृतियाँ साझा कीं। सत्र के दौरान निस्सीम एजेकिल की बेटी सुश्री कविता एजेकिल मेंडोंसा तथा प्रो. मालाश्री लाल के बीच उनके पिता पर लिखी पुस्तक को लेकर हुई वार्ता की रिकॉर्डिंग भी प्रदर्शित की गई।

प्रथम सत्र 'निस्सीम एजेकिल और भारतीय अंग्रेज़ी कविता' तथा द्वितीय सत्र 'श्रद्धांजलियाँ और कविता-पाठ' की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. अनीसुर रहमान तथा नीलोफर भरूचा ने की। इन सत्रों में श्री सुदीप सेन, सुश्री मंजू जैडका, सुश्री विनीता अग्रवाल, सुश्री राधा चक्रवर्ती तथा सुश्री अंजना नायरा देव ने भाग लिया। दूसरे दिन, तृतीय सत्र 'अंग्रेज़ी कविता में नई दिशाएँ' की अध्यक्षता प्रो. अनीसुर रहमान, निदेशक, यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने की। उन्होंने रूपक, उपमा, प्रतीक से लेकर मिथक तक कविता की विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। अभय के. और प्रो. पायल नागपाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र 'निसीम एजेकिल का अध्ययन और शिक्षण' की अध्यक्षता प्रो. रानू उनियाल ने की। इस सत्र में प्रो. मंजीत कौर तथा प्रो. रचना सेठी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. उनियाल ने सत्र का समापन करते हुए विद्यार्थियों को भारतीय अंग्रेज़ी कविता पढ़ाने में शिक्षक की भूमिका को रेखांकित किया। समापन सत्र की अध्यक्षता सुश्री विनीता अग्रवाल ने की। श्री जैरी पिंटो ने अपने आलेख में दिवंगत कवि निसीम एजेकिल के साथ बिताए समय की अंदरूनी कहानियाँ और संस्मरण साझा किए। प्रो. मालाश्री लाल ने सत्र का समापन करते हुए प्रतिभागियों का उनके सशक्त प्रस्तुतिकरण के लिए धन्यवाद किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

वर्तमान भारतीय कविता पर परिसंवाद

18 जनवरी 2025, कोलकाता



परिसंवाद में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का समूह चित्र

साहित्य अकादेमी ने इंटरकल्चरल पोएट्री एंड परफॉर्मेंस लाइब्रेरी के सहयोग से "वर्तमान भारतीय कविता" विषय पर परिसंवाद का आयोजन 18 जनवरी 2025 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद पुस्तकालय, कोलकाता में किया। कार्यक्रम की शुरुआत, साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री अभिषेक रथ के स्वागत वक्तव्य से हुई। प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने आरंभिक वक्तव्य में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद पुस्तकालय तथा साहित्य अकादेमी के बीच भविष्य की परियोजनाओं को लेकर उत्साह व्यक्त किया। प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि भारतीय अंग्रेज़ी कविता पहले से कहीं अधिक समृद्ध, विविधतापूर्ण तथा सशक्त है, जहाँ अधिक प्रकाशन अवसर, स्वतंत्र प्रकाशकों की भागीदारी, मंच-आधारित प्रस्तुतियाँ तथा ऑनलाइन माध्यमों के ज़रिए कवि नए-नए माध्यमों के प्रयोग कर रहे हैं। प्रो. बासवी फ्रेज़र ने बीज-वक्तव्य में भारतीय अंग्रेज़ी कविता की उद्भव और विकास यात्रा पर प्रकाश डाला, विशेषकर औपनिवेशोत्तर भारतीय अंग्रेज़ी कवियों के विस्तृत रचनात्मक क्षेत्र पर चर्चा की। प्रो. सचिदानंद महांति ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कविता की स्वीकृति और समय व स्थान के साथ उसके विकासशील स्वरूप की चर्चा की। उन्होंने कविता मंडलों और साहित्यिक समाजों की भूमिका को रेखांकित किया, जो क्षेत्रीय स्तर पर कविता को लोकप्रिय बनाने में सहायक रहे हैं। प्रो. निशि पुलुगर्था ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने की। इस सत्र में श्री गोपाल लाहिड़ी ने दलित और स्त्री कविता, पारिस्थितिक नारीवाद तथा एंथ्रोपोसीन कथा-वृत्तों जैसे समकालीन विषयों पर विचार प्रस्तुत किए। प्रो. जूली मेहता ने विभाजन और अलगाव की भावना तथा घर की अवधारणा पर बात की, जो इन कवियों के व्यक्तित्व और मूल्यों को आकार देती है— प्रेम, स्नेह और आत्मीयता की खोज में। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुश्री नवमालती निओग चक्रवर्ती ने की। प्रो. नंदिनी साहू ने बहुभाषी साहित्यिक विमर्श को बढ़ावा देने की अपनी नवोन्मेषी योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा लोक साहित्य सहित स्वदेशी साहित्यिक परंपराओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. निशि पुलुगर्था ने भारतीय कविता में मिथक के प्रयोग की विवेचना की, विशेष रूप से गुर्रम जोशुवा, अरुण कोलटकर, काला रमेश और अरुंधति सुब्रमण्यम की कविताओं के संदर्भ में।

तेम्सुला आओ और पूर्वोत्तर पर परिसंवाद

10 फ़रवरी 2025, आभासी मंच



प्रथम पंक्ति [बाएँ से दाएँ] : प्रो. डेसमंड खारमावफ्लांग, श्री कृष्णा आर. किम्बहुने तथा प्रो. मालाश्री लाल
द्वितीय पंक्ति [बाएँ से दाएँ] : प्रो. ज्योतिर्मय प्रधानी, डॉ. प्रीतिनिचा बर्मन तथा प्रो. एस्थर सिएम

साहित्य अकादेमी ने अंग्रेज़ी विभाग, नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग के सहयोग से 'तेम्सुला आओ और पूर्वोत्तर' विषय पर आभासी मंच परिसंवाद का आयोजन 10 फ़रवरी 2025 को किया। साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. मालाश्री लाल ने उद्घाटन वक्तव्य में तेम्सुला आओ के पूर्वोत्तर भारत के साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि तेम्सुला आओ ने पूर्वोत्तर की कहानियों को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। प्रो. ज्योतिर्मय प्रधानी ने आरंभिक वक्तव्य में तेम्सुला आओ को पूर्वोत्तर साहित्य की महामाता के रूप में चित्रित किया और कहा कि उनकी

जीवन-गाथा भी उतनी ही प्रेरणादायक और सशक्त है जितनी उनकी रचनाएँ। प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता मानविकी संकाय की अधिष्ठाता, प्रो. मून मून मजूमदार ने की। उन्होंने तेम्सुला आओ को एक महत्त्वपूर्ण लेखिका बताते हुए कहा कि वे पूर्वोत्तर की सबसे सशक्त स्वरों में एक हैं। इस सत्र में, प्रो. माला रंगनाथन ने तेम्सुला आओ की कहानियों के विविध आयामों पर चर्चा की। प्रो. डेसमंड खारमावफ्लांग ने आओ के साथ अपने अनुभवों को साझा किया—पहले एक शिक्षिका के रूप में और बाद में एक संगीत-प्रेमी सहकवि के रूप में। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस्थर सिएम ने की। उन्होंने तेम्सुला आओ की आत्मकथा "वन्स अपॉन अ लाइफ : बर्न्ट करी एंड ब्लडी रैग्स" को महत्त्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि बताया, जो एक स्त्री के सार्वभौमिक संघर्षों की कहानियाँ बयां करती है। प्रो. के.सी. बराल, पूर्व निदेशक, ई.एफ़.एल.यू. शिलांग तथा पूर्व प्रो. वाइस चांसलर, ई.एफ़.एल.यू. हैदराबाद के समापन वक्तव्य को डॉ. प्रीतिनिचा बर्मन ने पढ़ा। इसमें उन्होंने तेम्सुला आओ की कवयित्री और आलोचक के रूप में समृद्ध साहित्यिक उपलब्धियों का विवेचन किया। डॉ. सेतोलू तुन्यी ने समापन वक्तव्य में तेम्सुला आओ को नागालैंड की सबसे महत्त्वपूर्ण महिला स्वर के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित की। साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने परिसंवाद का संचालन किया तथा इसे ऐसी महान लेखिका को समर्पित श्रद्धांजलि बताया, जिन्होंने हाशिए के स्वर को मुख्यधारा में लाने का कार्य किया।

गुजराती

गुजराती उपन्यास और कहानी में स्थानीय परिवेश पर संगोष्ठी

17–18 फ़रवरी 2025, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री निरंजन पटेल, मणिलाल एच. पटेल, हसित मेहता, भाग्येश झा तथा ओम प्रकाश नागर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 'गुजराती उपन्यास और कहानी में स्थानीय परिवेश' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 17–18 फ़रवरी 2025 को एम.पी. पटेल सभागार, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात में किया गया। यह कार्यक्रम गुजरात साहित्य अकादेमी, गाँधीनगर तथा सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर के सहयोग से सम्पन्न हुआ। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा अकादेमी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य हसित मेहता ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा सरदार पटेल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. निरंजन पटेल ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात गुजराती साहित्यकार श्री मणिलाल एच. पटेल ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक श्री भाग्येश झा ने सत्र की अध्यक्षता की। सुश्री राजेश्वरी

पटेल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जयेश बोगावाटा ने की। इस सत्र में श्री योगेन्द्र पारिख ने 'गुजराती उपन्यास में परिवेश और चुनौतियाँ' तथा राजेश वणकर ने 'गुजराती कहानी में परिवेश और चुनौतियाँ' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री वीनेश अन्ताणी ने की। इसमें श्री हसमुख अबोटी ने 'गुजराती कहानी : रेगिस्तान और सागर का परिवेश' तथा सुश्री दर्शना ढोलकिया ने 'गुजराती उपन्यास : रेगिस्तान और सागर का परिवेश' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री हसित मेहता ने की। इस सत्र में श्री नरेश शुक्ल ने 'गुजराती कहानी व उपन्यास में नगर परिवेश' तथा श्री उत्पल पटेल ने 'गुजराती कहानी और उपन्यास में ग्राम-परिवेश' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री प्रवीण दरजी ने की। इसमें श्री ध्वनिल पारिख ने 'गुजराती ऐतिहासिक एवं पौराणिक उपन्यासों में परिवेश' तथा अजय सिंह चौहान ने 'गुजराती आंचलिक उपन्यासों में परिवेश' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र की अध्यक्षता श्री नितिन वडगामा ने की। इस सत्र में श्री राम मोरी ने 'गुजराती उपन्यास में परिवेश तथा दृश्य निर्माण' तथा श्री अजय सोनी ने 'कहानीकार की कैफियत' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में, श्री वीनेश अन्ताणी ने समापन वक्तव्य दिया। सभी सत्र अत्यंत संवादात्मक रहे तथा साहित्यकारों एवं श्रोताओं द्वारा सराहे गए।

भारतीय बाल साहित्य : इतिहास और भाषा पर संगोष्ठी

23 दिसंबर 2024, गाँधीनगर, गुजरात

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल के कार्यक्रम के अंतर्गत 'भारतीय बाल साहित्य : इतिहास और भाषा' विषय पर राष्ट्रीय



(बाएँ से दाएँ) श्री भाग्येश झा, श्री ओम प्रकाश नागर, श्री हरीश व्यास, श्रीमती श्रद्धा त्रिवेदी तथा श्री प्रशांत पटेल

संगोष्ठी का आयोजन सोमवार, 23 दिसंबर 2024 को झवेरचंद मेघाणी भवन सभागार, गुजरात साहित्य अकादेमी, गाँधीनगर, गुजरात में किया गया। यह संगोष्ठी गुजरात साहित्य अकादेमी तथा चिल्ड्रन रिसर्च यूनिवर्सिटी, गाँधीनगर के सहयोग से संपन्न हुई।

कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा अकादेमी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य श्री जयेंद्र सिंह जादव ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। चिल्ड्रन रिसर्च यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. संजय गुप्ता ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात गुजराती लेखिका श्रीमती श्रद्धा त्रिवेदी ने बीज-वक्तव्य देते हुए कहा कि "वैश्विक भाषाओं का बाल साहित्य संस्कृति और परंपरा का प्रतिबिंब होता है।" उन्होंने पश्चिमी भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य पर भी अपने विचार साझा किए। साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक श्री भाग्येश झा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बाल मनोविज्ञान की समझ पर बल दिया। चिल्ड्रन रिसर्च यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर प्रशांत पटेल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती साहित्यकार श्री हरीश व्यास ने की। इस सत्र में श्री यशवंत मेहता ने "गुजराती बाल साहित्य : इतिहास और भाषा" विषय

पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, इसके बाद श्री किरण बुडकुले का आलेख स्नेहा सबनीस द्वारा पढ़ा गया जिसका विषय था "कोंकणी बाल साहित्य : इतिहास और भाषा" तथा अंत में, श्री श्रीकांत पाटिल ने "मराठी बाल साहित्य : इतिहास और भाषा" पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी बाल साहित्यकार श्री एकनाथ आव्हाड ने की। इस सत्र में श्री हूंदराज बलवाणी ने "सिंधी बाल साहित्य : इतिहास और भाषा" तथा श्री हर्षदेव माधव ने "संस्कृत बाल साहित्य : इतिहास और भाषा" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र अत्यंत संवादात्मक रहे और श्रोताओं द्वारा सराहे गए। अंत में, श्री एकनाथ आव्हाड ने समापन वक्तव्य दिया तथा बच्चों पर केंद्रित कुछ कविताओं का पाठ भी किया।

गुजराती आदिवासी साहित्य पर परिसंवाद

9 सितंबर 2024, वडाली, गुजरात



बीज वक्तव्य देते हुए श्री भगवानदास पटेल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 'गुजराती आदिवासी साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन गुजराती विभाग, सेठ श्री बी.सी. शाह आर्ट्स कॉलेज, वडाली, ज़िला साबरकांठा, गुजरात के सहयोग से सोमवार, 9 सितंबर 2024 को कॉलेज सभागार में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी दी। श्री बी.सी. शाह आर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य प्रो. नरेश आर. पटेल सेठ ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। प्रख्यात गुजराती साहित्यकार श्री भगवानदास पटेल ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक भाग्येश झा ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री वडाली एजुकेशन बोर्ड के अध्यक्ष श्री तख्त सिंह हाडियोल कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री भगवानदास पटेल ने की। इस सत्र में श्री यशोधर रावल ने "गुजरात की आदिवासी बोलियाँ और साहित्य" पर, श्री दीपक पटेल ने "गुजराती आदिवासी लोक महाकाव्य" पर तथा श्री प्रेमजी पटेल ने "गुजराती आदिवासी लोक गीत" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री प्रेमजी पटेल ने की। इस सत्र में श्री हीरेन्द्र पांड्या ने "गुजराती आदिवासी साहित्य" पर तथा श्री अजय सिंह चौहान ने "गुजराती आदिवासी कविता" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए अंत में, सेठ श्री बी. सी. शाह आर्ट्स कॉलेज के गुजराती विभागाध्यक्ष प्रभुदास पटेल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गुजराती साहित्य और पर्यावरण पर परिसंवाद

16 नवंबर 2024, विले पार्ले, मुंबई



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री उदयन ठक्कर, हेमंग जांगला, ओम प्रकाश नागर तथा सुश्री दर्शना ओझा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 'गुजराती साहित्य और पर्यावरण' विषय पर परिसंवाद का आयोजन

शनिवार, 16 नवंबर 2024 को कलागुर्जरी, दशरथलाल जोशी मार्ग, विले पार्ले (पश्चिम), मुंबई में किया गया। यह कार्यक्रम कलागुर्जरी लाइब्रेरी और एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय के सहयोग से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी दी। एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय के स्नातक विभाग की अध्यक्ष प्रो. दर्शना ओझा, ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रख्यात गुजराती लेखक श्री उदयन ठक्कर ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा कलागुर्जरी लाइब्रेरी के प्रमुख डॉ. हेमंग जांगला ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अगले सत्र की अध्यक्षता विख्यात आलोचक एवं साहित्यकार श्री दीपक मेहता ने की। इस सत्र में श्री अभय दोषी ने 'उपन्यास में पर्यावरण', सुश्री उर्वशी पांड्या ने 'कथा साहित्य में पर्यावरण', सुश्री अंजलि शाह ने 'पर्यावरण पर निबंध' तथा सुश्री प्रतिमा पांड्या ने 'कविता में पर्यावरण' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र अत्यंत संवादात्मक रहा तथा दर्शकों, पर्यावरणविदों व साहित्यकारों ने इसे खूब सराहा। अंत में, साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य श्री हितेन आनंदपरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी

रामदरश मिश्र जन्मशती संगोष्ठी

10 जुलाई 2024, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 10 जुलाई 2024 को नई दिल्ली में प्रख्यात कवि, कथाकार रामदरश मिश्र जन्म जन्मशती संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात गुजराती लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री के. श्रीनिवास राव, प्रकाश मनु, रामदरश मिश्र, रघुवीर चौधरी तथा प्रो. कुमुद शर्मा

सदस्य श्री रघुवीर चौधरी ने किया। श्री रामदरश मिश्र स्वयं विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। बीज-वक्तव्य प्रख्यात हिंदी लेखक श्री प्रकाश मनु ने दिया और अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने इस अवसर को दुर्लभ अवसर बताते हुए कहा कि श्री रामदरश मिश्र के स्वभाव की सरलता उनके लेखन में भी है, जो उनके व्यक्तित्व के साथ ही उनके कृतित्व को महत्त्वपूर्ण बनाता है। श्री रघुवीर चौधरी जो अहमदाबाद में श्री मिश्र के शिष्य भी रहे, ने अपने 'सर' को याद करते हुए गुजरात संबंधी अनेक संस्मरण श्रोताओं से साझा किए। उन्होंने उनकी रचनाओं में नाटकीय तत्वों और कहानियों के अंत में मानवता जागृत होने वाले बिंदुओं पर विशेष चर्चा की। उन्होंने कहा कि उनके उपन्यास पात्रों के विशिष्ट चरित्र चित्रण के नाते महत्त्वपूर्ण हैं। 'अपने लोग' को उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास बताते हुए उन्होंने कहा कि उनके छोटे उपन्यास भी अपनी कलात्मकता में विशिष्ट है। श्री रामदरश मिश्र द्वारा गाए जाने वाले कजरी गीतों को याद करते हुए कहा कि वे सस्वर गाते थे। बीज वक्तव्य देते हुए श्री प्रकाश मनु ने कहा कि श्री मिश्र साहित्य के हिमालय पुरुष हैं, जिसके नीचे बैठकर नई पीढ़ी अनेक बातें सीख सकती है। उनके संपूर्ण लेखन में समय का इतिहास प्रभावित

होता है और उस सबका मिज़ाज गंगा जमुनी है। उनकी कविताओं में नए ज़माने का बोध तो है ही उनका गद्य भी बहुत प्रभावशाली है। उनकी हर विधा में आम-आदमी ही केंद्र में है।

श्री रामदरश मिश्र ने इस भव्य आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस सम्मान से मैं अभिभूत हूँ। उन्होंने अपने लंबे जीवन के रहस्य के बारे में बताते हुए कहा कि इसके लिए मैं तीन कारण बताता हूँ पहला—मैंने कोई महत्वकांक्षा नहीं पाली, दूसरा कोई नशा नहीं किया यहाँ तक कि पान तक भी नहीं और तीसरा मेरा बाज़ार से कोई संबंध नहीं, मतलब घर का ही खाया-पीया। उन्होंने अपने कई संस्मरण सुनाते हुए कहा कि मैं अमूमन जहाँ जाता हूँ, वहीं का होकर रह जाना चाहता हूँ। इसीलिए मुझे घर घुसवा भी कहा जाता है। उन्होंने अपने गुजरात के आठ वर्षों को बहुत आत्मीयता से याद करते हुए उमा शंकर जोशी और भोला भाई पटेल को भी याद किया। अपने गुरु हजारी प्रसाद द्विवेदी के भी कई संस्मरण उन्होंने सुनाए। अंत में उन्होंने अपने कई मुक्तक, कविताएँ एवं अपनी सुप्रसिद्ध ग़ज़ल "बनाया है मैंने यह घर धीरे-धीरे" सुनाई। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि गाँव हमेशा मिश्र जी के साथ रहा और उनकी कविताओं में मानवता को प्रतिष्ठित किया गया है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण संवेदनाओं के साथ पूरा युग बोध प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत होता है।

प्रथम सत्र जो उनके पद्य साहित्य पर केंद्रित था कि अध्यक्षता श्री बाल स्वरूप राही ने की और उनकी पुत्री डॉ. स्मिता मिश्र एवं श्री ओम निश्चल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. स्मिता मिश्र ने अपने पिता की सदाशयता और जिजीविषा का उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी हिम्मत से ही परिवार की हिम्मत भी बनी रही। ओम निश्चल ने कहा कि उनकी कविता की गीतात्मकता उसकी ताकत है। पूरी सदी का काव्य बोध उनके लेखन में झलकता है। उनका लेखन हमेशा समकालीन परिस्थितियों से परिचालित होता रहा। बाल स्वरूप राही ने मॉडल टाउन में रहने के उनके संस्मरणों को साझा करते हुए कहा कि वे बहुत ही सहज और मानवीय थे। उन्होंने उनकी कई रचनाओं को पढ़कर भी सुनाया।

द्वितीय सत्र रामदरश मिश्र के गद्य साहित्य पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात लेखक और शिक्षाविद् प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस सत्र में श्रीमती अलका सिन्हा, डॉ. वेदमित्र शुक्ल और डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ने आलेख-पाठ किया। श्रीमती अलका सिन्हा ने उनके कथा लेखन में उपेक्षित पात्रों की बेहतरी की कल्पना और स्त्री के संघर्षों का उल्लेख करते हुए कहा कि उनका पूरा लेखन गाँव के यथार्थ का चित्रण और बहुत ईमानदारी से किया गया है। डॉ. वेदमित्र शुक्ल ने उनके कथेतर गद्य पर विस्तार से विचार करते हुए कहा कि उनके कथेतर गद्य में भी कविता/कहानी के अंश हैं। इसीलिए इनमें 'जीवन-राग' की सहजता देखी जा सकती है। डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ ने उनकी आलोचना पुस्तकों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि मूल्य उनकी आलोचना को समझने का बीज शब्द है। रामदरश मिश्र ने आलोचना को भी सृजनात्मक बना दिया है। अंत में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि उनके लेखन में सहज रूप में मानवीय मूल्यों की स्थापना पाई जाती है। उनकी सभी रचनाओं में जीवन संघर्ष का सच्चा प्रतिनिधित्व है और वह समय के साथ अपने को बदलते भी रहे हैं। कुल मिलाकर रामदरश मिश्र समग्र साहित्य की रचना के पक्षधर हैं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। कार्यक्रम में रामदरश मिश्र के पूरे परिवार के साथ ही उनके अनेक शिष्य, लेखक, कॉलेज के विद्यार्थी और पत्रकार उपस्थित थे।

हरिशंकर परसाई जन्मशती संगोष्ठी

10 अगस्त 2024, दुर्ग, छत्तीसगढ़



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री सियाराम शर्मा, देवेंद्र कुमार देवेश, रविभूषण, राजेश पांडेय तथा एम.ए. सिद्दीकी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा हरिशंकर परसाई जन्मशती संगोष्ठी का आयोजन 10 अगस्त 2024 को विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग के राधाकृष्णन सभागार में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग तथा शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उतई के सहयोग से आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी की गतिविधियों तथा उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. सियाराम शर्मा ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को साहित्य की सशक्त विधा के रूप में स्थापित किया तथा उनका व्यंग्य आमजन के प्रति प्रतिबद्ध रहा। हिंदी के प्रख्यात समालोचक प्रो. रविभूषण ने कहा कि परसाई स्वतंत्र भारत के सजग प्रहरी थे। अध्यक्षीय संबोधन में दुर्ग संभाग के उच्च शिक्षा विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. राजेश पांडेय ने कहा कि परसाई ने पूरे व्यवस्था तंत्र का अध्ययन किया था। उन्होंने व्यक्ति और समाज के दोहरे चरित्र पर आलोचनात्मक ढंग से लेखन किया। समापन वक्तव्य शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.ए. सिद्दीक़ी ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र "हरिशंकर परसाई : लोकतंत्र की गद्य-टीका" विषय पर आधारित था। इसमें डॉ. आशीष त्रिपाठी ने कहा कि परसाई ने गद्य को लोकतांत्रिक बनाया तथा उसकी सीमाओं को तोड़ा। श्री विनोद साव ने कहा कि परसाई का लेखन जड़ता को तोड़ने का प्रयास था। डॉ. आशुतोष कुमार ने कहा कि परसाई का व्यंग्य मनोरंजन नहीं करता, बल्कि बेचैन करता है तथा परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. प्रेम जनमेजय ने कहा कि परसाई मूलत: जनतंत्र के लेखक थे और जनता के लिए लिखते थे। द्वितीय सत्र "हरिशंकर परसाई की आख्यायिका-दृष्टि तथा व्यंग्य" विषय पर आधारित था। इसमें डॉ. जयप्रकाश ने कहा कि परसाई के लेखन में मिथकों का व्यापक प्रयोग हुआ है। श्री प्रभु नारायण वर्मा ने कहा कि परसाई बार-बार व्यवस्था को उद्घाटित कर उस पर तीखी टिप्पणियाँ करते हैं। श्री कैलाश बनवासी ने कहा कि परसाई का साहित्य आज़ादी के बाद की व्यवस्था और समाज को समझने का दस्तावेज़ है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री राजेंद्र दानी ने कहा कि परसाई अपने लेखन में परंपरा

का उल्लेख करते हैं तथा उन्होंने ठोस ज़मीन से विचारों और तथ्यों को उठाया है। धन्यवाद ज्ञापन अभिनेश सुराना ने प्रस्तुत किया।

शिवानी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प विषयक जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

8 नवंबर 2024, नैनीताल, उत्तराखंड



(बाएँ से दाएँ) प्रो. निर्मला ढैला बोरो, प्रो. रूपा सिंह, प्रो. दीवान सिंह रावत, प्रो. जगत सिंह बिष्ट तथा प्रो. सिद्धेश्वर सिंह

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं महादेवी वर्मा सृजन पीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी कथाकार शिवानी की जन्म शतवार्षिकी के उपलक्ष्य में 'शिवानी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन 8 नवंबर 2024 को यू.जी.सी. मालवीय मिशन टीचर्स ट्रेनिंग सेंटर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड में किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. दिवा भट्ट ने कहा कि शिवानी की नायिकाएँ संघर्षों से जूझती हैं किंतु कभी हार नहीं मानतीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत ने कहा कि आज हिंदी में पढ़ने और लिखने की परंपरा को सशक्त बनाने की आवश्यकता है। विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. देव सिंह पोखरिया ने कहा कि लोकप्रियता के मामले में शिवानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थीं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एस.एस.जे. विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के पूर्व कुलपति प्रो. जगत सिंह बिष्ट ने की। उन्होंने कहा कि शिवानी के हास्यबोध की विशिष्टता यह है कि वह जाति-धर्म के परे मानवीयता को केंद्र में रखती हैं। डॉ. रजनी गुप्त ने कहा कि शिवानी को कथा के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रुचि उत्पन्न करने तथा कहानी को केंद्रीय विधा बनाने का श्रेय जाता है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ विभाग डी.एस.बी. परिसर की अध्यक्ष प्रो. निर्मला ढैला बोरो ने की। इस सत्र में प्रो. चंद्रकला रावत,प्रो. सिद्धेश्वर सिंह, डॉ. दिनेश कर्नाटक तथा डॉ. अनिल कार्की ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो. शिरीष कुमार मौर्य ने किया।

कृष्णा सोबती जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

19–20 दिसंबर 2024, नई दिल्ली



(बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवासराव, श्री गोविंद मिश्र, डॉ. माधव कौशिक, प्रो. कुमुद शर्मा तथा श्री गिरधर राठी

साहित्य अकादेमी द्वारा कृष्णा सोबती जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 19–20 दिसंबर 2024 को नई दिल्ली में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने की तथा लबधप्रतिष्ठ कवि एवं आलोचक श्री गिरधर राठी ने बीज-वक्तव्य, हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक श्री गोविंद मिश्र ने आरंभिक वक्तव्य तथ

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा द्वारा समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में सभी अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्रम् से करने के बाद साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि कृष्णा सोबती जी की सबसे बड़ी पहचान जीवंत भाषा थी। उन्होंने आम लोगों के अनुभवों को अपने लेखन का हिस्सा बनाया। अपने बीज-वक्तव्य में गिरधर राठी ने कहा कि वे एक ऐसी लेखिका थीं जो अपनी आलोचना को भी गंभीरता से लेती थीं और उसका जवाब सतर्कता से देती थीं। उनका पूरा साहित्य बंदिशें तोड़ता है और अभिव्यक्ति के खतरे उठाता है। उनके लेखन की तीन विशेषताएँ कहीं और नहीं मिलती - उनके लेखन में अनेक मौसमों का वर्णन, अनेक स्थानीय भाषाओं के पुट और बचपन के सौंदर्य का बखान। इतना ही नहीं उनके लेखन में चरित्रों की इतनी विभिन्नता है जो और कहीं नज़र नहीं आतीं। अपने आरंभिक वक्तव्य में श्री गोविंद मिश्र ने उनके साथ बिताए अपने समय को याद करते हुए बताया कि किस प्रकार लेखकों के अंतरसंबंधों का साहित्य पर असर पड़ता है। इसका उदाहरण देते हुए कहा कि उनसे कृष्णा जी ने बहुत पहले ही कह दिया था कि मुझे आलोचना लिखकर सृजनात्मक लेखन ही करना चाहिए, जिसे मैंने माना और उसका फल भी प्राप्त किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि उनके लेखन में रोमांस और विद्रोह दोनों ही साथ-साथ चलते थे। उन्होंने अपना जीवन बहुत जीवट तरीके से जिया और आने वाली पीढ़ी को प्रभावित किया। उनके पात्रों में स्थानीय संस्कृति का जो प्रभाव था, उससे उनके पात्र जीवंत हो उठते थे। अपने समापन वक्तव्य में प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि वे अपने लेखन के प्रति बेहद सतर्क, सावधान और सजग थीं। उन्होंने समकालीन यथार्थ को अपने पात्रों के ज़रिए बेहद मज़बूती से पेश किया। एक तरह से उन्होंने महादेवी वर्मा द्वारा तैयार पृष्ठभूमि को आगे बढ़ाया। उन्होंने हमेशा अपने पाठकों की परवाह की और उन्हें सबसे ज्यादा महत्त्व दिया।

प्रथम सत्र '*ज़िंदगीनामा* के पुनर्पाठ' पर आधारित था जो श्रीमती मृदुला गर्ग की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ और इसमें प्रो. पॉल कौर (पंजाबी), प्रो. शाफे किदवई (उर्दू) एवं सुकृता पॉल कुमार (अंग्रेजी) ने अपने विचार रखे। प्रो. पॉल कौर ने '*ज़िंदगीनामा* में लोकसंस्कृति की राजनीति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। तो प्रो. शाफ़े किदवई ने *ज़िंदगीनामा* को 'पीपुल्स हिस्ट्री' का उदाहरण बताते हुए कहा कि ये विभाजन के आस-पास का एकमात्र ऐसा उदाहरण है जिसमें हिंदू, मुस्लिम और सिख तीनों का सामाजिक तानाबाना प्रस्तुत किया गया है। श्रीमती सृकृता पॉल कुमार ने कहा कि *ज़िंदगीनामा* एक तरह से किसी एक विचारधारा को नहीं बल्कि अनेक विचारधाराओं को प्रस्तुत करता है और उसे 'काउंटर आर्काइव' कहा जा सकता है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्रीमती मृदुला गर्ग ने कहा कि उनके लेखन की भाषा स्त्रीत्व की भाषा है जोकि बहुत ही मर्मभेदी है। पूरा *ज़िंदगीनामा* औरत की जिंदगी में चल रहे सतत उत्सवों की कथा है। ये उत्सव भले और बुरे दोनों ही हैं। अंतिम सत्र कृष्णा सोबती के कथेतर गद्य पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने की और इसमें श्री अर्पण कुमार, डॉ. रोहिणी अग्रवाल एवं श्री सूर्यनाथ सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अर्पण कुमार ने सोबती की संस्मरणात्मक पुस्तक 'हम हशमत' के चारों खंडों पर विस्तार से बात की। रोहिणी अग्रवाल ने कहा कि वे अपने लेखन में निस्संग भी हैं और तल्लीन भी जो उनके लेखन को संतुलित भी करता है और बड़ा भी। सूर्यनाथ सिंह ने कहा कि कृष्णा सोबती का सबसे बड़ा गुण उनका लेखकीय साहस था, जो उनके कथेतर गद्य में नज़र आता है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि 'हम हशमत' ही नहीं उनका पूरा लेखन शब्दों का विवेकपूर्ण इस्तेमाल और लोकभाषा की

ताक़त का प्रमाण है।

अगले दिन 'कृष्णा सोबती का कथा साहित्य' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रो. गोपेश्वर सिंह ने की। इस सत्र में निधि अग्रवाल, श्री सुधांशु गुप्ता तथा श्री सुनीता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कहा कि कृष्णा सोबती की प्रत्येक रचना ने पाठकों तथा आलोचकों को आकृष्ट किया है। उनकी उपस्थिति उनकी भाषा को भव्य मंच प्रदान करती है। 'कृष्णा सोबती का साहित्य और स्त्री विमर्श' विषयक सत्र की अध्यक्षता क्षमा शर्मा की। अल्पना मिश्रा, सविता सिंह तथा श्रीमती उपासना ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती क्षमा शर्मा ने कृष्णा सोबती के साथ जुड़ी अंतरंग स्मृतियाँ साझा कीं और स्वीकार किया कि वे हमारे समय की सबसे महान लेखिका थीं और रहेंगी। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

मोहन राकेश पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

11 मार्च 2025, नई दिल्ली



(बाएँ से दाएँ) डॉ. के. श्रीनिवास राव, डॉ. जयदेव तनेजा, डॉ. माधव कौशिक, श्री गोविंद मिश्र, श्री अनुपम तिवारी तथा डॉ. वैभव सिंह

11 मार्च 2025 को साहित्य अकादेमी के वार्षिक साहित्योत्सव के पाँचवें दिन, हिंदी के प्रतिष्ठित नाटककार मोहन राकेश को उनकी जन्म शतवार्षिकी पर स्मरण किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में मोहन राकेश के व्यक्तित्व को बहुआयामी बताते हुए उनके लेखन के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल दिया। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक श्री गोविंद मिश्र ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि राकेश पहले ऐसे नाटककार थे जिनके नाटक हर दृष्टि से रंगमंचीय मापदंडों पर खरे उतरते हैं। विख्यात हिंदी रंगमंच-समालोचक श्री जयदेव तनेजा ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि राकेश संभवत: हिंदी के सबसे अधिक चर्चित लेखक हैं। उन्होंने राकेश से जुड़े कई मिथकों को भी रेखांकित किया और कहा कि राकेश ने हिंदी नाटककार की गरिमा को प्रतिष्ठा दी। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि राकेश के व्यक्तित्व से अधिक उनके लेखन को पढ़ा और समझा जाना चाहिए।

'मोहन राकेश का नाट्य साहित्य' विषयक सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री एम.के. रैना ने कहा कि राकेश ने रंगमंच की आत्मा को समझा और उसकी भाषा को रूपांतरित किया। डॉ. आशीष त्रिपाठी ने कहा कि राकेश अपने नाटकों को डिज़ाइनर की तरह देखते थे — उनकी भाषा कलाकारों को प्रदर्शन की नई संभावनाएँ देती है। 'मोहन राकेश का कथा साहित्य' विषयक सत्र की अध्यक्षता प्रो. देवेंद्र राज अंकुर ने की। इस सत्र में श्री अजीत राय, श्री शंभु गुप्ता तथा डॉ. वैभव सिंह ने अपने विचार साझा किए। श्री शंभु गुप्त ने कहा कि राकेश का गद्य सामान्य जीवन की यथार्थता को प्रतिबिंबित करता है। श्री अजीत राय ने आज के संदर्भ में उनके कुछ नाटकों को स्त्री विरोधी बताते हुए सुझाव दिया कि उनके निजी जीवन को उनके साहित्य से अलग करके देखा जाना चाहिए। श्री वैभव सिंह ने मोहन राकेश को 'पूर्ण लेखक' कहा तथा यह भी कहा कि वे संस्थागत मान्यता से हमेशा डरते रहे। देवेंद्र राज अंकुर ने अंत में कहा कि राकेश का व्यक्तित्व और साहित्य एक ही थे — उन्होंने अपने नाटकों में जीवन के कई हिस्सों को यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया।

कन्नड

मीडिया और साहित्य पर परिसंवाद

3 अगस्त 2024, बेंगळूरु



स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा 3 अगस्त 2024 को 'मीडिया और साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य दिया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात कन्नड लेखक तथा फ़िल्म निर्देशक प्रो. बरगुरु रामचंद्रप्पा ने किया। अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. बसवराज कालगुडी ने तथा आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. बसवराज सदर ने प्रस्तुत किया। क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के प्रभारी अधिकारी श्री नवीन कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में श्री च.ह. रघुनाथ ने "प्रिंट मीडिया और साहित्य (पत्रिकाएँ)", प्रो. एम. अब्दुल रहमान पाशा ने "दृश्य मीडिया और साहित्य" तथा डॉ. आनंद पाटिल ने "मीडिया और बाल साहित्य" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में श्री नागतिहल्ली चंद्रशेखर ने "सिनेमा और साहित्य" तथा डॉ. बी.आर. गुरु प्रसाद ने "मीडिया और विज्ञान साहित्य" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में, प्रख्यात कन्नड लेखिका, पत्रकार तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. विजया ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में साहित्य प्रेमी तथा पाठकों की उपस्थिति रही।

बीसवीं सदी का कन्नड साहित्य : दर्शन और उपलब्धियाँ विषय पर परिसंवाद

26 नवंबर 2024, बेंगळूरु



आलेख प्रस्तुत करते हुए एस.आर. विजयशंकर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), बेंगळूरु के कन्नड संघ के सहयोग से मंगलवार, 26 नवंबर 2024 को क्राइस्ट विश्वविद्यालय के सिंडिकेट रूम में 'बीसवीं सदी का कन्नड साहित्य : दर्शन और उपलब्धियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के प्रभारी अधिकारी श्री एल. सुरेश कुमार ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। सुविख्यात कन्नड लेखक डॉ. करिगौड़ा बीचनहल्ली ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। विश्वविद्यालय के मुख्य वित्त अधिकारी डॉ. रेव. फ़ादर वर्गीज के.जे. ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कन्नड संघ की संयोजिका डॉ. रथी एम.टी. ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में श्री एस.आर. विजयशंकर ने "नवोदय संवेदनशीलता के दार्शनिक आयाम", के. सत्यनारायण ने "मास्ति तथा कारंत की सृजनात्मकता में दार्शनिकता",

डॉ. विक्रम विसाजी ने "कुवेम्पु और बेंद्रे के सृजनात्मक दर्शन" तथा डॉ. अप्पगेर सोमशेखर ने "प्रगतिशील साहित्य की दार्शनिक चिंताएँ" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में डॉ. एच. शशिका ने "आधुनिक (नव्य) संवेदनशीलता तथा प्रमुख रचनाकारों के पीछे के दार्शनिक आयाम" तथा च.ह. रघुनाथ ने "उत्तर-आधुनिक (नव्योत्तर) संवेदनशीलता के आयाम" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में पी. चंद्रिका ने "नारी संवेदनशीलता की प्रमुख विशेषताएँ" तथा डॉ. सुभाष राजामाणे ने "दलित-बंद्य साहित्य के दार्शनिक आयाम" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। साहित्यप्रेमियों तथा विद्वानों ने कार्यक्रम की सराहाना की।

शांतारस के जीवन और साहित्य पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

28 जनवरी 2025, हम्पी



स्वागत वक्तव्य देते हुए सामान्य परिषद के सदस्य डॉ. बसवराज सदर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी के कन्नड साहित्य अध्ययन विभाग के सहयोग से मंगलवार, 28 जनवरी 2025 को कन्नड विश्वविद्यालय के "भुवन विजय सभागार" में 'शांतारस के जीवन और साहित्य' पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. बसवराज सदर ने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी द्वारा आयोजित जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठियों के महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि शांतारस शांत स्वभाव के व्यक्ति थे, जिन्होंने कन्नड पाठकों से उर्दू ग़ज़ल विधा का परिचय कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन विख्यात कन्नड लेखक और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. रहमत तारिकेरे ने किया। उन्होंने कहा कि शांतारस को शरण साहित्य की परंपरा, उर्दू ग़ज़लों की कड़ी तथा कल्याण कर्नाटक की सांस्कृतिक धुरी के रूप में माना जा सकता है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कन्नड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी.वी. परमशिवमूर्ति ने की। उन्होंने अकादेमी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि छात्रों को इन व्याख्यानों को ध्यान से सुनकर लाभ लेना चाहिए।

प्रथम सत्र में डॉ. अमरेश नुगडोनी ने "शांतारस : व्यक्ति और व्यक्तित्व", डॉ. भाग्यज्योति हीरेमठ ने "शांतारस की कविता और ग़ज़लें" तथा डॉ. सी.एस. भीमराय ने "शांतारस के उपन्यास और कहानियाँ" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में डॉ. वेंकटगिरि दलवई ने "शांतारस के नाटक और निबंध", डॉ. के. रवींद्रनाथ ने "शांतारस के शोध और पाठ आलोचना" तथा डॉ. प्रभु खानापुरे ने "शांतारस के अनुवाद और संपादित कृतियाँ" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में शांतारस की सुपुत्री तथा विख्यात कन्नड लेखिका श्रीमती भारती मोहन कोटी ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. विजय पूनच्चा तांबंडा ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में शांतारस की सुपुत्री श्रीमती भारती मोहन कोटी तथा पुत्र श्री श्री बसव प्रभु को सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वेंकटगिरि दलवई ने प्रस्तुत किया।

कश्मीरी

ग़ुलाम नबी गौहर पर संगोष्ठी

22 जुलाई 2024, बडगाम, जम्मू-कश्मीर



(बाएँ-दाएँ) श्री शाद रमज़ान, सुश्री बेगम हसीना गौहर, श्री बी.ए. किरमानी, श्री सोहन कौल तथा श्री एम. अमीन भट

22 जुलाई 2024 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा कश्मीर के बडगाम ज़िले के चरार-ए-शरीफ़ स्थित लाइफ़ फाउंडेशन स्कूल में आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में विख्यात कवि, लेखक, न्यायविद् तथा उपन्यासकार स्वर्गीय ग़ुलाम नबी गौहर को उनकी छठी पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री बशीर अहमद किरमानी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि गौहर बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे, जिनका कश्मीरी भाषा, संस्कृति और साहित्य में योगदान सदैव स्मरण किया जाएगा। साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. शाद रमज़ान ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि गौहर ने कश्मीरी साहित्य को ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से नई ऊँचाई प्रदान की। कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. सोहन कौल ने अपने बीज-वक्तव्य में गौहर के जीवन तथा योगदान का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया। अदबी मरकज़ कामराज़ के अध्यक्ष मोहम्मद अमीन भट तथा प्रख्यात कश्मीरी लेखक प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा ने भी गौहर के जीवन और साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला। लाइफ़ स्कूल फ़ाउंडेशन के निदेशक श्री नज़र-उल-इस्लाम ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा साहित्य अकादेमी को इस महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

सर्वश्री मुश्ताक़ मुहर्रम, अली अहसन, इनायत गुल, मोहम्मद यूसुफ़ शाहीन, रऊफ़ आदिल तथा जी.एन. अद्फार ने गौहर के साहित्यिक कार्यों पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत किए तथा उनके कश्मीरी साहित्य, कविता और संस्कृति में योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि गौहर ने कश्मीरी, उर्दू तथा अंग्रेज़ी में राजनीति, साहित्य, इतिहास तथा सूफ़ीवाद जैसे विषयों पर लगभग 60 पुस्तकें लिखीं हैं।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती डॉली टिक्कू अर्वाल तथा श्री रऊफ आदिल ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान तथा छात्र उपस्थित थे।

कश्मीरी महिला लेखिकाओं का साहित्यिक सम्मेलन

22-23 अक्तूबर 2024, बेमिना, श्रीनगर



(बाएँ-दाएँ) सुश्री महफ़ूज़ा जान, सुश्री शगुफ़्ता राथर, सुश्री नसीम शफ़ाई और सुश्री यासमीन फ़ारूक़ ख़ान

साहित्य अकादेमी द्वारा 'कश्मीरी लेखिकाओं का साहित्यिक सम्मेलन' का आयोजन 22–23 अक्तूबर 2025 को बेमिना, श्रीनगर में आयोजित किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विख्यात कश्मीरी कवयित्री और शिक्षाविद् श्री नसीम शेफ़ाई ने की। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य तथा सुविख्यात कश्मीरी लेखक प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर विख्यात लेखिका सुश्री महफूज़ा जान तथा साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श समिति के संयोजक श्री शाद रमज़ान भी उपस्थित थे। प्रारंभ में, डिग्री कॉलेज, बेमिना की प्राचार्य डॉ. यासमीन फारूक़ ख़ान ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री शाद रमज़ान ने उद्घाटन वक्तव्य तथा महफूज़ा जान साहिबा ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्रीमती डॉली टिक्कू अरवाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता विख्यात लेखिका, शिक्षाविद् तथा समाजसेविका श्रीमती नीरजा मट्टू ने की। सुश्री साईका सहर, शाइस्ता अहमद, सुश्री शाहिदा शबनम तथा सुश्री रेहाना ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मजीद मजाज़ी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन कहानी-पाठ सत्र का संचालन श्री रियाज़ अतहर ने किया। इस सत्र की अध्यक्षता विख्यात कवयित्री और कहानीकार लेखिका सुश्री महफूज़ा जान ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मंशूर बनिहाली तथा विशिष्ट अतिथि श्री अब्दाल महजूर थे। सुश्री नुसरत इक़बाल ने आलेख प्रस्तुत किया तथा सुश्री नीलोफर नाज़ नहवी, सुश्री दीबा नज़ीर, सुश्री रूबी निसा ख़ान और सुश्री शेख़ उतोफ़ा रफ़ीक़ ने अपनी-अपनी कहानियों का पाठ किया।

सम्मेलन के तृतीय तथा समापन सत्र की अध्यक्षता विख्यात कवयित्री और लेखिका सुश्री हमिदा शाह अख्तर ने की। इस अवसर पर आकाशवाणी, श्रीनगर की सुश्री रुख़साना जबीन तथा साहित्य अकादेमी की कश्मीरी परामर्श समिति के सदस्य मोहम्मद अमीन भट भी उपस्थित थे। सुश्री शाइस्ता शफ़ाक, सुश्री निगहत साहिबा, सुश्री निगहत नसरीन तथा सुश्री शबनम आशाई ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस सत्र में सुश्री समरीना गिलानी ने कश्मीरी महिला कविता पर अपना आलेख पढ़ा। कश्मीर के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लेखकों तथा साहित्यकारों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। कार्यक्रम का समापन शाद रमज़ान द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

ग़ुलाम मोहम्मद शाद पर परिसंवाद

15 नवंबर 2024, अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर



(बाएँ-दाएँ) सर्वश्री गुलज़ार अहमद राथर, मोहम्मद शफ़ी अयाज़, ग़ुलाम नबी आतश तथा मंशूर बानिहाली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा मराज़ अदबी संगम के सहयोग से 15 नवंबर 2024 को हिलाल इंस्टीट्यूट, फज़लपोरा, बिजबिहाड़ा, अनंतनाग (जम्मू-कश्मीर) में 'ग़ुलाम मोहम्मद शाद' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कश्मीरी कवि, लेखक एवं मराज़ अदबी संगम के संरक्षक श्री ग़ुलाम नबी आतश ने की। स्वागत वक्तव्य मोहम्मद शफ़ी अयाज़ ने प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री गुलज़ार अहमद राथर ने ग़ुलाम मोहम्मद शाद की साहित्यिक गतिविधियों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री शाद रमज़ान ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया, तथा मराज़ अदबी संगम के महासचिव श्री इज़हार मुबशिर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य श्री मंशूर बानिहाली ने की तथा साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल

के संयोजक श्री शाद रमज़ान ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री निसार नदीम, यूसुफ़ जहाँगीर, मोहम्मद शफ़ी अयाज़ तथा इज़हार मुबशिर ने ग़ुलाम मोहम्मद शाद के जीवन और साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला तथा मशरू नसीबाबादी ने शाद साहब को काव्यांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कई लेखक, कवि, विद्वान तथा प्रमुख साहित्यिक हस्तियाँ उपस्थित थीं।

मीर ग़ुलाम रसूल नाज़की पर परिसंवाद

12 जनवरी 2025, बांदीपोरा, जम्मू-कश्मीर



बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए मोहम्मद अमीन भट

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'मीर ग़ुलाम रसूल नाज़की' पर परिसंवाद का आयोजन 12 जनवरी 2025 को मोहीउद्दीन हाजिनी मेमोरियल पब्लिक हाई स्कूल, हाजिन, बांदिपोरा (कश्मीर) में किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री मजीद मजाज़ी ने अतिथियों का स्वागत किया। परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री शबनम तिलगामी ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा– "मीर ग़ुलाम रसूल नाज़की जैसे लेखक हमारी विरासत हैं तथा हमें अपने पूर्वजों को बार-बार याद करते रहना चाहिए।"

साहित्य अकादेमी के परामर्श मंडल के सदस्य एवं अदबी मरकज़ कामराज़ के अध्यक्ष मोहम्मद अमीन भट ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए अकादेमी द्वारा ऐसे आयोजनों के लिए की गई कोशिशों की सराहना की। अध्यक्षीय वक्तव्य में कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री शाद रमज़ान ने कहा कि विगत दो वर्षों में अकादेमी ने जम्मू-कश्मीर में सराहनीय कार्य किए हैं तथा सैकड़ों विख्यात और नवोदित रचनाकारों को मंच प्रदान किया है, और यह क्रम लगातार जारी है।

अगले सत्र की अध्यक्षता विख्यात कवि, लेखक एवं इतिहासकार श्री अब्दुल खालिक शम्स ने की। उनके साथ मंच पर श्री शाकिर शफ़ी और श्री ज़मीर अंसारी उपस्थित थे। इस सत्र में मीर ग़ुलाम रसूल नाज़की के जीवन और साहित्यिक रचनाओं पर आधारित आलेख सर्वश्री अमीन फ़ैयाज़, मीर तारिक रसूल, मंसूर मुन्तज़िर, फ़ारूक़ हाजिनी तथा आदिल मोहीउद्दीन ने प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन श्री मीर तारिक रसूल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

कोंकणी

'कोंकणी साहित्य में मेरा देश और परदेस' विषय पर संगोष्ठी

22–23 फ़रवरी 2025, परवरी, गोवा



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री भूषण वी. भावे, दामोदर मावजो, मेल्विन रोड्रिगस, भूषण सावोईकर, पूर्णानंद चारी तथा ओम प्रकाश नागर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 'कोंकणी साहित्य में मेरा देश और परदेस' विषय पर

द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 22–23 फ़रवरी 2025 को शिक्षा निदेशालय के सभागार, परवरी, गोवा में किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन गोवा सरकार के उच्च शिक्षा निदेशालय तथा विद्या प्रबोधिनी कॉलेज, परवरी के सहयोग से हुआ। ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य तथा श्री पूर्णानंद चारी ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन वक्तव्य श्री भूषण सावोईकर ने तथा श्री दामोदर मावजो ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री भूषण वी. भावे थे तथा सत्र की अध्यक्षता श्री मेल्विन रोड्रिगस ने की। इस सत्र का समापन श्री दिवाकर चंद्रकांत गुरव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रथम सत्र का विषय था - "कोंकणी साहित्य में परदेसी जीवन"। सत्र की अध्यक्षता श्री मुकेश थाली ने की। इस सत्र में श्री सुशांत नाइक और श्री शैलेंद्र मेहता ने पुर्तगाल, अफ्रीका, ब्रिटेन और खाड़ी देशों से संबंधित विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था - "प्रवासी कोंकणी साहित्य में विषय-वस्तु"। सत्र की अध्यक्षता श्री किरण बुडकुले ने की। इस सत्र में श्री किशोर गोंसाल्वेस ने कोंकणी उपन्यासों पर तथा श्री हेनरी मेंडोंका ने कोंकणी कविता पर आलेख पढ़े। तृतीय सत्र का विषय था - "भारतीय समाज का कोंकणी साहित्य में प्रतिबिंब"। सत्र की अध्यक्षता श्री भूषण वी. भावे ने की। इस सत्र में श्री दिलीप बोरकर ने भारतीय सामाजिक विषयों तथा श्री रमेश घाड़ी ने परंपरा, आधुनिकता एवं सामाजिक परिवर्तन पर अपने विचार व्यक्त किए। चतुर्थ सत्र का विषय था - "डिजिटल युग और कोंकणी साहित्य"। सत्र की अध्यक्षता श्री वैली क्वाड्रास ने की। इस सत्र में सुश्री स्टैनी डिसूज़ा ने ऑनलाइन मंचों तथा सुश्री श्रीविद्या कर्णाथ ने डिजिटल प्रकाशन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र में "अनुवाद में कोंकणी साहित्य : भारतीय और विदेशी परिप्रेक्ष्य" विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री मेल्विन रोड्रिगस ने की। इस चर्चा में श्री ऑस्कर डी नोरोन्हा (पुर्तगाली), सुश्री क्षमा धारवाड़कर (फ्रेंच), श्री जेवियर कोटा (अंग्रेज़ी) तथा श्री गोकुलदास प्रभु (*मलयाळम्*) ने भाग लिया। समापन सत्र की अध्यक्षता संजय वाळवलकर ने की, जिसमें शशिकांत पुनाजी ने समापन वक्तव्य तथा पूर्णानंद चारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। सभी सत्र संवादात्मक रहे तथा बड़ी संख्या में उपस्थित साहित्यप्रेमियों द्वारा सराहे गए।

रवींद्र केळेकर के जीवन और कृतित्व पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

1 अगस्त 2024, मडगाँव, गोवा



बीज-वक्तव्य देते हुए श्री भूषण भावे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 'रवींद्र केळेकर के जीवन और कृतित्व' पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन 1 अगस्त 2024 को रवींद्र भवन, मडगाँव में गोवा कोंकणी अकादमी, गवर्नमेंट कॉलेज कुएपेम तथा रवींद्र भवन के सहयोग से किया गया। ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा मंचासीन अतिथियों—श्री दामोदर मोराजकर, श्री गिरीश रवींद्र केळेकर तथा श्री जॅयदीप भट्टाचार्य (मुख्य अतिथि एवं उद्घाटनकर्ता)— का परिचय प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मेल्विन रोड्रिगस ने रवींद्र केळेकर को कोंकणी संस्कृति का प्रतीक बताया। श्री गिरीश रवींद्र केळेकर ने सभा को संबोधित कर अतिथियों का स्वागत किया तथा श्री

भूषण भावे ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए केळेकर को आधुनिक गोवा की चेतना का प्रकाशस्तंभ बताया। श्री वसंत सावंत ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा केळेकर के साहित्यिक योगदानों की प्रशंसा की। इस अवसर पर रवींद्र केळेकर के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री राजय पवार ने की। इस सत्र का विषय था - "दर्शन और मूल्य"। सर्वश्री अनंत अग्नि, नारायण देसाई तथा राजू नाइक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र, की अध्यक्षता श्री पूर्णानंद चारी ने की। इस सत्र का विषय था - "राष्ट्र, क्षेत्र और सार्वभौमिक दर्शन"। सर्वश्री प्रकाश वज्रीकर, हनुमंत चोपडेकर तथा पय्यान्नूर रमेश पै ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र संवादात्मक रहे तथा उपस्थित श्रोताओं द्वारा सराहे गए। समापन सत्र की अध्यक्षता सुश्री सविता केरकर ने की तथा श्री सुशांत नाइक ने सभी प्रतिभागियों, विद्वानों, गणमान्य अतिथियों और साहित्यकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

मनोहरराय सरदेसाई के जीवन और कृतित्व पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

14 दिसंबर 2024, सांकेलिम, गोवा



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री पूर्णानंद चारी, वसंत सावंत, डॉ. के. श्रीनिवास राव, उदय भेंब्रे, मेल्विन रोड्रिगस और ओम प्रकाश नागर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 'मनोहरराय सरदेसाई के जीवन और कृतित्व' पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन शनिवार, 14 दिसंबर 2024 को सरकारी कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सांकेलिम, गोवा के सभागार में गोवा कोंकणी अकादमी तथा सरकारी महाविद्यालय, सांकेलिम के सहयोग से किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी की गतिविधियों के साथ-साथ इस कार्यक्रम के बारे में बताया तथा मनोहरराय सरदेसाई के कोंकणी साहित्य में योगदान पर प्रकाश डाला। गोवा कोंकणी अकादमी के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री वसंत सावंत कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे तथा श्री सुनील सरदेसाई विशेष आमंत्रित अतिथि थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात कोंकणी उपन्यासकार और गीतकार श्री उदय भेंब्रे थे, उन्होंने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री पूर्णानंद चारी ने आरंभिक वक्तव्य ने प्रस्तुत की। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मेल्विन रोड्रिगस ने की। उन्होंने कहा कि मनोहरराय सरदेसाई का कोंकणी साहित्य में योगदान अमूल्य है। अंत में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था – "मनोहरराय सरदेसाई की कविता"। इस सत्र की अध्यक्षता श्री पूर्णानंद चारी ने की। सुश्री सोनिया सिरसाट ने "प्रकृति की सुंदरता" पर, श्री राजय पवार ने "सामाजिक स्वर" पर तथा श्री हेनरी मेंडोंसा ने "दर्शन" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था— "मनोहरराय सरदेसाई का बाल साहित्य और गीत"। इस सत्र की अध्यक्षता श्री वसंत सावंत ने की। इसमें श्री उमेश मनोहर सरदेसाई ने "मूल्य शिक्षा का माध्यम और सौंदर्यबोध का उपकरण", श्री पांडुरंग फळदेसाई ने "लोक एवं परी कथा में प्रयोगधर्मिता" तथा फादर लुईस गोम्स ने "मातृभाषा प्रेम का संचार"

विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता शासकीय महाविद्यालय, सांकेलिम के कोंकणी विभाग की सहायक प्राध्यापक एवं प्रभारी सुश्री उर्वशी नाइक ने की। इस सत्र में श्री हेनरी मेंडोंसा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

विगत दशक में कोंकणी कविता में नव प्रवृत्तियाँ विषयक परिसंवाद

31 जुलाई 2024, नवेलीम, गोवा



(बाएँ से दाएँ) मंगलदास भट, ओम प्रकाश नक्रगर, हेलिक एम. बैरेटो, माधव बोरकर तथा मेल्विन रोड्रिगस

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 'विगत दशक में कोंकणी कविता में नव प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन बुधवार, 31 जुलाई 2024 को रोज़री कॉलेज, नवेलीम, गोवा में कोंकणी भाषा मंडल, गोवा के सहयोग से किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी साझा की।

रोज़री कॉलेज, गोवा के प्राचार्य प्रो. हेलिक एम. बैरेटो उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात कोंकणी कवि श्री माधव बोरकर थे, उन्होंने बीज-वक्तव्य भी प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मेल्विन रोड्रिगस ने की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री रमिता गौरव ने की। सुश्री उर्वशी नाइक, सुश्री तन्वी कामत बाम्बोलकर तथा सुश्री ममता वर्लेकर ने "ग्राम्य जीवन और स्त्री स्वर : युवा कविता में प्रतिबिंब" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री प्रकाश पर्येडकर ने की। सर्वश्री गोविंद मापकर, आकाश गाँवकर तथा गौरंग भंदिये ने "युवा कविता में सामाजिक दृष्टिकोण" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र अत्यंत सक्रिय, संवादपरक तथा श्रोताओं द्वारा सराहे गए। कार्यक्रम का समापन श्री ओम प्रकाश नागर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

मैथिली

उदयनाचार्य, सुरेंद्र झा 'सुमन', आरसी प्रसाद सिंह और मार्कण्डेय प्रवासी पर संगोष्ठी

27-28 जुलाई 2024, रोसड़ा, बिहार



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री सत्यनारायण यादव, प्रवीण कुमार 'प्रभंजन', रमाकांत राय 'रमा', परमानंद मिश्र तथा राजकुमार प्रसाद

साहित्य अकादेमी ने उदयनाचार्य रोसड़ा कॉलेज के सहयोग से 27-28 जुलाई 2024 को रोसड़ा, समस्तीपुर, बिहार स्थित कॉलेज सभागार में "उदयनाचार्य, सुरेंद्र झा 'सुमन', आरसी प्रसाद सिंह और मार्कण्डेय प्रवासी" विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। इस सत्र की अध्यक्षता यू.आर. कॉलेज के प्राचार्य प्रो. घनश्याम राय ने की, जबकि बीज-वक्तव्य मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य श्री तारानंद वियोगी द्वारा प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के विभागाध्यक्ष डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह ने किया। आरंभिक वक्तव्य मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. सुभाष चंद्र यादव ने दिया। धन्यवाद ज्ञापन यू.आर. कॉलेज के मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण कुमार 'प्रभंजन' ने किया।

प्रथम सत्र "महान दार्शनिक उदयनाचार्य" को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शशिनाथ झा ने की। इस सत्र में डॉ. अयोध्यानाथ झा ने "वैचारिक संघर्ष के महानायक : उदयनाचार्य", प्रतिभा किरण ने "उदयनाचार्य : देश और काल" तथा श्री नंदकिशोर चौधरी ने "किरणावली में मंगलाचरण विवेचन" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र, "आचार्य सुरेंद्र झा 'सुमन'" को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता श्री नरेश कुमार विकल ने की। इस सत्र में डॉ. अशोक कुमार मेहता ने "सुमनजी की आत्मकथा", डॉ. योगानंद झा ने "सुमनजी की संपादन कला", डॉ. शंकरदेव झा ने "कवियों के कवि-सुमनजी" तथा श्री सुरेश पासवान ने "उपन्यासकार सुमनजी" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

28 जुलाई 2024 को आयोजित तृतीय सत्र "कविवर आरसी प्रसाद सिंह" विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री रमाकांत राय 'रमा' ने की। श्री परमानंद मिश्र ने "आरसी की काव्यकला", डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज ने "पूजक फूल और आरसी", डॉ. राज कुमार प्रसाद ने "आरसी की साहित्य साधना" तथा डॉ. सत्यनारायण प्रसाद यादव ने "माटिक दीप और आर.सी." पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ और अंतिम सत्र, "महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी" पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता श्री विभूति आनंद ने की। इस सत्र में श्री वैद्यनाथ विमल ने "विषपायी अमर कवि प्रवासी", श्री परमानंद प्रभाकर ने "प्रवासी के महाकाव्य" तथा सुश्री कुमारी संध्या ने "प्रवासी का साहित्य" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

रामकृष्ण झा 'किसुन', प्रबोध नारायण सिंह एवं अणिमा सिंह जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 सितंबर 2024, सहरसा, बिहार



(बाएँ से दाएँ) डॉ. रमण कुमार सिंह, श्री नागेंद्र कुमार झा, सुश्री मनीषा रंजन, प्रो. रजनीश रंजन, डॉ. महेंद्र तथा डॉ. कुमार विक्रमादित्य

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और ईस्ट एन वेस्ट टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, सहरसा के संयुक्त तत्त्वावधान में 27-28 सितंबर 2024 को मैथिली के तीन प्रतिष्ठित साहित्यकारों और विद्वानों – रामकृष्ण झा 'किसुन', प्रबोध नारायण सिंह एवं अणिमा सिंह की जन्म शतवार्षिकी के उपलक्ष्य में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता ईस्ट एन वेस्ट फ़ाउंडेशन, पटना के अध्यक्ष प्रो. रजनीश रंजन ने की तथा कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कुमार विक्रमादित्य ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' ने विषय प्रवर्तन किया। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. महेंद्र ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में प्रो. रजनीश रंजन

ने इस द्वि-दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा भी प्रस्तुत की।

प्रथम सत्र रामकृष्ण झा 'किसुन' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. सुभाष चंद्र यादव ने की। उन्होंने 'किसुन जी' के निबंधों तथा 'नव कविता' में उनके योगदान पर चर्चा की। केदार कानन ने मैथिली नवकविता आंदोलन में किसुन जी की भूमिका को रेखांकित किया। श्री अरुण कुमार सिंह ने "किसुन जी के निबंध" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया, जबकि श्री रमण कुमार सिंह ने उनकी कविता में परिवर्तन की प्रवृत्ति पर अपने विचार रखे। डॉ. अमृता चौधरी ने "नारी विमर्श" पर आधारित अपना लेख पढ़ा तथा श्री कुमार राहुल ने "मैथिली साहित्य आंदोलन में किसुन जी की सक्रियता" पर विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र, जो प्रबोध नारायण सिंह पर केंद्रित था, की अध्यक्षता डॉ. भीमनाथ झा ने की। इस सत्र में श्री कमलेश झा ने प्रबोध बाबू को मैथिली आंदोलन की मशाल बताते हुए कोलकाता में मैथिली चेतना मंच के माध्यम से मैथिली के विकास और प्रचार-प्रसार हेतु उनके द्वारा किए गए कार्यों को रेखांकित किया। श्री फूलचंद झा 'प्रवीण' ने "अनुवाद साहित्य में प्रबोध बाबू का योगदान" विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए उनके नाटक और साहित्य पर चर्चा की। डॉ. प्रकाश झा ने उनके नाटकों "प्रेम करोगे" और "हाथिक दांत" के माध्यम से सामाजिक चित्रण और उस कालखंड की भूमिका पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र अणिमा सिंह पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री गंगानाथ गंगेश ने की। इस सत्र में डॉ. नीता झा ने अणिमा सिंह के लोकगीतों पर चर्चा करते हुए आलेख प्रस्तुत किया, जबकि श्री विश्वनाथ ने उनके व्यक्तित्व पर विचार प्रकट किए। श्री हितनाथ झा ने उनके साहित्य और जीवनवृत्त पर विस्तार से चर्चा की। श्री आशीष चमन ने अणिमा सिंह के मैथिली लोकगीतों में सामाजिक परंपरा की भूमिका और महत्त्व को विशेष रूप से प्रस्तुत किया और नारायण जी ने अणिमा सिंह के लोक साहित्य, जीवन संघर्ष और उपलब्धियों को केंद्र में रखते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया।

'फणीश्वरनाथ रेणु और मैथिली साहित्य' पर परिसंवाद

29 सितंबर 2024, मधेपुरा, बिहार



(बाएँ से दाएँ) अभय कुमार, अशोक कुमार यादव, पुष्यमित्र तथा तारानंद वियोगी

साहित्य अकादेमी द्वारा मधेपुरा कॉलेज, मधेपुरा, बिहार के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 सितंबर 2024 को 'फणीश्वरनाथ रेणु और मैथिली साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मधेपुरा कॉलेज के संस्थापक प्राचार्य प्रो. अशोक कुमार यादव ने की। उन्होंने कहा कि मिथिला एक जीवंत संस्कृति है, जिसकी अपनी परंपरा और विरासत है, तथा मैथिली भाषा इस संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है। उन्होंने कहा कि रेणु मिथिला की शान हैं।

साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. तारानंद वियोगी ने विषय-प्रवर्तन करते हुए रेणु के लेखन से उदाहरण देते हुए उनके तथा मिथिला के बीच परस्पर संबंध को रेखांकित किया। बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री पुष्यमित्र ने कहा कि फणीश्वरनाथ रेणु का योगदान मिथिला की संस्कृति में व्याप्त विविध गुणों और दोषों को कालातीत बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री नारायण झा ने की। इस सत्र में श्री उपेंद्र यादव ने 'रेणु की कथा में मिथिला

का जीवन', डॉ. कुमार सौरभ ने 'रेणु के साहित्य में मातृभाषा मैथिली का प्रभाव' तथा डॉ. भास्कर ज्योति ने 'रेणु की मैथिली कविता और गीत' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री नारायण झा ने सभी प्रस्तुतियों पर टिप्पणी करते हुए 'रेणु और मैथिली के अंतर्संबंध' पर अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. रंजीत कुमार सिंह ने की। इस सत्र में श्री किसलय कृष्ण ने 'मैथिली की पहली फिल्म "कन्यादान" और रेणु', डॉ. धर्मव्रत चौधरी ने '*मैला आँचल* में मिथिला की भाषा और संस्कृति का प्रभाव' तथा श्री सच्चिदानंद 'सच्चु' ने 'मैथिली कथा साहित्य में नेपथ्य अभिनेता का महत्त्व' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'जॉर्ज ग्रियर्सन और मैथिली साहित्य' पर परिसंवाद

7 जनवरी 2025, पटना, बिहार



(बाएँ से दाएँ) तारानंद वियोगी, उमेश मिश्र, देवेंद्र कुमार देवेश तथा प्रेमलता मिश्रा 'प्रेम'

प्रख्यात भाषा-विज्ञानी जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन की जयंती के अवसर पर 'जॉर्ज ग्रियर्सन और मैथिली साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में मिथिला भवन, पटना में आयोजित किया गया।

साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा भारतीय भाषाओं के लिए किए जा रहे कार्यों की चर्चा की और कहा कि यह कार्यक्रम मैथिली भाषी समुदाय के लिए विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध होगा।

चेतना समिति के सचिव श्री उमेश मिश्र ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में कहा कि यह परिसंवाद अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से ग्रियर्सन के कार्यों से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ है।

साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तारानंद वियोगी ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए ग्रियर्सन द्वारा मैथिली भाषा और साहित्य के लिए किए गए विविध कार्यों को विस्तार से रेखांकित किया। इस सत्र की अध्यक्षता चेतना समिति की उपाध्यक्ष डॉ. प्रेमलता मिश्रा 'प्रेम' ने की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अशोक ने की। इस सत्र में प्रो. कमलानंद झा ने "ग्रियर्सन का जीवन और कृतित्व", प्रो. देव शंकर नवीन ने "भारतीय भाषाओं पर ग्रियर्सन का कार्य" तथा श्री योगानंद झा ने "मैथिली पर ग्रियर्सन का कार्य" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री अशोक ने ग्रियर्सन के कार्यों पर और अधिक शोध एवं पुनर्पाठ की आवश्यकता पर बल दिया। अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री विनोद नारायण झा ने की। इस सत्र में डॉ. रमानंद झा 'रमण' ने "मैथिली व्याकरण और ग्रियर्सन", श्री रघुनाथ मुखिया ने "मैथिली लोकविषयक अध्ययन और ग्रियर्सन" तथा प्रो. विजयेंद्र झा ने "ग्रियर्सन द्वारा संकलित मैथिली शब्दावली : एक विश्लेषण" विषय पर आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री विनोद नारायण झा ने जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन को मैथिली का निष्ठावान सेवक तथा शुभचिंतक बताया। परिसंवाद के समापन पर चेतना समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री विवेकानंद झा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। समस्त कार्यक्रम का संचालन श्री जयदेव मिश्र ने किया।

मलयाळम्

थोप्पिल भासी पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

19-20 अक्तूबर 2024, करुनागप्पल्ली, केरल



उद्घाटन वक्तव्य देते हुए में प्रख्यात फ़िल्म निर्देशक श्री अडूर गोपालकृष्णन

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन, केरल के सहयोग से विख्यात नाटककार, अभिनेता, निर्देशक एवं फ़िल्म निर्माता थोप्पिल भासी की जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर 19-20 अक्तूबर 2024 को लालाजी मेमोरियल सेंट्रल लाइब्रेरी, करुनागप्पल्ली, कोल्लम, केरल में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रमणुन्नी ने थोप्पिल भासी को केरल के प्रगतिशील रंगमंच संस्कृति का प्रमुख चेहरा बताया। उद्घाटन वक्तव्य में विश्वविख्यात फ़िल्म निर्देशक श्री अदूर गोपालकृष्णन ने थोप्पिल भासी के साहित्यिक व्यक्तित्व तथा कलात्मक विशेषताओं को अत्यंत सम्मान के साथ रेखांकित किया। बीज-वक्तव्य श्री एम. स्वराज ने प्रस्तुत किया, तथा साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम सहायक श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, ने आगंतुकों का स्वागत किया। श्री के.आर. नीलकंठपिल्लै ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र "थोप्पिल भासी के नाटकों में पहचान की अभिव्यक्तियाँ" विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में डॉ. शिबु एस. कोट्टराम तथा डॉ. के. कृष्णकुमार ने आलेख प्रस्तुत किए, जिसमें उन्होंने थोप्पिल भासी द्वारा अपने नाटकों के माध्यम से पहचान संबंधी मुद्दों की भिन्न दृष्टिकोण से विवेचना की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. वी.एन. मुरली ने की, जिन्होंने भासी के नाटकों में प्रस्तुत प्रत्येक पात्र की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से समझाया। द्वितीय सत्र "आधुनिक केरल समाज के निर्माण में थोप्पिल भासी के नाटकों की भूमिका" विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री अब्दुल गफूर ने की। इस सत्र में श्री टी.एम. अब्राहम तथा डॉ. बाबूराजन के. ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र "थोप्पिल भासी : स्थान, व्यक्ति और चिंतन का क्षेत्र" विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. साबु कोट्टुक्कल ने की। इस सत्र में श्री श्रीकुमार मुखथाला तथा डॉ. सी. उदयकला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र "थोप्पिल भासी और फ़िल्म जगत" पर केंद्रित था। इस सत्र में प्रो. ए.जी. ओलीना तथा श्री वी. विजयकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने इस क्षेत्र में थोप्पिल भासी के योगदान को विस्तार से रेखांकित किया। सत्र की अध्यक्षता डॉ. टी.के. संतोष कुमार ने की। पंचम सत्र "थोप्पिल भासी और केरल पीपल्स आर्ट्स क्लब" विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजू वल्लिकुन्नम ने की। इस सत्र में श्रीमती वी.एस. बिंदु तथा श्री एलावूर श्रीकुमार ने केरल पीपल्स आर्ट्स क्लब की भूमिका को थोप्पिल भासी के कलात्मक जीवन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र में राज्यसभा के पूर्व सदस्य एवं केरल पीपल्स आर्ट्स क्लब के अध्यक्ष श्री बिनॉय विश्वम ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने थोप्पिल भासी तथा केरल पीपल्स आर्ट्स क्लब को केरल की सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से प्रभावशाली ढंग से जोड़ कर समझाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन के सचिव डॉ. वल्लिकावु मोहनदास ने की।

'मलयाळम् साहित्य में पर्यावरण और पी. कुन्हीरामन नायर' विषय पर परिसंवाद

26 अक्तूबर 2024, कन्हांगड़, केरल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने महाकवि पी. स्मारक समिति, कन्हांगड़ के सहयोग से शनिवार, 26 अक्तूबर 2024 को पी. स्मारकम, कन्हांगड़, ज़िला



उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रख्यात मलयाळम् लेखक डॉ. ई.वी. रामकृष्णन

कासरगोड में 'मलयाळम् साहित्य में पर्यावरण और पी. कुन्हीरामन नायर' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. ए.एम. श्रीधरन ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा चर्चा की दिशा तय करते हुए आज के वैश्विक पर्यावरणीय संकटों की पृष्ठभूमि में ऐसे परिसंवाद के आयोजन को अत्यंत प्रासंगिक बताया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात साहित्य-समीक्षक और विद्वान डॉ. ई.वी. रामकृष्णन ने किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में साहित्य की भूमिका को समझना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि महाकवि पी. कुन्हीरामन नायर के साहित्य में प्रकृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता देखने को मिलती है, जो आज के समय में और भी अधिक महत्त्व रखती है।

सत्र की अध्यक्षता महाकवि पी. स्मारक समिति के अध्यक्ष श्री पी. मुरलीधरन ने की। उन्होंने नायर की कविताओं की वर्तमान पर्यावरणीय विमर्श में प्रासंगिकता पर विस्तार से विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि श्री एम. के. मनोहरन ने अपने वक्तव्य में कहा कि पी. कुन्हीरामन नायर ने अपनी रचनाओं में प्रकृति की सुंदरता और नाज़ुकता को बड़ी सजीवता से चित्रित किया, जिससे वे साहित्यिक और पर्यावरणीय दोनों ही क्षेत्रों में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व बन जाते हैं।

परिसंवाद में कई प्रमुख विद्वानों और लेखकों ने भाग लिया, जिनमें प्रमुख थे—श्री ई.पी. राजगोपालन, डॉ. पद्मनाभन कवुमई, डॉ. निशि जॉर्ज, डॉ. टी.के. संतोष कुमार, दिवाकरण विष्णुमंगलम, नालप्पाडम पद्मनाभन, डॉ. सिंधु किझक्कनियिल तथा डॉ. दीपेश करिमपुंगरा।

सभी वक्ताओं ने पी. कुन्हीरामन नायर की रचनाओं में निहित पर्यावरणीय तत्त्वों और साहित्य व प्रकृति के परस्पर संबंध पर अपने विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किए। परिसंवाद का समापन महाकवि पी. कुन्हीरामन नायर के साहित्यिक योगदान के प्रति नई सराहना तथा पर्यावरण चेतना एवं जागरूकता में साहित्य की भूमिका की पुनः पुष्टि के साथ हुआ।

मलयाळम् कथा साहित्य और पुराण (मलयाळम् कहानियों में नई प्रवृत्तियाँ) पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2024, कोझिकोड, केरल



व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. ए.एम. श्रीधरन

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने यू.ए. ख़ादर अनुस्मरण समिति, कोझिकोड के सहयोग से गुरुवार, 12 दिसंबर 2024 को कोझिकोड के टैगोर शताब्दी हॉल में 'मलयाळम् कथा साहित्य और पुराण (मलयाळम् कहानियों में नई प्रवृत्तियाँ)' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात मलयाळम् लेखक एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता सुभाष चंद्रन ने किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मलयाळम् साहित्य को समृद्ध करने में यू.ए. ख़ादर का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है तथा इसे केवल पौराणिकता तक सीमित नहीं किया जा सकता।

प्रो. के.ई.एन. कुनहमद और डॉ. के.पी. सुधीरा ने इस अवसर पर अतिथि वक्ताओं के रूप में भाग लिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता यू.ए. ख़ादर अनुस्मरण समिति के सदस्य डॉ. एन.एम. सनी ने की। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. कदीजा मुम्ताज़ ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों का परिचय देते हुए इस कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

प्रथम सत्र का विषय था - "पुराण और जनजीवन का अस्तित्व।" सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. ए.एम. श्रीधरन ने की। इस सत्र में श्री सोमन कातलूर और श्री एम.वी. जनार्दनन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था - "यू.ए. ख़ादर की लोककथाएँ और मलयाळम् कथा साहित्य।" सत्र की अध्यक्षता श्री पी.के. परक्कडावु ने की। डॉ. टी.वी. सुनीता ने अपना आलेख प्रस्तुत किया।

समापन वक्तव्य में श्री इसाक एपेन ने कहा कि पौराणिक आख्यान और परंपराएँ सभी भाषाओं के लेखकों के लिए प्रेरणा के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। जहाँ मलयाळम् साहित्य आधुनिकता की नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, वहीं यू.ए. ख़ादर इतिहास और परंपराओं के तट पर चलते हुए ग्रामीण जीवन के मोतियों को चुनते रहे। कार्यक्रम का समापन श्री हसन तिक्कोडी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एम. टी. वासुदेवन नायर का स्वर्ण युग : भारतीय कथा साहित्य में परिवर्तन विषयक संगोष्ठी

1 मार्च 2025, तिरूर, केरल



स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने थुञ्चन मेमोरियल ट्रस्ट के सहयोग से 1 मार्च 2025 (शनिवार) को थुञ्चन परम्बु, तिरूर, ज़िला : मलप्पुरम, केरल में 'एम.टी. वासुदेवन नायर का स्वर्ण युग : भारतीय कथा साहित्य में परिवर्तन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि एम. टी. वासुदेवन नायर मलयाळम् साहित्य के सभी क्षेत्रों में पारंगत थे। वे एक बहुआयामी व्यक्तित्व तथा असाधारण मानव थे।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री के.पी. रमणुन्नी

ने कहा कि एम.टी. अपने पूर्ववर्तियों, समकालीनों तथा उत्तरवर्तियों सभी के बीच सामाजिक मुद्दों पर अपने निष्पक्ष दृष्टिकोण के लिए अत्यंत सम्मानित थे। उद्घाटन वक्तव्य में विख्यात मलयाळम् लेखक श्री एन.एस. माधवन ने कहा कि एम.टी. वासुदेवन नायर ने मुख्यधारा के साहित्य की दिशा को नया मार्ग दिया। बीज-वक्तव्य में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित प्रतिष्ठित लेखक श्री सुभाष चंद्रन ने आधुनिक लेखकों पर एम.टी. के प्रभाव की चर्चा की।

प्रथम सत्र 'कथा शिल्प का विकास : भाषिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. खादीजा मुम्ताज़ ने की। उन्होंने बताया कि एम.टी. की कथाएँ गाँव से शहर और फिर वापस गाँव की ओर यात्रा करती हैं। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. सी. मृणालिनी ने तेलुगु साहित्य में कथा के विकास की चर्चा गोपीचंद, श्रीदेवी तथा इंदिरा जैसे लेखकों के उदाहरणों के माध्यम से की। श्री वसुधेन्द्र ने उन दलित लेखकों की चर्चा की जिनकी मातृभाषा तेलुगु नहीं थी, फिर भी उन्होंने तेलुगु साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। द्वितीय सत्र 'छह दशकों का मलयाळम् कथा साहित्य : प्रवृत्तियाँ, परिवर्तन और प्रवाह' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री के.पी. मोहनन ने की। उन्होंने एस. हरीश के हालिया उपन्यास *मीशा* और मलयाळम् के पहले उपन्यास *इंदुलेखा* के बीच कथा में आए परिवर्तनों को रेखांकित किया। श्री ई.वी. रामकृष्णन ने विभिन्न लेखकों की भाषा-शैली की भिन्नता पर प्रकाश डाला। श्री एन. सुकुमारन ने मलयाळम् से तमिळ और तमिळ से मलयाळम् में अनूदित पुस्तकों का व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में श्री जी.के. राममोहन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

मणिपुरी

खैदम प्रमोदिनी देवी जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी

29 सितंबर 2024, इंफ़ाल, मणिपुर



(बाएँ से दाएँ) श्री एल. जॉयचंद्र सिंह, श्रीमती लोइतोंगबम मेमी चानू, श्री माखनमणि मोंगसाबा तथा श्री नाओरेम अहंजाओ मैतेई

साहित्य अकादेमी ने नाहरोल साहित्य प्रेमी समिति, इंफ़ाल के सहयोग से खैदम प्रमोदिनी देवी के जीवन और कृतित्व पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 29 सितंबर 2024 को सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय के सभागार, इंफ़ाल, मणिपुर में किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के प्रभारी अधिकारी श्री क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत वक्तव्य दिया। नाहरोल साहित्य प्रेमी समिति, इंफ़ाल के अध्यक्ष श्री नाओरोइबम इंद्रमणि ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. राजेन तोइजाम्बा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि यह संगोष्ठी खैदम प्रमोदिनी के अमूल्य साहित्यिक योगदान के प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रकट करने का उपयुक्त अवसर है। नाहरोल साहित्य प्रेमी समिति के महासचिव श्री हुईरेम टेम्बा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मणिपुरी के प्रख्यात साहित्यिक आलोचक और लोक साहित्य के विद्वान प्रो. एच. बिहारी ने की। इस सत्र में श्री चिरोम राजकेतन ने

"खैदम प्रमोदिनी : पुंसी अमदी मागी साहित्य", सुश्री तोइजाम ताम्फा देवी ने "खैदम प्रमोदिनीगी लोल अमसुंग माफोंगदोक" तथा सुश्री कोंथौजम बिजालता ने "लमकोई वारी एबी अमा ओइना खैदम प्रमोदिनी" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मणिपुर के विख्यात साहित्यिक और सांस्कृतिक विद्वान लोंगजम जॉयचंद्र सिंह ने की। इस सत्र में सुश्री लोइतोंगबम चानू मेमी ने "शैरेंग एबी अमा ओइना खैदम प्रमोदिनी", श्री माखनमोनी मोंगसबा ने "एसई, लीला-नाटक, अमदी फिल्म स्क्रिप्ट एबी अमा ओइना खैदम प्रमोदिनी" तथा श्री नाओरेम अहंजाओ मैतेई ने "गद्य कथा एबी अमा ओइना खैदम प्रमोदिनी" पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. एल. जॉयचंद्र ने कहा, "प्रमोदिनी अन्य महिला लेखिकाओं में विशिष्ट थीं, क्योंकि उन्होंने मणिपुरी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लगभग 40 पुस्तकें लिखीं हैं।"

मणिपुरी साहित्य में सामाजिक आंदोलनों की प्रतिध्वनि पर परिसंवाद

30 सितंबर 2024, केशमपट, मणिपुर



(बाएँ से दाएँ) श्रीमती एच. रॉयबाला देवी, श्री सगोलसेम लनचेनबा मैतेई, श्री ख. गौरचंद्र और श्री मायंगलंबम सदानंद

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी, इंफ़ाल के सहयोग से "मणिपुरी साहित्य में सामाजिक आंदोलनों की प्रतिध्वनि" विषय पर परिसंवाद का आयोजन 30 सितंबर 2024 को सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय के सभागार, नितैयपट चुठेक, केशमपट, इंफ़ाल, मणिपुर में किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के प्रभारी अधिकारी श्री क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. राजेन तोइजम्बा ने प्रारंभिक वक्तव्य में मणिपुरी साहित्य में सामाजिक आंदोलनों की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी के अध्यक्ष श्री नाओरेम लोकेश्वर सिंह ने की। मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी के महासचिव श्री नाओरेम राजेंद्र सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता श्री पोलेम नबचंद्र सिंह ने की, जिसमें श्री मंगंचा थोउदम अचाउ, श्री सनाजाओबा नरेंगबम तथा सुश्री केशम रानी देवी ने परिसंवाद विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सगोलसेम लनचेनबा मैतेई ने की, जिसमें श्रीमती एच. रॉयबाला, श्री मायंगलंबम सदानंद सिंह तथा श्री ख. गौरचंद्र सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए।

"मणिपुरी बाल साहित्य" पर परिसंवाद

28 फ़रवरी 2025, सिलचर, असम



उद्घाटन सत्र में व्यख्यान देते हुए श्री मेहदी हसन चौधरी

साहित्य अकादेमी ने गुरुचरण कॉलेज, सिलचर के सहयोग से "मणिपुरी बाल साहित्य" पर परिसंवाद का आयोजन 28 फ़रवरी 2025 को कॉन्फ्रेंस हॉल, गुरुचरण

कॉलेज, सिलचर, कछार, असम में किया।

उद्घाटन सत्र के दौरान स्वागत वक्तव्य श्री के. नयन चंद सिंह ने प्रस्तुत किया तथा श्री बिभास देब ने सत्र की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे - एच. ननी कुमार सिंह तथा श्री अशरफ़ हुसैन कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन सुश्री अंजू देवी द्वारा प्रस्तुत किया गया। शैक्षणिक सत्र में विख्यात विद्वान एवं वक्ता— श्री मेहदी हसन चौधरी, सुश्री ओ. उषारानी सिंह, संध्या रानी सिंह तथा सुश्री ख. अंजना देवी ने मणिपुरी बाल साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने इस साहित्य विधा के विकास क्रम पर भी चर्चा की, विशेष रूप से इस क्षेत्र के प्रमुख ग्रंथों तथा लेखकों के संदर्भ में।

मराठी

वसंत कानेटकर : साहित्य और व्यक्तित्व पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

10 जनवरी 2025, नाशिक, महाराष्ट्र



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री ओम प्रकाश नागर, नितिन ठाकरे, विश्वास पाटिल, संजय सोनवणे तथा दिलीप ढोंगडे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा मराठा विद्या प्रसारक समाज और यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के सहयोग से 'वसंत कानेटकर : साहित्य और व्यक्तित्व' पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन शुक्रवार, 10 जनवरी 2025 को वी.एल.सी. हॉल, मराठा विद्या प्रसारक समाज संस्था, के.टी.एच.एम. कॉलेज, गंगापुर रोड, नाशिक में किया गया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी दी। श्री नितिन ठाकरे, सचिव, मराठा विद्या प्रसारक समाज, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री दिलीप ढोंगडे ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन वक्तव्य प्रो. संजीव सोनवणे, कुलपति, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नासिक द्वारा प्रस्तुत किया गया, जबकि अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री विश्वास पाटिल ने दिया। अंत में डॉ. जयदीप निकम, निदेशक, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् वसंत कानेटकर पर एक वृत्तचित्र फ़िल्म का प्रदर्शन भी किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सतीश आळेकर ने की, जिसमें श्री उल्हास रत्नपारखी ने "कानेटकर के पौराणिक और ऐतिहासिक नाटक", श्री आशुतोष पोटदार ने "कानेटकर के जीवनवृत्तात्मक नाटक" तथा सुश्री प्रतिमा कुलकर्णी ने "कानेटकर का सामाजिक नाटक" विषय पर अपने आलेख पढ़े। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री माधव वझे ने की, जिसमें श्री विजय केनकरे तथा श्री प्रवीण भोळे ने "कानेटकर के समकालीन नाटक" तथा श्री स्वानंद बेडरकर ने "कानेटकर का गद्य साहित्य" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र अत्यंत संवादात्मक तथा श्रोताओं द्वारा सराहे गए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री हेमंत ताकळे ने की, जिसमें श्री रामदास भटकल ने समापन वक्तव्य दिया। समस्त कार्यक्रम का संचालन श्री दत्ता पाटिल तथा श्री सचिन शिंदे ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री भास्कर ढोके द्वारा प्रस्तुत किया गया।

शांता शेल्के : व्यक्तित्व और साहित्य पर परिसंवाद

17 अगस्त 2024, विद्याविहार, मुंबई



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री नरेंद्र पाठक, प्रवीण दवणे, डॉ. के. श्रीनिवास राव, विश्वास पाटिल, बालिराम गायकवाड़ तथा ओम प्रकाश नागर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा के. जे. सोमैया आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, विद्याविहार, मुंबई के मराठी विभाग के सहयोग से 'शांता शेल्के : व्यक्तित्व और साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन शनिवार, 17 जुलाई 2024 को कॉलेज के प्रथम तल स्थित सम्मेलन कक्ष में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। श्री किशन एच. पवार, प्राचार्य, के. जे. सोमैया कॉलेज, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री नरेंद्र पाठक ने दिया। बीज-वक्तव्य विख्यात मराठी कवि श्री प्रवीण दवणे ने प्रस्तुत किया तथा अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री विश्वास पाटिल द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के अंत में बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत असमिया उपन्यास *यारुइंगम* के शांता शेल्के द्वारा किए गए मराठी अनुवाद *लोकांचे राज्य* का लोकार्पण भी किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अशोक बगवे ने की, जिसमें सुश्री सुनीता संगोले ने "शांता शेल्के का कलात्मक साहित्य" तथा सुश्री किरण शिवहरे डांगरदिवे ने "शांता शेल्के के अनुवाद कार्य" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अरुण म्हात्रे ने की, जिसमें सुश्री रागिनी चंद्राटे ने "शांता शेल्के के साहित्य में स्त्री लेखन" तथा श्री संजय गिरासे ने "शांता शेल्के के साहित्य में सामाजिक लेखन" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र अत्यंत संवादात्मक रहे तथा साहित्यकारों एवं श्रोताओं द्वारा सराहे गए। अंत में, प्रो. अभिजीत देशपांडे, विभागाध्यक्ष, मराठी विभाग, के. जे. सोमैया कॉलेज ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

गंगाधर गाडगिल : व्यक्तित्व और साहित्य पर परिसंवाद

21 सितंबर 2024, मुंबई, महाराष्ट्र



सर्वश्री चंद्रकांत भोंजाल, ओम प्रकाश नागर, के. श्रीनिवास राव, विश्वास पाटिल, भालचंद्र मुड्गेकर तथा प्रदीप कर्णिक

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय, दादर, मुंबई के सहयोग से 'गंगाधर गाडगिल : व्यक्तित्व और साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन शनिवार, 21 सितंबर 2024 को शारदा मंगल कार्यालय सभागार, 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर (पूर्व), मुंबई में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी दी और यह

भी बताया कि गाडगिल के साहित्य का 50 से अधिक भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

आरंभिक वक्तव्य मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय के उपाध्यक्ष श्री प्रदीप कर्णिक ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात अर्थशास्त्री और विचारक श्री भालचंद्र मुङ्गेकर ने प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री विश्वास पाटिल ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के बाद दो आलेख पाठ सत्र आयोजित किए गए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मीना गोखले ने की, जिसमें अविनाश कोहले ने "गंगाधर गाडगिल के कथा साहित्य का मराठी साहित्य में स्थान" तथा रामचंद्र काळुंखे ने "गाडगिल के उपन्यास" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अविनाश सपरे ने की, जिसमें कैलाश जोशी ने "गाडगिल का समालोचनात्मक चिंतन" तथा अरुण ठोके ने "गाडगिल की यात्रा वृत्तांत रचनाएँ" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंत में, अविनाश सप्रे ने समापन वक्तव्य तथा उमा नाबर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सदानंद रेगे : व्यक्तित्व और साहित्य पर परिसंवाद

22 सितंबर 2024, मुंबई, महाराष्ट्र



उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री रामदास भटकल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय, दादर के सहयोग से 'सदानंद रेगे : व्यक्तित्व और साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन रविवार, 22 सितंबर 2024 को साहित्य अकादेमी सभागार, मुंबई में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी की गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी। विख्यात मराठी लेखक श्री रामदास भटकल ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य श्री नरेंद्र पाठक ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र के अंत में क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् दो आलेख वाचन सत्र आयोजित किए गए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अरुणा दुबाशी ने की, जिसमें दत्ता घोलप ने "सदानंद रेगे के मराठी कथा साहित्य" तथा प्रवीण बांदेकर ने "अनुवाद में सदानंद रेगे के उपन्यास" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री राजीव नायक ने की, जिसमें रणधीर शिंदे ने "सदानंद रेगे की कविता और उसका अनुवाद" तथा श्री प्रवीण भोले ने "अनुवाद में सदानंद रेगे का नाट्य साहित्य" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में, प्रख्यात मराठी लेखक श्री राजीव नायक ने समापन वक्तव्य दिया तथा सुश्री उमा नाबर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

नेपाली

नेपाली साहित्य सम्मेलन के शताब्दी समारोह के अवसर पर संगोष्ठी

31 अगस्त–1 सितंबर 2024, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल

नेपाली साहित्य सम्मेलन के शताब्दी समारोह के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी,



प्रतिभागियों का समूह चित्र

नई दिल्ली द्वारा नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिङ के सहयोग से 31 अगस्त व 1 सितंबर 2024 को सु-धा-पा सभागार, नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिङ में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रेम प्रधान ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कहा कि यह कार्यक्रम अपने पूर्ववर्ती आयोजनों की तुलना में ऐतिहासिक है, क्योंकि इसमें सम्मेलन की स्थापना से लेकर वर्तमान तक के कार्यों को समाहित किया गया है। प्रख्यात नेपाली लेखिका सुश्री अनिता निरौला ने बीज-वक्तव्य देते हुए सम्मेलन के विगत से वर्तमान तक के उल्लेखनीय कार्यों को रेखांकित किया। सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. सी. के. राय ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा सम्मेलन के सचिव श्री महेंद्र कुमार प्रधान ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तीन प्रख्यात नेपाली साहित्यकारों — डॉ. जीवन नामदुंग, डॉ. के. राज घतानी तथा श्री सतीश रसाइली की पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। प्रथम सत्र में श्री हरेन आले की अध्यक्षता में श्री महेश प्रधान ने "नेपाली साहित्य सम्मेलन का कविता में योगदान", डॉ. सुकराज दियाली ने "नेपाली साहित्य सम्मेलन का कहानी में योगदान", डॉ. नीना राई ने "नेपाली साहित्य सम्मेलन का नाटक में योगदान" तथा श्री सचेन राई 'डुमी' ने "नेपाली साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रदत्त 'दियालो पुरस्कार'" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में प्रख्यात नेपाली लेखक श्री नंदा हांगखिम की अध्यक्षता में श्री कुशल घिमिरे ने "नेपाली साहित्य सम्मेलन का निबंधों में योगदान" तथा डॉ. योगेश खाती ने "नवलेखन और नेपाली साहित्य सम्मेलन" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में प्रख्यात नेपाली लेखक श्री एम. पथिक की अध्यक्षता में डॉ. बीना हांगखिम ने "भाषाई अध्ययन और नेपाली साहित्य सम्मेलन", श्री राज बहादुर राय ने "नेपाली भाषा आंदोलन में सम्मेलन की भूमिका" तथा श्री जीवन नामदुंग ने "साहित्य अकादेमी और नेपाली साहित्य सम्मेलन की संयुक्त साहित्यिक गतिविधियाँ (पिछले 50 वर्षों में)" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ एवं अंतिम सत्र में प्रख्यात नेपाली लेखक श्री सतीश रसाइली की अध्यक्षता में डॉ. गीता छेत्री ने "नेपाली साहित्य सम्मेलन एवं महिला लेखन" तथा श्री भक्तराज सुनवार ने "दियालो की कुछ पठनीय संपादकीय टिप्पणियाँ" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में, डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

भारतीय नेपाली साहित्य की वर्तमान स्थिति पर संगोष्ठी

24 जनवरी 2025, गोरूबथान, पश्चिम बंगाल



(बाएँ से दाएँ) श्री भानु अधिकारी, सुश्री सोनम शेरपा, श्री नबीन पौडेल, श्री मुन्नु गौतम तथा श्री योगवीर शाक्य

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने साझा साहित्य संरक्षण संस्था, गोरूबथान के सहयोग से "भारतीय नेपाली साहित्य की वर्तमान स्थिति" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन शुक्रवार, 24 जनवरी 2025 को सद्भाव मंडप हॉल, गुम्बा ग्राउंड, सोमबारे बाजार, गोरूबथान, जिला कालिम्पोंग, पश्चिम बंगाल में किया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुभाष सोतांग द्वारा स्वागत एवं बीज-वक्तव्य से हुई। इसके पश्चात् श्री रुस्तम शर्मा, साझा साहित्य संरक्षण संस्था के सचिव ने उद्घाटन वक्तव्य दिया तथा प्रख्यात लेखक डॉ. नरेश चंद्र खाती ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। संस्था के अध्यक्ष श्री तरुण राय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में डॉ. कृष्णराज घतानी की अध्यक्षता में डॉ. सुरेन्द्र चाम्लिंग ने "भारतीय नेपाली चाय साहित्य : एक अध्ययन", डॉ. योगेश खाती ने "भारतीय नेपाली गद्य साहित्य की वर्तमान स्थिति" तथा श्री धन बहादुर छेत्री ने "भारतीय नेपाली पारिस्थितिकी साहित्य : एक अध्ययन" विषयों पर अपने आलेख पढ़े। डॉ. घतानी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सत्र में भारतीय नेपाली साहित्य की विभिन्न विधाओं के विकास पर समृद्ध विमर्श और आलोचनात्मक दृष्टिकोण सामने आए। द्वितीय व अंतिम सत्र में श्री योगवीर शाक्य की अध्यक्षता में श्रीमती मुन्नु गौतम ने "भारतीय नेपाली महिला साहित्य की वर्तमान स्थिति", श्री नवीन पौडेल ने "भारतीय नेपाली अनुवाद साहित्य की वर्तमान स्थिति", डॉ. सोनम शेरपा ने "भारतीय नेपाली बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति" तथा श्री भानु अधिकारी ने "भारतीय नेपाली छंदबद्ध कविता की वर्तमान स्थिति" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंत में, श्री शाक्य ने सभी प्रस्तुत आलेखों के प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित किया। यह संगोष्ठी भारतीय नेपाली साहित्य की समृद्धि, विविधता, समकालीन चुनौतियों और विकास की संभावनाओं को उजागर करने वाली रही।

ओड़िआ

किशोरी चरण दास पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

17 अगस्त 2024, कटक, ओड़िशा



(बाएँ से दाएँ) श्रीमती प्रतिभा राय, श्री क्षेत्रवासी नायक, श्री गोबिंद चंद्र चंद, श्री गौरहरि दास, बिजय कुमार सतपथी और श्री आदित्य प्रताप ढल

साहित्य अकादेमी द्वारा उत्कल साहित्य समाज के सहयोग से किशोरी चरण दास पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 17 अगस्त 2024 को शताब्दी भवन, उत्कल साहित्य समाज, टाउन हॉल रोड, कटक, ओड़िशा में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन विख्यात ओड़िआ लेखिका डॉ. प्रतिभा राय ने किया। उन्होंने किशोरी चरण दास की लेखनी की सुंदरता का वर्णन करते हुए उनके साथ बिताए मधुर संस्मरण साझा किए। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. बिजय कुमार सतपथी ने बीज-वक्तव्य में लेखक के जीवन और रचनात्मक संपदा का मूल्यांकन करते हुए कहा कि उनके साहित्य में जीवन का महान मंत्र तथा मानवीय मन के शब्द प्रतिबिंबित होते हैं, जो भावी पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर बनते जा रहे हैं। साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि किशोरी चरण दास की रचनाएँ पाठकों की अंतरात्मा को स्पर्श करती हैं। उत्कल साहित्य समाज के अध्यक्ष डॉ. गोबिंद चंद्र चंद ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा साहित्य अकादेमी के प्रभारी

अधिकारी श्री क्षेत्रवासी नायक ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उत्कल साहित्य समाज के महासचिव श्री आदित्य प्रताप ढाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में विख्यात समीक्षक डॉ. बाबाजी चरण पटनायक की अध्यक्षता में श्री चिरश्री इंद्रसिंह, श्री देबव्रत मदनराय तथा प्रो. गुरुचरण बेहरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में डॉ. गिरीश साहू की अध्यक्षता में डॉ. ज्ञानी देवाशीष मिश्र तथा डॉ. रबिनारायण महाराणा ने अपने आलेख पढ़े। इस साहित्यिक संगोष्ठी में बड़ी संख्या में लेखक एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

गुरुप्रसाद महांति पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

28–29 नवंबर 2024, भुवनेश्वर, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी ने गुरुप्रसाद महांति की जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर 28–29 नवंबर 2024 को बुद्ध मंदिर सभागार, भुवनेश्वर, ओड़िशा में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का



(बाएँ से दाएँ) श्री चित्तरंजन मिश्र, श्री भागरिथी मिश्र, संघमित्रा भंज तथा बिजय कुमार सतपथी

आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री राजेंद्र किशोर पाण्डा ने किया। उन्होंने गुरुप्रसाद महांति को आधुनिक ओड़िआ कविता का अग्रदूत बताया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने आरंभिक वक्तव्य में गुरुप्रसाद महांति की जन्म शतवार्षिकी मनाने के उद्देश्य और आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा उनकी साहित्यिक शैलियों और विषयवस्तु की विशिष्टता की जानकारी दी। साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अध्यक्षीय वक्तव्य में गुरुप्रसाद की कविताओं की विषयवस्तु, संरचना और शैली के साथ-साथ समकालीन विश्व कविता पर उनके प्रभाव को रेखांकित किया। डॉ. भगवान जयसिंह ने अपने बीज-वक्तव्य में गुरुप्रसाद की कविताओं में मिथक, आधुनिकता और जीवन दर्शन के मूल तत्त्वों पर उदाहरणों सहित गहन चर्चा की। गुरुप्रसाद महांति की पुत्री डॉ. प्रियदर्शिनी महांति ने उनके काव्य जीवन के दौरान घर में व्याप्त कवितामय माहौल की झलक प्रस्तुत की। ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य पवित्र मोहन कर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में श्री भागीरथी मिश्र ने "गुरुप्रसाद महांति की कविता की शैली", डॉ. चित्तरंजन मिश्र ने "गुरुप्रसाद की कविताओं में आधुनिक तत्त्व", डॉ. संघमित्रा भंज ने "गुरुप्रसाद की कविता में अस्तित्ववाद" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. बिजय कुमार सतपथी ने की। द्वितीय सत्र में दिलीप कुमार स्वाईं, रमेश चंद्र मलिक तथा संतोष कुमार नायक ने अपने आलेख पढ़े। इस सत्र की अध्यक्षता श्री अमरेश पटनायक ने की। दूसरे दिन डॉ. अजय स्वाईं ने आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जतिंद्र कुमार नायक ने की। समापन सत्र में डॉ. अपर्णा महांति ने "गुरुप्रसाद की कविताओं में नारी चित्रण" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रसन्न कुमार स्वाईं, कुलपति, उत्कल यूनिवर्सिटी ऑफ़ कल्चर ने की। मुख्य अतिथि श्री देवदास छोटराय ने गुरुप्रसाद महांति द्वारा लिखे गए पत्रों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। क्षेत्रवासी नायक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इक्कीसवीं सदी की ओड़िआ कविता की भाषा और शैली पर परिसंवाद

29 अक्तूबर 2024, कोरापुट, ओडिशा



(बाएँ से दाएँ) सुश्री सुजाता षड़ंगी, सुश्री लोपामुद्रा स्वाईं, श्री दीपक कुमार पटनायक, डॉ. प्रीतिधारा सामल और श्री गोपाल हालदार

साहित्य अकादेमी ने राजकीय महाविद्यालय, कोरापुट के स्नातकोत्तर ओड़िया विभाग के सहयोग से 'इक्कीसवीं सदी की ओड़िआ कविता की भाषा और शैली' विषयक परिसंवाद का आयोजन 29 अक्तूबर 2024 को कोरापुट में किया।

साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. प्रीतिधारा सामल ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। श्री गोपाल हालदार, क्षेत्रीय निदेशक, शिक्षा, जयपुर ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। बीज-वक्तव्य डॉ. लोपामुद्रा स्वाईं, अध्यक्ष, ओड़िआ विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कोरापुट द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रारंभिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. दीपक कुमार पटनायक, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, कोरापुट ने की। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. मनोरंजन नायक, ओड़िआ प्रवक्ता, राजकीय महाविद्यालय, कोरापुट ने प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. बाबाजी चरण पटनायक ने की। आलेख वाचन श्री चक्रपाणि परिघा, श्री गणेश प्रसाद साहू तथा सुश्री संजिता मिश्रा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सुजाता षड़ंगी ने प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. आलोक बराल ने की। आलेख वाचन श्री बिजय कुमार प्रधान, श्री कमलकृष्ण त्रिपाठी तथा श्री रवि सतपथी ने किया। धन्यवाद श्री ज्ञापन प्रशांत संतारा ने प्रस्तुत किया।

पंजाबी

एस.एस. वंजारा बेदी पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

13–14 दिसंबर 2024, दिल्ली



उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री जगबीर सिंह

साहित्य अकादेमी ने पंजाबी साहित्य सभा, दिल्ली के सहयोग से प्रख्यात पंजाबी लोकसाहित्यकार सोहिंदर सिंह वंजारा बेदी की जन्म शतवार्षिकी के उपलक्ष्य में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 13–14 दिसंबर 2024 को पंजाबी भवन, दिल्ली में किया। साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक श्री अनुपम तिवारी ने उपस्थित जनों का स्वागत करते हुए कहा कि वंजारा बेदी एक विलक्षण लोकसाहित्यकार थे, जिन्होंने पंजाब के लोकसाहित्य का केवल संकलन ही नहीं किया, बल्कि उसका विश्लेषण भी किया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने बताया कि वंजारा बेदी ने अपने लेखन की शुरुआत कविता से की थी, किंतु बाद में वे लोकसाहित्य की ओर उन्मुख हो गए। पंजाबी लोकसाहित्य विश्वकोश के आठ खंडों में उनका योगदान अतुलनीय है। प्रो. जगबीर सिंह, कुलाधिपति, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि वंजारा बेदी एक सच्चे 'वंजारा' थे,

जिन्होंने गाँव-गाँव घूमकर तथा पहाड़ों से होकर गुज़रते हुए लोकसाहित्य का संकलन किया। श्री सतीश कुमार वर्मा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया तथा श्रीमती रेणुका सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था – "पंजाबी साहित्य विश्वकोश"। इस सत्र की अध्यक्षता श्री बलबीर माधोपुरी ने की। उन्होंने पंजाबी साहित्य में वंजारा बेदी के समग्र योगदान पर प्रकाश डाला। इस सत्र में सुश्री जगदीश कौर, श्री राजिंदर पाल सिंह तथा श्री तजिंदर सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. वनीता ने की। डॉ. रविंदर सिंह ने "वंजारा बेदी द्वारा संकलित पंजाबी लोकसाहित्य का विश्लेषण" विषय पर अपना आलेख पढ़ा। श्री गुरसेवक लाम्बी ने "बातां मुध कदीम दियां" पुस्तक पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री अमनप्रीत सिंह गिल ने वंजारा बेदी की आत्मकथा पर बात की। श्री रजनी बाला ने उनके आत्मकथात्मक साहित्य पर चर्चा की। तृतीय सत्र का विषय था – "वंजारा बेदी द्वारा लोकसाहित्य का संकलन"। इस सत्र की अध्यक्षता श्री वरयाम मस्त ने की। डॉ. मंजींदर सिंह ने "वंजारा बेदी की भाषाई विशेषताएँ" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री रणधीर कौर ने "धानी पोटोहारी" लोककथाओं में साहित्यिक और सामाजिक ध्वनियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। सुश्री मनप्रीत कौर धालीवाल ने "वंजारा बेदी की आत्मकथा में स्मृतियों की कथा" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. मंजीत सिंह ने की। श्री मोहन त्यागी ने "वंजारा बेदी की कविता का अध्ययन" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री सिमरन सेठी ने "वंजारा बेदी के साथ चलते हुए" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री बलबीर मधोपुरी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

साहित्य और दर्शन पर संगोष्ठी

21–22 दिसंबर 2024, चंडीगढ़



आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. रवेल सिंह

साहित्य अकादेमी ने पंजाब कला परिषद, पंजाब सरकार के सहयोग से 'साहित्य और दर्शन' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 21–22 दिसंबर 2024 को कला भवन, चंडीगढ़ में किया। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए इस विषय की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि साहित्य और दर्शन परस्पर गुँथे हुए विषय हैं। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परमर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने कहा कि दर्शन बाद में आता है, किंतु कोई भी साहित्यिक रचना दर्शन के बिना अस्तित्व में नहीं आ सकती। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य और दर्शन आपस में गहराई से जुड़े हुए शैक्षिक अनुशासन हैं, जो एक-दूसरे को समृद्ध करते हैं। प्रमुख विद्वान अमरजीत सिंह गरेवाल ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज की आधुनिक दुनिया चाहे जितनी कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर निर्भर हो, किंतु दर्शन किसी मशीन का क्षेत्र नहीं है और यही कारण है कि साहित्य का महत्त्व कभी कम नहीं हो सकता। अध्यक्षीय वक्तव्य में पंजाब कला परिषद् के अध्यक्ष श्री स्वर्णजीत सिंह सवि ने कवि के रूप में अपने अनुभव साझा किए। पंजाब कला परिषद् के उपाध्यक्ष श्री योगराज अंग्रिश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान श्री मनमोहन ने की। रोंकी राम ने "दलित साहित्य का दर्शन" तथा श्री मंजींदर सिंह ने "गुरमत काव्य की अद्वैतवादी दार्शनिक विमर्श" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सुरजीत सिंह ने की तथा उन्होंने स्वयं भी "पंजाबी कथा साहित्य का दार्शनिक दृष्टिकोण" पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री आतम रंधावा ने "आधुनिक पंजाबी कविता : उत्तर-आधुनिक संवाद" तथा श्री परवीन कुमार ने "दर्शन और साहित्य : समकालीन सैद्धांतिक दृष्टिकोण" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री गुरमुख सिंह ने की। श्री राजिंदर पाल बराड़ ने "लोकसाहित्य में प्रतिरोध और दार्शनिक संवाद" तथा सुश्री जगदीश कौर ने "पंजाबी लोककलाओं का सांस्कृतिक दृष्टिकोण" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री सतीश कुमार वर्मा ने की। श्री कुलदीप सिंह ने "समकालीन पंजाबी नाटक में वैचारिक और दार्शनिक संवाद" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। अंत में, साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्र पाल सिंह परिसंवाद पर

22–23 अक्तूबर 2024, नई दिल्ली



उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.नवतेज सिंह सरना

साहित्य अकादेमी ने भाई वीर सिंह साहित्य सदन, नई दिल्ली के सहयोग से प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्र पाल सिंह की जन्म शतवार्षिकी के उपलक्ष्य में उनके जीवन और साहित्यिक योगदान पर द्वि-दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 22–23 अक्तूबर 2024 को किया। साहित्य अकादेमी की सह-संपादक संदीप कौर ने सभी अतिथियों तथा वक्ताओं का स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात लेखक और पूर्व राजनयिक डॉ. नवतेज सिंह सरना ने दोनों लेखकों के साथ अपने संस्मरण साझा किए। (सेवानिवृत्त) जनरल श्री जे.जे. सिंह ने भी इस अवसर पर प्रभजोत कौर की कविताओं तथा कर्नल नरेंद्र पाल सिंह के उपन्यासों के संवादों का पाठ किया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परमर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने अपने बीज-वक्तव्य में दोनों लेखकों के साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन उनके समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में किया तथा आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता को रेखांकित किया। जसबिंदर सिंह ने भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन से इस दंपत्ति की निकटता पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र दोनों लेखकों की स्मृतियों को समर्पित था, जिसमें तरलोक दीप सिंह, अनुपमा सिंह तथा मंजीत सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री रेनुका सिंह ने की। प्रभजोत कौर पर केंद्रित अगले सत्र की अध्यक्षता श्री सुरजीत सिंह ने की। इस सत्र में वनीता ने "प्रभजोत कौर की कविता का नारी-आलोचनात्मक दृष्टिकोण" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा कुलवीर गोजरा ने उनके काव्य-जगत पर चर्चा की। प्रभजोत कौर पर ही आधारित द्वितीय सत्र में चरणजीत कौर बराड़ ने उनकी आत्मकथाओं पर, गुरसेवक लाम्बी ने उनके गद्य साहित्य पर, तथा परवीन ने उनकी कविता के वैचारिक विकास पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता राजिंदर पाल सिंह बराड़ ने की। इसके पश्चात कर्नल नरेंद्र पाल सिंह पर केंद्रित सत्र हुआ,

जिसकी अध्यक्षता श्री अमरजीत सिंह गरेवाल ने की। श्री गुरपाल सिंह संधू ने उनके उपन्यास 'टापू' पर, श्री बलजिंदर सिंह नसराली ने 'बा-मुलाहिज़ा होशियार' पर, तथा श्री कुलदीप सिंह ने उनके ऐतिहासिक उपन्यासों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र में मनमोहन ने कर्नल नरेंद्र पाल सिंह के अर्ध-ऐतिहासिक उपन्यासों पर, श्री सुरजीत ने उनकी साहित्यिक आत्मकथा पर, दीदार सिंह ने उनके उपन्यास 'मलाह', 'उनताली वरेह' तथा 'सेनापति' पर, तथा श्री जे.बी. सेखों ने उनके कथन-कौशल पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में भाई वीर सिंह साहित्य सदन के निदेशक श्री मोहिंदर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्य परिसंवाद पर

28 जनवरी 2025, नई दिल्ली



अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. रवेल सिंह

साहित्य अकादेमी ने 28 जनवरी 2025 को माता सुंदरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए रचनात्मक क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वर्चस्व के चलते बदलते परिदृश्य को विस्तार से बताया। मुख्य अतिथि के रूप में माता सुंदरी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. हरप्रीत कौर ने उद्घाटन वक्तव्य में दैनिक जीवन और साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका को रेखांकित किया। बीज-वक्तव्य में डॉ. माधुरी चावला (दयाल सिंह कॉलेज) ने विश्व साहित्य के उदाहरणों के माध्यम से बताया कि किस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग नई कथाओं को गढ़ने में किया जा रहा है। अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने कहा कि यदि लेखक खुले मन से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ सहयोग करें तो यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री कुलवीर गोजरा ने की। राजविंदर सिंह ने 'पंजाबी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता' पर, श्री मंजीत सिंह ने अजमेर सिद्धू की कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित कहानी ' बर्फ़ दी बुलबुल' पर, तथा श्री अमरजीत सिंह ने तीन पंजाबी रचनाओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. हरप्रीत कौर ने की। श्री कुमार सुशील ने 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता और लेखकीयता' पर, तरविंदर कौर तथा गौरव ने पंजाबी रचनाओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में माता सुंदरी कॉलेज के पंजाबी विभाग की संयोजक डॉ. हरविंदर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

राजस्थानी

राजस्थानी की नई कविता विषय पर संगोष्ठी

20–21 जुलाई 2024, जोधपुर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने 'रम्मत' के सहयोग से 20–21 जुलाई 2024 को गाँधी शांति प्रतिष्ठान, गाँधी भवन, रेजिडेंसी रोड, जोधपुर, राजस्थान में 'राजस्थानी की नई कविता' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी



(बाएँ से दाएँ) डॉ. अर्जुन देव चारण, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, श्री नंद भारद्वाज तथा डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि हर कविता भाषा, शैली, भावना, शिल्प, विषय-वस्तु तथा संवेदना के स्तर पर भिन्न होती है। जब कोई व्यक्ति एक ही बात को एक अलग ढंग से कहता है, वही नवीन कविता बन जाती है। प्रख्यात राजस्थानी लेखक तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री नंद भारद्वाज ने कहा कि हर कविता अपने समय में नवीन होती है, क्योंकि वह उस समय की चेतना को समेटे होती है।

प्रथम सत्र का विषय था - "राजस्थानी की नई कविता (1970–1985)"। इसकी अध्यक्षता श्री श्याम सुंदर भारती ने की, जिसमें डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित तथा श्री उपेंद्र अणु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था - "राजस्थानी की नई कविता (1986–2000)"। इस सत्र की अध्यक्षता श्री आईदानसिंह भाटी ने की। इस सत्र में श्री अम्बिका दत्त तथा श्री दिनेश चारण ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में निम्नलिखित कवियों द्वारा कविता-पाठ किया गया - सर्वश्री नंद भारद्वाज, श्याम सुंदर भारती, आईदानसिंह भाटी, उपेंद्र अणु, मंगत बादल, मधु आचार्य, सुमन बिस्सा, सुश्री किरण राजपुरोहित, सुश्री मोनिका गौड़ तथा धनंजया अमरावत। चतुर्थ सत्र का विषय था - "राजस्थानी की नई कविता : महिला लेखन"। इस सत्र की अध्यक्षता सुमन बिस्सा ने की। इस सत्र में धनंजया, अमरावत, सुश्री किरण राजपुरोहित तथा सुश्री मोनिका गौड़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र का विषय था- "राजस्थानी की नई कविता (2001–2024)"। इस सत्र की अध्यक्षता श्री ज्योति पुंज ने की, जिसमें सर्वश्री मदनगोपाल लाढा, विनोद गोस्वामी और श्री गौतम अरोड़ा ने अपने आलेख पढ़े। षष्ठ सत्र में निम्नलिखित कवियों द्वारा कविता-पाठ किया गया - सर्वश्री अर्जुन देव चारण, अम्बिका दत्त, गजेसिंह राजपुरोहित, दिनेश चारण, मदनगोपाल लाढा, विनोद स्वामी, गौतम अरोड़ा तथा ज्योति पुंज। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री मधु आचार्य ने की। श्री मंगत बादल ने समापन वक्तव्य में कहा कि नए युग की भाषा बदल चुकी है, अत: प्रत्येक कवि को अपनी भाषा पर मेहनत करनी चाहिए। अंत में 'रम्मत' के सचिव श्री दीपक भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

राजस्थानी साहित्य और अनुवाद परिसंवाद पर

26 अक्तूबर 2024, बीकानेर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'राजस्थानी साहित्य और अनुवाद' विषय परिसंवाद का आयोजन 26 अक्तूबर



(बाएँ से दाएँ) श्रीमती सेनुका हर्ष, डॉ. अर्जुन देव चारण, श्री कैलाश कबीर तथा श्री संजय पुरोहित

2024 को बीकानेर, राजस्थान में रमेश इंग्लिश सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बीकानेर के सहयोग से किया गया।

इस कार्यक्रम के दौरान साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि अनुवाद वह क्रिया है, जिसमें अबतक अभिव्यक्त नहीं हो सकी चीज़ को अपने अनुभव में समाहित कर, उसे व्यक्त किया जाता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि निजी अनुभूति के माध्यम से अनकहे को कह पाना ही अनुवाद की आत्मा है।

जानेमाने लेखक कैलाश कबीर ने कहा कि एक भाषा से दूसरी, फिर तीसरी भाषा में अनुवाद करते-करते मूल अभिप्राय का ह्रास हो जाता है। उन्होंने एक रूसी पुस्तक का उदाहरण दिया, जिसका पहले अंग्रेज़ी में, फिर हिंदी में और अंततः राजस्थानी में अनुवाद हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए सेनुका हर्ष ने कहा कि साहित्य और शिक्षा का आपस में गहरा संबंध है तथा शैक्षणिक संस्थानों को बच्चों में साहित्यिक रुचि जगाने हेतु ऐसे कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

एक अन्य सत्र में राजस्थानी गद्य साहित्य और अनुवाद पर अपने विचार साझा करते हुए राम स्वरूप किसान ने कहा कि कमज़ोर अनुवाद मूल रचना की आत्मा को नष्ट कर सकता है; शंकरसिंह राजपुरोहित ने राजस्थानी और गुजराती के बीच बढ़ते अनुवाद कार्य पर प्रकाश डाला; तथा पूरण शर्मा ' पूरण' ने राजस्थानी में अनुवाद कार्य की नाज़ुकता पर चर्चा की। एक विशेष सत्र में राजस्थानी परमर्श मंडल के सदस्य संजय पुरोहित तथावरिष्ठ साहित्यकार कृष्णा जाखड़ ने राजस्थानी काव्य में अनुवाद की स्थिति पर विचार साझा किए। समापन सत्र में, वरिष्ठ लेखक प्रो. बृजरतन जोशी तथा श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने इस आयोजन के महत्त्व तथा इसके राजस्थानी साहित्य को होने वाले लाभों पर अपने विचार व्यक्त किए।

राजस्थानी निबंध परंपरा परिसंवाद पर

23 नवंबर 2024, श्रीगंगानगर, राजस्थान



(बाएँ से दाएँ) डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, डॉ. अर्जुनदेव चारण, श्री मंगत बादल तथा श्री पी.एस. सूदन

साहित्य अकादेमी ने नोसेगे पब्लिक स्कूल तथा सृजन सेवा संस्थान के सहयोग से 23 नवंबर 2024 को श्रीगंगानगर, राजस्थान स्थित नोसेगे पब्लिक स्कूल के बालक छात्रावास में 'राजस्थानी निबंध परंपरा' पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी का उद्देश्य अब तक अनछुए और पारंपरिक ढर्रे से अलग विषयों पर भी ध्यान केंद्रित करना है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि जब साहित्य की अनेक विधाएँ सक्रिय हैं, तब कोई लेखक निबंध लिखना क्यों चुनेगा? मुख्य अतिथि श्री मंगल बादल ने कहा कि निबंधकार जो विचार प्रस्तुत करता है, उनसे पाठक सहमत हों यह आवश्यक नहीं, परंतु उनके लेखन में लेखक का चेहरा अवश्य दिखाई देता है। विशिष्ट अतिथि तथा नोसेगे पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सूदन ने इस बात पर बल दिया कि क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण में लगे लोगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि ये भाषाएँ धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं।

प्रथम सत्र में श्री हरीश बी. शर्मा ने 'निबंध साहित्य : एक दार्शनिक दृष्टिकोण' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री आशाराम भार्गव ने अपने आलेख में यह प्रश्न उठाया कि क्या राजस्थानी निबंधों का विकास हिंदी निबंधों की तरह ही हुआ है? सत्राध्यक्ष श्री राजेंद्र बारहठ ने कहा कि इस सत्र में यह प्रश्न कि निबंध क्या है तथा इसकी आवश्यकता क्यों है— का उत्तर सत्र में बहुत अच्छे से दिया जा चुका है। द्वितीय सत्र में श्री कमल किशोर पीपलवा ने 'निबंध और निबंधकार' पर तथा हकम अली नागरा ने 'राजस्थानी निबंध साहित्य का वर्तमान परिदृश्य' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष श्री पी.सी. आचार्य ने कहा कि राजस्थानी निबंध लोक संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक हैं और वे हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने का स्मरण कराते हैं। समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री भंवर सिंह सामौर थे तथा सत्र की अध्यक्षता श्री मंगत बादल ने की। उन्होंने समस्त प्रतिभागियों को निबंध परंपरा को आगे ले जाने के लिए की गई गंभीर चर्चा हेतु सराहा। साथ ही उन्होंने निबंधों की शास्त्रीय परंपरा को अपनाने पर भी बल दिया।

सौभाग्य सिंह शेखावत जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद पर

29 दिसंबर 2024, जोधपुर, राजस्थान



(बाएँ से दाएँ) श्री इंद्रदान चारण, डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, डॉ. अर्जुन देव चारण, श्री के.एल. श्रीवास्तव तथा डॉ. कल्याण सिंह शेखावत

प्रख्यात राजस्थानी लेखक तथा विद्वान सौभाग्य सिंह शेखावत के जीवन और कृतित्व पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन साहित्य अकादेमी द्वारा राजस्थानी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के सहयोग से 29 दिसंबर 2024 को होटल बंद्रा इम्पीरियल, जोधपुर में किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए जेएनवीयू के कुलपति प्रो. कन्हैयालाल श्रीवास्तव ने शेखावत को राजस्थानी भाषा के सजग और मननशील साधक के रूप में वर्णित किया। डॉ. कल्याण सिंह शेखावत ने अपने बीज-वक्तव्य में शेखावत की असाधारण बौद्धिक दृष्टि की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के ऐतिहासिक समझ में अमूल्य योगदान दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परमर्श मंडल के संयोजक डॉ. अर्जुन देव चारण ने कहा कि राजस्थान वीरता की भूमि है और इसकी भाषा तथा साहित्य आने वाली पीढ़ियों के लिए नई सांस्कृतिक नींव रखते हैं। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका 'इंडियन लिटरेचर' के राजस्थानी साहित्य पर केंद्रित विशेषांक का विमोचन किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री पृथ्वीराज रत्लू ने की, जिसमें सुश्री नीलू शेखावत ने "सौभाग्य सिंह शेखावत का जन्म और जीवन संघर्ष" तथा श्री संजय कुमार शर्मा ने "राजस्थानी विद्यापीठ में शेखावत का शोध कार्य" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रत्लू ने अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में शेखावत को राजस्थानी भाषा और साहित्य परंपरा के अनुशासित और अथक साधक के रूप में स्मरण किया। द्वितीय सत्र में श्री मदन सिंह राठौड़ ने "राजस्थानी साहित्य और इतिहास में शेखावत का योगदान" तथा श्री साद्दीक मोहम्मद ने "राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी में शेखावत की रचनात्मक विरासत" विषयों पर अपने आलेख पढ़े। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने शेखावत को जन-मानस की आत्मा के इतिहासकार तथा गद्य शिल्पी बताया जिनकी लेखनी भूमि की आत्मा से संवाद करती है। समापन सत्र की अध्यक्षता

करते हुए श्री ज़ाहर खान मेहर ने कहा कि शेखावत ने अपना संपूर्ण जीवन सत्य की खोज में समर्पित किया और राजस्थान की भाषा, साहित्य और संस्कृति पर गहन और ईमानदार शोध कार्य किया। डॉ. अर्जुन देव चारण ने इस बात पर बल देते हुए कहा कि लोकबुद्धि अक्सर शास्त्रीय ज्ञान से आगे होती है तथा शेखावत की लोक-मानस की गहरी समझ उनके कार्य को युगों-युगों तक प्रासंगिक बनाती है। डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संस्कृत

"कालिदाससाहित्ये साहित्यक-काव्यसौंदर्य-वैज्ञानिकवैभवम्" विषय पर संगोष्ठी

18-19 जुलाई 2024, तिरुपति



आमंत्रित प्रतिभागियों का सामूहिक चित्र

साहित्य अकादेमी द्वारा राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के सहयोग से "कालिदाससाहित्ये साहित्यक-काव्यसौंदर्य-वैज्ञानिकवैभवम्" विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 18-19 जुलाई 2024 को राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश के अन्नाराव सभा भवन में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. हरेकृष्ण सतपथी ने किया तथा उन्होंने संस्कृत साहित्य में साहित्यिक भव्यता, काव्य सौंदर्य तथा वैज्ञानिक प्रतिभा पर प्रकाश डाला। उन्होंने संस्कृत साहित्य में प्राचीन कवियों, ऋषियों तथा द्रष्टाओं द्वारा वर्णित महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक अवधारणाओं को खोजने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके पश्चात, श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने संस्कृत साहित्य में प्राचीन कवियों द्वारा वर्णित व्यापक वैज्ञानिक अवधारणाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कालिदास के *अभिज्ञान शाकुंतलम्* जैसे उदाहरणों का हवाला दिया, जो प्रकृति वर्णन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को खूबसूरती से व्यक्त करता है, तथा *रामायण* के पुष्पक विमान प्रकरण में वैज्ञानिक तत्त्वों का चित्रण करता है। उन्होंने संस्कृत साहित्य में छिपी समृद्ध वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि पर प्रकाश डाला। प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान एवं साहित्य अध्ययन के पूर्व प्रोफ़ेसर के. रामसूर्यनारायण ने संस्कृत साहित्य में चित्रित विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के बारे में

बात की, विशेष रूप से अभिज्ञान शाकुंतलम तथा उत्तर रामचरित जैसी कृतियों की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्राचीन संस्कृत साहित्य मानव जीवन के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है और सुझाव दिया कि इन ग्रंथों का अध्ययन आधुनिक समाज को मूल्यवान वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए बताया कि इस प्रकार के राष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन का उद्देश्य साहित्यिक ग्रंथों में निहित वैज्ञानिक तत्त्वों को उजागर करना तथा उन्हें भावी पीढ़ियों के समक्ष प्रस्तुत करना है। उन्होंने भारतीय संस्कृत साहित्य में मौजूद वैज्ञानिक पहलुओं पर केंद्रित विगत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उल्लेख किया तथा छात्रों को इन विषयों का गहन अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने कहा कि अकादेमी संस्कृत साहित्य में मौजूद वैज्ञानिक तथा सामाजिक पहलुओं को उजागर करने के लिए इस प्रकार के राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन करती है। उन्होंने इस सम्मेलन को राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा भारत की विशाल ज्ञान विरासत के प्रसार के लिए कई अभिनव कार्यक्रमों के संचालन के लिए केंद्र सरकार के समर्थन का उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने अकादेमी की ओर से समस्त प्रतिभागियों को उनकी भागीदारी के लिए विशेषरूप से धन्यवाद दिया।

प्रथम सत्र कालिदास के साहित्य में वैज्ञानिक भव्यता को समर्पित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा तथा प्रो. गीता कुमारी ने की, डॉ. एस. रंगनाथ और प्रो. जी शंकरनारायणन ने दिए गए विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का समन्वयन प्रो. एस. दक्षिणा मूर्ति ने किया। द्वितीय सत्र कालिदास के साहित्य में वैज्ञानिक भव्यता को समर्पित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी.एस.आर. कृष्ण मूर्ति ने की, जिसमें प्रो. सी.एस. राधाकृष्णन, प्रो. के. राजगोपालन तथा डॉ. रानी दाधीच ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र का समन्वयन प्रो. वी.एस. विष्णुभट्टाचार्युलु ने किया। कालिदास के साहित्य में सौंदर्य भव्यता को समर्पित तृतीय सत्र की अध्यक्षता केरल के कालडी स्थित शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. गीता कुमारी ने की। प्रो. शारदा सामंतराय, प्रो. भागीरथी नंदा तथा प्रो. सत्यनारायण आचार्य ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रो. सी. ललिता रानी ने सत्र का समन्वय किया।

द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का दूसरा दिन 19 जुलाई 2024 को चतुर्थ सत्र के साथ प्रारंभ हुआ, जो कालिदास के साहित्य में सौंदर्य संबंधी भव्यता पर समर्पित था। डॉ. भारत भूषण रथ, डॉ. ज्ञानरंजन पंडा तथा डॉ. श्वेतपद्म सतपथी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र का समन्वयन प्रो. एन. लता ने किया। पंचम सत्र ''कालिदास के साहित्य में साहित्यिक भव्यता'' को समर्पित था तथा इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस. रंगनाथ ने की। प्रो. के.ई. देवनाथन, डॉ. प्रदीप कुमार बाग तथा डॉ. सीएच. नागराजु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रो. पी. नारायण ने सत्र का समन्वयन किया। षष्ठ एवं अंतिम सत्र कालिदास के साहित्य में साहित्यिक भव्यता को समर्पित था तथा इसकी अध्यक्षता प्रो. हरेकृष्ण सतपथी ने की। प्रो. गोपबंधु मिश्र, प्रो. सी. रंगनाथन तथा डॉ. जे.बी. चक्रवर्ती ने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र का संचालन प्रो. के. गणपति भट ने किया। अंत में, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति प्रो. जी.एस. आर. कृष्णमूर्ति ने साहित्य अकादेमी को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया तथा भविष्य में भी ऐसे कई आयोजन करने का अनुरोध किया। संगोष्ठी का संचालन प्रो. के. राजगोपालन तथा डॉ. भारत भूषण रथ ने किया। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों, छात्रों तथा शोधार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया तथा इस राष्ट्रीय संगोष्ठी को सफल बनाया।

स्कंद पुराण में पुरुषोत्तम श्रीजगन्नाथ पर संगोष्ठी

26–27 नवंबर 2024, पुरी, ओड़िशा



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री अरविंद पाधी, बनमाली बिस्वाल, जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, के. श्रीनिवास राव, हरेकृष्ण शतपथी तथा प्रफुल्ल कुमार मिश्र

"स्कंद पुराण में पुरुषोत्तम श्रीजगन्नाथ" विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री सदाशिव परिसर, पुरी के सहयोग से 26–27 नवंबर 2024 को सीएसयू, पुरी, ओड़िशा के सभागार में किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि यह विषय ऐतिहासिक, आध्यात्मिक तथा पौराणिक होने के साथ-साथ वर्तमान संदर्भ में विशेष रूप से पर्यावरण की समझ के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने अपने बीज-वक्तव्य में जीवन में उपलब्धियों के लिए आध्यात्मिकता की भूमिका पर बल दिया। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति जो कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे ने कहा कि स्कंद पुराण में वर्णित पुरुषोत्तम श्रीजगन्नाथ की आराधना मोक्ष के पथ से जुड़ी हुई है तथा यह पारंपरिक उपासना पद्धतियों का परिचायक है। योग राजेंद्र नारायण कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। सी.एस.यू., पुरी के निदेशक प्रो. बनमाली बिस्वाल ने संगोष्ठी में सहभागिता करने के लिए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो.जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने की। इस सत्र में प्रो. बसंत कुमार मिश्र ने "स्कंद पुराण में राजा इंद्रद्युम्न", प्रो. सुरेंद्र कुमार मिश्र ने "राजा इंद्रद्युम्न द्वारा सहस्र अश्वमेध यज्ञ का आयोजन" तथा प्रो. सीमांचल पंडा ने "समुद्र में श्रीजगन्नाथ" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने की। इसमें प्रो. प्रभात रंजन महापात्र ने "स्कंद पुराणानुसार श्रीजगन्नाथ एवं पुरुषोत्तम परब्रह्म" तथा डॉ. ज्ञानरंजन पंडा ने "स्कंद पुराण में चतुर्थ मूर्ति-श्री मंदिर का प्रतिष्ठापन" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में डॉ. श्रीनिवास आचार्य ने "पुरुषोत्तम माहात्म्य में श्रीजगन्नाथ तत्त्व तथा शिव तत्त्व का समन्वय", डॉ. किशोर चंद्र पाढ़ी ने "पुरुषोत्तम माहात्म्य में श्री नरसिंह" तथा प्रो. सूर्यमणि रथ ने "गीता में पुरुषोत्तम श्रीजगन्नाथ और पुरुषोत्तम योग" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता श्री बनमाली बिस्वाल ने की। अगले सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अरुणा रंजन मिश्र ने "स्कंद पुराण में महाप्रसाद का महत्त्व" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. भास्कर चंद्र मिश्र ने "स्कंद पुराण में श्रीजगन्नाथ की स्नान यात्रा", प्रो. गोपाल कृष्ण दाश ने "स्कंद पुराण में पुरी के पंच तीर्थ" तथा डॉ. पी. मोहन पटनायक ने "पुरुषोत्तम माहात्म्य में मोक्ष सिद्धांत" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने की। इस सत्र में डॉ. श्वेतपद्म सतपथी, डॉ. परांबा योगमाया तथा डॉ. नरेश चंद्र दाश ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. विजयपाल कच्छावा ने अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

शैवकाव्य परंपरा पर परिसंवाद

8 नवंबर 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर



परिसंवाद के प्रतिभागियों का समूह चित्र

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री रणबीर परिसर, जम्मू के सहयोग से 8 नवबंर 2024 को विश्वविद्यालय के सभागार, जम्मू (जम्मू एवं कश्मीर) में 'शैवकाव्य परंपरा' पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की सफलता की कामना की और कहा कि शैवकाव्य संस्कृत काव्य रचनाओं का एक संकलन है, जिसमें जयद्रथ का 'हरचरितचिंतामणि', उत्प्रेक्षवल्लभ का 'भिक्षाटन', नीलकंठ दीक्षित का 'शिवलीलार्णव' तथा वेंकटकृष्ण दीक्षित का 'नटेशविजय' शामिल हैं।

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणबीर परिसर के निदेशक प्रो. श्रीधर मिश्र ने अध्यक्षीय वक्तव्य में 'शैव धर्म' शब्द पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह हिंदू धर्म की एक प्रमुख परंपरा है, जिसमें शिव को परमेश्वर के रूप में पूजा जाता है। सी.एस.यू. श्री रणबीर परिसर, साहित्य विभागाध्यक्ष प्रो. सतीश कुमार कपूर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए परिसंवाद के आयोजन में साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

प्रथम सत्र प्रो. सतीश कुमार कपूर की अध्यक्षता में आरंभ हुआ, जिसमें तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। डॉ. घनश्याम मिश्र ने "शैवागम - संस्कृत शैवकाव्य", डॉ. अजय सिंह ने "संस्कृत शैवकाव्य परंपरा की समालोचना" तथा डॉ. धनंजय मिश्र ने "शिवकाव्यों में वर्णित भक्ति और स्तोत्र परंपरा" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय और अंतिम सत्र भी प्रो. सतीश कुमार कपूर की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें दो आलेख प्रस्तुत किए गए। डॉ. सर्वेश त्रिपाठी ने "शैवकाव्यों के प्रवर्तक अभिनवगुप्त" तथा डॉ. सुजीत कुमार पांडेय ने "शैवकाव्य परंपरा में योगिनी लल्लीश्वरी का स्थान" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

"संस्कृत परंपरा में कवयित्रियाँ और महिला शिक्षाविद् : प्राचीन और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में" विषय पर परिसंवाद

11 दिसंबर 2024, कूच बिहार, पश्चिम बंगाल



आमंत्रित प्रतिभागियों का समूह चित्र

साहित्य अकादेमी ने संस्कृत विभाग, कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय, कूचबिहार के सहयोग से "संस्कृत परंपरा में कवयित्रियाँ और महिला शिक्षाविद् : प्राचीन और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में" विषय पर परिसंवाद का आयोजन 11 दिसंबर 2024 को कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल में किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. निखिल चंद्र राय ने की। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. हरेकृष्ण सतपथी ने

सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि डॉ. रत्ना बसु ने विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया, जिसमें विभिन्न युगों की असाधारण महिला कवयित्रियों की स्थायी विरासत को रेखांकित किया गया। कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय में कला, ललित कला, प्रदर्शन कला तथा पारंपरिक कला रूपों के स्नातकोत्तर संकाय के डीन प्रो. कार्तिक दास ने इस प्रकार के परिसंवादों के आयोजन किए जाने की महत्ता पर बल दिया, जो अतीत और वर्तमान को जोड़ते हुए नए अकादमिक संवादों को प्रोत्साहित करते हैं। संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. हरिदास सरकार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. तपती मुखर्जी ने की। इस सत्र में प्रो. मुक्ता बिस्वास ने "वेदमूर्ति डॉ. उमा चक्रवर्ती : उत्तर-पूर्व भारत में संस्कृत साहित्य की पारखी" विषय पर आलेख पढ़ा। प्रो. अरुणा रंजन मिश्र ने "पुष्पा दीक्षित : बिछड़े संबंधों के दर्पण में जीवन" पर तथा प्रो. रघुनाथ घोष ने "बृहदारण्यकोपनिषद् में ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी : कुछ व्याख्याएँ" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. मुक्ता बिस्वास ने की। इस सत्र में प्रो. पार्थ प्रतिम दास ने "प्राचीन उत्तरकालीन और प्रारंभिक मध्यकालीन भारत की महिला विदुषी : अभिलेखों से प्राप्त कुछ झलकियों के विशेष संदर्भ में" पर तथा प्रो. तपती मुखर्जी ने "मध्यकालीन भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण : एक महिला कवयित्री के विशेष संदर्भ में" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अरुणा रंजन मिश्र ने की। डॉ. शेख सबीर अली ने "डॉ. रमा चौधरी द्वारा रचित रूपक 'युगजीवन' की विशेषताओं की खोज" तथा डॉ. शुभ्रजीत सेन ने "प्राचीन संस्कृत महिला कवयित्रियों की काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. अभिजीत मंडल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संताली

डोमन साहू 'समीर' की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी

22 मार्च 2025, जामताड़ा, झारखंड



व्याख्यान देते हुए श्री नाज़ीर हेम्ब्रम

साहित्य अकादेमी ने आदिवासी सामाजिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संघ, संताल परगना की देश मांझी परगना बैसी तथा अखिल भारतीय संताली लेखक संघ, झारखंड के सहयोग से डोमन साहू 'समीर' की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी का आयोजन 22 मार्च 2025 को डुलाडी नगर भवन, जामताड़ा, झारखंड में किया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी की संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री चैतन्य प्रसाद मांझी ने दिया तथा बीज-वक्तव्य प्रख्यात संताली लेखक श्री मदन मोहन सोरेन द्वारा प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात संताली लेखक श्री चूंडा सोरेन 'सिपाही' ने किया। इन सभी वक्ताओं ने डोमन साहू 'समीर' के जीवन और कृतित्व पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर डोमन साहू जी के पोते श्री कौशल किशोर विशिष्ट अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री शंकर सोरेन, महासचिव, आदिवासी सामाजिक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संघ, झारखंड ने की तथा धन्यवाद ज्ञापन देश मांझी परगना बैसी, संथाल परगना के सलाहकार द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रथम सत्र में नाज़ीर हेम्ब्रम ने "डोमन साहू 'समीर' का जीवन

एवं साहित्यिक कृतित्व", श्री लखाई बास्के ने "कवि के रूप में डोमन साहू 'समीर' : एक समालोचनात्मक दृष्टि" तथा श्री मोहन चंद्र बास्के ने " 'होर संबाद' के संपादक के रूप में डोमन साहू 'समीर' " विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता श्री सुभाष चंद्र मरांडी ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री भुजंग टुडू ने की, जिन्होंने "डोमन साहू 'समीर' : संताली गीतों के संकलक" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र में श्री शिबू टुडू ने "बाल साहित्यकार के रूप में डोमन साहू 'समीर' का योगदान" पर तथा श्री रामो टुडू ने "डोमन साहू 'समीर' के निबंध और कहानियाँ : एक साहित्यिक मूल्यांकन" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

आधुनिक संताली कविता की प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद

24 जनवरी 2025, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी ने 'आधुनिक संताली कविता की प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 24 जनवरी 2025 को साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में किया।



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री श्यामाचरण हेंब्रम, आदित्य मांडी, बादल हेंब्रम, सुकचंद सोरेन तथा अंजन कर्मकार

इस परिसंवाद में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री अभिषेक रथ द्वारा प्रस्तुत किया गया। बीज-वक्तव्य में प्रख्यात संताली लेखक श्री आदित्य मांडी ने संताली कविता की उत्पत्ति और विकास पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए इसकी समकालीन प्रवृत्तियों पर विशेष बल दिया। परिसंवाद की अध्यक्षता विख्यात संताली लेखक श्री बादल हेंब्रम ने की। इस अवसर पर जानेमाने संताली लेखक एवं विद्वान सर्वश्री अंजन कर्मकार, श्यामाचरण हेंब्रम, सुकचांद सोरेन तथा सुबोध हांसदा ने आधुनिक संताली कविता की विभिन्न प्रवृत्तियों तथा उनकी विशिष्ट विशेषताओं पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने संताली कविता की प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके महत्त्वपूर्ण पहलुओं की व्याख्या भी की।

सिंधी

पोपटी हीरानंदाणी की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद

23 नवंबर 2024, आदिपुर, गुजरात



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री ओम प्रकाश नागर, मोहन हिमथाणी, सुशील जी. धर्माणी तथा सुश्री साहिब बिजाणी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सीधीलॉजी, आदिपुर के सहयोग से विख्यात सिंधी लेखिका पोपटी हीरानंदाणी की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद का आयोजन शनिवार, 23 नवंबर 2024 को ईश्वरीबाई जीवतराम बख़्शाणी सभागार, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंधीलॉजी, आदिपुर, कच्छ, गुजरात में किया। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नागर

ने दिया, जिसमें उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी भी दी। इसके बाद, साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक मोहन हिमथाणी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। तोलाणी कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, आदिपुर के प्राचार्य सुशील जी. धर्माणी ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में, प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार सुश्री साहिब बिजाणी ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री साहिब बिजाणी ने की, जिसमें श्री हूंदराज बलवाणी ने "व्यक्तित्व, आत्मकथा और जीवनी साहित्य", श्री कलाधर मुतवा ने "कथेतर साहित्य" तथा सुश्री विम्मी सदारंगाणी ने "कविता और आलोचना" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुश्री विम्मी सदारंगाणी ने की, जिसमें श्री कैलाश शादाब ने "कथा साहित्य और नाटक" तथा सुश्री सुनीता मोहनाणी ने "भाषा, अनुवाद और अन्य साहित्य" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सुंदरी उत्तमचंदाणी की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद

13 दिसंबर 2024, दादर (पूर्व), मुंबई



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री नंद झवेरी, मोहन गेहाणी, मोहन हिमथाणी और ओम प्रकाश नागर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा सुंदरी उत्तमचंदाणी की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद का आयोजन शुक्रवार, 13 दिसंबर 2024 को साहित्य अकादेमी सभागार, मुंबई में किया गया। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी श्री अधिकारी ओम प्रकाश नगर ने दिया, जिसमें उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी भी दी। साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन हिमथाणी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उद्घाटन वक्तव्य वरिष्ठ सिंधी साहित्यकार श्री नंद झवेरी ने तथा अध्यक्षीय वक्तव्य सुप्रसिद्ध सिंधी लेखक श्री मोहन गेहाणी ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार अरुण बाबाणी ने की। इस सत्र में सुश्री कमला गोकलाणी ने "सुंदरी उत्तमचंदाणी की कथा साहित्य", सुश्री माला कैलाश ने "सुंदरी उत्तमचंदाणी रचनाओं के विभाजन के पहलू", तथा सुश्री सरिता शर्मा ने "सुंदरी उत्तमचंदाणी की कविताएँ और अनुवाद कार्य" पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध सिंधी लेखिका सुश्री कमला गोकलाणी ने की। इस सत्र में श्री मोहन गेहाणी ने "सुंदरी उत्तमचंदाणी का कथेतर साहित्य" विषय पर अपना आलेख पढ़ा। अंत में, सुश्री आशा चाँद ने अपनी माँ, स्वर्गीय सुंदरी उत्तमचंदाणी के साथ बिताए संस्मरण साझा किए। दोनों सत्र अत्यंत संवादात्मक तथा सराहनीय रहे, जिन्हें उपस्थित श्रोताओं और साहित्यकारों ने भरपूर सराहा। परिसंवाद का समापन श्री ओम प्रकाश नागर द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

'श्याम जयसिंघाणी एवं रीटा शहाणी का सिंधी साहित्य में योगदान' पर परिसंवाद

23 अगस्त 2024, बांद्रा, महाराष्ट्र

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 'श्याम जयसिंघाणी एवं रीटा शहाणी का सिंधी साहित्य में योगदान'



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री किशोर पिशोरी, नंद जवेरी, नामदेव ताराचंदाणी और मोहन हिमथाणी

पर परिसंवाद का आयोजन श्रीमती एम.एम.के. वणिज्य एवं अर्थशास्त्र महाविद्यालय, बांद्रा (पश्चिम), मुंबई के सहयोग से शुक्रवार, 23 अगस्त 2024 को कॉलेज के पद्म भूषण डॉ. एल.एच. हीरानंदाणी सभागार में किया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी श्री ओम प्रकाश नगर ने दिया, जिसमें उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों की जानकारी भी दी। इस अवसर पर श्रीमती एम.एम. के. वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र महाविद्यालय के प्राचार्य श्री किशोर पिशोरी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मोहन हिमथाणी ने दिया तथा प्रख्यात सिंधी लेखक श्री नंद झवेरी ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता श्री नामदेव ताराचंदाणी ने की।

प्रथम सत्र, जो 'श्याम जयसिंघाणी का सिंधी साहित्य में योगदान' को समर्पित था, की अध्यक्षता श्री जगदीश लछाणी ने की। इस सत्र में श्री विनोद आसुदाणी ने "श्याम जयसिंघाणी का कथात्मक साहित्य", सुश्री संध्या कुंदनाणी ने "श्याम जयसिंघाणी के नाटक, संपादन और अनुवाद" तथा श्री सुशील गजवाणी ने "श्याम जयसिंघाणी का काव्य" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र, जो 'रीटा शाहाणी का सिंधी साहित्य में योगदान' को समर्पित था, की अध्यक्षता श्री नामदेव ताराचंदाणी ने की। इस सत्र में श्री कन्हैयालाल लेखवाणी ने "रीटा शाहाणी का व्यक्तित्व और कथा साहित्य", श्री बलदेव मटलाणी ने "रीटा शाहाणी का कथेतर साहित्य" पर तथा श्री अरुण बाबाणी ने "रीटा शाहाणी का काव्य" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र अत्यंत संवादात्मक तथा ज्ञानवर्धक रहे, जिन्हें श्रोताओं, विद्यार्थियों तथा साहित्यकारों ने खूब सराहा। अंत में, एम.एम.के. कॉलेज की, प्रोफ़ेसर श्रीमती नवीना भाटिया ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

तमिऴ

थलपुराणंगळ पर संगोष्ठी

14 अक्तूबर 2024, चेन्नई, तमिलनाडु



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री वाई. मणिकंदन, भक्तवत्सल भारती, बी. रविकुमार, के. श्रीनिवास राव तथा आर. थामोथरन

साहित्य अकादेमी के उप-कार्यालय चेन्नई द्वारा तमिऴ विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय तथा 'मनारकेणी' तमिऴ साहित्यिक पत्रिका के सहयोग से "थलपुराणंगळ" पर संगोष्ठी का आयोजन 14 अक्तूबर 2024 को मद्रास विश्वविद्यालय परिसर, चेन्नई में किया गया। उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने दिया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए भारतीय साहित्य में स्थलपुराणों के महत्त्व पर संक्षेप में चर्चा की। उन्होंने तमिऴ संस्कृति में थलपुराणंगळ की सांस्कृतिक भूमिका, स्थानीय समुदायों तथा क्षेत्रों की वाचिक परंपराओं के

संरक्षण में उनकी भूमिका तथा मंदिरों द्वारा सामाजिक एकता के संवाहक बनने की बात कही। साथ ही उन्होंने धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से क्षेत्रों तथा क्षेत्रपालों के दार्शनिक महत्त्व तथा उन्हें स्थलपुराणों में अभिव्यक्त किए जाने की व्याख्या की। आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के तमिळ परमर्श मंडल के संयोजक डॉ. आर. थामोथरन ने संगोष्ठी विषय प्रवर्तन किया और बताया कि किस प्रकार तमिलनाडु के मंदिर और क्षेत्र इनमें विस्तृत रूप से चित्रित होते हैं। उद्घाटन वक्तव्य में डॉ. बी. रविकुमार, संपादक, 'मनारकेणी' पत्रिका ने बताया कि किस प्रकार विभिन्न कालखंडों और क्षेत्रों के थलपुराणंगळ ने सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया है तथा किस प्रकार इन्होंने जनसामान्य को सशक्त बनाते हुए विभिन्न प्रकार के वर्चस्व का प्रतिरोध करने में सहायक भूमिका निभाई। उन्होंने यह भी कहा कि जहाँ आध्यात्मिक और धार्मिक दृष्टिकोण से थलपुराणंगळ का बहुत दस्तावेज़ीकरण हुआ है, वहीं उनके सामाजिक महत्त्व पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। अध्यक्षीय वक्तव्य में मद्रास विश्वविद्यालय के तमिळ विभागध्यक्ष डॉ. वाई. मणिकंदन ने थलपुराणंगळ के साहित्यिक महत्त्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि थलपुराणंगळ स्वयं में एक अलग साहित्यिक विधा है, जो धार्मिक और दार्शनिक साहित्य से अलग है, फिर भी इनमें उनके तत्त्व निहित हैं। उन्होंने स्थानीय समुदायों, मंदिरों तथा तीर्थस्थलों का इतिहास संजोया है, तथा समय विशेष की सामाजिक वास्तविकता का चित्रण उन्हें क्षेत्रीय सामाजिक इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्रोत बनाता है। बीज-वक्तव्य में पुदुच्चेरी स्थित पी.आई.एल.सी. के पूर्व निदेशक डॉ. भक्तवत्सल भारती ने स्थानीय इतिहासलेखन तथा थलापुरंम्स पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वाचिक इतिहासों को प्रायः अविश्वसनीय माना जाता है, जबकि वास्तव में वे कई ग्रंथों, परंपराओं तथा साहित्यिक विधाओं के स्रोत रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वाचिक इतिहास केवल ऐतिहासिक घटनाओं को ही नहीं, बल्कि उसमें निहित संस्कृति और समाजशास्त्रीय तत्वों को भी संजोए रखते हैं। इस प्रकार, थलापुरंम्स न केवल सांस्कृतिक कोष हैं, बल्कि किसी समुदाय को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण मानवविज्ञान स्रोत भी हैं। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान श्री सेंथी नटरासन ने की। उन्होंने "इत्ताकावेली और कोल्लनगोडु थलापुरंम्स में मुदिप्पुरै अम्मनों से जुड़ी मिथकीय कथाएँ" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार स्थानीय मिथक सामाजिक जुड़ाव और दीर्घकालीन परंपराओं को जन्म देते हैं। श्री को. उत्तरदम ने "यू. वे.सा. कृत थलापुरंम्स" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों तथा उनसे जुड़ी साहित्यिक व्याख्याओं पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. बी. रविकुमार ने की। उन्होंने "चिदंबरम मंदिर का थलापुराणम्" विषय पर अपना आलेख पढ़ा। श्री आर. सत्यनारायणन ने "गजनारायण माहात्म्यम (तिरुवनैक्का पुराणम्) और संस्कृत माहात्म्य ग्रंथों" तथा श्री टी. राजरत्नम् ने "कचलैयार कांचीपुराणम् एक थलापुराणम् के रूप में" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कुमारगुरुपरर की चतुश्शती जयंती पर संगोष्ठी

20–21 दिसंबर 2024, मदुरै, तमिलनाडु



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री आर. थामोथरन, जे. सुरेश, के. श्रीनिवास राव, शंकर सरवनन, एम. तिरुमलै तथा एस. धनासामी

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा तमिळ विभाग, मदुरा कॉलेज के सहयोग से कुमारगुरुपरर की 400वीं जयंती के उपलक्ष्य में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 20–21 दिसंबर 2024 को मदुरै स्थित कॉलेज परिसर में किया गया। उद्घाटन सत्र में स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने दिया। उन्होंने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कुमारगुरुपरर के योगदान, भारत के संत कवियों द्वारा विभिन्न भाषाओं में संस्कृति के संरक्षण और प्रसार, भक्ति साहित्य द्वारा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने तथा साहित्य अकादेमी द्वारा सभी मान्यता प्राप्त भाषाओं में इस प्रकार की स्मृति-गोष्ठियों के आयोजन की भूमिका पर प्रकाश डाला। आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. आर. थामोथरन ने संगोष्ठी की विषयवस्तु तथा विभिन्न सत्रों का परिचय दिया। उद्घाटन वक्तव्य में मदुरै कॉलेज बोर्ड के अध्यक्ष श्री शंकर सीथारमन ने मदुरै की तमिळ साहित्य और संस्कृति में भूमिका पर चर्चा की तथा कॉलेज में इस महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी के आयोजन हेतु साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। इस सत्र की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य प्रो. जे. सुरेश ने की। कॉलेज बोर्ड के सचिव श्री एस. नटनगोपाल तथा कोषाध्यक्ष श्री एन. आनंद श्रीनिवासन ने कार्यक्रम में शुभकामनाएँ दीं। बीज-वक्तव्य में तमिळ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एम. तिरुमलै ने कहा कि कुमारगुरुपरर की शिक्षाएँ आज के समय में भी प्रासंगिक हैं। वे केवल संत ही नहीं, बल्कि महान साहित्यकार भी थे, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से मानवता को प्रगति और मोक्ष का मार्ग दिखाया। उन्होंने यह भी कहा कि कुमारगुरुपरर ने यह प्रमाणित किया कि जब कोई व्यक्ति अन्य भाषाओं और संस्कृतियों की सकारात्मक बातों को आत्मसात करता है, तब उसकी अपनी संस्कृति और साहित्य भी समृद्ध होता है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता विद्वान एम.पी. श्रीनिवासन ने की। उन्होंने "कुमारगुरुपरर के साहित्य में अगतिनै तत्त्व", ए.वी. सांतिकुमार स्वामिगल ने "कुमारगुरुपरर के लेखन में शैव सिद्धांत के तत्व" तथा के. कंदासामी पांडियन ने "कुमारगुरुपरर संबंधी साहित्य" विषयों पर आपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विद्वान एम.सी. राजा सीमा ने की। उन्होंने "तिरुक्कुरल और नीति नेरी विलक्कम", के. शिवा ने "कोवै परंपरा और पांडारा मुम्मणि कोवै" तथा एस. धनलक्ष्मी ने "कुमारगुरुपरर और मलै साहित्य" विषयों पर आपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री एस. सतीश कुमार ने की। उन्होंने "कुमारगुरुपरर की वर्णनात्मक शैली" तथा श्री एस. विमल ने "कुमारगुरुपरर के लेखन में 'तमिळ' शब्द का उपयोग" विषयों पर आपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता विद्वान श्री एस. तमिळारासन ने की। उन्होंने "मीनाक्षी अम्मै पिल्लै तमिळ में प्रयुक्त शब्द", श्री एस. शिवचंद्र कुमार ने "कुमारगुरुपरर द्वारा प्रयुक्त यप्पु वर्ग" तथा श्री डी. गाँधीमति ने "कंदर कलीवेंबा की रचना और संभावनाएँ" विषयों पर आपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र की अध्यक्षता श्री एस. जेकनाथ ने की। उन्होंने "कुमारगुरुपरर के साहित्य में जनजीवन की झलक", सुश्री एम. कविता ने "कुमारगुरुपरर के लेखन में स्थलपुराणों का उल्लेख" तथा श्री बी. जोथिमुरुगन ने "कुमारगुरुपरर और संगीत तमिळ" विषयों पर आपने आलेख प्रस्तुत किए। षष्ठ सत्र की अध्यक्षता विद्वान श्री ए. सेंथिलनारायणन ने की। उन्होंने "कुमारगुरुपरर के साहित्य में अलंकार प्रयोग" तथा श्री एस. करुम्बैयिरम ने "कुमारगुरुपरर के कलंबक साहित्य का प्रकाशन इतिहास" विषयों पर आपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता कॉलेज के आई. नागराजन ने की। डॉ. विसालाक्षी सुब्रमणियन ने अपने समापन वक्तव्य में कुमारगुरुपरर के गीतों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कॉलेज के डॉ. कन्नदासन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

बीसवीं सदी के प्रवृत्तिनिर्धारक तमिऴ उपन्यासों पर परिसंवाद

6 दिसंबर 2024, शिवकाशी, तमिलनाडु

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा तमिऴ विभाग एवं तमिऴ अध्ययन केंद्र, अय्या नाडार जानकी अम्मल कॉलेज, शिवकाशी के सहयोग से कॉलेज परिसर में "बीसवीं सदी के प्रवृत्तिनिर्धारक तमिऴ उपन्यासों" पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में तमिऴ विभाग के डॉ. एम. शिवज्ञानम ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया। अपने आरंभिक वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. टी.विष्णुकुमारन ने समाज पर उपन्यासों के प्रभाव पर बात की तथा उन प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यासों की जानकारी दी जो तमिऴ भाषी समुदायों की सामाजिक वास्तविकताओं को उजागर करते हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कॉलेज के प्राचार्य प्रो. सी. अशोक ने साहित्य अकादेमी को धन्यवाद देते हुए क्षेत्रीय उपन्यासों तथा उनके सामाजिक प्रभाव की सराहना की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता विख्यात आलोचक श्री एन. शिवासु ने की। उन्होंने "बीसवीं सदी के उत्तर-आधुनिक एवं उत्तर-औपनिवेशिक तमिल उपन्यासों" पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री एम. तिरुनावुक्करासु ने "प्रवृत्तिनिर्धारक नारीवादी तमिल उपन्यास" तथा श्री एस. रामर ने "आदिवासी जीवनशैली पर केंद्रित प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यास" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री एन. शिवासु ने की। श्री पी. कलियानंदम ने "विमुक्त विचारधाराओं वाले प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यास", श्री टी. राजाजी ने "आधुनिक सिद्धांतों वाले प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यास", श्री एस. विनोथ ने "लोकप्रिय कथा साहित्य वाले प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यास", श्री एन. अरुलमोझी ने "करिसल क्षेत्र के प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यास" तथा श्री टी. विष्णुकुमारन ने "द्रविड़ विचारधारा वाले प्रवृत्तिनिर्धारक उपन्यास" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तमिऴ विभाग के डॉ. एस. मुथमिऴ सेलवन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

पी.के. मुथुसामी पर परिसंवाद

8 जनवरी 2025, सेलम, तमिलनाडु



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री आर. जगन्नाथन, मन्नार मन्नन, टी. पेरियासामी तथा स्टालिन गुणसेकरन

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई ने तमिऴ विभाग, पेरियार विश्वविद्यालय, सेलम के सहयोग से 8 जनवरी 2025 को विश्वविद्यालय परिसर में 'पी.के. मुथुसामी' पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. टी. पेरियासामी ने सभी का स्वागत करते हुए परिसंवाद की विषयवस्तु पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय वक्तव्य में पेरियार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. जगन्नाथन ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा हमें हमारे क्षेत्र के साहित्य सर्जकों की पहचान करने तथा उन्हें सम्मानित करने का अवसर मिलता है। उन्होंने पी.के. मुथुसामी की कई महत्त्वपूर्ण कविताओं तथा गीतों का उल्लेख किया, विशेष रूप से प्रसिद्ध गीत - "क्या पेड़ धरती के लिए बोझ है? पत्तियाँ पेड़ के लिए बोझ हैं?" बीज-वक्तव्य में मक्कल सिंधनै पेरवई, इरोड के अध्यक्ष श्री टी. स्टालिन गुणसेकरन ने कहा कि पी.के. मुथुसामी को हम सभी को सदा याद रखना चाहिए, क्योंकि उन्होंने न केवल अमर गीत तथा कविताएँ लिखीं, बल्कि भाषा को इतनी सरलता से प्रस्तुत

किया कि विद्यालय के छात्र भी उससे जुड़ सकें। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री पी. परमेश्वरन ने की। उन्होंने "पी. के. मुथुसामी और फ़िल्मी गीत" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। तीन विद्वानों - श्री जी. गणेशन ने "पी.के. मुथुसामी और पेरियार", श्री ए. कुमारवेलु ने "नाटक के क्षेत्र में पी.के. मुथुसामी का योगदान" तथा श्री के. पेरियासामी ने "पी.के. मुथुसामी के उपन्यासों में सामाजिक विचार" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री अरासु परमेश्वरन ने की। उन्होंने "पी.के. मुथुसामी के लेखन में सित्रिल्यक्किय विचार" पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री ईला विंसेंट ने "पी.के. मुथुसामी और अरिग्नार अन्ना" तथा श्री नानार्काडन ने "पी.के. मुथुसामी पर वृत्तचित्र निर्माण के अनुभव" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता पेरियार विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पी. विश्वनाथ मूर्ति ने की। समापन वक्तव्य श्री अरासु परमेश्वरन ने प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने पी.के. मुथुसामी के जीवन और कृतित्व का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा कई रोचक प्रसंग भी साझा किए।

तेलुगु

कालिपटनम रामाराव की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी

9 नवंबर 2024, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश



(बाएँ से दाएँ) अन्य प्रतिभागियों के साथ प्रो. सी. मृणालिनी तथा डॉ. के. श्रीनिवास राव

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने राइटर्स अकादमी, विशाखापत्तनम के सहयोग से कालिपटनम रामाराव की जन्म शतवार्षिकी के उपलक्ष्य में संगोष्ठी का आयोजन शनिवार, 9 नवंबर 2024 को अल्लुरी सीतारामराजु विज्ञान केंद्र, विशाखापत्तनम में किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा वी.वी.एन. मूर्ति (विविन मूर्ति) द्वारा लिखित तेलुगु विनिबंध 'कालिपटनम रामाराव' का विमोचन किया। उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों तथा प्रतिष्ठित लेखकों की जन्म शताब्दियों के आयोजन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कालिपटनम रामाराव असाधारण लेखक थे जिन्होंने तेलुगु साहित्य की कई विधाओं में योगदान दिया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. सी. मृणालिनी, ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि का.रा. मास्टर (कालिपटनम रामाराव) दक्ष कथाकार हैं तथा उनकी कहानियाँ तेलुगु साहित्य में अत्यंत प्रभावशाली रही हैं। राइटर्स अकादमी के अध्यक्ष श्री वी.वी. रामनमूर्ति तथा कालिपटनम रामाराव के पुत्र श्री कालिपटनम सुवब्बाराव कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। श्री वी.वी.एन. मूर्ति ने बीज-वक्तव्य में कालिपटनम रामाराव के साथ अपने अनुभव साझा किए तथा उनके जीवन व साहित्यिक यात्रा पर प्रकाश डाला। श्री बी.वी. विक्रम कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री डी.वी. सूर्य राव ने की। श्री सी. प्रसाद वर्मा ने "कालिपटनम की कहानियाँ : राजनीतिक और सामाजिक विषय", श्रीमती के.एन. मल्लेश्वरी ने "कालिपटनम की कहानियाँ – पारिवारिक संबंध" तथा जी. वेंकटकृष्ण ने "कालिपटनम की लेखन तकनीक" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री एम. मस्तान रेड्डी ने की। श्री जी.एस. चालम ने "कालिपटनम के निबंध", श्री दासारी रामचंद्र राव ने "'कथानिलयम' में कालिपटनम का योगदान"

तथा श्री डी. हरनाथ (अर्नाड) ने "गुरु के रूप में कालिपटनम" विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. चिंतकिंदी श्रीनिवास राव ने की। उन्होंने कहा कि का.रा. ने वही लिखा जिसे उन्होंने जिया और महसूस किया। डॉ. वी. कृष्णमूर्ति ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने मास्टर के साथ अपने अनुभव और उनके परिवार से जुड़ाव को साझा किया। साथ ही, कालिपटनम रामाराव की कहानियों तथा कथानिलयम के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

"तेलुगु साहित्य पर वैश्वीकरण के प्रभाव" पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2024, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने तेलुगु विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सहयोग से "तेलुगु साहित्य पर वैश्वीकरण के प्रभाव" विषय पर परिसंवाद का आयोजन गुरुवार, 12 दिसंबर 2024



परिसंवाद के दौरान व्याख्यान देते हुए सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. एस.वी. सत्यनारायण

को विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परमर्श मंडल तथा सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. एस.वी. सत्यनारायण ने आपने स्वागत एवं बीज-वक्तव्य में साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला और कहा कि वर्तमान विश्व की समस्याओं को सुलझाने के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है। उन्होंने यह भी कहा कि वैश्वीकरण के कारण भारत में जो सांस्कृतिक और भाषायी हानि हो रही है, वह गंभीर चिंता का विषय है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मायाशंकर पांडे, डीन, कला संकाय, बी.एच.यू., ने अपने व्याख्यान में हैदराबाद के सी.आई.ई.एफ.एल. में पढ़ाई के दौरान तेलुगु भाषा से जुड़ी अपनी भावनात्मक स्मृतियाँ साझा कीं। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण में व्यापार, यात्रा और तकनीक तीन प्रमुख घटक हैं, जो निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता बी.एच.यू. के तेलुगु विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बुडटी वेंकटेश्वरलु ने की। इस सत्र में डॉ. ए. कृष्णाराव ने 'तेलुगु कविता पर वैश्वीकरण का प्रभाव', डॉ. ए. दत्तैयाह ने 'तेलुगु कहानी पर वैश्वीकरण का प्रभाव' तथा डॉ. खासीम खान ने 'तेलुगु उपन्यास पर वैश्वीकरण का प्रभाव' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. सी. श्री रामचंद्र मूर्ति ने की। डॉ. टी. जगदीसन ने 'तमिऴ साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव', डॉ. संदीप भुयाकर ने 'मराठी साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव', डॉ. दिवाकर प्रधान ने 'नेपाली साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव', डॉ. विपिन के. कडवथ ने 'मलयाळम् साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' तथा डॉ. संपन्न चक्रवर्ती ने 'बाङ्ला साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. बुडटी वेंकटेश्वरलु ने प्रस्तुत किया।

"तेलुगु नाटक और नारीवाद" पर परिसंवाद

26 जनवरी 2025, एडलापाडु, आंध्र प्रदेश



बीज-वक्तव्य देते हुए वोल्गा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने वेदिका, एडलापाडु के सहयोग से 'तेलुगु नाटक और नारीवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन रविवार, 26 जनवरी 2025 को वेदिका कार्यालय, एडलापाडु में किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य श्री वल्लुरु शिव प्रसाद ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी तथा कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन करते हुए 'तेलुगु नाटक और नारीवाद की प्रासंगिकता' पर प्रकाश डाला। प्रख्यात तेलुगु लेखिका और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्रीमती वोल्गा ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि नाटक अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में आम जनता तक शीघ्रता से पहुँचते हैं, क्योंकि यह एक सामाजिक और प्रदर्शनात्मक कला है। उन्होंने तेलुगु साहित्य में नारीवादी नाटकों की भूमिका पर भी विस्तार से चर्चा की। वेदिका के अध्यक्ष श्री मत्तवरपु सुरेश बाबू ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में एडलापाडु के परिवेश में नाटकों के मंचन के अपने अनुभव साझा किए। वेदिका के महासचिव श्री जे.वी. मोहन राव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अंबाटी मुरली कृष्णा ने की। श्री कंडिमल्ला संभाशिव राव ने 'तेलुगु नाटक– महिलाओं में जागरूकता', डॉ. निब्हानुपुडी सुब्बा राजू ने 'परंपरागत नाटक– महिलाओं की प्रगति' तथा डॉ. च. सुशीलम्मा ने 'सुधारवादी आंदोलन के नाटक– महिलाओं का प्रतिबिंब' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री पिन्नामनेनी मृत्युंजय राव ने की। श्रीमती पी. देवी ने 'आधुनिक स्ट्रीट प्ले–महिलाओं की उन्नति', डॉ. जे. कनक दुर्गा ने 'तेलुगु नाटक – वैवाहिक जीवन' तथा डॉ. नल्लुरी रुक्मिणी ने 'तेलुगु नाटक – पुरुष वर्चस्व और महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

उर्दू

"तंज ओ मज़ाह और मुशायरे" पर परिसंवाद

26 जून 2024, भोपाल, मध्य प्रदेश



(बाएँ से दाएँ) सर्वश्री चंद्रभान ख़याल, अनुपम तिवारी, संतोष चौबे, जानकी प्रसाद शर्मा तथा सुश्री बिल्क़ीस जहां

साहित्य अकादेमी ने सृजन कामना वेलफ़ेयर सोसाइटी तथा शहर-ए-ग़ज़ल सांस्कृतिक संस्था के सहयोग से 'उर्दू तंज ओ मज़ाह' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 26 जून 2024 को हिंदी भवन, भोपाल में किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़याल ने उर्दू में तंज ओ मज़ाह की परंपरा का विवरण देते हुए कहा कि व्यंग्य और हास्य इस भाषा की समृद्धि का प्रतीक हैं। उद्घाटन वक्तव्य में प्रख्यात कवि, साहित्यकार और आर.एन.टी.यू. के कुलपति प्रो.

संतोष चौबे ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद व्यंग्य दोनों भाषाओं (हिंदी और उर्दू) में समृद्ध हुआ है तथा जैसे-जैसे जीवन जटिल होता गया है, इसकी संभावनाएँ भी बढ़ी हैं। प्रख्यात विद्वान डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा ने कहा कि हास्य और व्यंग्य की उत्पत्ति मिल-बैठकर बात करने की परंपरा से हुई थी, किंतु आज यह परंपरा लुप्त होती जा रही है तथा समाज में गंभीरता बढ़ती जा रही है। साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने सभा का स्वागत किया तथा उर्दू हास्य-व्यंग्य की परंपरा, इतिहास, व्यवहार और महत्त्व पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री बिल्क़ीस जहां ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मोहम्मद नोमान ख़ान ने की। उन्होंने भोपाल में लिखे गए उर्दू हास्य-व्यंग्य साहित्य पर प्रकाश डाला। सर्वश्री मोहम्मद एहसान, एस.एम. शकील, ज़फ़र महमूद, सैफ़ी सिरोंजी तथा जावेद आलम ने उर्दू के हास्य-व्यंग्य साहित्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद के बाद हास्य-व्यंग्य आधारित मुशायरे का आयोजन हुआ। वरिष्ठ शायर ज़फ़र सहबाई ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रतिभागी शायर थे - शेख निज़ामी, सलाम खोखर, परवीन कैफ़ तथा ख़ुर्शीद फेंकू।

"उर्दू में लोक अदब" पर परिसंवाद

14 दिसंबर 2024, गुलबर्गा, कर्नाटक



अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल

साहित्य अकादेमी और अंजुमन तरक्क़ी-ए-उर्दू हिंद, गुलबर्ग शाखा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'उर्दू में लोक अदब' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 14 दिसंबर 2024 को कलबुर्गी, गुलबर्ग, कर्नाटक में किया गया।

उद्घाटन सत्र में अंजुमन तरक़्क़ी-ए-उर्दू हिंद के सचिव माजिद दाग़ी ने स्वागत वक्तव्य देते हुए गुलबर्गा नगर की शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्ता पर प्रकाश डाला और इसे उर्दू साहित्य का प्रथम 'मरकज़' बताया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के भारतीय भाषा अध्ययन केंद्र से ख़्वाजा मुहम्मद इकरामुद्दीन ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि उर्दू साहित्य का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि उर्दू भाषा का इतिहास। लोक साहित्य का एक बड़ा हिस्सा रहस्यवादी विचारों से निर्मित है। अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने कहा, "उर्दू लोक साहित्य महान ऐतिहासिक धरोहर को सँजोए हुए है, जिसे हम भूलते जा रहे हैं।" अंजुमन तरक़्क़ी-ए-उर्दू हिन्द के अध्यक्ष श्री अक़राम नक़्क़ाश ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि उर्दू लोक साहित्य को असाधारण महत्त्व दिया जाना चाहिए। कर्नाटक उर्दू अकादमी, बेंगळूरु के

पूर्व अध्यक्ष श्री वहाब अंदलीब इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए अंजुमन तरक़्क़ी-ए-उर्दू हिंद के अध्यक्ष श्री अक़राम नक़्क़ाश ने शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत आलेखों में उर्दू लोक साहित्य की खोज तत्थ अध्ययन की सराहना की। सुश्री अमीना तहसीन ने "लोक साहित्य में नारीवादी चिंतन और अभिव्यक्ति के आयाम", माजिद दाग़ी ने "हैदराबाद कर्नाटक में लोक साहित्य की परंपरा" तथा सुश्री अस्मा तबस्सुम ने "लोक साहित्य : कल, आज और कल" विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. पंकज पराशर ने कहा कि उर्दू साहित्य अपनी परंपरा और शास्त्रीय विरासत के कारण अत्यंत समृद्ध और उर्वर है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गुलबर्ग के शासकीय स्नातक महाविद्यालय के उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ. जलील तनवीर मुज़फ़्फ़र ने की। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. फ़ारूक़ बक़्शी ने कहा कि लोक साहित्य की बुनियाद हज़रत अमीर ख़ुसरो ने रखी थी।

साहित्योत्सव 2025













साहित्योत्सव 2025













पुस्तकायन 2024


पुस्तकायन
पुस्तकायन




PUSTAKAYAN
पुस्तकायन
उद्घाटन सत्र
PUSTAKAYAN




STAKAYAN


Rajpal & Sons

गणमान्य अतिथियों का साहित्य अकादेमी में आगमन



बीएपीएस स्वामीनारायण शोध संस्थान के विभागाध्यक्ष और संस्कृत विद्वान महामहोपाध्याय साधू भद्रेशदास का 21 जून 2024 में साहित्य अकादेमी आगमन



भारत में लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास की सेकेंड सेक्रेटरी सुश्री रासा ओज़िउनेत का 09 अक्टूबर 2024 में साहित्य अकादेमी आगमन



केरल राज्य के पूर्व मुख्य सचिव डॉ. वी. पी. जॉय, आईएएस (सेवानिवृत्त) का 25 नवंबर 2024 में साहित्य अकादेमी आगमन



क्यूबा गणराज्य के दूतावास के चार्ज्ड अफेयर्स ए. आई. श्री अबेल अबाले देसपेन का 31 दिसंबर 2024 में साहित्य अकादेमी आगमन



पोलिश इंस्टीट्यूट की डायरेक्टर और मिनिस्टर प्लेनिपोटेंटियरी सुश्री माल्गोरज़ाटा वेजसिस-गोलबियाक का 12 मार्च 2025 में साहित्य अकादेमी आगमन



रिपब्लिक ऑफ़ ग्वाटेमाला के राजदूत, महामहिम एच. ई. ओमर कास्टानेडा सोलार्स का 25 मार्च 2025में साहित्य अकादेमी आगमन

साहित्य अकादेमी द्वारा 1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

डोगरी लेखिका सम्मिलन

7 जून 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

हिंदी लेखिकाओं के साथ

19 जून 2024, नई दिल्ली

बोडो लेखिकाओं के साथ

21 जुलाई 2024, गोलपारा, असम

सिंधी कविता और कहानी-पाठ

23 अगस्त 2024, मुंबई, महाराष्ट्र

कश्मीरी लेखिकाओं के साथ

21 सितंबर 2024, चदूरा, जम्मू और कश्मीर

असमिया लेखिकाओं के साथ

1 अक्तूबर 2024, जोनाई, असम

पंजाबी लेखिकाओं के साथ

22 नवंबर 2024, संघेरा, पंजाब

गुजराती कवयित्रियों के साथ

28 नवंबर 2024, आभासी मंच

बाङ्ला लेखिकाओं के साथ

30 अक्तूबर 2024, कृष्णानगर, पश्चिम बंगाल

बाङ्ला लेखिकाओं के साथ

4 दिसंबर 2024, बर्धमान, पश्चिम बंगाल

बहुभाषी लेखिकाओं के साथ

8 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

राजस्थानी कवयित्रियों के साथ

30 जनवरी 2025, आभासी मंच

पुरस्कार/महत्तर सदस्यता

रस्किन बॉन्ड को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

11 मई 2024, मसूरी, उत्तराखंड

अनुवाद पुरस्कार 2023 अर्पण समारोह

12 जुलाई 2024, बेंगळूरु

विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

23 अगस्त 2024, रायपुर, छत्तीसगढ़

भाषा सम्मान अर्पण समारोह 2021 और 2023

29 अगस्त 2024, नई दिल्ली

प्रख्यात बाङ्लादेशी लेखक प्रो. शफ़िकुन्नबी सामादी को साहित्य अकादेमी की प्रेमचंद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

19 नवंबर 2024, नई दिल्ली

डॉ. चंद्रशेखर कंबार को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदत्त

8 दिसंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

श्री वेद राही को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदत्त

12 दिसंबर 2024, मुंबई, महाराष्ट्र

श्रीमती अजीत कौर को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदत्त

18 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

श्री प्राण किशोर कौल को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता प्रदत्त

27 दिसंबर 2024, पुणे, महाराष्ट्र

आविष्कार

प्रेम और शांति विषय पर आधारित कोंकणी कहानियों और कविताओं की प्रस्तुति

22 जनवरी 2025, मापुसा, गोवा

बाल साहिती

मलयाळम् लेखकों के साथ

3 सितंबर 2024, चंगनास्सेरी, केरल

बोडो लेखकों के साथ

4 सितंबर 2024, उदालगुड़ी, असम

संताली लेखकों के साथ

9 फ़रवरी 2025, पश्चिम मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

पुस्तक चर्चा

श्रीमती कृष्णा भट्टाचार्य और श्री श्यामल भट्टाचार्य के साथ

29 मई 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

उषा अकेला द्वारा संपादित पुस्तक 'अ हाउस ऑफ़ वर्ड्स' पर

9 जुलाई 2024, आभासी मंच

मंजूषा कुलकर्णी द्वारा अनूदित पुस्तक 'वैदिकसंस्कृते: विकास:' पर

9 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

कृष्णराज घटानी द्वारा आई. के. सिंह पर लिखित विनिबंध पर

18 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

रमाकांत पांडेय द्वारा संपादित पुस्तक 'संस्कृत कथामहोदधि' पर

5 नवंबर 2024, आभासी मंच

मडलेड मफ्स म्यूज़िंग्स पर पुस्तक चर्चा तथा पुस्तक विमोचन

17 नवंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

साहित्य मंच के अंतर्गत डॉ. मिंडौगस क्वितकौस्कस ने बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक शहर तथा सांस्कृतिक/ऐतिहासिक स्मृतियों पर चर्चा की

21 मई 2024, नई दिल्ली

उज़्बेकिस्तान के लेखकों, कलाकारों तथा पत्रकारों का भारतीय लेखकों के साथ विचार-विमर्श

25 नवंबर 2024, नई दिल्ली

स्पेन और लैटिन अमेरिका के लेखकों के प्रतिनिधिमंडल तथा प्रख्यात भारतीय लेखकों के मध्य साहित्यिक संवाद सत्र

29 नवंबर 2024, नई दिल्ली

साहित्य मंच के अंतर्गत श्री यारोस्लावास मेलनिकस ने अपनी पुस्तक से एक कहानी पढ़ी, जिसका हिंदी अनुवाद डॉ. रेखा सेठी ने प्रस्तुत किया

31 जनवरी 2025, नई दिल्ली

भारत-रूस लेखक सम्मिलन

4 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

पोलैंड की सुश्री दानूता स्तासिक ने हिंदी से संबंधित अपने अनुभव साझा किए

6 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

ईरानी प्रकाशकों के प्रतिनिधिमंडल ने साहित्य अकादेमी का दौरा किया

7 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

दलित चेतना

अंबेडकर जयंती के अवसर पर बहुभाषी-पाठ

14 अप्रैल 2024, नई दिल्ली

एक भारत श्रेष्ठ भारत शृंखला

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत युवा साहिती : डोगरी और नेपाली कविता एवं कहानी-पाठ

5 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत युवा साहिती : पंजाबी और संस्कृत कविता एवं कहानी-पाठ

11 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत बहुभाषी कविता-पाठ

12 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत नारी चेतना : नेपाली और तेलुगु कविता और कहानी-पाठ

14 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत नारी चेतना : कन्नड और संस्कृत कविता और कहानी-पाठ

18 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत बाल साहिती : नेपाली और तमिऴ कविता और कहानी-पाठ

19 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत बाल साहिती : मलयाळम् और संस्कृत कविता और कहानी-पाठ

20 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत बहुभाषी कविता-पाठ

21 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत पंजाबी-तेलुगु कवि सम्मिलन

22 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत कश्मीरी-तमिऴ कवि सम्मिलन

25 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत डोगरी-मलयाळम् कवि सम्मिलन

27 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत साहित्य मंच : उर्दू और कन्नड कविता-पाठ

27 नवंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत साहित्य मंच : कोंकणी-डोगरी कवि सम्मिलन

10 दिसंबर 2024, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत युवा साहिती : असमिया और संस्कृत कविता और कहानी-पाठ

8 जनवरी 2025, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत युवा साहिती : मणिपुरी और नेपाली कविता और कहानी-पाठ

9 जनवरी 2025, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत बाल साहिती : बोडो और संस्कृत कविता और कहानी-पाठ

10 जनवरी 2025, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत बाल साहिती : नेपाली और संताली कविता और कहानी-पाठ

17 जनवरी 2025, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत साहित्य मंच : मराठी और संस्कृत कविता और कहानी-पाठ

20 जनवरी 2025, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत साहित्य मंच : नेपाली और ओड़िआ कविता और कहानी-पाठ

21 जनवरी 2025, आभासी मंच

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत युवा साहिती : सिंधी-ओड़िआ कविता-पाठ

28 जनवरी 2025, आभासी मंच

साहित्योत्सव 2025

साहित्योत्सव का उद्घाटन

7 मार्च 2025, रवींद्र भवन परिसर

बहुभाषी कहानी-पाठ

7 मार्च 2025, गंगा सभागार

आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने हेतु शिक्षा में साहित्य की भूमिका

7 मार्च 2025, गंगा सभागार

भारत में आत्मकथात्मक साहित्य

7 मार्च 2025, गंगा सभागार

भारत का दार्शनिक साहित्य

7 मार्च 2025, गंगा सभागार

बाल पुस्तकों के लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ

7 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

मेरे साहित्यिक प्रेरणा-स्रोत

7 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

भारतीय की साहित्यिक कृतियों में लुप्त होता ग्रामीण क्षेत्र

7 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

21वीं सदी की भारतीय कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन

7 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

बहुभाषी कवि सम्मिलन

7 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

हमारी कहानी, सुनाने लायक कहानियाँ : बहुभाषी कहानी-पाठ

7 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

भारतीय कविता : अलग-अलग जुबानों में

7 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

संक्षेप में : बहुभाषी कहानी-पाठ

7 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

भव्य पुष्पक्रम : जनजातीय कविता-पाठ

7 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

जनजातीय साहित्यिक रचनाओं में 'सृजन मिथक' पर परिचर्चा

7 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

हम कथा सुनाते हैं : जनजातीय कहानी-पाठ

7 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

सितारों का संस्पर्श : जनजातीय कविता-पाठ

7 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

दलित चेतना : कहानी-पाठ

7 मार्च 2025, कावेरी सभागार

भारतीय साहित्य में नदियाँ

7 मार्च 2025, कावेरी सभागार

भारत का समन्वय : कहानी-पाठ

7 मार्च 2025, कावेरी सभागार

भारत के उत्तर-पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्र की लोक संस्कृति

7 मार्च 2025, कावेरी सभागार

अस्मिता : प्रचुर मधुर : कवयित्रियों द्वारा कविता-पाठ

8 मार्च 2025, गंगा सभागार

अस्मिता : हम जादू बुनते हैं : लेखिकाओं द्वारा कहानी-पाठ

8 मार्च 2025, गंगा सभागार

अस्मिता : भारत का समकालीन स्त्री लेखन

8 मार्च 2025, गंगा सभागार

शास्त्रीय भाषाएँ और भारत की सांस्कृतिक धरोहर

8 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

विभाजन पर केंद्रित भारतीय साहित्य

8 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

सृजन का अधिकार : प्रकाशन एवं स्वत्वाधिकार

8 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 के विजेताओं का मीडिया के साथ संवाद

8 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

अनुवाद में संस्कृति-चित्रण

8 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

छवि, लय और सुंदरता का समुच्चय : बहुभाषी कविता-पाठ

8 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

भारतीय साहित्य में पथ-प्रदर्शक कार्य

8 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

कविता : आत्मा का दर्पण - कविता-पाठ

8 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

दलित चेतना : बहुभाषी कवि सम्मिलन

8 मार्च 2025, कावेरी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ

8 मार्च 2025, कावेरी सभागार

जो हम देखते हैं, उससे रच देते हैं जादू : बहुभाषी कविता-पाठ

8 मार्च 2025, कावेरी सभागार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 अर्पण समारोह

8 मार्च 2025, कमानी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : राकेश चौरसिया द्वारा बाँसुरी वादन

8 मार्च 2025, कमानी सभागार

भारतीय ऐतिहासिक कथा साहित्य

9 मार्च 2025, गंगा सभागार

स्याही से दृश्य तक : साहित्यिक कृतियाँ जिन्होंने सिनेमा को रोचक बनाया

9 मार्च 2025, गंगा सभागार

दिल की आवाज़ : हिंदी कवि सम्मिलन

9 मार्च 2025, गंगा सभागार

साहित्य की सार्वभौमिकता और साझा मानवीय अनुभव

9 मार्च 2025, गंगा सभागार

सीधा दिल से : बहुभाषी कवि सम्मिलन

9 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

क्या जनसंचार माध्यम केवल साहित्यिक कृतियों के प्रचार-प्रसार का मात्र एक साधन है?

9 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

21वीं सदी में भारतीय एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखकों का साहित्यिक कृतित्व पर चर्चा

9 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

मैं स्वयं अपनी पहचान हूँ : एल.जी.बी.टी.क्यू. कवियों द्वारा कविता-पाठ

9 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

लेखक सम्मिलन : साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2024 विजेताओं के वक्तव्य

9 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

वैश्विक साहित्यिक परिदृश्य में भारतीय साहित्य

9 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

भारत का समन्वय : कहानी-पाठ

9 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

ओमचेरी एन.एन. पिल्लई पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

9 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

ओमचेरी का नाट्य जगत

9 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

ओमचेरी : एक सांस्कृतिक प्रतिनिधि और मातृभाषा के प्रवक्ता

9 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

21वीं सदी की भारतीय कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन

9 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

युवा साहिती : सुनहरा प्रभात : युवा कवियों द्वारा कविता-पाठ

9 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

युवा साहिती : ताज़ा लहरें : युवा कहानीकारों द्वारा कहानी-पाठ

9 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

युवा साहिती : अग्रगामी : युवा लेखकों के भविष्योन्मुखी लेखन पर चर्चा

9 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

युवा साहिती : आरोहण पथ : भारतीय युवा लेखन की नई प्रवृत्तियाँ

9 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

भारतीय कविता अलग-अलग ज़ुबानों में

9 मार्च 2025, कावेरी सभागार

काल के पल : बहुभाषी कहानी-पाठ

9 मार्च 2025, कावेरी सभागार

आधुनिक भारतीय साहित्य में तीर्थाटन

9 मार्च 2025, कावेरी सभागार

श्री उपमन्यु चटर्जी द्वारा संवत्सर व्याख्यान
9 मार्च 2025, मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच

निर्बंध कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन
10 मार्च 2025, गंगा सभागार

स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय साहित्य में राष्ट्र की अवधारणा
10 मार्च 2025, गंगा सभागार

साहित्य और सामाजिक न्याय
10 मार्च 2025, गंगा सभागार

क्या कॉमिक्स साहित्य है?
10 मार्च 2025, गंगा सभागार

हमारी कहानी, सुनाने लायक़ कहानियाँ : बहुभाषी कहानी-पाठ
10 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

जो हम देखते हैं, उससे बुनते हैं जादू : बहुभाषी कविता-पाठ
10 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

रंगमंच : भारतीय समाज में परिवर्तन के प्रतिबिंब के रूप में
10 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

क्या है जो विशिष्ट कहानियों को कालजयी बनाता है?
10 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

आमने-सामने
10 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

कविता : आत्मा का दर्पण – कवि सम्मिलन
10 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

प्रो. नोबुयोशी यामाबे को आनंद कुमारस्वामी महत्तर सदस्यता प्रदत्त
10 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

भारतीय साहित्यिक परंपराएँ : विरासत और विकास विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
10 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
10 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

युवा कवियों द्वारा कविता-पाठ
10 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

प्रवासी लेखन में मातृभूमि (भारत)
10 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक परिवर्तन के माध्यम के रूप में लेखन
10 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

बहुभाषी कहानी-पाठ
10 मार्च 2025, कावेरी सभागार

छवि, लय और सुंदरता का समुच्चय : बहुभाषी कविता-पाठ

10 मार्च 2025, कावेरी सभागार

सांस्कृतिक रूप से भिन्न भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के अनुवाद की चुनौतियाँ

10 मार्च 2025, कावेरी सभागार

सीधा से : बहुभाषी कविता-पाठ

10 मार्च 2025, कावेरी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : दास्तान-ए-महाभारत

10 मार्च 2025, मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच

उत्तर-पूर्वी और पूर्वी भारत के मिथक और दिव्य चरित्र

11 मार्च 2025, गंगा सभागार

'भारत' की अवधारणा

11 मार्च 2025, गंगा सभागार

साहित्य और अन्य कला रूपों के बीच साझा स्थल

11 मार्च 2025, गंगा सभागार

निर्बंध कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन

11 मार्च 2025, गंगा सभागार

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य में राष्ट्रीयता

11 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

भारत का लोक साहित्य

11 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

अस्मिता : भारतीय उपन्यासों/कहानियों में नारीवाद

11 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

मेरे लिए कविता का अर्थ?

11 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

मैं, मेरे नायक और खलनायक : समाज में पौराणिक पात्र

11 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

मधुर कोकिला : पूर्वोत्तर और उत्तरी कवियों द्वारा कविता-पाठ

11 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

कविता की घटती लोकप्रियता

11 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

कवि नीरज : अप्रतिम रोमांटिक दार्शनिक

11 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

भारतीय साहित्यिक परंपराएँ : विरासत और विकास राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी...)

11 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

मोहन राकेश जन्मशती संगोष्ठी

11 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

कथासंधि : हिंदी कथाकार जितेंद्र भाटिया के साथ
11 मार्च 2025, गोदावरी सभागार

मधुर स्वर : उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी कवियों द्वारा कविता-पाठ
11 मार्च 2025, कावेरी सभागार

कविता : आत्मा का दर्पण – कविता-पाठ
11 मार्च 2025, कावेरी सभागार

विशेष प्रस्तुति:नलिनी जोशी द्वारा हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन
11 मार्च 2025, मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच

दिव्यांग लेखक सम्मिलन : मेरी संसार भी सुंदर है : कविता-पाठ
12 मार्च 2025, गंगा सभागार

दिव्यांग लेखक सम्मिलन : निर्बंध स्वर : अपरिमित कहानियाँ
12 मार्च 2025, गंगा सभागार

भविष्य के उपन्यास
12 मार्च 2025, गंगा सभागार

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव
12 मार्च 2025, गंगा सभागार

अनुदित कृतियों को पढ़ने का महत्त्व
12 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

एकता और सामाजिक एकजुटता : विविध भारत की शक्ति
12 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

निर्बंध कविता : बहुभाषी कवि सम्मिलन
12 मार्च 2025, ब्रह्मपुत्र सभागार

कहानी की चिंगारी : बहुभाषी कहानी-पाठ
12 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनाएँ
12 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

काल के पल : बहुभाषी कहानी-पाठ
12 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

सुबोध सरकार के साथ लेखक से भेंट
12 मार्च 2025, नर्मदा सभागार

भारतीय साहित्यिक परंपराएँ : विरासत और विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी...)
12 मार्च 2025, कृष्णा सभागार

आओ कहानी बुनें (बाल कार्यक्रम)
12 मार्च 2025, मेघदूत मुक्ताकाश रंगमंच

ग्रामालोक

गाँव बसंतगढ़, जम्मू, डोगरी कवियों के साथ
17 मई 2024

गाँव, बेला, कासरगोड, केरल तथा कोंकणी कवियों के साथ
18 मई 2024

गाँव सिल्ली, उत्तराखंड, हिंदी लेखकों के साथ
19 मई 2024

गाँव दावधारा बाक्सा, असम, बोडो लेखक के साथ
26 मई 2024

गाँव रोटेदा, बूंदी, राजस्थान, राजस्थानी कवियों के साथ
26 मई 2024

गाँव नॉर्थ 24 परगना, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखक के साथ
11 जून 2024

गाँव बक्सवाड, अल्मोड़ा, हिंदी लेखकों के साथ
23 जून 2024

गाँव बेल्तंगडी, कर्नाटक, कोंकणी कवियों के साथ
30 जून 2024

गाँव सुखसेना, पूर्णिया, बिहार, मैथिली कवियों के साथ
30 जून 2024

गाँव बुढ़ादीत, कोटा, राजस्थान, राजस्थानी कवियों के साथ
30 जून 2024

गाँव तामुलपुर, असम, बोडो लेखक के साथ
10 जुलाई 2024

गाँव सिहाग्रामली, श्रीगंगानगर, राजस्थान, राजस्थानी कवियों के साथ
20 जुलाई 2024

गाँव लिलिया, ज़िला : आमरेली, गुजरात, गुजराती कवियों के साथ
20 जुलाई 2024

गाँव ग्वालपारा, असम, संताली लेखक के साथ
21 जुलाई 2024

गाँव बोटाद, गुजरात, गुजराती कवियों के साथ
23 जुलाई 2024

गाँव खिंडा, संबलपुर, ओड़िशा, ओड़िआ लेखकों के साथ
27 जुलाई 2024

गाँव पत्तो हीरा सिंह, ज़िला मोगा, पंजाब, पंजाबी कवियों के साथ
28 जुलाई 2024

गाँव पापाचन, बांदीपोरा, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
03 अगस्त 2024

गाँव पुदुचेरी, तमिल नाडु, बाल कहानी लेखक सम्मिलन

3 अगस्त 2024

गाँव जानगाँव, कतातागुरि, क'क्राझार, बोडो लेखक के साथ

11 अगस्त 2024

गाँव बांकुरा, पश्चिम बंगाल, संताली लेखकों के साथ

11 अगस्त 2024

गाँव भगता, ज़िला बठिंडा, पंजाब, पंजाबी कवियों के साथ

25 अगस्त 2024

गाँव घोषपुकुर, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखकों के साथ

31 अगस्त 2024

गाँव राणावाव, ज़िला : पोरबंदर, गुजरात, गुजराती कवियों के साथ

6 सितंबर 2024

गाँव रूपनारायणपुर, बेंगर्या, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखकों के साथ

14 सितंबर 2024

गाँव रायसर, ज़िला बरनाला, पंजाब, पंजाबी लेखकों के साथ

29 सितंबर 2024

गाँव वाची, शोपियाँ, जम्मू और कश्मीर

1 अक्तूबर 2024

गढ़ी कैंट, देहरादून, नेपाली कविता और कहानी-पाठ

16 अक्तूबर 2024

गाँव ताहेरपुर, नदिया, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखकों के साथ

28 अक्तूबर 2024

गाँव मौर मंडी, बठिंडा, पंजाब, पंजाबी लेखकों के साथ

3 नवंबर 2024

गाँव पांच के.के., पदमपुर, श्रीगंगानगर, राजस्थान, राजस्थानी कवियों के साथ

9 नवंबर 2024

गाँव क्रालपोरा, कुपवाड़ा, कश्मीरी लेखकों के साथ

16 नवंबर 2024

मेट भगत, गाँव : बरुल्ला, श्रीनगर, कश्मीरी कवियों के साथ

19 नवंबर 2024

गाँव मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखकों के साथ

22 नवंबर 2024

गाँव देओर खुर्द, धुले, महाराष्ट्र,
मराठी कवियों के साथ
5 दिसंबर 2024

गाँव क्रेरी, बारामूला, कश्मीर, जम्मू और कश्मीर,
कश्मीरी लेखकों के साथ
7 दिसंबर 2024

घौउ मानसा, जम्मू, कश्मीरी कवियों के साथ
7 दिसंबर 2024

गाँव हलवद, ज़िला मोरबी, गुजरात,
गुजराती कवियों के साथ
15 दिसंबर 2024

गाँव दोतमा, क'क्राझार, असम,
बोडो लेखकों के साथ
22 दिसंबर 2024

गाँव सोनादा, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल,
नेपाली कवियों के साथ
28 दिसंबर 2024

गाँव करबला चकंद, गया, बिहार,
उर्दू कवियों के साथ कविता-पाठ
5 जनवरी 2025

गाँव कचा, गाँव, पूर्वी सिंहभूम, झारखंड,
संताली लेखकों के साथ
19 जनवरी 2025

गाँव रामपुरा, कर्नाटक, आधुनिक कन्नड
साहित्य में बागलकोट ज़िले के योगदान पर
2 फ़रवरी 2025

गाँव बांकुरा, पश्चिम बंगाल,
संताली लेखकों के साथ
16 फ़रवरी 2025

गाँव बहालदा, मयूरभंज, ओडिशा, संताली लेखकों
23 फ़रवरी 2025

कथासंधि

प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री मनोहर मौली बिस्वास के साथ
10 मई 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात बोडो लेखक रीता बर'
17 जून 2024, उदलगुड़ी, असम

गण्टेडा गौरु नायडू
14 जुलाई 2024, विजयनगरम, आंध्र प्रदेश

प्रख्यात कोंकणी लेखक और कवि एन. शिवदास
19 जुलाई 2024, सांकुलिम, गोवा

प्रख्यात पंजाबी लेखक खालिद हुसैन
29 जुलाई 2024, आभासी मंच

प्रख्यात मणिपुरी लेखक एच. बुद्धिचंद्र सिंह
4 अगस्त 2024, इंफाल, इंफाल पूर्व, मणिपुर

प्रख्यात ओड़िआ लेखक ममता दास
17 अगस्त 2024, भुवनेश्वर, खुर्दा, ओडिशा

मोहसिन खान
22 अगस्त 2024, आभासी मंच

प्रख्यात पंजाबी लेखक दीप्ति बबूता
30 अगस्त 2024, आभासी मंच

प्रख्यात पंजाबी लेखक बलजिंदर नसराली
13 सितंबर 2024, आभासी मंच

प्रख्यात कोंकणी लेखक एडवर्ड नाज़रथ
22 सितंबर 2024, मैंगलोर, कर्नाटक

असलम जमशेदपुरी
21 अक्तूबर 2024, नई दिल्ली

प्रख्यात हिंदी लेखक सच्चिदानंद जोशी के साथ
24 अक्तूबर 2024, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी लेखक श्री संजय कृष्णजी पाटिल
25 अक्तूबर 2024, मुंबई

अमीन ताबिश
19 नवंबर 2024, भगत, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

के.टी. चिक्कन्ना
24 दिसंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

प्रख्यात सिंधी लेखिका जया जादवाणी
30 दिसंबर 2024, आभासी मंच

प्रख्यात संताली लेखक बिश्वनाथ टुडू (बोयहा)
23 फ़रवरी 2025, बहालदा, मयूरभंज, ओड़िशा

प्रख्यात बाङ्ला लेखक अभिजीत तरफदार
28 फ़रवरी 2025, कोलकाता

प्रख्यात बोडो लेखक हरि नारायण खाखलारी
8 मार्च 2025, चिरांग, असम

प्रख्यात हिंदी लेखक जितेंद्र भाटिया
11 मार्च 2025, नई दिल्ली

प्रख्यात संताली लेखक श्याम बेसरा
22 मार्च 2025, जामताड़ा, झारखंड

कविसंधि

प्रख्यात ओड़िआ कवयित्री प्रतिभा शतपथी
22 मई 2024, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी कवि अशोक नायगाँवकर
24 मई 2024, मुंबई

प्रख्यात कोंकणी कवि नीलबा खांडेकर
26 मई 2024, मैंगलोर, कर्नाटक

प्रख्यात कश्मीरी कवि फारूक सुंबली
13 जुलाई 2024, सुंबाल, कश्मीर, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात पंजाबी कवि स्वर्णजीत सवि
26 जुलाई 2024, आभासी मंच

प्रख्यात कश्मीरी कवि अली शैदा
8 अगस्त 2024, अनंतनाग, कश्मीर

जयंत परमार
20 अगस्त 2024, आभासी मंच

प्रख्यात तेलुगु कवि नागमुनि
21 अगस्त 2024, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रख्यात पंजाबी कवि स्वामी अंतर नीरव
23 अगस्त 2024, आभासी मंच

प्रख्यात तेलुगु कवि मधुनापंतुल सत्यनारायण
29 सितंबर 2024, पल्लिपलेम, आंध्र प्रदेश

प्रख्यात मराठी कवि श्री महेश केलुस्कर
18 अक्तूबर 2024, मुंबई

नोमान शौक़
25 अक्तूबर 2024, नई दिल्ली

देवदास आचार्य
30 अक्तूबर 2024, कृष्णानगर, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात कश्मीरी कवि मीर गुलाम रसूल दद्पुरी
16 नवंबर 2024, क्रालपोरा, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात कश्मीरी कवि इंस्माइल आशना
23 नवंबर 2024, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात असमिया कवि प्रयाग सैकिया
27 नवंबर 2024, नगाँव, असम

प्रख्यात ओड़िआ कवि शत्रुघ्न पांडाब
29 नवंबर 2024, भुवनेश्वर, खुर्दा, ओड़िशा

प्रख्यात कश्मीरी कवि सैयद नज़ीर हुसैन
7 दिसंबर 2024, क्रेरी, बारामूला, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात बोडो कवि उथ्रिशर खुंगुर बसुमतारी
16 दिसंबर 2024, कोकराझार, असम

प्रख्यात कश्मीरी कवि बाल कृष्ण संन्यासी
04 फ़रवरी 2025, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

भाषा सम्मेलन

खड़िया भाषा सम्मेलन
5-6 जुलाई 2024, राँची, झारखंड

कोरकू भाषा सम्मेलन
15-16 जुलाई 2024, भोपाल, मध्य प्रदेश

बैगानी भाषा सम्मेलन
23-24 अगस्त 2024, रायपुर, छत्तीसगढ़

ञिशी भाषा सम्मेलन
27-28 सितंबर 2024, दोईमुखी, अरुणाचल प्रदेश

नगा भाषा सम्मेलन

25-26 नवंबर 2024, कोहिमा, नागालैंड

साहित्य मंच

ऐतिहासिक महानायकों पर आधारित उपन्यासों का लेखन : चुनौती और समस्या

6 अप्रैल 2024, इंदौर, मध्य प्रदेश

गुजराती कहानी-पाठ

18 मई 2024, मुंबई

मराठी कविता-पाठ

31 मई 2024, मुंबई

व्यक्तिगत इतिहास और सामाजिक परिवर्तन

10 जून 2024, नई दिल्ली

मराठी कविता-पाठ

31 मई 2024, मुंबई

उर्दू कविता-पाठ

6 जून 2024, नई दिल्ली

हिंदी लेखकों के साथ

12 जून 2024, नई दिल्ली

गुजराती कहानी और कविता-पाठ

23 जून 2024, सूरत, गुजरात

सिंधी कविता और कहानी-पाठ

23 जून 2024, अहमदाबाद, गुजरात

सिंधी कविता-पाठ

23 जून 2024, अहमदाबाद, गुजरात

कविता और कल्याणकारी राज्य

9 जुलाई 2024, हलियाल, कर्नाटक

तमिऴ बाल साहित्य

19 जुलाई 2024, पुदुचेरी, तमिल नाडु

चंपाबती खाखलारी

21 जुलाई 2024, गोलपारा, असम

मराठी कविता-पाठ

24 जुलाई 2024, परभणी, महाराष्ट्र

वंदल कहानियों पर

25 जुलाई 2024, तिरुवरुर, तमिल नाडु

गीत सामाजिक चेतना

27 जुलाई 2024, लक्सेतिपेट, तेलंगाना

मराठी कविता-पाठ

27 जुलाई 2024, परभणी, महाराष्ट्र

मराठी कविता-पाठ

27 जुलाई 2024, भोपाल, मध्य प्रदेश

नया युग : नई कविता
28 जुलाई 2024, कोट्टायम, केरल

सिंधी कविता और कहानी-पाठ
28 जुलाई 2024, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं और मेरा लेखन
2 अगस्त 2024, कोयंबटूर, तमिल नाडु

कला और कविता
17 अगस्त 2024, बडियाडका, केरल

नेइधाल कहानियों पर
23 अगस्त 2024, शिवकाशी, तमिल नाडु

ग्रामीण जीवन और कन्नड साहित्य
24 अगस्त 2024, चन्नागिरि, कर्नाटक

उर्दू कविता-पाठ
30 अगस्त 2024, आभासी मंच

कोंकणी शब्दकोशकार आंजेलो माफेय
30 अगस्त 2024, मैंगलोर, कर्नाटक

कन्नड कहानियों में प्रवृत्तियाँ : राघवेंद्र खासनीसा की कहानियाँ
31 अगस्त 2024, कर्नाटक

चिकित्सकों का साहित्यिक योगदान
31 अगस्त 2024, कोझिकोड, केरल

उर्दू कविता-पाठ
3 सितंबर 2024, आभासी मंच

एक उपकरण के रूप में भाषा : अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन
3 सितंबर 2024, तिरुवादनै, तमिल नाडु

21वीं सदी के युवा लेखन
8 सितंबर 2024, उदयपुर, राजस्थान

कोंकणी के ऐतिहासिक उपन्यास
20 सितंबर 2024, सांकुलिम, गोवा

बाङ्ला साहित्य पर विभिन्न दार्शनिक प्रवृत्तियों के प्रभाव
23 सितंबर 2024, कल्याणी, पश्चिम बंगाल

सुंदरबन की कहानियाँ, कविताएँ और गीत
27 सितंबर 2024, डायमंड हार्बर, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल

स्वदेशी बाङ्ला साहित्यिक परंपराएँ
29 सितंबर 2024, कोलकाता

गोपीनाथ महांति की रचनाओं में आदिवासी जीवन का चित्रण
29 सितंबर 2024, कोरापुट, ओडिशा

बहुभाषी कविता-पाठ
10 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

मलयाळम् उपन्यास में लेखिकाओं का योगदान
24 अक्तूबर 2024, पय्यानुर, केरल

उर्दू कविता-पाठ
24 अक्तूबर 2024, नई दिल्ली

पर्यावरण और साहित्य
26 अक्तूबर 2024, देहरादून

श्रीलंका में तमिळ साहित्य का विकास
3 नवंबर 2024, चेन्नई, तमिलनाडु

मलयाळम् में तुलनात्मक साहित्य का परिप्रेक्ष्य
5 नवंबर 2024, तिरुवनंतपुरम, केरल

स्वर्गीय सर्वानंद कौल प्रेमी की 99वीं जयंती
7 नवंबर 2024, बिजबेहारा, जम्मू और कश्मीर

नेपाली में कविता और कहानी-पाठ
12 नवंबर 2024, आभासी मंच

संस्कृत में कविता और कहानी-पाठ
13 नवंबर 2024, आभासी मंच

को. चेन्नबसप्पा का जीवन और साहित्य
15 नवंबर 2024, बेलगावी, कर्नाटक

हिरेम्मल्लूर ईश्वरन के साहित्य का अवलोकन
16 नवंबर 2024, धारवाड़, कर्नाटक

कालिदास की आधुनिक समय में प्रासंगिकता
16 नवंबर 2024, बोध्य, केरल

बाङ्लादेश के प्रख्यात लेखक सफ़िकुन्नबी सामादी के साथ
22 नवंबर 2024, मुंबई

सिंधी कविता और कहानी-पाठ
23 नवंबर 2024, आदिपुर, गुजरात

ओड़िशा के इतिहास में नल राजवंश
24 नवंबर 2024, जयपुर, ओडिशा

उर्दू कविता-पाठ
25 नवंबर 2024, नई दिल्ली

प्रोफ़ेसर सफ़िकुन्नबी सामादी के साथ
25 नवंबर 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

ठाकुर प्रसाद सिंह की जन्म शतवार्षिकी
27 नवंबर 2024, नई दिल्ली

बाङ्ला जीवनी साहित्य
3 दिसंबर 2024, बर्धमान, पश्चिम बंगाल

डोगरी कविता-पाठ
4 दिसंबर 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

गुजराती कविता-पाठ
6 दिसंबर 2024, बोरीवली, मुंबई

पी.एन.के. सायल
7 दिसंबर 2024, घोऊ मानसा, जम्मू

सुकुमार राय
13 दिसंबर 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सिंधी कविता और कहानी-पाठ
13 दिसंबर 2024, मुंबई

गुलाम हसन तस्कीन
15 दिसंबर 2024, हाजिन, जम्मू और कश्मीर

बाङ्ला साहित्य में आदिवासी संस्कृति और हाशिए के लोगों का चित्रण
18 दिसंबर 2024, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

नेपाली लेखकों के साथ
18 दिसंबर 2024, लतपंचर, पश्चिम बंगाल

तमिळ कविता-पाठ
20 दिसंबर 2024, चेन्नई, तमिल नाडु

ओड़िआ साहित्य में ओड़िआ नारीवादी चेतना
21 दिसंबर 2024, संबलपुर, ओड़िशा

नज़रुल और जीबनानंद की 125वीं जयंती पर
24 दिसंबर 2024, राजारहाट, पश्चिम बंगाल

पंजाबी लोक गीत
25 दिसंबर 2024, बठिंडा, पंजाब

आधुनिक तेलुगु कविता में भारतीय कृषि के प्रतिबिंब
27 दिसंबर 2024, नेल्लोर, आंध्र प्रदेश

रायलसीमा साहित्य में बहुजन जीवन के प्रतिबिंब
29 दिसंबर 2024, अनंतपुरा, आंध्र प्रदेश

आरके मैपाक्सना के जीवन और कार्यों पर
4 जनवरी 2025, इंफाल, मणिपुर

गुजराती कविता-पाठ
12 जनवरी 2025, भावनगर, गुजरात

कोंकणी साहित्य में विज्ञान कथा
13 जनवरी 2025, मिरामार, गोवा

ब्रज नारायण चकबस्त पर कविता-पाठ
25 जनवरी 2025, आभासी मंच

प्रवासी साहित्य में नए रुझान
27 जनवरी 2025, देवगिरी, केरल

उर्दू संस्कृत तराजिम पर कविता-पाठ
28 जनवरी 2025, आभासी मंच

हिंदी कविता-पाठ
29 जनवरी 2025, आभासी मंच

मोती लाल केमू
04 फ़रवरी 2025, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

सृजन सम्मिलन के साथ
8 फ़रवरी 2025, गडग, कर्नाटक

सृजन संगम के साथ
9 फ़रवरी 2025, सिरसी, कर्नाटक

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर
21 फ़रवरी 2025, बेंगळूरु, कर्नाटक

संताली कविता और कहानी-पाठ पर
21 फ़रवरी 2025, भुवनेश्वर, ओड़िशा

पंजे मंगेशराय – 150 के साथ
22 फ़रवरी 2025, बल्लारी, कर्नाटक

बादल सरकार पर
25 फ़रवरी 2025, बीरभूम, पश्चिम बंगाल

बाङ्ला कहानी-पाठ
28 फ़रवरी 2025, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल

असम के मणिपुरी साहित्य का संशोधन
28 फ़रवरी 2025, सिलचर, असम

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर
8 मार्च 2025, बेंगळूरु, कर्नाटक

साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर
12 मार्च 2025, बेंगळूरु, कर्नाटक

विश्व कविता दिवस के अवसर पर कविता-पाठ
21 मार्च 2025, आभासी मंच पर

सिंधी कविता और कहानी-पाठ
27 मार्च 2025, भोपाल, मध्य प्रदेश

लोक : विविध स्वर

बोडो लोक संगीत प्रदर्शन
29 अक्तूबर 2024, कोकराझार, असम

व्याख्यान और लावणी के प्रदर्शन के साथ
2 जनवरी 2025, तालिकोटे, कर्नाटक

लेखक से भेंट

प्रख्यात कश्मीरी लेखक बशीर दादा
8 अगस्त 2024, अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर

प्रख्यात उर्दू लेखक सैयद मुहम्मद अशरफ़
29 अगस्त 2024, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

प्रख्यात कन्नड लेखिका मालती पट्टनशेट्टी
29 सितंबर 2024, धारवाड़, कर्नाटक

प्रख्यात कन्नड लेखक के.वी. नारायण
20 अक्तूबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

प्रख्यात हिंदी लेखिका ममता कालिया
22 अक्तूबर 2024, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित सिंधी लेखक श्री खीमन यू. मूलाणी
28 अक्तूबर 2024, भोपाल, मध्य प्रदेश

प्रख्यात संस्कृत लेखक हरेकृष्ण शतपथी

26 नवंबर 2024, पुरी, ओडिशा

प्रख्यात पंजाबी लेखक मनमोहन

18 दिसंबर 2024, अमृतसर, पंजाब

प्रख्यात पंजाबी लेखक कृपाल कज़ाक

23 दिसंबर 2024, अमृतसर, पंजाब

विविध कार्यक्रम

हिंदी लेखकों द्वारा रचना-पाठ

6 अप्रैल 2025, इंदौर, मध्य प्रदेश

स्वच्छता पखवाड़ा

16-30 अप्रैल 2024, चेन्नई, तमिल नाडु

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

21 जून 2024, बेंगळूरु

योग दिवस

21 जून 2024, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

21 जून 2024

अनुवादक सम्मिलन और अभिव्यक्ति

13 जुलाई 2024, बेंगळूरु

एक शाम आलोचक जी. लक्ष्मी नरसैया के साथ

17 अगस्त 2024, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम
(द्रौपदी : द वीमन अनपैरागोंड)

17 अगस्त 2024, भुवनेश्वर, खुर्दा, ओडिशा

राजभाषा पखवाड़ा

17-30 सितंबर 2024, नई दिल्ली

हिंदी पखवाड़ा

17-30 सितंबर 2024, बेंगळूरु

स्वच्छता ही सेवा अभियान

18 सितंबर 2024, चेन्नई, तमिल नाडु

राजभाषा मंच हिंदी ग़ज़ल-पाठ

19 सितंबर 2024, नई दिल्ली

हिंदी दिवस

25 सितंबर 2024, चेन्नई

एक शाम प्रख्यात मराठी आलोचक
डॉ. अक्षय कुमार काले

19 अक्तूबर 2024, नागपुर, महाराष्ट्र

कश्मीरी साहित्य पर द्वि-दिवसीय महिला
लेखिका सम्मेलन

22-23 अक्तूबर 2024, बेमिना, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

हिंदी कहानी-पाठ

25 अक्तूबर 2024, देहरादून

हिंदी कहानी-पाठ

26 अक्तूबर 2024, देहरादून

स्वदेशी लोक कथा-पाठ

26 अक्तूबर 2024, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्यिक परिचर्चा

10 नवंबर 2024, अगरतला, त्रिपुरा

यू.आर. अनंतमूर्ति के लेखन, विनिबंध पर व्याख्यान तथा वृत्तचित्र प्रदर्शन

16 नवंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

एक शाम आलोचक मोहम्मद यूसुफ तिंग के साथ

20 नवंबर 2024, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

संताली कहानी-पाठ

18 नवंबर 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान बहुभाषी कहानी-पाठ

6 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान गीतों की एक शाम

7 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान हिंदी ग़ज़लों की एक शाम

8 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान एकता में विविधता पर माध्यम के रूप में अनुवाद विषय पर चर्चा

9 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान बहुभाषी कविता-पाठ

9 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री, श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा प्रेम शंकर त्रिपाठी द्वारा संपादित विष्णुकांत शास्त्री रचना संचयन का पुस्तक लोकार्पण समारोह

10 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

प्रधान मंत्री के निवास पर पुस्तक विमोचन समारोह, जहाँ भारत के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा सिनी विश्वनाथन द्वारा संपादित काला वारिसयिल भारती पदईप्पुगल (भारतीयर के 23 खंडों में संपूर्ण एकत्रित कार्य) के अंतिम 5 खंडों का विमोचन किया गया।

11 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान वर्तमान परिदृश्य में बाल साहित्य विषय पर कार्यक्रम

11 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान अशोक तिवारी और नासिरा शर्मा के साथ लेखकों के संवाद

11 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान ओम निश्चल और अशोक चक्रधर के साथ लेखकों के संवाद

12 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान कहानी-पाठ
13 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

एक शाम गुजराती आलोचक शिरीष पंचाल के साथ
13 दिसंबर 2024, वडोदरा, गुजरात

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान हिंदी कविता-पाठ
14 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

एक शाम आलोचक येटुकुरी प्रसाद के साथ
1 फ़रवरी 2025, हैदराबाद, तेलंगाना

विश्व पुस्तक मेला 2025 में पुस्तक विमोचन कार्यक्रम (रामानुजन)
3 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेला 2025 में पुस्तक विमोचन कार्यक्रम (रॉबर्ट बर्न्स 20 कालजयी कविताएँ)
6 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

मीरा महोत्सव
21-22 फ़रवरी 2025, उदयपुर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस
12 मार्च 2025, चेन्नई, तमिल नाडु

विश्व कविता दिवस के अवसर पर बहुभाषी कविता-पाठ
21 मार्च 2025, नई दिल्ली

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के बच्चों के लिए कहानी सुनाने का कार्यक्रम
22 मार्च 2025, नई दिल्ली

क्षितिज के पार : अखिल भारतीय लेखक उत्सव पर द्वि-दिवसीय साहित्य महोत्सव
27-28 मार्च 2025, श्री विजयपुरम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

मुलाक़ात

ओड़िआ लेखकों के साथ
21 जून 2024, भुवनेश्वर, ओडिशा

बाङ्ला लेखकों के साथ
29 जून 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

संताली लेखकों के साथ
11 अगस्त 2024, मुकुटमणिपुर, पश्चिम बंगाल

बोडो लेखकों के साथ
29 अक्तूबर 2024, कोकराझार, असम

बहुभाषी कवि/लेखक सम्मिलन

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
14 नवंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

बहुभाषी कवि सम्मिलन
25 जनवरी 2025, अगरतला, त्रिपुरा

दक्षिण भारतीय कहानी लेखक सम्मिलन
3 फ़रवरी 2025, कटानकुलथुर, तमिल नाडु

बहुभाषी महिला कवि सम्मिलन
8 फ़रवरी 2025, क'क्राझार, असम

बहुभाषी कवि सम्मिलन
11 मार्च 2025, गोलाघाट, असम

विश्व कविता दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 मार्च 2025, बेंगळूरु, कर्नाटक

नारी चेतना

मणिपुरी लेखिकाओं के साथ
4 अगस्त 2024, इंफाल, मणिपुर

नेपाली लेखिकाओं के साथ
23 अगस्त 2024, कृष्णानगर, पश्चिम बंगाल

हिंदी लेखिकाओं के साथ
15 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

संस्कृत काव्य और कहानी-पाठ के साथ
22 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

बोडो लेखिकाओं के साथ
29 अक्तूबर 2024, कोकराझार, असम

कन्नड साहित्य में नारी पहचान विषय पर
25 नवंबर 2024, कर्नाटक

कोंकणी लेखिकाओं के साथ
30 नवंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

तमिळ लेखिकाओं के साथ
11 दिसंबर 2024, कोयंबटूर, तमिल नाडु

बोडो लेखिकाओं के साथ
16 दिसंबर 2024, कोकराझार, असम

गुजराती कविता-पाठ के साथ
18 जनवरी 2025, विले पार्ले, मुंबई

सिंधी कविता और कहानी-पाठ
24 जनवरी 2025, मुंबई, महाराष्ट्र

विश्व पुस्तक मेला 2025 में हिंदी महिला लेखिकाओं के साथ
4 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

संताली लेखिकाओं के साथ
9 फ़रवरी 2025, पश्चिम मिदनापुर, पश्चिम बंगाल

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर
7 मार्च 2025, चेन्नई, तमिल नाडु

बोडो लेखिकाओं के साथ
8 मार्च 2025, चिरांग, असम

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बहुभाषी रचना-पाठ
8 मार्च 2025, मुंबई, महाराष्ट्र

परिचर्चा

लोगों पर पुस्तकों का प्रभाव

19 नवंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

व्यक्ति और कृति

रविकांतगौड़ा के साथ

29 सितंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

गौतम भद्र के साथ

18 नवंबर 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बिग्राइ ब्रह्म के साथ

16 दिसंबर 2024, कोकराझार, असम

गौतम घोष के साथ

28 फ़रवरी 2025, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कवि सम्मिलन

म'ग कवि सम्मिलन

26 मई 2024, अगरतला, त्रिपुरा

हालाम कवि सम्मिलन

16 जुलाई 2024, अगरतला, त्रिपुरा

नेपाली कवि सम्मिलन

23 अगस्त 2024, कृष्णानगर, पश्चिम बंगाल

नेपाली कवि सम्मिलन

15 सितंबर 2024, गढ़ीखाना, पश्चिम बंगाल

दक्षिणी और पश्चिमी कवि सम्मिलन

3 जनवरी 2025, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

हिंदी कवि सम्मिलन

10 फ़रवरी 2025, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रवासी मंच

श्री सत्य पट्टनायक के साथ

21 जून 2024, भुवनेश्वर, ओडिशा

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर लेखक सम्मिलन

10 जनवरी 2025, नई दिल्ली

संवाद

डॉ. चंद्रशेखर कंबार के साथ

8 दिसंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

श्रीमती अजीत कौर के साथ

18 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

संगोष्ठी - जन्म शतवार्षिकी

हिंदी लेखक रामदरश मिश्र पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

10 जुलाई 2024, नई दिल्ली

निस्सिम एजेकियल और भारत में अंग्रेज़ी कविता पर उनका प्रभाव विषय पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

1-2 अगस्त 2024, नई दिल्ली

हिंदी लेखक नंद चतुर्वेदी पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

3 अगस्त 2024, उदयपुर, राजस्थान

हिंदी लेखक हरि शंकर परसाई पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

10 अगस्त 2024, रायपुर, छत्तीसगढ़

बेल्लमकोंडा रामदास पर शतवार्षिकी संगोष्ठी

25 अगस्त 2024, नरसरावपेट, आंध्र प्रदेश

हिंदी नाटककार वीरेंद्र नारायण पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

30 अगस्त 2024, नई दिल्ली

अटल बिहारी वाजपेयी पर शतवार्षिकी संगोष्ठी

20-21 सितंबर 2024, भोपाल

रामकृष्ण झा किसुन, प्रबोध नारायण तथा अणिमा सिंह पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 सितंबर 2024, सहरसा, बिहार

नरेश गुह पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

24 सितंबर 2024, जादवपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

तोप्पिल भासी पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

19-20 अक्तूबर 2024, करुनागापल्ली, केरल

अवंतसा सोमसुंदर पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

26 अक्तूबर 2024, काकीनाडा, आंध्र प्रदेश

हिंदी कहानी लेखिका शिवानी पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

8 नवंबर 2024, रामगढ़, उत्तराखंड

पम्मल संबंध मुदलियार पर शतवार्षिकी संगोष्ठी

8 नवंबर 2024, तंजावुर, तमिल नाडु

कलिपटनम रामाराव पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

9 नवंबर 2024, विशाखापत्तनम, आंध्र प्रदेश

समरेश बसु पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

17 नवंबर 2024, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

पी. भास्करन पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 नवंबर 2024, तिरुवनंतपुरम, केरल

सोहिंदर सिंह वंजारा बेदी पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

13-14 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

हिंदी कहानी लेखिका कृष्णा सोबती पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

19-20 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

शांतरासा के जीवन और साहित्य पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

28 जनवरी 2025, हम्पी, कर्नाटक

हिंदी कहानी लेखक मोहन राकेश पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

11 मार्च 2025, नई दिल्ली

संगोष्ठी

हिंदी लेखक विजयदेव नारायण साही पर संगोष्ठी
14 अप्रैल 2024, झांसी, उत्तर प्रदेश

कालिदास के साहित्य में वैज्ञानिक, सौंदर्य और साहित्यिक भव्यता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
18-19 जुलाई 2024, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

उदयानाचार्य, सुरेंद्र झा सुमन, आरसी प्रसाद सिंह और मार्कंडेय प्रवासी पर संगोष्ठी
27-28 जुलाई 2024, रोसेरा, बिहार

राजस्थानी में नई कविता विषय पर संगोष्ठी
20-21 जुलाई 2024, जोधपुर, राजस्थान

गुलाम नबी गौहर के जीवन और कार्यों पर संगोष्ठी
22 जुलाई 2024, बडगाम, कश्मीर

नेपाली साहित्य सम्मेलन के शतवार्षिकी समारोह के अवसर पर संगोष्ठी
31 अगस्त-1 सितंबर 2024, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल

स्कंद पुराण में पुरुषोत्तम श्री जगन्नाथ पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
26-27 नवंबर 2024, पुरी, ओडिशा

कुमारगुरुपरार पर संगोष्ठी
20-21 दिसंबर 2024, मदुरै, तमिल नाडु

साहित्य और दर्शन अंतर-संवाद पर संगोष्ठी
21-22 दिसंबर 2024, चंडीगढ़

भारतीय बाल साहित्य : इतिहास और भाषा विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
23 दिसंबर 2024, गाँधीनगर, गुजरात

भारतीय नेपाली साहित्य की वर्तमान स्थिति विषय पर संगोष्ठी
24 जनवरी 2025, गोरुबथन, ज़िला कलिम्पोंग, पश्चिम बंगाल

गुजराती उपन्यास और कहानी में स्थानिक परिवेश विषय पर संगोष्ठी
17-18 फ़रवरी 2025, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात

कोंकणी साहित्य में मेरा देश और विदेशी भूमि विषय पर संगोष्ठी
22-23 फ़रवरी 2025, परवरी, गोवा

एम.टी. वासुदेवन नायर के स्वर्णिम युग : भारतीय कथा साहित्य में परिवर्तन विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
1 मार्च 2025, तिरूर, केरल

हिंदी भाषा के विकास में अवधी, भोजपुरी, ब्रज भाषा और बुंदेली की भूमिका विषय पर संगोष्ठी
20-21 मार्च 2025, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

भारतीय दार्शनिक परंपराओं में अक्षर-पुरुषोत्तम दर्शन और इसकी प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
23-24 मार्च 2025, अहमदाबाद और सारंगपुर, गुजरात

जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

हिंदी लेखक अमृत राय पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

13 अप्रैल 2024, झाँसी, उत्तर प्रदेश

प्रभजोत कौर और नरिंदरपाल सिंह पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

14-15 अक्तूबर 2024, दिल्ली

गुरु नित्य चैतन्य यति पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

22 नवंबर 2024, तिरुवनंतपुरम, केरल

परप्पुरथ पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

2 दिसंबर 2024, कुरुविलांगड़, केरल

विद्वान पी. केलु नायर पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

3 दिसंबर 2024, कासरगोड, केरल

जगती एन.के. आचार्य पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

11 दिसंबर 2024, कोल्लम, केरल

सुराणी उत्तमचंदाणी पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

13 दिसंबर 2024, मुंबई

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

29 दिसंबर 2024, जोधपुर, राजस्थान

मनोहरलाल सरदेसाई पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

14 दिसंबर 2024, सांकुलिम, गोवा

माइकल मधुसूदन दत्त पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

16 दिसंबर 2024, बारासात, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल

इंदुचूडन (के.के. नीलकांतन) पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

18 जनवरी 2025, मावेलिकरा, केरल

तिरुनाल्लूर करुनाकरन पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

27 जनवरी 2025, कोल्लम, केरल

सेबेस्टियन कप्पेन पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

4 फ़रवरी 2025, तिरुवनंतपुरम, केरल

परिसंवाद

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर पुस्तक के मूल्य विषय पर परिसंवाद

23 अप्रैल 2024, नई दिल्ली

1980 से 2020 तक डोगरी मुक्त छंद कविता की प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद

10 जून 2024, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

उर्दू तंज़ ओ मज़ाह और मुशायरा (कॉमेडी और व्यंग्य पर) विषय पर परिसंवाद

26 जून 2024, भोपाल, मध्य प्रदेश

21वीं सदी की कश्मीरी कविता विषय पर परिसंवाद

8 जुलाई 2024, गांदरबल, जम्मू-कश्मीर

विगत एक दशक में कोंकणी कविता की नई प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद
31 जुलाई 2024, नावेलीम, गोवा

रवींद्र केळेकार : जीवन और कार्य पर परिसंवाद
1 अगस्त 2024, मडगाँव, गोवा

मीडिया और साहित्य विषय पर परिसंवाद
3 अगस्त 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता की अवधारणा विषय पर परिसंवाद
15 अगस्त 2024, नई दिल्ली

शांता शेलके : व्यक्तित्व और साहित्य विषय पर परिसंवाद
17 अगस्त 2024, मुंबई

शाम जयसिंघाणी और रीटा शहाणी का सिंधी साहित्य में योगदान विषय पर परिसंवाद
23 अगस्त 2024, मुंबई

गुजराती आदिवासी साहित्य विषय पर परिसंवाद
9 सितंबर 2024, वडाली, गुजरात

उर्दू अदीब पर परिसंवाद (शेरी नशिस्त) तथा साहित्य मंच कार्यक्रम
19 सितंबर 2024, चेन्नई

गंगाधर गाडगिल : व्यक्तित्व और साहित्य पर परिसंवाद
21 सितंबर 2024, मुंबई

तेलुगु साहित्य में पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य विषय पर परिसंवाद
21 सितंबर 2024, तेलंगाना

सदानंद रेगे : व्यक्ति और साहित्य विषय पर परिसंवाद
22 सितंबर 2024, मुंबई

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ विषय पर परिसंवाद
25 सितंबर 2024, नई दिल्ली

फणीश्वरनाथ रेणु और मैथिली विषय पर परिसंवाद
29 सितंबर 2024, मधेपुरा, बिहार

मीडिया और डोगरी साहित्य विषय पर परिसंवाद
15 अक्तूबर 2024, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

कोंकणी की कालजयी कृतियाँ विषय पर परिसंवाद
20 अक्तूबर 2024, मैंगलोर, कर्नाटक

राजस्थानी साहित्य और अनुवाद विषय पर परिसंवाद
26 अक्तूबर 2024, बीकानेर, राजस्थान

मलयाळम् साहित्य में पर्यावरण और पी. कुन्हीरामन नायर विषय पर परिसंवाद
26 अक्तूबर 2024, कान्हंगड़, केरल

मध्ययुगीन राजस्थानी गद्य परंपरा विषय पर परिसंवाद
27 अक्तूबर 2024, बीकानेर, राजस्थान

इको-कथा : अर्थव्यवस्था, संस्कृति और पर्यावरण के अंतर्संबंधों की खोज विषय पर परिसंवाद

30 अक्तूबर 2024, त्रिवेंद्रम

शैव काव्य परंपरा विषय पर परिसंवाद

8 नवंबर 2024, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

गुजराती साहित्य और पर्यावरण विषय पर परिसंवाद

16 नवंबर 2024, कलागुर्जरी, मुंबई

राजस्थानी निबंध परंपरा विषय पर परिसंवाद

23 नवंबर 2024, श्रीगंगानगर, राजस्थान

पोपाती हिरानंदाणी पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

23 नवंबर 2024, आदिपुर, गुजरात

राजस्थानी बाल साहित्य विषय पर परिसंवाद

24 नवंबर 2024, श्रीगंगानगर, राजस्थान

20वीं सदी के कन्नड साहित्य : दर्शन और उपलब्धियाँ विषय पर परिसंवाद

26 नवंबर 2024, बेंगळूरु, कर्नाटक

दक्षिण भारतीय साहित्य में भक्ति आंदोलन विषय पर परिसंवाद

5 दिसंबर 2024, कोच्चि, केरल

20वीं सदी के चलन स्थापित करने वाले तमिळ उपन्यास विषय पर परिसंवाद

06 दिसंबर 2024, शिवकासी, तमिल नाडु

संस्कृत परंपरा में संस्कृत कवयित्रियों और महिला शिक्षाविदों : प्राचीन और आधुनिक विषय पर परिसंवाद

11 दिसंबर 2024, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल

मलयाळम् कथा साहित्य और पौराणिक कथाओं (मलयाळम् कहानियों में नए रुझान) विषय पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2024, कोझिकोड, केरल

तेलुगु साहित्य पर वैश्वीकरण के प्रभाव विषय पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2024, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

उर्दू में लोक अदब विषय पर परिसंवाद

14 दिसंबर 2024, कर्नाटक

पद्मा सचदेव पर परिसंवाद

17 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

गुलाम मुहम्मद शाद पर परिसंवाद

15 दिसंबर 2024, पाज़लपोरा, अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर

अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन में बहुसांस्कृतिक अध्ययन : एक समीक्षा विषय पर परिसंवाद

24 दिसंबर 2024, आभासी मंच

मराठीतील वाङ्मयीन आणि वैचारिक नियतकालिके विषय पर परिसंवाद

28 दिसंबर 2024, नागपुर, महाराष्ट्र

मीरा : जीवन और रचना विषय पर परिसंवाद
30 दिसंबर 2024, मेड़तासिटी, नागौर, राजस्थान

दिवकरला वेंकटावधनी के जीवन और कार्यों पर परिसंवाद
31 दिसंबर 2024, हैदराबाद, तेलंगाना

पी. के. मुथुसामी पर परिसंवाद
8 जनवरी 2025, सेलम, तमिल नाडु

मैथिली साहित्य में जॉर्ज ग्रियर्सन के योगदान विषय पर परिसंवाद
7 जनवरी 2025, पटना, बिहार

वसंत कानेटकर : व्यक्तित्व और साहित्य विषय पर परिसंवाद
10 जनवरी 2025, नासिक, महाराष्ट्र

मीर गुलाम रसूल नाज़की पर परिसंवाद
12 जनवरी 2025, हाजिन बांदीपोरा, जम्मू और कश्मीर

आज की भारतीय कविता विषय पर परिसंवाद
18 जनवरी 2025, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अर्जन साद का व्यक्तित्व और कृतित्व विषय पर परिसंवाद
24 जनवरी 2025, मुंबई, महाराष्ट्र

तेलुगु नाटक और नारीवाद विषय पर परिसंवाद
26 जनवरी 2025, एडलापाडु, आंध्र प्रदेश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्य विषय पर परिसंवाद
28 जनवरी 2025, नई दिल्ली

कन्नड में ग़ज़ल विषय पर परिसंवाद
29 जनवरी 2025, रायचूर, कर्नाटक

गुजराती साहित्य : लोरी और विवाह गीत विषय पर परिसंवाद
1 फ़रवरी 2025, पोरबंदर, गुजरात

ओंकार नाथ कौल पर परिसंवाद
3 फ़रवरी 2025, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

भाषा, स्थान और पहचान : अनुवाद में पाठ और संदर्भ विषय पर परिसंवाद
6 फ़रवरी 2025, बेंगळूरु

साहित्य में परिवेश की भूमिका विषय पर परिसंवाद
6 फ़रवरी 2025, खांडोला, गोवा

तेम्सुला आओ तथा उत्तर पूर्व विषय पर परिसंवाद
10 फ़रवरी 2025, आभासी मंच

मलयाळम् कविता की नई प्रवृत्तियाँ विषय पर परिसंवाद
16 फ़रवरी 2025, पोन्नानी, केरल

तेलुगु में शिकार की कहानियों (वेता कथलु) पर परिसंवाद
23 फ़रवरी 2025, यनम, पुदुचेरी यू.टी.

यात्रा, प्रतिस्थापन और अनुवाद विषय पर परिसंवाद
3 मार्च 2025, नई दिल्ली

ज्ञानक्कूथन की कविता विषय पर परिसंवाद
18 मार्च 2025, चेन्नई, तमिल नाडु

मेरे झरोखे से

मीरचंदाणी पर गोवर्धन शर्मा
18 मई 2024, पुणे, महाराष्ट्र

मायानंद मिश्र पर महेंद्र
31 मई 2024

मोहन लाल सपोलिया पर ज्ञान सिंह
7 जून 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

नागेश करमली पर अरविंद भाटीकार
8 जून 2024, पट्टो, गोवा

हरभजन सिंह पर मंजीत सिंह
5 अगस्त 2024, आभासी मंच

देवेंद्र सत्यार्थी पर सतीश कुमार वर्मा
12 सितंबर 2024, आभासी मंच

एम.के. जेटली पर हीरो ठकुर
27 सितंबर 2024, दिल्ली

एडविन जे. एफ. डिसूजा पर किशू बरकुर
12 अक्तूबर 2024, मैंगलोर, कर्नाटक

नालेस्वरम शंकरम
13 अक्तूबर 2024, हैदराबाद

रमानाथ झा पर तारानंद वियोगी
12 नवंबर 2024, आभासी मंच

कात्यायनी विद्महे के साथ
28 नवंबर 2024, कडपा, आंध्र प्रदेश

दरिया पर परवीन कुमार
4 दिसंबर 2024, आभासी मंच

मनोज मित्र पर शेखर समद्दार
28 फ़रवरी 2025, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

विनोद भट्ट पर रतिलाल बोरिसागर
30 मार्च 2025, गांधीनगर, गुजरात

अनुवाद कार्यशाला

हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद कार्यशाला
10-12 जुलाई 2024, नई दिल्ली

कहानी अनुवाद कार्यशाला
02-03 अगस्त 2024, गोवा

कोंकणी-हिंदी अनुवाद कार्यशाला
21-23 मार्च 2025, गोवा

लेखक सम्मिलन

उत्तरी क्षेत्रीय मंडल के अंतर्गत युवा लेखक सम्मिलन
8 जुलाई 2024, भोपाल

बाङ्ला लेखक सम्मिलन
25 सितंबर 2024, आभासी मंच

पुस्तकायन पुस्तक मेले के दौरान आदिवासी लेखक सम्मिलन
7 दिसंबर 2024, नई दिल्ली

पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल के अंतर्गत पश्चिमी क्षेत्र युवा लेखक सम्मिलन
22 दिसंबर 2024, गाँधीनगर, गुजरात

युवा साहिती

बहुभाषी-पाठ
16 मई 2024, नई दिल्ली

बोडो लेखकों के साथ
17 जून 2024, उदालगुड़ी, असम

मराठी युवा लेखकों के साथ
28 जून 2024, मुंबई

संताली लेखकों के साथ
9 अगस्त 2024, सालबानी, पश्चिम बंगाल

युवा पंजाबी कवियों के साथ
16 अगस्त 2024, आभासी मंच

युवा डोगरी कवियों के साथ
21 अगस्त 2024, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

बाङ्ला लेखकों के साथ
24 अगस्त 2024, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

उर्दू कविता-पाठ के साथ
27 अगस्त 2024, आभासी मंच

राजस्थानी में युवा लेखक उत्सव
7-8 सितंबर 2024, उदयपुर, राजस्थान

नेपाली कविता और कहानी-पाठ
4 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

युवा पंजाबी कवियों के साथ
06 अक्तूबर 2024, मोगा, पंजाब

संस्कृत कविता और कहानी-पाठ के साथ
8 अक्तूबर 2024, आभासी मंच

युवा पंजाबी लेखकों के साथ
24 नवंबर 2024, बठिंडा, पंजाब

युवा पंजाबी कवियों के साथ
9 दिसंबर 2024, चंडीगढ़, पंजाब

युवा पंजाबी कवियों के साथ
18 दिसंबर 2024, अमृतसर, पंजाब

कोंकणी कविता-पाठ के साथ
12 जनवरी 2025, उडुपी, कर्नाटक

विश्व पुस्तक मेला 2025 में बहुभाषी-पाठ
8 फ़रवरी 2025, नई दिल्ली

वर्ष 2024-2025 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद, वित्त समिति, क्षेत्रीय मंडलों और भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल

दिनांक	स्थान
15 जून 2024	गुजरात
18 दिसंबर 2024	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
7 मार्च 2025	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य परिषद

दिनांक	स्थान
15 जून 2024	गुजरात
8 मार्च 2025	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

वित्त समिति

दिनांक	स्थान
12 जून 2024	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
27 फ़रवरी 2025	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	दिनांक	स्थान
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	7 दिसंबर 2024	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	12 दिसंबर 2024	क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई
उत्तरी क्षेत्रीय मंडल	17 दिसंबर 2024	प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	05 दिसंबर 2024	कोच्चि

भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

मंडल	दिनांक	स्थान
असमिया	15 फ़रवरी 2025	गुवाहाटी
बाङ्ला	4 मार्च 2025	कोलकाता
बोडो	16 फ़रवरी 2025	गुवाहाटी
डोगरी	21 फ़रवरी 2025	जम्मू
अंग्रेज़ी	12 फ़रवरी 2025	नई दिल्ली
गुजराती	19 फ़रवरी 2025	अहमदाबाद
हिंदी	6 मार्च 2025	नई दिल्ली
कन्नड	3 अगस्त 2025	बेंगळूरु
कश्मीरी	12 फ़रवरी 2025	नई दिल्ली
कोंकणी	23 फ़रवरी 2025	गोवा
मैथिली	7 फ़रवरी 2025	नई दिल्ली
मलयाळम्	28 फ़रवरी 2025	कोच्चि
मणिपुरी	16 फ़रवरी 2025	गुवाहाटी
मराठी	14 फ़रवरी 2025	मुंबई
नेपाली	31 जनवरी 2025	नई दिल्ली
ओड़िआ	25 फ़रवरी 2025	भुवनेश्वर
पंजाबी	13 फ़रवरी 2025	नई दिल्ली
राजस्थानी	5 मार्च 2025	नई दिल्ली
संस्कृत	31 जनवरी 2025	नई दिल्ली
संताली	25 जनवरी 2025	भुवनेश्वर
सिंधी	14 फ़रवरी 2025	मुंबई
तमिळ	3 फ़रवरी 2025	चेन्नै
तेलुगु	5 फ़रवरी 2025	हैदराबाद
उर्दू	13 फ़रवरी 2025	नई दिल्ली

अन्य मंडलों की बैठकें

मंडल	दिनांक	स्थान
साहित्य अकादेमी की फ़िल्म अभिलेखागार समिति	19 नवंबर 2024	नई दिल्ली
वाचिक साहित्य के लिए उत्तर पूर्व केंद्र	2024-25 में कोई बैठक आयोजित नहीं	
अनुवाद केंद्र के लिए परामर्श समिति	8 दिसंबर 2024	बेंगळूरु
वाचिक और आदिवासी साहित्य केंद्र	2024-25 में कोई बैठक आयोजित नहीं	
भाषा विकास मंडल	2024-25 में कोई बैठक आयोजित नहीं	

वर्ष 2024-2025 में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनियाँ/पुस्तक मेले

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	दिल्ली पुस्तक मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली	7-11 अगस्त 2024
2.	पानीपत पुस्तक मेला	16-23 अगस्त 2024
3.	चिनार पुस्तक महोत्सव	17-25 अगस्त 2024
4.	पुस्तक प्रदर्शनी, एन.के. बागड़ोदिया पब्लिक स्कूल, द्वारका सेक्टर–4	31 अगस्त 2024
5.	पुस्तक प्रदर्शनी, एन.एच.पी.सी. – फरीदाबाद	16 सितंबर 2024
6.	फरीदकोट पुस्तक प्रदर्शनी	19-23 सितंबर 2024
7.	पुस्तक प्रदर्शनी, डी.जी., एच.आर.डी., त्रिकोन बिल्डिंग, साकेत, नई दिल्ली	20 सितंबर 2024
8.	पुस्तक प्रदर्शनी, सी.जी.एस.टी., सेक्टर-48, नोएडा	24 सितंबर 2024
9.	पुस्तक प्रदर्शनी, आई.आई.सी., दिल्ली	4 अक्तूबर 2024
10.	पुस्तक प्रदर्शनी, दयाल सिंह कॉलेज	9 अक्तूबर 2024
11.	पंचकूला पुस्तक प्रदर्शनी	4-10 नवंबर 2024
12.	लखनऊ पुस्तक प्रदर्शनी	14-15 नवंबर 2024
13.	बोडोलैंड महोत्सव पुस्तक प्रदर्शनी, इंदिरा गाँधी स्टेडियम, राजघाट, नई दिल्ली	15-16 नवंबर 2024
14.	पुस्तक प्रदर्शनी, आई.सी.सी.आर., जे.एन.यू., नई दिल्ली	20 नवंबर 2024
15.	साहित्य आजतक पुस्तक प्रदर्शनी, मेजर ध्यान चंद नेशनल स्टेडियम, नई दिल्ली	22-24 नवंबर 2024
16.	ओड़िशा पर्व पुस्तक प्रदर्शनी, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली	22-24 नवंबर 2024

17.	पटना पुस्तक मेला	6-14 दिसंबर 2024
18.	साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित "पुस्तकायन", रवींद्र भवन, नई दिल्ली	6-15 दिसंबर 2024
19.	जश्न-ए-रेख़्ता उत्सव, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली	13-15 दिसंबर 2024
20.	ग़ालिब इंस्टीट्यूट पुस्तक प्रदर्शनी	20-22 दिसंबर 2024
21.	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी	30 जनवरी - 16 फ़रवरी 2025
22.	गोरखपुर महोत्सव, गोरखपुर	10-16 जनवरी 2025
23.	महाकुंभ मेला प्रदर्शनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश	13-26 जनवरी 2025
24.	पुस्तक प्रदर्शनी, महाराष्ट्र सदन, नई दिल्ली	17-19 जनवरी 2025
25.	नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2025, भारतमंडपम, नई दिल्ली	1-9 फ़रवरी 2025
26.	मराठी पुस्तक महोत्सव, तालकटोरा स्टेडियम	21-23 फ़रवरी 2025
27.	पुस्तक प्रदर्शनी, भारती कॉलेज, जनकपुरी	24-25 फ़रवरी 2025
28.	विविधता का अमृत महोत्सव, पुस्तक प्रदर्शनी, राष्ट्रपति भवन	6-9 मार्च 2025
29.	साहित्योत्सव, रवींद्र भवन लॉन, नई दिल्ली	7-12 मार्च 2025
30.	आज़मगढ़ पुस्तक प्रदर्शनी, आज़मगढ़	18-25 मार्च 2025
31.	हिमालयन महोत्सव पुस्तक प्रदर्शनी, देहरादून	21-23 मार्च 2025

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु में अनुवाद पुरस्कार 2023, अनुवादक सम्मिलन तथा अभिव्यक्ति कार्यक्रम के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	12-13 जुलाई 2024
2.	चेलिकानी अन्नाराव सभागारमेंराष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश के सहयोग से "कालिदास साहित्य में वैज्ञानिक, सौंदर्यशास्त्रीय और साहित्यिक वैभव" विषय पर आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	18-19 जुलाई 2024

3	साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु में साहित्य और मीडिया पर आयोजित परिसंवाद के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	03 अगस्त 2024
4	मैसूर दशहरा कन्नड पुस्तक मेला 2024, मैसूर, कर्नाटक	03-10 अक्तूबर 2024
5	दुर्गा पूजा महोत्सव के अवसर पर असम एसोसिएशन बेंगळूरु द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी, एच.ए.एल. कल्याण मंडप, बेंगळूरु	09-11 अक्तूबर 2024
6	विशाखापट्टनम में कलीपत्तम रामाराव की जन्म शताब्दी संगोष्ठी के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	09 नवंबर2024
7	साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	14-20 नवंबर2024
8	गोखले इंस्टीट्यूट ऑफ़ पब्लिक अफेयर्स, बसवनगुड़ी, बेंगळूरु में पुस्तक विमोचन तथा परिचर्चा कार्यक्रम के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	17 नवंबर 2024
9	क्राइस्ट (मान्यता प्राप्त) विश्वविद्यालय, होसूर रोड, बेंगळूरु में 20वीं सदी के कन्नड साहित्य पर परिसंवाद के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	26 नवंबर 2024
10	एम.ए.एच.ई., मणिपाल, कर्नाटक में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	14-16 दिसंबर 2024
11	37 वाँ हैदराबाद पुस्तक मेला, एन.टी.आर. ग्राउंड्स, हैदराबाद, तेलंगाना	19-29 दिसंबर 2024
12	मांड्या, कर्नाटक में 87 वाँ अखिल भारतीय कन्नड साहित्य सम्मेलन के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	20-22 दिसंबर 2024
13	उस्मानिया विश्वविद्यालय आर्ट्स कॉलेज, हैदराबाद में दिवाकरला वेंकटावधानी – जीवन और कृतियों पर परिसंवाद के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	31 दिसंबर 2024

14	इंदिरा गाँधी म्युनिसिपल स्टेडियम, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में आयोजित 35 वें विजयवाड़ा पुस्तक महोत्सव के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	02-12 जनवरी 2025
15	भारतीय विद्या भवन, तिरुपति केंद्र, तिरुपति, आंध्र प्रदेश में 17 वें तिरुपति पुस्तक महोत्सव के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	01-09 फ़रवरी 2025
16	लोयोला हॉल, सेंट जोसेफ्स कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स (स्वायत्त), ब्रिगेड रोड, बेंगळूरु, कर्नाटक में भाषा, स्थान और पहचान की विमर्श : अनुवाद में पाठ और प्रसंग" विषयक परिसंवाद के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	06 फ़रवरी 2025
17	साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु, कर्नाटक में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आयोजित साहित्य मंच कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	21 फ़रवरी 2025
18	थुन्चन परम्बू, तिरूर, मलप्पुरम ज़िला, केरल में थुन्चन महोत्सव 2025 के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	27 फ़रवरी – 03 मार्च 2025
19	विधान सौध, बेंगळूरु, कर्नाटक में कर्नाटक राज्य विधान सभा सचिवालय द्वारा आयोजित पुस्तक मेला 2025 के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	27 फ़रवरी – 03 मार्च 2025
20	साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा कर्नाटक में साहित्य मंच कार्यक्रम के दौरान आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	08 मार्च 2025
21	साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा कर्नाटक में साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	12 मार्च 2025

22	डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय पुस्तकालय, ज्ञान भारती परिसर, बेंगळूरु द्वारा आयोजित द्वि-दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी	19-20 मार्च 2025
23	साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा कर्नाटक में विश्व कविता दिवस के अवसर पर आयोजित बहुभाषी कवि सम्मिलन के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	21 मार्च 2025

उप-कार्यालय, चेन्नै

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	नेयवेली पुस्तक मेला, नेयवेली	5-14 जुलाई 2024
2.	कोयंबटूर पुस्तक मेला, कोयंबटूर	19-28 जुलाई 2024
3.	तंजावुर पुस्तक मेला, तंजावुर	19-29 जुलाई 2024
4.	इरोड पुस्तक मेला, इरोड	02-13 अगस्त 2024
5.	नागपट्टिनम पुस्तक मेला, नागपट्टिनम	16-26 अगस्त 2024
6.	मदुरै पुस्तक मेला, मदुरै	06-17 सितंबर 2024
7.	त्रिची पुस्तक मेला, त्रिची	27 सितंबर – 06 अक्तूबर 2024
8.	भारतीय विद्या भवन, मायलापुर, चेन्नई में "श्रीलंका में तमिल साहित्य का विकास" विषय पर आयोजित साहित्य मंच कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	03 नवंबर 2024
9.	कोच्चि पुस्तक मेला, कोचीन	29 नवंबर – 08 दिसंबर 2024
10.	सलेम पुस्तक मेला, सलेम	29 नवंबर – 09 दिसंबर 2024
11.	मदुरै मेंकुमारगुरुपरार की 400वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	20-21 दिसंबर 2024
12.	चेन्नई में साहित्य मंच : "नई कविता की भाषा" के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	20 दिसंबर 2024

13.	चेन्नई पुस्तक मेला, चेन्नई	27 दिसंबर 2024 – 12 जनवरी 2025
14.	केरल विधानसभा पुस्तक मेला, तिरुवनंतपुरम	7–13 जनवरी 2025
15.	तिरुप्पुर पुस्तक मेला, तिरुप्पुर	23 जनवरी 2025 – 02 फ़रवरी 2025
16.	गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, पेरुम्बक्कम, चेन्नई में "नारी चेतना" कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	07 मार्च 2025
17.	डी.आर.बी.सी.सी.सी. हिंदू कॉलेज, पट्टाबिराम, चेन्नई में "नारी चेतना" कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	07 मार्च 2025
18.	भारतीय विद्या भवन, मायलापुर, चेन्नई में साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	12 मार्च 2025
19.	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई में "ज्ञान कूथन की कविता" पर आयोजित परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	18 मार्च 2025

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	10 मई 2024
2.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	29 मई 2024
3.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की जन्म शताब्दी पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	27-28 जुलाई 2024
4.	दार्जीलिङ में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	31 अगस्त – 01 सितंबर 2024
5.	जादवपुर विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	22 सितंबर 2024
6.	जादवपुर विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	30 सितंबर 2024

7.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	18 नवंबर 2024
8.	कालिम्पोंग पुस्तक मेला	17-21 नवंबर 2024
9.	दार्जीलिङ में पुस्तक प्रदर्शनी	23-27 नवंबर 2024
10.	ओड़िशा पुस्तक महोत्सव 2024	06-17 दिसंबर 2024
11.	भाषा मेला, आई.एल.एस.आर., कोलकाता	19-20 दिसंबर 2024
12.	दमदम पुस्तक मेला 2024	20-29 दिसंबर 2024
13.	असम पुस्तक मेला 2024-2025	27 दिसंबर 2024 – 07 जनवरी 2025
14.	अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला 2025	28 जनवरी – 09 फ़रवरी 2025
15.	आई.सी.सी.आर. में आई.एस.सी.एस. कोलकाता द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	27-28 फ़रवरी – 01 मार्च 2025
16.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	28 फ़रवरी 2025

क्र.सं.	**एनईसीओएल, अगरतला**	**तिथि**
1	अगरतला पुस्तक मेला 2025	02 – 14 जनवरी 2025

क्र.सं.	**भुवनेश्वर बुक स्टोर**	**तिथि**
1.	पुरी में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	26 नवंबर 2024
2.	भुवनेश्वर में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	28 नवंबर 2024
3.	वाणी विहार, बी.बी.एस.आर. में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	12 फ़रवरी 2025
4.	बुद्ध मंदिर, बी.बी.एस.आर. में कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	13 फ़रवरी 2025

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	बालगंधर्व मंदिर, पुणे, महाराष्ट्र में पुस्तक विमोचन समारोह के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	12 अगस्त 2024
2.	के. जे. सोमैया कॉलेज, मुंबई, महाराष्ट्र में 'शांता शेलके : व्यक्तित्व और साहित्य' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	17 अगस्त 2024
3.	एम.एम.के. कॉलेज, मुंबई में 'श्याम जय सिंघाणी एवं रीटा शहाणी का सिंधी साहित्य में योगदान' पर परिसंवाद तथा "अस्मिता" कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	23 अगस्त 2024
4.	मुंबई, महाराष्ट्र में 'गंगाधर गाडगिल : जीवन और साहित्य' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	21 सितंबर 2024
5.	मुंबई, महाराष्ट्र में 'सदानंद रेगे : जीवन और साहित्य' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	22 सितंबर 2024
6.	आई.टी.ओ., पुणे, महाराष्ट्र में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	24-25 सितंबर 2024
7.	नासिक सार्वजनिक वाचनालय, नासिक, महाराष्ट्र में "सरकारी प्रकाशक पुस्तक प्रदर्शनी एवं बिक्री" के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	03-30 सितंबर 2024
8.	विलेपार्ले, महाराष्ट्र में 'गुजराती साहित्य और पर्यावरण' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	16 नवंबर 2024
9.	अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला, अहमदाबाद, गुजरात	30 नवंबर – 08 दिसंबर 2024
10.	मुंबई, महाराष्ट्र में साहित्य मंच तथा 'सुंदरी उत्तमचंदाणी : जीवन और कृतित्व' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	13 दिसंबर 2024
11.	पुणे पुस्तक महोत्सव, पुणे, महाराष्ट्र	14-22 दिसंबर 2024
12.	गाँधीनगर, गुजरात में पश्चिमी क्षेत्र युवा लेखक सम्मिलन तथा 'भारतीय बाल साहित्य : इतिहास और भाषा' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	22-23 दिसंबर 2024
13.	नागपुर, महाराष्ट्र में 'मराठीतिल वाङ्मयीन आणि वैचारिक नियतकालिके' पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	27-28 दिसंबर 2024

14.	ठाणे ग्रंथ महोत्सव – 2024, ठाणे, महाराष्ट्र	30-31 दिसंबर 2024
15.	नाशिक, महाराष्ट्र में 'वसंत कानेटकर : व्यक्तित्व और साहित्य' पर परिसंवाद के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	10 जनवरी 2025
16.	एम.एम.के. कॉलेज, मुंबई में पुस्तक विमोचन समारोह के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	18 जनवरी 2025
17.	मराठी भाषा संवर्धन पंधरवडा, ठाणे, महाराष्ट्र	20-21 जनवरी 2025
18.	विश्व मराठी सम्मेलन – 2025, पुणे, महाराष्ट्र	31 जनवरी – 02 फ़रवरी 2025
19.	ग्रंथ महोत्सव, मुलुंड, महाराष्ट्र	12-13 फ़रवरी 2025
20.	वसई ग्रंथ महोत्सव, वसई, महाराष्ट्र	15-16 फ़रवरी 2025
21.	वल्लभ विद्यानगर, गुजरात में 'गुजराती उपन्यास और कहानी में स्थानीय परिवेश' विषय पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	17-18 फ़रवरी 2025
22.	पोरवोरिम, गोवा में 'मेरे देश और विदेश में कोंकणी साहित्य' पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित	22-23 फ़रवरी 2025
23.	पुस्तक प्रदर्शनी 'अभिजात', शिवाजी पार्क, मुंबई, महाराष्ट्र	27 फ़रवरी – 02 मार्च 2025
24.	गाँधी विचार साहित्य सम्मेलन, पुणे, महाराष्ट्र	07-09 मार्च 2025

1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

असमिया साहित्यर बृतांत महिला साहित्यकार
(संगोष्ठी आलेख)
संपादक : थुनु कलिता
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹170/-
ISBN : 978-93-6183-065-5

गोपपुर
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह *गोपपुरा*)
लेखक : रामचंद्र बेहेरा
अनुवाद : अमृत गोस्वामी
पृष्ठ : 225, मूल्य : ₹300/-
ISBN: 978-93-6183-696-1

शांति-संदेह
(पुरस्कृत नेपाली कविता-संग्रह)
लेखक : जस योंजन 'प्यासी'
अनुवाद : ज्ञान बहादुर क्षेत्री
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹150/
ISBN : 978-93-6183-252-9

कोनवालित अबोद्धा रंगबूर
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *कोहरे में कैद रंग*)
लेखक : गोविंद मिश्र
अनुवाद : मीनाक्षी गोस्वामी ब'र ठाकुर
पृष्ठ : 188, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-93-6183-302-1

ईंटा भाटिर शिल्पी
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
लेखक : गायत्री सराफ
अनुवाद : बर्नाली शर्मा गौड़
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹180/-
ISBN: 978-93-6183-068-6

क'ला पहाड़
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास द *ब्लैक हिल*)
लेखक : ममंग दई
अनुवाद : दिगंत सैकिया
पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹310/-
ISBN : 978-93-6183-321-2

भरतीया गर्भाशय
(पुरस्कृत नेपाली उपन्यास *किराया को कोख*)
लेखक : शंकर देव ढकाल
अनुवाद : पूर्ण कुमार शर्मा
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹140/-
ISBN : 978-93-6183-236-9

बाङ्ला

भावना (पुरस्कृत संताली कहानी-संग्रह *भावना*)
लेखक : जदुमणि बेसरा
अनुवाद : दशरथी माझी
पृष्ठ : 82, मूल्य : ₹120/-
ISBN : 978-93-6183-176-8

भास्वती
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
लेखक : तरुणकांति मिश्र
अनुवाद : चिन्मय बसु
पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹130/-
ISBN : 978-93-6183-346-5

नाना सुर नाना रंग
(पुरस्कृत बोडो कविता-संग्रह *बाईदी देनखव बाईदी गब*)
लेखक : ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म
अनुवाद : विभिन्न
अनुवादकों द्वारा अनुवाद
संपादक : दीपक कुमार रॉय
पृष्ठ : 90, मूल्य : ₹140/-
ISBN : 978-93-6183-815-6

मरियम ऑस्टिन अथबा हीरा बरुआ
(पुरस्कृत असमिया – कहानी-संग्रह)
लेखक : अरूपा पतंगिया कलिता
अनुवाद : बरुण कुमार साहा
पृष्ठ : 204, मूल्य : ₹280/-
ISBN : 978-93-6183-320-5

देव लंगखुई
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
लेखक : रीता चौधरी
अनुवाद : बसब रॉय
पृष्ठ : 372, मूल्य : ₹420/-
ISBN : 978-93-6183-963-4

लल द्यद्य (अंग्रेज़ी – जीवनी)
लेखक : जयलाल कौल
अनुवाद : जयंत घोषाल
पृष्ठ : 136, मूल्य : ₹190/-
ISBN : 978-93-6183-434-9

सजनीकांत दास (बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : अभ्र घोष
पृष्ठ : 90, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-726-5
पुनर्मुद्रण

रामकृष्ण परमहंस (बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : स्वामी लोकेश्वरानंद
अनुवाद : स्वामी लोकेश्वरानंद
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2408-7
(आठवाँ पुनर्मुद्रण)

भील महाभारत
(हिंदी में *भीलों का भारत*–भील समुदाय की महाभारत का जनजातीय रूपांतर)
लेखक : भगवानदास पटेल
अनुवाद : जया मित्रा
पृष्ठ : 196, मूल्य : ₹270/-
ISBN : 978-93-88468-12-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

शिबराम चक्रवर्ती (बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : सुरजीत दासगुप्ता
पृष्ठ : 105, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-5343-8
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

लीला मजुमदार (बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : रुशति सेन
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-89467-79-6
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

शीर्षेन्दु बंद्योपाध्याय
(बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : श्रावनी पाल
पृष्ठ : 148, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4075-9
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

चिंगरी
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *चेम्मीन*)
लेखक : तकषी शिवशंकर पिल्लै
अनुवाद : बोम्मना विश्वनाथम
एवं निलिना अब्राहम
पृष्ठ : 256, मूल्य : ₹330/-
ISBN : 978-81-260-2658-6
(नौवाँ पुनर्मुद्रण)

सैयद मुज्तबा अली
(बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : प्रशांत चक्रवर्ती
पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2914-3
(चौथा पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला कविता संकलन : खंड II
(बाङ्ला कविता संकलन)
संक. एवं संपा. : असित कुमार
बंद्योपाध्याय
पृष्ठ : 390, मूल्य : ₹470/
ISBN : 978-81-260-1763-8
(चौथा पुनर्मुद्रण)

कंगाल हरिनाथ (बाङ्ला विनिबंध)
लेखक : अशोक चट्टोपाध्याय
पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-89778-16-8
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

कैनडीड
(फ्राँसीसी–कालजयी उपन्यास *कैनडीड*)
लेखक : वाल्तेयर
अनुवाद : अरुण मित्र
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹210/
ISBN : 978-81-260-1114-8
(छठाँ पुनर्मुद्रण)

गठनवाद, उत्तर-गठनवाद एवं प्राच्य काव्यतत्व
(पुरस्कृत उर्दू – साहित्यिक आलोचना *साख़्तियात, पस-साख़्तियात और मशरिक़ी शेरियात*)
लेखक : गोपीचंद नारंग
अनुवाद : सोमा बंद्योपाध्याय
पृष्ठ : 464, मूल्य : ₹550/-
ISBN : 978-81-260-4217-3
(चौथा पुनर्मुद्रण)

भगवान बुद्ध
(मराठी – कालजयी जीवनी)
लेखक : धर्मानंद कोसांबी
अनुवाद : चंद्रोदय भट्टाचार्य
पृष्ठ : 256, मूल्य : ₹330/
ISBN : 978-81-260-2504-6
(नौवाँ पुनर्मुद्रण)

संताली गान ओ कविता संकलन
(संताली – गीत एवं कविताएँ)
संकलन, अनुवादक एवं
संपादक : सुहृद कुमार भौमिक
पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹440/
ISBN : 978-81-260-4218-0
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

शब्द
(लेस मोट्स, फ्राँसीसी –आत्मकथा)
लेखक : ज्याँ पॉल सार्त्र
अनुवाद : लोकनाथ भट्टाचार्य
पृष्ठ : 202, मूल्य : ₹280/-
ISBN : 978-81-260-2196-3
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

रक्तमणिर हारे : खंड I
(बाङ्ला कहानी-संग्रह)
संकलन एवं संपादन : देबेश राय
पृष्ठ : 434, मूल्य : ₹520/-
ISBN : 978-81-260-2111-6
(छठाँ पुनर्मुद्रण)

रक्तमणिर हारे : खंड II
(बाङ्ला कहानी-संग्रह)
संकलन एवं संपादन : देबेश राय
पृष्ठ : 348, मूल्य : ₹430/-
ISBN : 978-81-260-2643-2
(चौथा पुनर्मुद्रण)

दलित (बाङ्ला दलित लेखन)
संकलन एवं संपादन : देबेश राय
पृष्ठ : 308, मूल्य : ₹350/-
ISBN : 978-81-260-2010-2
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

बोडो

फुगुन्नी बार जनानवी
(नवोदय प्रकाशन योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
लेखक : खुंगुर ब'र
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹120/-
ISBN : 978-93-6183-306-9

स्वदबनी डुंगब्रुद मडवी
(नवोदय योजना के अंतर्गत बोडो कविता-संग्रह)
लेखक : कमल स्वर्गियारी
पृष्ठ : 132, मूल्य : ₹170/-
ISBN : 978-93-6183-064-8

गोजोन-फुथैस्लिंग
(पुरस्कृत नेपाली कविता-संग्रह *शांति-संदेह*)
लेखक : जस योंजन 'प्यासी'
अनुवाद : रश्मि चौधुरी
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹130/-
ISBN : 978-93-6183-254-3

नोआओबव बाहेरायाओबव
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *घरे बाइरे* का बोडो अनुवाद)
लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर
अनुवाद : इंदिरा बर'
पृष्ठ : 246, मूल्य : ₹240/-
ISBN : 978-93-6183-896-5

अबथिरा (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *असमय*)
लेखक : बिमल कर
अनुवाद : उथ्रिसर खुंगुर बसुमतारी
पृष्ठ : 336, मूल्य : ₹330/-
ISBN : 978-93-6183-423-3

डोगरी

कुँवर वियोगी (विनिबंध)
लेखक : मोहन सिंह
पृष्ठ : 73, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-382-3

फीनिक्सचे रेखातुन उठाला मोर
(पुरस्कृत मराठी कहानी-संग्रह)
लेखक : जयंत पवार
अनुवाद : कमल किशोर
पृष्ठ : 179, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-6183-233-8

इक मियाँन दो तलवारें
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
लेखक : नानक सिंह
अनुवाद : अर्चना केसरी
पृष्ठ : 302, मूल्य : ₹580/-
ISBN : 978-93-6183-768-5

नीला चन्न
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
लेखक : शिव प्रसाद सिंह
हिंदी से डोगरी अनुवाद :
अशोक कुमार खजूरिया
पृष्ठ : 732, मूल्य : ₹900/-
ISBN : 978-93-6183-095-2

भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि बाल कहानियाँ (भाग 1)
संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
हिंदी से डोगरी अनुवाद :
उत्तम चंद उत्तम
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-253-6

भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि
बाल कहानियाँ (भाग 2)
संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
हिंदी से डोगरी अनुवाद :
उत्तम चंद उत्तम
पृष्ठ : 103, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-760-9

भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि
बाल कहानियाँ (भाग 3)
संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
हिंदी से डोगरी अनुवाद :
उत्तम चंद उत्तम
पृष्ठ : 90, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-392-2

भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि बाल कहानियाँ (भाग 4)
संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
हिंदी से डोगरी अनुवाद :
उत्तम चंद उत्तम
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-629-9

पंचतंत्र
(संस्कृत कालजयी कृति, खंड 1)
लेखक : विष्णु शर्मा
डोगरी अनुवाद : सुनीता भड़वाल
पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-93-6183-119-5

पंचतंत्र
(संस्कृत कालजयी कृति, खंड 2)
लेखक : विष्णु शर्मा
डोगरी अनुवाद : सुनीता भड़वाल
पृष्ठ : 72, मूल्य : ₹140/-
ISBN : 978-93-6183-005-1

पंचतंत्र
(संस्कृत कालजयी कृति, खंड 3)
लेखक : विष्णु शर्मा डोगरी
अनुवाद : सुनीता भड़वाल
पृष्ठ : 94, मूल्य : ₹170/-
ISBN : 978-93-6183-809-5

पंचतंत्र
(संस्कृत कालजयी कृति, खंड 4)
लेखक : विष्णु शर्मा डोगरी
अनुवाद : सुनीता भड़वाल
पृष्ठ : 54, मूल्य : ₹120/-
ISBN : 978-93-6183-804-0

पंचतंत्र
(संस्कृत कालजयी कृति, खंड 5)
लेखक : विष्णु शर्मा
डोगरी अनुवाद : सुनीता भड़वाल
पृष्ठ : 60, मूल्य : ₹120/-
ISBN : 978-93-6183-748-7

इक्षुगंधा
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
लेखक : अभिराज राजेंद्र मिश्र
डोगरी अनुवाद : ब्रह्म दत्त मगोत्रा
पृष्ठ : 62, मूल्य : ₹110/-
ISBN : 978-93-6183-018-1

अमर कथा
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
लेखक : गुलज़ार सिंह संधू
डोगरी अनुवाद : दीपक आर्सी
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹180/-
ISBN : 978-93-6183-526-1

क्रिटिकल अप्रैजल एंड इवैल्यूएशन ऑफ़ डोगरी नावेल ऑफ़ 20 एंड 21 सेंचुरी
(संगोष्ठी आलेख)
संपादक : मोहन सिंह
पृष्ठ : 124, मूल्य : ₹370/-
ISBN : 978-93-6183-102-7

पद्मा सचदेव (विनिबंध हिंदी)
लेखक : ओम गोस्वामी
पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-293-2

ईंटें दे भट्ठे दा शिल्पी
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
लेखक : गायत्री सराफ
अनुवाद : अर्चना केसरी
पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹ 230/-

पद्मा सचदेव रचना संचयन

संपादक : ओम गोस्वामी

पृष्ठ : 396, मूल्य : ₹ 500/-

ISBN : 978-93-6183-711-1

नेहरी गली

(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)

लेखक : अखिल मोहन पटनायक

अनुवाद : कृष्ण शर्मा

पृष्ठ : 182, मूल्य : ₹180/-

ISBN : 978-93-5548-487-1

(पुनर्मुद्रण : 2024)

अंग्रेज़ी

पैशन्स

(पुरस्कृत कश्मीरी कविताएँ *अमार*)

लेखक : शफ़ी शाइदा

अनुवाद : शफ़ी शौक़

पृष्ठ : 140, मूल्य : ₹200/-

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-800-2

इटर्नल टाइम, आवर्स, एंड मोमेंट्स

(पुरस्कृत पंजाबी कविता *काल पहर घड़ियाँ*)

लेखिका : वनीता

अनुवाद : तेजवंत सिंह गिल

पृष्ठ : 152, मूल्य : ₹200/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-326-7

मोनास्टिसिज़्म एंड डिवोशन टू गॉड

(अनूदित उर्दू आलोचना *तसव्वुफ और भक्ति*)

लेखक : शमीम तारिक

अनुवाद : सुहैल अहमद फारूक़ी

पृष्ठ : 264, मूल्य : ₹300/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-407-3

अ मैरिड वीमैन

(पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह *परिणीता*)

लेखिका : वीणा ठाकुर

अनुवाद : ओ.पी. झा

पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹170/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-927-6

द मूनलेस नाइट

(पुरस्कृत पंजाबी नाटक *मस्सया दी रात*)

लेखक : स्वराजबीर

अनुवाद : राणा नायर

पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹160/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-430-1

ट्रैवलर ऑफ़ चेंजिंग टाइम्स

(पुरस्कृत कोंकणी कविताएँ *युगपरिवर्तनाचो यात्री*)

लेखक : आर.एस. भास्कर

अनुवाद : जोसे लौरेंको

पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹160/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-202-4

ए न्यू डॉन एंड अदर स्टोरीज़

(पुरस्कृत कश्मीरी कहानी-संग्रह *येली फोल गाश*)

लेखक : सोमनाथ ज़ुत्शी

अनुवाद : पंकज भान

पृष्ठ : 156, मूल्य : ₹140/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-821-7

गाँव मजलिस

(पुरस्कृत ओड़िआ निबंध *गाँव मजलिस*)

लेखक : हरेकृष्ण महताब

अनुवाद : तरुण कुमार साहू

पृष्ठ : 228, मूल्य : ₹220/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-725-8

भास्वती

(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)

लेखक : तरुणकांति मिश्र

अनुवाद : सुनंदा मिश्रा

पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹150/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-277-2

बिद्युत प्रभा देवी (विनिबंध)

लेखक : बिजय कुमार नंद

पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹40/-

ISBN : 978-81-260-2920-4

(पुनर्मुद्रण : 2024)

चाणक्य
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
लेखिका : जयश्री गोस्वामी महंत
अनुवाद : नवमालती निओग चक्रवर्ती
पृष्ठ : 608, मूल्य : ₹550/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-244-4

द ब्लैंक पेपर
(पुरस्कृत कश्मीरी कविता-संग्रह *कोरे काकुद पुषरिथ गोमे*)
लेखक : शाद रामज़ान
अनुवाद : मुश्ताक़ बी. बार्क
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹120/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-978-8

वीड्स
(पुरस्कृत मराठी उपन्यास *तंकट*)
लेखक : राजन गवस
अनुवाद : दीपक बोरगावे
पृष्ठ : 336, मूल्य : ₹390/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-570-4

टीनी-विनी बैलून एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत ओड़िया बाल कहानी-संग्रह)
लेखक : दास बेनहुर
अनुवाद : बिक्रम के. दास
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-90866-70-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

द सीक्रेट व्हिस्पर ऑफ़ मरप्पाची
(बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त तमिळ उपन्यास *मरप्पाची सोनना रहसियम*)
लेखक : यस. बालभारती
अनुवाद : आनंत दक्षिणामूर्ति
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-705-0

मयूरी
(बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त कोंकणी उपन्यास)
लेखिका : ज्योति कुंकोलिएंकर
अनुवाद : स्मिता भंडारे कामत
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹125/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-884-2

राजा राव
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
लेखिका : रूमीना सेठी
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-982-5

राजाजी
(तमिळ विनिबंध)
लेखक : आर. वेंकटेश
अनुवाद : जी.एम. विनय कुमार
पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-824-8

बादल सरकार (अंग्रेज़ी विनिबंध)
लेखक : तपु विश्वास
पृष्ठ : 136, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-676-3

मनोज दास (अंग्रेज़ी विनिबंध)
लेखक : पी. राजा
पृष्ठ : 124, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-148-5

भारतीय कहानियाँ (खंड-1)
(कहानी संकलन)
संकलन एवं संपादन : के. श्रीनिवासराव
पृष्ठ : 348, मूल्य : ₹350/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-084-6

शार्ट स्टोरीज ऑफ़ वेंगयिल कुन्हीरामन नयनार
(मलयाळम् कहानी-संग्रह)
अनुवाद : के.एम. अजिर कुट्टी
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹140/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-913-9

अ प्लेस कॉल्ड होम : शार्ट स्टोरीज ऑफ़ सुषम बेदी
(अनुवाद कार्यशाला)
संपादक : रेखा सेठी एवं हीना नंद्राजोग
पृष्ठ : 208, मूल्य : ₹240/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-799-9

बीलू और बरगद का पेड़
(बच्चों के लिए ग्राफिक उपन्यास)
लेखक : दाश बेनहुर
पृष्ठ : 74, मूल्य : ₹200/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-112-6

अर्थ (अंग्रेज़ी कविताएँ)
लेखिका : विनीता अग्रवाल
पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹160/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-080-8

येलो (कविताएँ)
लेखिका : सुकृता
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹200/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-586-5

मडल्ड मफ्स म्यूज़िंग्स
(कन्नड पुस्तक *मंकुटिम्मना कग्गा*)
लेखक : डी.वी. गुंडप्पा
अनुवाद : चंदना श्री एस
पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹400/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-892-7

लव इज द ओनली फिनालिटी
(सच्चल सरमस्त द्वारा सिंधी दोहे)
अनुवाद : मोहन गेहाणी और
मेनका शिवदासानी
पृष्ठ : 276, मूल्य : ₹440/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-009-9

अ हाउस ऑफ़ वर्ड्स
(केकी एन. दारुवाला के सम्मान में फेस्टश्रिफ्ट)
संपादन : उषा अकेला
पृष्ठ : 212, मूल्य : ₹250/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-739-5

अण्णा भाऊ : द अप होल्डर ऑफ़ दलित एंड वीमेंस लिटरेचर
लेखक : विश्वास पाटिल
अनुवाद : विक्रांत पांडे
पृष्ठ : 320, मूल्य : ₹350/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-561-2

अमरनाथ झा : सिलेक्टेड एसेज ऑन लिटरेचर, लैंग्वेजेज एंड यूनिवर्सिटी एजुकेशन
संपादन : हरीश त्रिवेदी
एवं ललित कुमार
पृष्ठ : 335, मूल्य : ₹400/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-087-7

वेलिऐंट लोरिक
(मैथिली कालजयी उपन्यास)
लेखक : ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'
अनुवाद : तेजकर झा
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹130/-
संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-531-5

द फकीर'स डॉटर एंड अदर बेअरी फोकटेल्स
लेखक : हमज़ा मलार
अंग्रेज़ी अनुवाद : सिल्विया रेगो
पृष्ठ : 124, मूल्य : ₹130/-
संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-936-8

यू.आर. अनंतमूर्ति (अंग्रेज़ी विनिबंध)
लेखक : एन. मनु चक्रवर्ती
पृष्ठ : 167, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-669-5

चेक्कुरी रामाराव (अंग्रेज़ी विनिबंध)
लेखिका : ए. उषा देवी
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-879-8

एन.एन. कक्कड़ (अंग्रेज़ी विनिबंध)
(देसमंगलम रामकृष्णन् कृत मलयाळम् विनिबंध)
अनुवाद : के.एम. अजिर कुट्टी
पृष्ठ : 118, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-712-8

गोविंद पुरुषोत्तम देशपांडे
(मराठी नाटककार पर विनिबंध)
लेखिका : माया पंडित
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-076-1

अर्जन हासिद

(प्रख्यात सिंधी कवि पर विनिबंध)

लेखक : विनोद आसुदाणी और किशोर लालवाणी

पृष्ठ : 72, मूल्य : ₹100/-

पहला संस्करण : 2025

ISBN : 978-93-6183-57-2

रीडर ऑन अरुण शर्मा

संकलन एवं संपादन : नम्रता पाठक

पृष्ठ : 267, मूल्य : ₹350/-

ISBN : 978-93-6183-276-5

पुनर्मुद्रण

बिद्युत प्रभा देवी (अंग्रेज़ी विनिबंध)

लेखक : बिजय कुमार नंद

पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹40/-

ISBN : 978-81-260-2920-4

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

सेवेंथ सीज़न

(ओड़िआ कविता-संग्रह *सप्तम ऋतु*)

लेखक : रमाकांत रथ

अनुवाद : लिपिपुष्पा नायक

पृष्ठ : 134, मूल्य : ₹120/-

ISBN : 978-93-87989-51-1

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

द ड्राउट एंड अदर स्टोरीज़

(बाङ्ला कहानी-संग्रह)

लेखक : शरतचंद्र चट्टोपाध्याय

अनुवाद : ससधर सिन्हा

पृष्ठ : 122, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-81-260-1931-X

(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

फोक टेल्स ऑफ़ बिहार

लेखक : पी.सी. राय चौधरी

पृष्ठ : 156, मूल्य : ₹80/-

ISBN : 978-81-7201-629-6

(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

एस. राधाकृष्णन (अंग्रेज़ी विनिबंध)

लेखक : प्रेमा नंदकुमार

पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-81-7201-117-8

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

एम.के. बिनोदिनी देवी

(अंग्रेज़ी विनिबंध)

लेखक : एल. सोमी रॉय

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-93-5548-290-7

पर्व (कालजयी कन्नड उपन्यास)

लेखक : एस.एल. भैरप्पा

अनुवाद : के. राघवेंद्र राव

पृष्ठ : 964, मूल्य : ₹750/-

ISBN : 978-93-90310-07-4

संवत्सर व्याख्यान-38 : सिनेमा एंड लिटरेचर

वक्ता : गुलज़ार

पृष्ठ : 24, मूल्य : ₹40/-

ISBN : 978-93-6183-397-7

(पुनर्मुद्रण : 2024)

रामायण ट्रेडिशन इन एशिया

(संगोष्ठी आलेख)

संपादक : वी. राघवन

पृष्ठ : 744, मूल्य : ₹600/-

ISBN : 978-81-260-2736-1

(पुनर्मुद्रण : 2024)

सिलेक्टेड शार्ट स्टोरीज फ्रॉम असमीज़ चिल्ड्रन लिटरेचर

(*असमिया शिशु-साहित्यर निर्बाचित छुटीगल्प*)

असमिया संपादक : शांतनु तमुली

अनुवाद : प्रियाक्षी राजगुरु गोस्वामी

पृष्ठ : 328, मूल्य : ₹380/-

ISBN : 978-93-5548-654-7

(पुनर्मुद्रण : 2024)

क्रिएटिव एस्पेक्ट्स ऑफ़ इंडियन इंग्लिश

(संगोष्ठी आलेख)

संपादक : शांतिनाथ के. देसाई

पृष्ठ : 184, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-81-7201-924-2

(पुनर्मुद्रण : 2024)

मिटियर्स ऑफ पेन

(असमिया कविताओं का संग्रह *बेदनार उल्का*)

लेखक : अंबिकागिरी रॉयचौधरी

अनुवाद : प्रदीप आचार्य

पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-420-8

(पुनर्मुद्रण : 2024)

स्वरोदय

(पुरस्कृत ओड़िआ कृति - *स्वरोदय*)

लेखक : बंशीधर षड़ंगी

अनुवाद : हरेकृष्ण दास

पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-93-5548-567-0

(पुनर्मुद्रण : 2024)

अनंत पटनायक

(ओड़िआ लेखक पर विनिबंध)

लेखक : बिजय कुमार सतपथी

पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹100/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-5548-007-1

एम्परर अशोक

(पुरस्कृत हिंदी कृति *सम्राट अशोक*)

लेखक : दया प्रकाश सिन्हा

अनुवाद : हीना नंद्राजोग

पृष्ठ : xl+88, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-93-5548-512-0

(पुनर्मुद्रण : 2024)

अर्ली नोवेल्स इन इंडिया

(संगोष्ठी आलेख)

संपादक : मीनाक्षी मुखर्जी

पृष्ठ : 276, मूल्य : ₹300/-

ISBN : 978-81-260-1342-5

(पुनर्मुद्रण : 2024)

हर स्टोरी (अंग्रेज़ी कविता-संग्रह)

लेखिका : नेहा बंसल

पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-312-6

(पुनर्मुद्रण : 2024)

मेनफोक एंड अदर स्टोरीज

(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह)

लेखक : बुलाकी शर्मा

अनुवाद : ज्योतिका एलहांस

पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-93-5548-617-2

(पुनर्मुद्रण : 2024)

द्रौपदी

लेखक : यार्लगड्डा

अनुवाद : के.वी. पूर्णेश्वर राव

पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹300/-

ISBN : 978-81-260-4257-9

(पुनर्मुद्रण : 2024)

शार्ट स्टोरीज फ्रॉम पाकिस्तान

संपादक : इंतिज़ार हुसैन

एवं आसिफ़ फ़ारूक़ी

अनुवाद : एम. असदुद्दीन

पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-81-260-4770-3

(पुनर्मुद्रण : 2024)

द चिल्ड्रन ऑफ़ द माइटी रिवर

(एन एंथोलोजी ऑफ़ दिमासा फोक टेल्स एंड फोक सांग्स)

संपादक : सुदीप्ता खेरसा

अनु. संपा. : आर.के. जितेंद्रजित सिन्हा

पृष्ठ : 110, मूल्य : ₹125/-

ISBN : 978-93-91494-34-6

(पुनर्मुद्रण : 2025)

एशियन वेरिएशन इन रामायण

(संगोष्ठी आलेख)

संपादक : के. श्रीनिवास अय्यंगार

पृष्ठ : 372, मूल्य : ₹330/-

ISBN : 978-81-260-1806-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

फोर प्लेज़

चार चयनित नाटक : द *लीजेंड ऑफ़ मंटेस्वामी, द मदुरे एपिसोड, माधवी* और द *ब्राइड*)

लेखक : एच.एस. शिवप्रकाश

अनुवाद : मैत्रेयी कर्नूर

पृष्ठ : 212, मूल्य : ₹220/-

ISBN : 978-81-940300-9-6

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रिप्रजेंटिव इंडियंस

लेखक : जी. परमेश्वरन पिल्लै

संपादक : उषा साहना

पृष्ठ : 372, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-81-260-2668-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

कंटेम्परेरी इंडियन शार्ट स्टोरीज, भाग-3

विभिन्न अनुवादकों द्वारा

पृष्ठ : 224, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-260-4692-8

(पुनर्मुद्रण : 2025)

कंटेम्परेरी इंडियन शार्ट स्टोरीज, भाग-4

संपादक : शशि के. देसाई

पृष्ठ : 320, मूल्य : ₹300/-

ISBN : 978-81-260-4693-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मडल्ड मफ'स म्युजिंग्स

लेखक : डी.वी. गुंडप्पा

संपादक : चंदना श्री एस.

पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-93-6183-892-7

(पुनर्मुद्रण : 2025)

इंडियन शार्ट स्टोरीज़

संपादक : ई.वी. रामकृष्णन

पृष्ठ : 372, मूल्य : ₹550/-

ISBN : 978-81-2601091-2

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मालापल्ली – ट्राइंफ ऑफ़ सागा

लेखक : उन्नावा लक्ष्मीनारायण

संपादक : वीवीबी रामाराव

पृष्ठ : 404, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-81-260-2595-4

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मिथ्स एंड टेल्स ऑफ़ कोच – राजवंशिज़ ऑफ़ वेस्टर्न असम

संपादक : द्विजेन्द्र नाथ भक्त

पृष्ठ : 94, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-91494-26-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रवींद्रनाथ टैगोर

(बाङ्ला लेखक पर विनिबंध)

लेखक : शिशिर कुमार घोष

पृष्ठ : 164, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-81-260-1994-6

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रिविज़िटग भाषा पर्सपेक्टिव्स एंड परसेप्शंस

संपादक : सी. राजेन्द्रन

पृष्ठ : 212, मूल्य : ₹280/-

ISBN : 978-93-5548-166-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

के. अय्यप्प पणिकर – सिलेक्टेड एसेज

संपादक : के. सच्चिदानंदन

पृष्ठ : 272, मूल्य : ₹270/-

ISBN : 978-81-260-4755-0

(पुनर्मुद्रण : 2025)

इंडियन फोक नैरेटिव्स (अंग्रेज़ी)

संकलन एवं संपादन (बाङ्ला) : रामकुमार मुखोपाध्याय

अंग्रेज़ी संपादन : संयुक्ता दासगुप्ता

पृष्ठ : 760, मूल्य : ₹700/-

ISBN : 978-93-5548-112-2

(पुनर्मुद्रण : 2025)

गुजराती

नवा इलाकामां

(पुस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *नए इलाके में* का अनुवाद)

लेखक : अरुण कमल

अनुवाद : पीयूष ठक्कर

पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹190/-

वर्ष: 2024

ISBN : 978-93-5548-629-5

अमृत घायल

(गुजराती लेखक पर विनिबंध)

लेखक : नितिन वडगामा

पृष्ठ : 84, मूल्य : ₹100/-

वर्ष : 2024

ISBN : 978-93-6183-165-2

थोरवन्नो इतिहास

(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास *कल्लिकट्टु इतिहासम* का अनुवाद)

लेखक : वैरमुत्तु

अनुवाद : माधुरी छेड़ा

पृष्ठ : 280, मूल्य : ₹390/-

वर्ष : 2024

ISBN : 978-93-6183-673-2

खजाना वारु पंखी

(हिंदी कहानी-संग्रह *खजाने वाली चिड़िया* का अनुवाद)

लेखक : प्रकाश मनु

अनुवाद : श्रद्धा त्रिवेदी

पृष्ठ : 232, मूल्य : ₹340/-

वर्ष : 2024

ISBN : 978-93-5548-489-5

खिनोमाथी सरता घुम्मसनी जेम
(कन्नड कविता-संग्रह *मब्बिना हागे कनिवेयासी* का अनुवाद)
अनुवाद : कांजी पटेल
पृष्ठ : 60, मूल्य : ₹140/-
वर्ष : 2025
ISBN : 978-93-6183-715-9

हिंदी

परमानंद दास (विनिबंध)
लेखक : व्यासमणि त्रिपाठी
पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-622-0

हम उगेंगे दोबारा
(नवोदय योजना के अंतर्गत हिंदी कविता-संग्रह)
लेखिका : निवेदिता शर्मा
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹130/-
ISBN : 978-93-6183-507-0

बंग महिला (विनिबंध)
लेखक : आनंद प्रकाश त्रिपाठी
पृष्ठ : 105, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-552-0

कुतुब मीनार खड़े-खड़े थक गया होगा
(नवोदय योजना के अंतर्गत हिंदी कविता-संग्रह)
लेखक : शचींद्र आर्य
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹150/-
ISBN : 978-93-6183-630-5

विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय की कहानियाँ
(बाङ्ला कहानी-संग्रह)
लेखक : विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
हिंदी अनुवाद : टी.के. राय
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹150/-
ISBN : 978-81-19499-29-8

वह लापता आदमी
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *सेई निखोंज मानुषटा*)
लेखक : अफसर अहमद
हिंदी अनुवाद : कल्लोल चक्रवर्ती
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹170/-
ISBN : 978-93-6183-311-3

स्मृतिभ्रंश
(पुरस्कृत डोगरी कहानी-संग्रह *चेता*)
लेखक : छत्रपाल
हिंदी अनुवाद : कृष्ण शर्मा
पृष्ठ : 140, मूल्य : ₹200/-
ISBN : 978-93-6183-493-6

रामानुजन (हिंदी नाटक)
लेखक : प्रताप सहगल
पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-6183-596-4

सैरंध्री (पुरस्कृत गुजराती कविता)
हिंदी अनुवाद : विनोद जोशी
पृष्ठ : 94, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-284-0

द्वैपायन सरोवर के किनारे
(पुरस्कृत बाङ्ला कविता संग्रह *द्वैपायन ह्रदेर धारे*)
लेखक : सुबोध सरकार
हिंदी अनुवाद : अमृता बेरा
पृष्ठ : 68, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-619-0

कविता देती दृष्टि
(पुरस्कृत राजस्थानी कविता संग्रह *कविता देवे दृष्टि*)
लेखक : राजेश कुमार व्यास
हिंदी अनुवाद : मदन सैनी
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹140/-
ISBN : 978-93-6183-197-3

गाँव मजलिस
(पुरस्कृत ओड़िआ निबंध-संग्रह *गाँव मजलिस*)
लेखक : हरेकृष्ण महताब
हिंदी अनुवाद : सुजाता शिवेन
पृष्ठ : 180, मूल्य : ₹180/-
ISBN : 978-93-6183-314-4

पानी, चारु, आरो इत्यादि
(युवा पुरस्कार प्राप्त मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)
लेखक : धर्म कीर्ति सुमंत
हिंदी अनुवाद : प्रकाश भातंब्रेकर
पृष्ठ : 67, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-146-1

रॉबर्ट बर्न्स की 20 कालजयी कविताएँ

(स्कॉटिश कविता)

संकलन एवं हिंदी अनुवाद : अंजू रंजन

पृष्ठ : 195, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-93-6183-719-7

राधामोहन गोकुल (विनिबंध)

लेखक : समीर कुमार पाठक

पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-167-6

मीरां

(पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रह)

लेखक : मंगत बादल

हिंदी अनुवाद : कृष्ण कुमार 'आशु'

पृष्ठ : 86, मूल्य : ₹110/-

ISBN : 978-93-6183-930-6

क्रौंच पक्षी

(पुरस्कृत कन्नड कहानी-संग्रह)

लेखिका : वैदेही

हिंदी अनुवाद : मैथिली पी. राव

पृष्ठ : 107, मूल्य : ₹115/-

ISBN : 978-93-6183-222-2

रजनीगंधा

(पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)

लेखक : पापिनेनी शिवशंकर हिंदी

अनुवाद : आर. शांतासुंदरी

पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-93-6183-247-5

जयंत पाठक

(गुजराती कवि पर विनिबंध)

लेखिका : दक्षा व्यास

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-260-0

ईश्वरचंद्र

(सिंधी लेखक पर विनिबंध)

लेखक : जेठो लालवाणी

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-627-1

भोला भाई पटेल

(हिंदी लेखक पर विनिबंध)

लेखक : विपुल पुरोहित

पृष्ठ : 82, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-149-8

हरि हिमथाणी

(सिंधी लेखक पर विनिबंध)

लेखक : सुरेश बाबलाणी

पृष्ठ : 66, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-608-4

पुनर्मुद्रण

सुभाषित संग्रह-1

(उपनिषद्, महाभारत और पुराणों से चयन)

संपादक : वी. राघवन

संकलन : के.ए.एस. अय्यर

पृष्ठ : 236, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-720-348-6

(पुनर्मुद्रण : 2024)

वासुदेवशरण अग्रवाल

(रचना संचयन)

लेखक : वासुदेवशरण अग्रवाल

संपादक : कपिला वात्स्यायन

पृष्ठ : 736, मूल्य : ₹650/-

ISBN : 978-81-3234-1

(पुनर्मुद्रण : 2024)

आरोग्य निकेतन

(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *आरोग्यनिकेतन*)

लेखक : ताराशंकर बंद्योपाध्याय

अनुवाद : हंसकुमार तिवारी

पृष्ठ : 428, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-81-260-0328-0

(पुनर्मुद्रण : 2024)

रवींद्रनाथ के नाटक-1

(बाङ्ला नाटक)

लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर

अनुवाद : पी.सी. ओझा 'मुक्त'

पृष्ठ : 428, मूल्य : ₹264/-

ISBN : 978-81-260-0328-0

(पुनर्मुद्रण : 2024)

अज्ञेय गद्य रचना संचयन

(गद्य रचनाओं का संकलन)

लेखक : अज्ञेय

संकलन एवं संपादन : कुमार विमल

पृष्ठ : 920, मूल्य : ₹800/-

ISBN : 978-81-260-4552-5

(पुनर्मुद्रण : 2024)

गुंटेर की सर्दियाँ
(स्पानी उपन्यास *एल इनविएर्नो डे गुंटेर*)
लेखक : जुआन मैनुएल मार्कोस
अनुवाद : प्रभाती नौटियाल
पृष्ठ : 224, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-3235-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

गणेश शंकर विद्यार्थी
(रचना संचयन)
संपादक : सुरेश सलिल
पृष्ठ : 330, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-81-260-0431-7
(पुनर्मुद्रण : 2024)

कबूतरों की उड़ान (बाल साहित्य)
ले. रस्किन बांड
हिंदी अनुवाद : सौमित्र मोहन
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-806-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मेरा नाम है (हिंदी बाल कहानी)
ले. आबिद सुरती
पृष्ठ : 84, मूल्य : ₹150/-
ISBN : 978-81-260-5077-2
(पुनर्मुद्रण : 2024)

भूरी का अनोखा सफर
(पुरस्कृत गुजराती कहानी-संग्रह)
ले. नटवर पटेल
अनुवाद : सुनीता चौधरी
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹125/-
ISBN : 978-93-5548-611-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मरियल पेड़
(मैथिली बाल कहानी-संग्रह)
ले. मुरलीधर झा
अनुवादक : वैद्यनाथ झा
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹125/-
ISBN : 978-93-5548-106-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मास्टर दीनदयाल
लेखक : परशुराम शुक्ल
पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4014-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

श्रेष्ठ बाल कहानियाँ-1
(बाल कहानी-संग्रह)
संकलन एवं संपादन : प्रकाश मनु
पृष्ठ : 64, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-318-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

श्रेष्ठ बाल कहानियाँ-2
(बाल कहानी-संग्रह)
संकलन एवं संपादन : प्रकाश मनु
पृष्ठ : 68, मूल्य : ₹90/-
ISBN : 978-93-5548-334-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

नन्हे मुन्नों की सरकार
(पुरस्कृत उर्दू बाल कहानी-संग्रह)
लेखक : असद रज़ा
अनुवाद : फ़ारूक़ अर्गली
पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-5548-107-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

जंगल के ख़ज़ाने की खोज
(पुरस्कृत मराठी बाल कहानी-संग्रह)
लेखक : सलीम सरदार मुल्ला
अनुवाद : सुनीता डागा
पृष्ठ : 58, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-5548-342-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

आनंदम्
(पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह)
लेखक : दसारी वेंकट रमण
अनुवाद : पारनंदि निर्मला
पृष्ठ : xi+88, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-596-0

माटी की महक
(बाल कहानी-संग्रह)
लेखक : देवेंद्र सत्यार्थी
संकलन : अलका सोनी
पृष्ठ : 68, मूल्य : ₹90/-
ISBN : 978-93-5548-317-1

आख़िरी चोरी और दूसरी कहानियाँ
(पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
लेखक : ग़ुलाम हैदर
अनुवाद : रक्शंदा रूही
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-606-6

हरिवंश राय बच्चन रचना संचयन
संपादक : अजित कुमार
पृष्ठ : 546, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-260-4767-3

इस सदी की प्रेम कहानी
(स्वीडिश महाकाव्य — *द लव स्टोरी ऑफ़ द सेंचुरी)*
लेखक : एम. टिक्कानन
हिंदी अनुवाद : हरीश नारंग
पृष्ठ : 546, मूल्य : ₹170/-
ISBN : 978-81-260-0523-9

समकालीन भारतीय अंग्रेज़ी कहानी
(अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह)
संपादक : शिव के. कुमार
अनुवाद : हरीश नारंग
पृष्ठ : 546, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-7201-814-6

लो नाव चली कू कू की
(बाल कविता-संग्रह)
संपादक : मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
अनुवाद : हरीश नारंग
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-5548-601-1

पियू की डायरी, हिंदी
(पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
लेखक : सुभाष तळेकर
अनुवाद : संगीता बर्वे
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-607-3

मलूक दास (विनिबंध)
लेखक : बलदेव वंशी
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2259-5

गुरु गोविंद सिंह
(विनिबंध)
लेखक : महीप सिंह
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0330-5

परमाणु बम की छाया में
(जापानी कविताओं का संकलन)
अनुवाद : हरजेंदर चौधरी
एवं मिकी यूइचिरो
पृष्ठ : 296, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-5060-4

चिड़ा और चिड़ी की खेती
(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह)
लेखक : सी.एल. सांखला
अनुवाद : ललित श्रीमाली
पृष्ठ : 48, मूल्य : ₹60/-
ISBN : 978-93-5548-610-3

रवींद्रनाथ की कहानियाँ-1
लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर
अनुवाद : रामसिंह तोमर
पृष्ठ : 364, मूल्य : ₹220/-
ISBN : 978-93-87567-06-1

रवींद्रनाथ की कहानियाँ-2
लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर
अनुवाद : कणिका तोमर
पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹170/-
ISBN : 978-81-260-1409-5

हरिमोहन झा की श्रेष्ठ कहानियाँ
(मैथिली कहानियाँ)
संकलन : राजमोहन झा
एवं सुभाष चंद्र यादव
अनुवाद : लावण्या कीर्ति सिंह
पृष्ठ : 272, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-93-87989-88-7

स्वामी रामानंद (विनिबंध)
लेखक : उदय प्रताप सिंह
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4770-3

हँसने-खेलने का स्कूल
(बाल उपन्यास)
लेखक : प्रकाश मनु
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-614-1

कुमाऊँनी
(कुमाऊँनी भाषा पर हिंदी विनिबंध)
लेखक : शेर सिंह बिष्ट
पृष्ठ : 276, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-2991-4

सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(विनिबंध)
लेखक : प्रेमानंदकुमार
अनुवाद : जवाहरलाल द्विवेदी
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0435-5

रहीम (विनिबंध)
लेखक : विजयेंद्र स्नातक
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0171-2

दलित कहानी संचयन
(दलित कहानियों का संकलन)
संपादक : रमणिका गुप्ता
पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-260-1700-3

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर
अनुवाद : सच्चिदानंद वात्स्यायन
पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-7201-627-3

पतझड़ की आवाज़
(पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
लेखिका : क़ुर्रतुलऐन हैदर
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-93-86771-63-6

बाबरनामा
(बाबर की आत्मकथा)
अनुवाद : युगजित नवलपुरी
पृष्ठ : 468, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-93-87567-13-9

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य-1
(बाङ्ला बाल पुस्तक)
संकलन एवं संपादन : लीला मजूमदार
अनुवाद : युगजित नवलपुरी
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0009-8

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य-2
(बाङ्ला बाल पुस्तक)
संकलन एवं संपादन : लीला मजूमदार
अनुवाद : युगजित नवालपुरी
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0008-1

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
लेखक : श्रीलाल शुक्ल
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-658-6

सआदत हसन मंटो
(उर्दू लेखक पर विनिबंध)
लेखक : वारिस अलवी
अनुवाद : जानकी प्रसाद शर्मा
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0134-7

कश्मीरी की प्रतिनिधि कहानियाँ
(कश्मीरी कहानी संकलन)
हिंदी अनुवाद : गौरी शंकर रैणा
पृष्ठ : 176, मूल्य : ₹200/-
ISBN : 978-81-260-5075-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

आधुनिक भारतीय कविता संचयन
संपा. एवं संक. : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृष्ठ : 228, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-4012-4
(पुनर्मुद्रण : 2024)

हरिमोहन झा की श्रेष्ठ कहानियाँ
(मैथिली कहानियाँ)
संपा. एवं संक. : राजमोहन झा एवं सुभाष चंद्र यादव
पृष्ठ : 236, मूल्य : ₹270/-
ISBN : 978-81-260-0569-7
(पुनर्मुद्रण : 2024)

बारीक बात (पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह)
लेखक : रामस्वरूप किसान
अनुवाद : सत्यनारायण सोनी
पृष्ठ : 103, मूल्य : ₹550/-
ISBN : 978-93-5548-553-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

प्रतिनिधि हिंदी बाल नाटक
संपा. एवं संक. : हरिकृष्ण देवसरे
पृष्ठ : 176, मूल्य : ₹150/-
ISBN : 978-81-260-4305-7
(पुनर्मुद्रण : 2024)

भारतेंदु हरिश्चंद्र (विनिबंध)
लेखक : मदन गोपाल
अनुवाद : दामोदर अग्रवाल
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2603-6
(पुनर्मुद्रण : 2024)

गोस्वामी तुलसीदास (विनिबंध)
लेखक : रामजी तिवारी
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0517-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

जयशंकर प्रसाद (विनिबंध)
लेखक एवं अनु. : रमेश चंद्र शाह
पृष्ठ : 102, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0422-5
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मुक्तिबोध (विनिबंध)
लेखक : नंद किशोर नवल
पृष्ठ : 102, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0018-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल (विनिबंध)
लेखक : रामचंद्र तिवारी
पृष्ठ : 102, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2053-9
(पुनर्मुद्रण : 2024)

हरिशंकर परसाई (विनिबंध)
लेखक : विश्वनाथ त्रिपाठी
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2547-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मोहन राकेश (विनिबंध)
लेखिका : प्रतिभा अग्रवाल
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2607-4
(पुनर्मुद्रण : 2024)

त्रिलोचन (विनिबंध)
लेखक : रेवती रमण
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-3188-7
(पुनर्मुद्रण : 2024)

अंगूठी कौन पहने
(पुरस्कृत सिंधी बाल नाटक)
लेखक : साहिब बिजाणी
अनुवाद : खीमन यू. मुलाणी
पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-602-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

जंगल मंदिर और सोने का नेवला
(पुरस्कृत ओड़िआ बाल नाटक)
लेखक : रामचंद्र नायक
अनुवाद : एनी रॉय
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-603-5
(पुनर्मुद्रण : 2024)

आओ मिलकर खेलें नाटक
लेखक : प्रकाश मनु
अनुवाद : एनी रॉय
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹125/-
ISBN : 978-93-5548-333-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

बुल्ले शाह (विनिबंध)
लेखक : सुरिंदर सिंह कोहली
अनुवाद : कुमुद माथुर
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-343-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

अभिनवगुप्त (विनिबंध)
लेखक : जी.टी. देशपांडे
अनुवाद : मिथिलेश चतुर्वेदी
पृष्ठ : 236, मूल्य : ₹200/-
ISBN : 978-81-7201-845-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

महादेवी रचना संचयन (विनिबंध)
संपा. एवं संक. : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृष्ठ : 236, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-81-260-0437-9
(पुनर्मुद्रण : 2024)

जायसी (विनिबंध)
लेखक : परमानंद श्रीवास्तव
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-401-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

फणीश्वरनाथ रेणु (विनिबंध)
लेखक : सुरेंद्र चौधरी
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2632-6
(पुनर्मुद्रण : 2024)

रामधारी सिंह दिनकर (विनिबंध)
लेखक : विजेंद्र नारायण सिंह
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2142-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

निराला (विनिबंध)
लेखक : परमानंद श्रीवास्तव
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2738-5
(पुनर्मुद्रण : 2024)

कबीर (विनिबंध)
लेखक : प्रभाकर माचवे
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2426-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

रसखान (विनिबंध)
लेखक : श्याम सुंदर व्यास
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0518-5
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मीरा बाई (विनिबंध)
लेखक : ब्रजेन्द्र कुमार सिंघल
पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-5058-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

जंगल कथा
लेखक : होरासियो किरोगा
अनुवाद : प्रीति पंत
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2555-8
(पुनर्मुद्रण : 2024)

एक रेल सफर की दूरी
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी बाल उपन्यास)
लेखिका : मिनी श्रीनिवासन
अनुवाद : कंचन वर्मा
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-5548-597-7
(पुनर्मुद्रण : 2024)

पियू की डायरी
(पुरस्कृत मराठी बाल उपन्यास)
लेखिका : मिनी श्रीनिवासन
अनुवाद : कंचन वर्मा
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-607-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

भूरी का अनोखा सफर
(विनिबंध) (पुरस्कृत मराठी-गुजराती कहानी-संग्रह)
लेखक : नटवर पटेल
अनुवाद : सुनीता चौधरी
पृष्ठ : 110, मूल्य : ₹125/-
ISBN : 978-93-5548-611-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

जंगल में मंगल
(पुरस्कृत मराठी-डोगरी उपन्यास)
लेखक : ओम गोस्वामी
अनुवाद : यशपाल निर्मल
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-5548-101-6
(पुनर्मुद्रण : 2024)

गोरखनाथ (विनिबंध)
लेखक : नागेन्द्रनाथ उपध्याय
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2042-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

काँटा तथा अन्य कहानियाँ
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
लेखक : गौरहरि दास
अनुवाद : एनी रॉय
पृष्ठ : 256, मूल्य : ₹200/-
ISBN : 978-81-260-5337-7
(पुनर्मुद्रण : 2024)

स्वामी रामानंद (विनिबंध)
लेखक : उदय प्रताप सिंह
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4770-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

सरस्वतीचंद्र - 1 (गुजराती उपन्यास)
लेखक : गोवर्धनराम माधवराम
अनुवाद : आलोक गुप्ता
पृष्ठ : 336, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-4770-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

सरस्वतीचंद्र - 2 (गुजराती उपन्यास)
लेखक : गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी
अनुवाद : वीरेंद्र नारायण सिंह
पृष्ठ : 302, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-4539-6
(पुनर्मुद्रण : 2024)

सरस्वतीचंद्र - 3 (गुजराती उपन्यास)
लेखक : गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी
अनुवाद : वीरेंद्र नारायण सिंह
पृष्ठ : 302, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-4540-2
(पुनर्मुद्रण : 2024)

सरस्वतीचंद्र - 4 (भाग - 1)
(गुजराती उपन्यास)
लेखक : गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी
अनुवाद : आलोक गुप्ता
पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-81-260-4541-9
(पुनर्मुद्रण : 2024)

सरस्वतीचंद्र - 4 (भाग - 2)
(गुजराती उपन्यास)
लेखक : गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी
अनुवाद : आलोक गुप्ता
पृष्ठ : 296, मूल्य : ₹280/-
ISBN : 978-81-260-4768-0
(पुनर्मुद्रण : 2024)

कथेतर (संगोष्ठी आलेख)
संपादक : माधव हाडा
पृष्ठ : 240, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-81-260-5338-4
(पुनर्मुद्रण : 2025)

जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी जीवनी)
लेखक : सर्वपल्ली गोपाल
अनुवाद : प्रभाकर माचवे
पृष्ठ : 472, मूल्य : ₹500/-
ISBN : 978-81-260-0297-2
(पुनर्मुद्रण : 2025)

सुनो कहानी (बाल कहानी-संग्रह)
लेखक : विष्णु प्रभाकर
पृष्ठ : 60, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-0928
(पुनर्मुद्रण : 2025)

हिमालय में
(पुरस्कृत कोंकणी यात्रा-वृत्तांत)
लेखक : रवींद्र केलेकार
अनुवाद : प्रभा वी. भट्ट
पृष्ठ : 84, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4322-4
(पुनर्मुद्रण : 2025)

हिमाचली कहानी संचयन
संपादक : प्रत्यूष गुलेरी
पृष्ठ : 240 मूल्य : ₹275/-
ISBN : 978-93-89195-03-3
(पुनर्मुद्रण : 2025)

सहजोबाई
(मध्यकालीन भारतीय संत कवयित्री पर विनिबंध)
लेखिका : उषा लाल
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4006-3
(पुनर्मुद्रण : 2025)

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य
(दार्शनिक एवं संत पर विनिबंध)
लेखक : शशि तिवारी
पृष्ठ : 72, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-5072-7
(पुनर्मुद्रण : 2025)

रामधारी सिंह दिनकर रचना संचयन
संपादक : कुमार विमल
पृष्ठ : 560, मूल्य : ₹470/-
ISBN : 978-93-86771-78-0
(पुनर्मुद्रण : 2025)

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(महान आर्यसमाजी पर विनिबंध)
लेखक : विष्णु प्रभाकर
एवं विष्णुदत्त राकेश
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-443-8
(पुनर्मुद्रण : 2025)

पुष्पदंत
(प्राचीन हिंदी लेखक पर विनिबंध)
संपादक : प्रत्यूष गुलेरी
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4002-5
(पुनर्मुद्रण : 2025)

भिखारी ठाकुर
(आधुनिक भोजपुरी लेखक पर विनिबंध)
संपादक : तैयब हुसैन पीड़ित
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2630-2
(पुनर्मुद्रण : 2025)

सादा लिफाफा
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास 'सादा खाम')
लेखक : मति नंदी
अनुवाद : सिद्धेश
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹120/-
ISBN : 978-81-7201-523-7
(पुनर्मुद्रण : 2025)

यशपाल रचना संचयन
संपादक : मधुरेश
पृष्ठ : 368, मूल्य : ₹350/-
ISBN : 978-81-260-2143-7
(पुनर्मुद्रण : 2025)

शिकस्ता बुतों के दरमियान
(पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
संपादक : प्रत्यूष गुलेरी
पृष्ठ : 248, मूल्य : ₹240/-
ISBN : 978-81-260-2499-5
(पुनर्मुद्रण : 2025)

वह लंबी ख़ामोशी

(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास 'दैट लॉन्ग साइलेंस')

लेखिका : शशि देशपांडे

अनुवाद : लक्ष्मीचंद जैन

पृष्ठ : 204, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-260-0642-7

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रिल्के के प्रतिनिधि पत्र

(चयनित पत्रों का संग्रह)

लेखक : रेनियर मारिया रिल्के

अनुवाद : राजी सेठ

पृष्ठ : 196, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-260-0640-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

अवधी

(अवधी भाषा पर विनिबंध)

लेखक : सूर्य प्रसाद दीक्षित

पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹160/-

ISBN : 978-81-260-4543-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

शृंखल

(अनूदित असमिया कहानी-संग्रह)

लेखक : भवेंद्रनाथ शइकीया

अनुवाद : पापोरी गोस्वामी

पृष्ठ : 176, मूल्य : ₹180/-

ISBN : 978-81-260-2897-9

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मुक्ति स्वप्न

(स्पानी उपन्यास *एल फ्लिबस्टरिस्मो*)

हिंदी अनुवाद : प्रयाग शुक्ल

पृष्ठ : 360, मूल्य : ₹350/-

ISBN : 978-81-260-1905-2

(पुनर्मुद्रण : 2025)

संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

संपादक : राधावल्लभ त्रिपाठी, आनंद प्रकाश त्रिपाठी तथा नौनिहाल गौतम

पृष्ठ : 256, मूल्य : ₹250/-

ISBN : 978-93-89778-90-8

(पुनर्मुद्रण : 2025)

बाङ्ला साहित्य इतिहास

लेखक : सुकुमार सेन

अनुवाद : निर्मला जैन

पृष्ठ : 396, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-81-260-1949-6

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मंडन मिश्र

(संस्कृत विद्वान पर विनिबंध)

लेखक : उदयनाथ झा 'अशोक'

पृष्ठ : 240, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-81-260-3364-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

गढ़वाली लोकगीत

अनुवाद : गोविंद चातक

पृष्ठ : 456, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-81-260-1001-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

जंगल मंदिर और सोने का नेवला

(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)

लेखक : रामचंद्र नायक

अनुवाद : एनी रॉय

पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-603-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

अँगूठी कौन पहने

(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)

लेखक : साहिब बिजाणी

अनुवाद : खीमन यू. मिलाणी

पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-602-8

(पुनर्मुद्रण : 2025)

आओ मिलकर खेलें नाटक

लेखक : प्रकाश मनु

पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹125/-

ISBN : 978-93-5548-333-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

आनंदम

(पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह)

लेखक : दसारी वेंकट रमण

अनुवाद : पारनंदि निर्मला

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-596-0

(पुनर्मुद्रण : 2025)

हँसने खेलने का स्कूल

लेखक : प्रकाश मनु

पृष्ठ : 76, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-614-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

चिड़िया और चिड़े की खेती

(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह)

लेखक : सी.एल. सांखला

अनुवाद : ललित श्रीमाली

पृष्ठ : 48, मूल्य : ₹60/-

ISBN : 978-93-5548-610-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

पियू की डायरी

(पुरस्कृत मराठी उपन्यास)

लेखिका : संगीता बर्वे

अनुवाद : सुभाष तेलेकर

पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-607-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

भूरी का अनोखा सफर

लेखक : नटवर पटेल

अनुवाद : सुनीता चौधरी

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹125/-

ISBN : 978-93-5548-611-0

(पुनर्मुद्रण : 2025)

जंगल में मंगल

(पुरस्कृत डोगरी उपन्यास)

लेखक : ओम गोस्वामी

अनुवाद : यशपाल निर्मल

पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-5548-101-6

(पुनर्मुद्रण : 2025)

कुमाऊँनी

(कुमाऊँनी भाषा पर विनिबंध)

लेखक : शेर सिंह बिष्ट

पृष्ठ : 216, मूल्य : ₹250/-

ISBN : 978-81-260-2991-4

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मुक्तिबोध की कविताएँ

(चयनित हिंदी कविताएँ)

संपादक : त्रिलोचन शास्त्री

पृष्ठ : 216, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-260-0674-8

(पुनर्मुद्रण : 2025)

गढ़वाली

(गढ़वाली भाषा पर विनिबंध**)**

लेखक : केशवदत्त रुबाली

पृष्ठ : 204, मूल्य : ₹250/-

ISBN : 978-81-260-4550-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

जंगल एक अनोखा सा

(पुरस्कृत सिंधी उपन्यास)

लेखक : हूंदराज बलवाणी

पृष्ठ : 68, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-91017-12-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रवींद्रनाथ की कहानियाँ-1

(बाङ्ला कहानियाँ)

लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर

अनुवाद : राम सिंह तोमर

पृष्ठ : 364, मूल्य : ₹220/-

ISBN : 978-93-87567-06-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रवींद्रनाथ की कहानियाँ-2

(बाङ्ला कहानियाँ)

लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर

अनुवाद : कणिका तोमर

पृष्ठ : 272, मूल्य : ₹170/-

ISBN : 978-81-260-1409-5

(पुनर्मुद्रण : 2025)

नन्हे मुन्नों की सरकार

(पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)

लेखक : असद रज़ा

अनुवाद : फ़ारूक़ अरगली

पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-5548-107-8

(पुनर्मुद्रण : 2025)

रोशन राह

(पुरस्कृत सिंधी कहानी-संग्रह)

लेखक : जगदीश लछाणी

अनुवाद : शालिनी सागर

पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹60/-

ISBN : 978-93-5548-134-4

(पुनर्मुद्रण : 2025)

बंटी के सूरज दादा

(पुरस्कृत गुजराती कहानी-संग्रह)

लेखिका : पुष्पा अंताणी

अनुवाद : रजनीकांत एस. शाह

पृष्ठ : 94, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-100-9

(पुनर्मुद्रण : 2025)

बाल सुधा सागर

(पुरस्कृत नेपाली कहानी-संग्रह)

लेखक : शंकर देव ढकाल

अनुवाद : उदय ठाकुर

पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹80/-

ISBN : 978-93-5548-255-6

(पुनर्मुद्रण : 2025)

सत्तर बाल कहानियाँ

(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)

लेखक : जनार्दन हेगड़े

अनुवाद : मीरा द्विवेदी

पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-105-4

(पुनर्मुद्रण : 2025)

माटी की महक

लेखक : देवेंद्र सत्यार्थी

संपादन : अलका सोनी

पृष्ठ : 68, मूल्य : ₹90/-

ISBN : 978-93-5548-317-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

एक रेल सफर की दूरी बस

(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)

लेखिका : मिनी श्रीनिवासन

अनुवाद : कंचन वर्मा

पृष्ठ : 60, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-5548-597-7

(पुनर्मुद्रण : 2025)

राजकुमार का सपना

(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)

लेखक : कुलबीर सिंह सूरी

अनुवाद : जसबीर कौर

पृष्ठ : 60, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-5548-102-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

मॉनिटर

(पुरस्कृत कोंकणी कहानी-संग्रह)

लेखक : कुमुद भीकू नाइक

अनुवाद : हरीश कुमार अग्रवाल

पृष्ठ : 62, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-5548-293-8

(पुनर्मुद्रण : 2025)

कबूतरों की उड़ान (अंग्रेज़ी उपन्यास)

लेखक : रस्किन बॉन्ड

अनुवाद : सौमित्र मोहन

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-81-7201-806-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

प्रतिनिधि हिंदी बाल नाटक

(बाल नाट्य संग्रह)

लेखक : हरिकृष्ण देवसरे

पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-81-260-4305-7

(पुनर्मुद्रण : 2025)

पहाड़ गाथा (हिंदी कहानी-संकलन)

लेखक : सुदर्शन वशिष्ठ

पृष्ठ : 480, मूल्य : ₹450/-

ISBN : 978-81-260-4994-3

(पुनर्मुद्रण : 2025)

हिंदी कहानी-संग्रह

लेखक : भीष्म साहनी

पृष्ठ : 384, मूल्य : ₹250/-

ISBN : 978-81-7201-657-9

(पुनर्मुद्रण : 2025)

अपनों में नहीं रह पाने का गीत

(हिंदी कविता-संकलन)

(नवोदय शृंखला)

लेखक : प्रभात

पृष्ठ : 156, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-81-260-4301-9

(पुनर्मुद्रण : 2025)

गढ़वाली लोकगीत

अनुवाद : गोविंद चातक

पृष्ठ : 456, मूल्य : ₹400/-

ISBN : 978-81-260-1001-1

(पुनर्मुद्रण : 2025)

कन्नड

बी.एच. श्रीधर (विनिबंध)

लेखक : एल.एस. शास्त्री

पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-

संस्करण : पहला, 2024

ISBN : 978-93-6183-551-3

मन्निना मनुष्य
लेखक : कालिंदिचरण पाणिग्रही
भूमिका : हरेकृष्ण मेहताब
अनुवाद : गौरीश कैकिनी
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹180/-
पहला संस्करण : 1963;
दूसरा संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-778-4
(पुनर्मुद्रण)

प्राप्ति (पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह 'प्राप्ति')
लेखिका : पारमिता सतपथी
अनुवाद : स्नेहलता रोहिडकर
पृष्ठ : 248, मूल्य : ₹300/-
पहला संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-109-6

युगपरिवर्तन के यात्री
(पुरस्कृत कोंकणी कविता-संग्रह)
लेखक : आर.एस. भास्कर)
अनुवाद : प्रभा वी. भट
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹120/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-110-2

भगवान बुद्ध
(मराठी कालजयी कृति)
लेखक : धर्मानंद कोसांबी
भूमिका : काकासाहेब कालेलकर
अनुवाद : आद्य रंगाचार्य (श्री रंगा)
पृष्ठ : 376, मूल्य : ₹430/-
तीसरा संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-681-7
(पुनर्मुद्रण)

कश्मीरी

अब्दुर रशीद नाज़की (विनिबंध)
लेखक : अब्दुल खालिक शम्स
पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-529-2

कश्मीरी मंक़बत संकलन
संक. एवं संपा.: अब्दुल अहद हाजिनी
पृष्ठ : 259, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-93-6183-406-6

आधुनिक कश्मीरी नाटक संकलन
संकलन एवं संपादन : मजीद मजाज़ी
पृष्ठ : 300, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-93-6183-411-0

फाज़िल कश्मीरी
(शताब्दी संगोष्ठी आलेख)
संपादक : गुलज़ार अहमद राथर
पृष्ठ : 181, मूल्य : ₹380/-
ISBN : 978-93-6183-312-0

गुलाम नबी फिराक़ (विनिबंध)
लेखिका : शाइस्ता अहमद
पृष्ठ : 82, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-093-8

कशुर शूरे अदब : बाल साहित्य
(कार्यशाला में अनूदित)
संपादक : मजीद मजाज़ी
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹280/-
ISBN : 978-93-6183-569-8

पृथ्वीनाथ कौल सायल
(विनिबंध)
लेखक : रतन लाल तलाशी
पृष्ठ : 90, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-865-1

सोमनाथ भट वीर
(विनिबंध)
लेखक : अशोक दिलबर
पृष्ठ : 82, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-595-7

गाइड
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
लेखक : आर.के. नारायण
अनुवाद : शबनम तिलगामी
पृष्ठ : 336, मूल्य : ₹600/-
ISBN : 978-93-6183-474-5

हाशिए पर
(पुरस्कृत डोगरी उपन्यास)
लेखक : शैलेंद्र सिंह
अनुवाद : ब्रजनाथ बेताब
पृष्ठ : 400, मूल्य : ₹162/-
ISBN : 978-93-6183-557-5

नवे योगिके वारिस दर
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
लेखक : मोहिंदर सिंह सरना
अनुवाद : कंवल कृष्ण लिधू
पृष्ठ : 198, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-93-6183-486-8

पुनर्मुद्रण

हैमलेट (अंग्रेज़ी नाटक)
संपादक : वासुकिनाथ झा
पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹180/-
ISBN : 978-93-5548-537-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

ऐस परोव नोव नोव
लेखक : विलियम शेक्सपियर
अनुवाद : सुरिंदर मोहन कौल
पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹180/-
ISBN : 978-93-5548-537-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

खासी लोक कथाएँ
(कार्यशाला में अनूदित)
संपादक : मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
अनुवाद : हरीश नारंग
पृष्ठ : 174, मूल्य : ₹220/-
ISBN : 978-93-5548-201-3
(पुनर्मुद्रण : 2024)

कोंकणी

धर्मयुद्ध
(पुरस्कृत राजस्थानी नाटक का अनुवाद)
मूल लेखक : अर्जुन देव चारण
अनुवाद : अविनाश च्यारी
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹230/-
ISBN : 978-93-5548-497-0

सरन जलतना
(नवोदय योजना के अंतर्गत नाटक)
लेखक : दीपराज सातारदेकर
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹180/-
ISBN : 978-93-6183-931-3

तमस
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास–भीष्म साहनी)
अनुवाद : वृषाली सुभाष मांद्रेकर
पृष्ठ : 284, मूल्य : ₹375/-
ISBN : 978-81-19499-56-4

मैथिली

रामनाथ मिश्र 'मिहिर'
लेखक : सत्येन्द्र कुमार झा
पृष्ठ : 65, मूल्य : ₹100/-
संस्करण : पहला, 2024
ISBN : 978-93-6183-416-5

अनहद (पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह)
लेखक : पी. पद्मराजु
अनुवाद : सत्यनारायण प्रसाद यादव
पृष्ठ : 166, मूल्य : ₹260/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-9183-770-8

ऐनाक सम्मुख
(पुरस्कृत सिंधी उपन्यास)
लेखिका : कला प्रकाश
अनुवाद : अजय मिश्र
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹150/-
संस्करण : पहला, 2024
ISBN : 978-81-19499-95-3

झारखंडक कथा परिवेश
लेखिका : ऋता शुक्ला
अनुवाद : अशोक कुमार झा 'अविचल'
पृष्ठ : 208, मूल्य : ₹270/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-81-19499-57-1

सादा लिफ़ाफ़ा
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
लेखक : मति नंदी
अनुवाद : परमानंद प्रभाकर
पृष्ठ : 124, मूल्य : ₹140/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-81-19499-50-2

अनुनय
(पुरस्कृत गुजराती कविता-संग्रह)
संकलन : जयंत पाठक
अनुवाद : सुरेन्द्र भारद्वाज
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹240/-
संस्करण : पहला, 2024
ISBN : 978-93-9183-036-5

मौन ठोर खुजल हृदय
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
लेखक : येशे दोरजे थोंगची
अनुवाद : दिनकर कुमार
पृष्ठ : 180, मूल्य : ₹200/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-377-9

गाँधी मानुष
(पुरस्कृत ओड़िआ जीवनी)
लेखक : शरत कुमार महांति
अनुवाद : शैलेंद्र कुमार झा
पृष्ठ : 776, मूल्य : ₹1000/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-220-8

हिंद स्वराज
लेखक : महात्मा गाँधी
अनुवाद : राम नरेश सिंह
पृष्ठ : 110, मूल्य : ₹120/-
प्रथम संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-649-7

कनुरुक चौधराइन
(पुरस्कृत कन्नड कालजयी उपन्यास)
लेखक : कुवेम्पु
अनुवाद : मेधाकर झा
पृष्ठ : 547, मूल्य : ₹650/-
प्रथम संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-679-4

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' रचना-संचयन
संपादन : अजीत मिश्र
पृष्ठ : 374, मूल्य : ₹450/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-81-19499-79-3

मैथिली बाल कविता-संचयन
संपादन : सियाराम झा 'सरस'
पृष्ठ : 376, मूल्य : ₹400/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-81-19499-71-7

जीवकांत कविता-संचयन
संपादन : केदार कानन, नारायणजी
पृष्ठ : 299, मूल्य : ₹330/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-707-4

काँचीनाथ झा 'किरण' रचना-संचयन
संपादन : शिवशंकर श्रीनिवास,
केदारनाथ झा
पृष्ठ : 320, मूल्य : ₹350/-
प्रथम संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-589-6

रामकृष्ण झा 'किसुन' रचना-संचयन
संपादन : कुमार मनीष
अरविंद तथा रमण कुमार सिंह
पृष्ठ : 302, मूल्य : ₹350/-
प्रथम संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-073-0

मैथिली लोकगीत
(मैथिली में लोकगीतों का संकलन)
संपादन : अणिमा सिंह
पृष्ठ : 432, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-7201-356-1
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मैथिली कथाक विकास
(संगोष्ठी आलेख)
संपादन : वासुकिनाथ झा
पृष्ठ : 212, मूल्य : ₹200/-
ISBN : 978-81-260-1511-5
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मिथिला भाषा रामायण
लेखक : कवि चंद्र
संपादन : बलदेव मिश्र, रमानाथ झा
पृष्ठ : 454, मूल्य : ₹550/-
ISBN : 978-81-260-0692-2
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मैथिली कथा शताब्दी संचयन
संपादन : रामदेव झा
पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-260-2898-6
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मैथिली लोकोक्ति संचयन
संकलन : कमलकांत झा
पृष्ठ : 316, मूल्य : ₹350/-
ISBN : 978-81-260-2898-6
(पुनर्मुद्रण : 2024)

मलयाळम्

सुगतकुमारी (विनिबंध)
लेखक : के.एस. रविकुमार
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-332-8

चक्रपाणि (विनिबंध)
लेखक : वेलगा वेंकटप्पैया
अनुवाद : एल.आर. स्वामी
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-378-6

मणिपुरी

निंगथौखंगजम खेलचंद्र सिंह
(विनिबंध)
लेखक : नाओरोइबम इंद्रमणि
पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-724-1

मजाएबुंगो दाराशुकोह, खंड–2
(**पुरस्कृत** बाङ्ला उपन्यास 'शहज़ादा दाराशुकोह', खंड–2)
लेखक : श्यामल गांगोपाध्याय
अनुवाद : मैबम तोलेन
पृष्ठ : 631, मूल्य : ₹670/-
ISBN : 978-93-6183-988-7

नोहकना श्लोकलोक श्लोकलोकपा खुदिंगदा
(संस्कृत कविता-संग्रह 'तव स्पर्शे स्पर्शे' का अनुवाद)
लेखक : हर्षदेव माधव
अनुवाद : मैनम अचौबी शास्त्री
पृष्ठ : 260, मूल्य : ₹210/-
ISBN : 978-93-6183-519-3

मराठी

काला पहाड़
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास 'द ब्लैक हिल')
लेखक : ममंग दई
अनुवाद : छाया महाजन
पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹425/-
ISBN : 978-93-6183-774-6

भीलांचे भारत
(भीली जनजातीय महाकाव्य का अनुवाद)
प्रलेखन : भगवानदास पटेल
अनुवाद : लीला शिंदे
पृष्ठ : 228, मूल्य : ₹325/-
ISBN : 978-93-6183-360-1

निवडक काफ्का
(काफ्का की चयनित गद्य रचनाएँ)
जर्मन से मराठी में अनुवाद : नीति बडवे
पृष्ठ : 138, मूल्य : ₹240/-
ISBN : 81-260-2187-X
(पुनर्मुद्रण)

धर्मयुद्ध
(पुरस्कृत राजस्थानी नाटक का अनुवाद)
लेखक : अर्जुन देव चारण
अनुवाद : समीर दलवी
पृष्ठ : 132, मूल्य : ₹230/-
ISBN : 978-93-5548-428-4

यज्ञ आणि इतर कथा
(तेलुगु कहानी-संग्रह *यज्ञम ते तोम्मिदी* का अनुवाद)
लेखक : कालीपट्टनम रामाराव
अनुवाद : व्यंकटेश देवणपल्ली
पृष्ठ : 418, मूल्य : ₹550/-
ISBN : 978-93-5548-478-8

केतकर लेख संग्रह
(एस.वी. केतकर की चयनित रचनाएँ)
संपादक : वाय.डी. फड़के
पृष्ठ : 254, मूल्य : ₹350/-
ISBN : 81-7201-301-9
(पुनर्मुद्रण)

कैनडीड
(फ्राँसीसी कालजयी का अनुवाद)
लेखक : वोल्तेयर
अनुवाद : नरेश कवडी
पृष्ठ : 124, मूल्य : ₹225/-
ISBN : 81-260-1266-8
(पुनर्मुद्रण)

लोकांचे राज्य
(असमिया उपन्यास 'इयारुइंगुम' का अनुवाद)
लेखक : बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
अनुवाद : शांता शेलके
पृष्ठ : 384, मूल्य : ₹475/-
ISBN : 978-93-6183-646-6
(पुनर्मुद्रण)

राजा ढाले
(दलित अधिकारों के कार्यकर्ता पर विनिबंध)
लेखक : गौतमिपुत्र कांबले
पृष्ठ : 108, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-955-9

भारतीय दलित साहित्य

(संगोष्ठी आलेखों का संकलन)

संपादक : शरणकुमार लिंबाले

पृष्ठ : 496, मूल्य : ₹600/-

ISBN : 978-81-260-4401-6

(पुनर्मुद्रण)

टोपलीत दिगंत

(हिंदी कविता-संग्रह 'टोपली में दिगंत' का अनुवाद)

लेखिका : अनामिका

अनुवाद : राजा होलकुंडे

पृष्ठ : 240, मूल्य : ₹300/-

ISBN : 978-93-6183-483-7

निवडक मराठी समीक्षा

(मराठी में आलोचनात्मक आलेखों का चयन)

संपादक : जी.एम. पवार एवं
एम.डी. हटकनांगलेकर

पृष्ठ : 384, मूल्य : ₹500/-

ISBN : 81-260-0368-5

(पुनर्मुद्रण)

जेव्हा कविता जन्म घेते

(अंग्रेज़ी से अनूदित – समकालीन बाङ्ला महिला कवयित्रियों की कविताएँ)

संपा. एवं अंग्रेज़ी अनु. : मेरियन मैडर्न

मराठी अनुवाद : सुप्रिया अवरे

पृष्ठ : 168, मूल्य : ₹265/-

ISBN : 978-93-6183-470-7

विंदा करंदीकर

(मराठी कवि पर विनिबंध)

लेखक : महेश केलुसकर

पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-038-9

भीष्म साहनी

(हिंदी लेखक पर विनिबंध)

लेखक : रमेश उपाध्याय

अनुवाद : गोविंद बुरसे

पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-5548-642-4

नामदेव ढसाल

(मराठी लेखक पर विनिबंध)

लेखक : रणधीर शिंदे

पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-155-3

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज

(मराठी संत कवि पर विनिबंध)

लेखक : प्रमोद मुंघाटे

पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-451-6

कर्नाटक संस्कृतीचे सूक्ष्मावलोकन

(कन्नड पुस्तक 'कर्नाटक संस्कृति समीक्षा' का अनुवाद)

अनुवाद : शोभा नाईक

पृष्ठ : 768, मूल्य : ₹850/-

ISBN : 978-93-6183-498-1

याच शस्त्रांनी

(हिंदी उपन्यास 'इन ही हथियारों से' का अनुवाद)

लेखक : अमरकांत

अनुवाद : मधुकर धर्मापुरिकर

पृष्ठ : 769, मूल्य : ₹850/-

ISBN : 978-93-6183-548-3

नेपाली

कुमार घिसिंग रचना-संचयन

संपादक : जीवन नामदुंग

पृष्ठ : 300, मूल्य : ₹400/-

संस्करण : 2024

ISBN : 978-81-19499-55-7

इंद्रमणि दरनाल (विनिबंध)

लेखिका : विंद्या सुब्बा

पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-

संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-189-8

नेपाली में अनूदित कुछ असमिया कथाएँ

असमिया संपादन : गोविंद प्रसाद शर्मा,
शैलेन भराली तथा
हृदयानंद गोगोई

नेपाली संपादन : खगेन शर्मा

पृष्ठ : 296, मूल्य : ₹430/-

संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-545-2

आई.के. सिंह (विनिबंध)
लेखक : कृष्णराज घाटानी
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹100/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-394-6

जय धमाला : रचना-संचयन
संपादक : बिनोद रसाइली
पृष्ठ : 204, मूल्य : ₹370/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-875-0

काला पहाड़
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *द ब्लैक हिल*)
लेखक : ममंग दई
अनुवाद : विल्फ्रिड सिंह
पृष्ठ : 268, मूल्य : ₹380/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-321-2

नेपाली संत काव्य संकलन
संपादक : जीवन नामदुंग
पृष्ठ : 280, मूल्य : ₹380/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-190-4

भारतीय नेपाली गीत
संपादक : पूरन गिरी
पृष्ठ : 369, मूल्य : ₹500/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-221-5

भीम दहाल (विनिबंध)
लेखक : विजय बंटवा
पृष्ठ : 119, मूल्य : ₹100/-
संस्करण : 2025
ISBN : 978-93-6183-626-8

ओड़िआ

प्रथमा मौसमी ओ अन्य गल्प
लेखिका : विभावती दाश
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹110/-
ISBN : 978-93-6183-975-7

स्वाधीनोत्तर ओड़िआ क्षुद्रगल्प (खंड-5)
(ओड़िआ कहानियों का संकलन)
संपादक : गौरहरि दास
पृष्ठ : 486, मूल्य : ₹470/-
ISBN : 978-93-6183-904-7

रावणछाया : ओड़िशा र पारंपरिक छायानाटक
संपादक : गौरांग चंद्र दाश
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹200/-
ISBN : 978-93-6183-446-2

जगुआर (बाल उपन्यास)
लेखक : बीरेन्द्र महांति
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹150/-
ISBN : 978-93-6183-540-7

सेन गुरुजी
(अंग्रेज़ी विनिबंध का ओड़िआ अनुवाद)
लेखक : जी.पी. प्रधान
अनुवाद : जचिन्द्र कुमार राउत
पृष्ठ : 97, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-239-6

अमृतलाल नागर
(हिंदी विनिबंध)
लेखक : श्रीलाल शुक्ल
अनुवाद : प्रवासिनी महाकुड़
पृष्ठ : 106 मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-346-1

नागफनी बनंक इतिहास
(तमिऴ उपन्यास *कल्लिकट्टु इतिहासन*)
लेखक : वैरमुत्तु
अनुवाद : अजय कुमार पटनायक
पृष्ठ : 240, मूल्य : ₹280/-
ISBN : 978-93-6183-827-9

ओड़िआ साहित्य रे गाँधी
(संगोष्ठी आलेखों का संकलन)
संपादक : विजयानंद सिंह
पृष्ठ : 152, मूल्य : ₹220/-
ISBN : 978-93-6183-579-7

दृढ़ता भक्ति रसामृत
(ओड़िआ समालोचना)
संपादक : प्रदीप्त कुमार पांडा
पृष्ठ : 452, मूल्य : ₹540/-
ISBN : 978-93-6183-440-0

रामशंकर राय संचयन

संपादक : विजयानंद सिंह

पृष्ठ : 410, मूल्य : ₹480/-

ISBN : 978-93-6183-633-6

पुनर्मुद्रण

आज़ादी

(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *आज़ादी*)

लेखक : चमन नाहल

अनुवाद : शकुंतला बलियारसिंह

पृष्ठ : 296, मूल्य : ₹360/-

ISBN : 978-93-5548-347-8

(संशोधित प्रथम पुनर्मुद्रण)

आदिवासी मौखिक साहित्य परंपरा

(ओड़िआ निबंधों का संकलन)

संपादन : चित्रसेन पासायत

पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹120/-

ISBN : 978-81-260-2457-5

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

आशीर्वादर रंग

(असमिया उपन्यास *आशीर्वादर रंग*)

लेखक : अरुण शर्मा

अनुवाद : मोनालिसा जेना

पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-260-4214-2

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

बाघ टापुरे राति

(असमिया कहानी संग्रह *बाघे टापुर राति*)

लेखक : अपूर्व शर्मा

अनुवाद : ज्योत्स्ना बिस्वाल राउत

पृष्ठ : 172, मूल्य : ₹130/-

ISBN : 978-81-260-4087-2

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

धूम्रभा उपत्यका

(गुजराती उपन्यास *धुंधभरी खिण*)

लेखक : विनेश अंताणी

अनुवाद : प्रसांत कुमार महांति

पृष्ठ : 208, मूल्य : ₹120/-

ISBN : 978-81-260-2000-3

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

दो गज़ ज़मीन

(उर्दू उपन्यास 'दो गज़ ज़मीन')

लेखक : अब्दुस्समद

अनुवाद : हाफिज़ुल्लाह न्यूआलपुरी

पृष्ठ : 240, मूल्य : ₹130/-

ISBN : 978-81-260-2400-1

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

गुरुचरण पटनायक चयनिका

(गुरुचरण पटनायक की चयनित रचनाएँ)

संपादन : अमरेश पटनायक

पृष्ठ : 248, मूल्य : ₹220/-

ISBN : 978-93-5548-000-2

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

जदुमणि महापात्र

(विनिबंध)

लेखक : कृष्ण चंद्र प्रधान

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-93-5548-271-6

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

जोगाजोग

(बाङ्ला उपन्यास *जोगाजोग*)

लेखक : रवींद्रनाथ ठाकुर

अनुवाद : गोपीनाथ महांति

पृष्ठ : 222, मूल्य : ₹130/-

ISBN : 978-81-260-1424-8

(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

कालिंदिचरण पाणिग्रहींक निर्वाचित कविता

संपादन : विष्णुप्रिया ओट्टा

पृष्ठ : 226, मूल्य : ₹210/-

ISBN : 978-93-5548-182-5

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

कबीर वचनावली

(कबीर की कविताएँ)

लेखक : कबीर

अनुवाद : बनमाली मिश्रा

पृष्ठ : 336, मूल्य : ₹90/-

ISBN : 978-81-260-1516-0

(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

कुंतलाकुमारी चयनिका

(ओड़िआ निबंध संकलन)

संपादन : अर्चना नायक

पृष्ठ : 296, मूल्य : ₹120/-

ISBN : 978-81-260-3378-2

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

मंडन मिश्र

(संस्कृत विनिबंध)

लेखक : उदयनाथ झा 'अशोक'

अनुवाद : श्रीनिवास आचार्य

पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-81-260-4971-4

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

मोहन! हे मोहन! और अन्या कविता

(पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह *मोहन! ओ मोहन!*)

लेखक : के. शिवा रेड्डी

अनुवाद : बंगाली नंद

पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹130/-

ISBN : 978-93-90866-75-5

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

ऑक्तावियो पाज़ंक कविता

(स्पानी कविता-संग्रह)

लेखक : ऑक्तावियो पाज़

अनुवाद : संग्राम जेना

पृष्ठ : 125, मूल्य : ₹160/-

ISBN : 978-93-87989-92-4

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

ओड़िआ गल्प : कालि, आजि ओ कालि

(ओड़िआ कहानी संकलन)

संपादन : गौरहरि दास

पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹130/-

ISBN : 978-81-260-4527-3

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पाकिस्तानी कहानी माला

(उर्दू कहानी संचयन)

संपादन : इंतिज़ार हुसैन,
आसिफ फर्रुखी

अनुवाद : आशीष कुमार राय

पृष्ठ : 319, मूल्य : ₹240/-

ISBN : 978-81-260-4903-5

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

राधामोहन गडनायक (विनिबंध)

लेखक : ब्रजनाथ रथ

पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-81-260-2800-9

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

रामप्रसाद सिंह (विनिबंध)

लेखक : विजय कुमार सतपथी

पृष्ठ : 97, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-93-5548-153-5

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

स्वाधीनोत्तर ओड़िआ क्षुद्रगल्प (खंड–3)

(ओड़िआ कहानी-संचयन)

संपादन : गौरहरि दास

पृष्ठ : 432, मूल्य : ₹210/-

ISBN : 978-81-260-4496-2

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

युगांत

(मराठी महाभारत व्याख्या *युगांत*)

लेखिका : इरावती कर्वे

अनुवाद : सूर्यमणि खुंटिया

पृष्ठ : 180, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-81-260-4806-9

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

ओड़िशार आदिवासी लोकगीत संचयन

संपादन : देवाशीष पात्र

पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹150/-

ISBN : 978-93-5548-264-8

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

बिस्मृत परंपरा : ओड़िआ साहित्य रे नारी प्रतिभा (1898–1950)

(ओड़िआ निबंध संकलन)

संपादन : सच्चिदानंद महांति

पृष्ठ : 292, मूल्य : ₹370/-

ISBN : 978-81-260-1422-4

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

हरेकृष्ण महताब (विनिबंध)

लेखक : बैष्णव चरण सामल

पृष्ठ : 120, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-81-260-1102-5

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

गुरबचन सिंह तालिब
(अंग्रेज़ी में विनिबंध)
लेखक : परमजीत सिंह रमण
पृष्ठ : 125, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-468-4

फ़लसफ़ी शायर बाबा बलवंत
(संगोष्ठी आलेख)
संपादक : हरविंदर सिंह
पृष्ठ : 164, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-93-6183-035-8

नारी केंद्रित कहानियाँ (संकलन)
संपादक : धनवंत कौर
पृष्ठ : 316, मूल्य : ₹500/-
ISBN : 978-93-6183-578-0

नवीनता दी परंपरा अते परंपरा दी नवीनता
(संगोष्ठी आलेख)
संपादक : मनमोहन
पृष्ठ : 351, मूल्य : ₹750/-
ISBN : 978-93-6183-271-0

खुद नु छिलदेयाँ होयाँ
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
लेखक : नंद किशोर आचार्य
अनुवाद : भजनबीर सिंह
पृष्ठ : 280, मूल्य : ₹111/-
ISBN : 978-93-6183-259-8

अवधेश्वरी
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
लेखक : शंकर मोकाशी पुणेकर
अनुवाद : चंदर मोहन सुनेजा
पृष्ठ : 359, मूल्य : ₹600/-
ISBN : 978-93-6183-734-0

प्रेमचंद (विनिबंध)
लेखक : कमल किशोर गोयनका
अनुवाद : मनजीत सिंह
पृष्ठ : 135, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-960-3

सम्राट अशोक
(पुरस्कृत हिंदी नाटक)
लेखक : दया प्रकाश सिन्हा
अनुवाद : सतीश कुमार
पृष्ठ : 137, मूल्य : ₹260/-
ISBN : 978-93-6183-274-1

ईंट-भट्ठे दा शिल्पी
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
लेखिका : गायत्री साराफ
अनुवाद : गौरव
पृष्ठ : 183, मूल्य : ₹350/-
ISBN : 978-93-6183-625-1

फिर किसे दिन
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *स्पंदमापिनिकले नंदी*)
लेखक : सी. राधाकृष्णन
अनुवाद : मनप्रीत कौर सहोता
पृष्ठ : 608, मूल्य : ₹770/-
ISBN : 978-93-6183-964-1

राजस्थानी

श्रीलाल नथमल जोशी
(राजस्थानी लेखक पर राजस्थानी में विनिबंध)
लेखिका : विनीता शर्मा
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹100/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-922-1

नानूराम संस्कर्ता
(राजस्थानी लेखक पर हिंदी में विनिबंध)
लेखक : मदन गोपाल लढ़ा
पृष्ठ : 71, मूल्य : ₹100/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-850-7

श्रीकिशन रा छेकेड़ला दिन
(पुरस्कृत बाङ्ला कहानी-संग्रह)
लेखक : संजीव चट्टोपाध्याय
अनुवाद : पूर्णिमा मित्र
पृष्ठ : 79, मूल्य : ₹120/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-299-4

अगनकुंड में खिल्यो गुलाब
(पुरस्कृत गुजराती जीवनी)
लेखक : नारायण देसाई
अनुवाद : दुलाराम सहारण
पृष्ठ : 856, मूल्य : ₹2200/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-632-9

साँसै मायं आत्मा
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
लेखक : ज्ञानेंद्रपति
अनुवाद : नवज्योत भनोत
पृष्ठ : 356, मूल्य : ₹450/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-697-8

गोसाईं बागान रो भूत
(बाङ्ला बाल उपन्यास)
लेखक : शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय
अनुवाद : संदीप भूतोड़िया
पृष्ठ : 71, मूल्य : ₹100/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-753-1

छाब मायं आभो
(पुरस्कृत हिंदी कविता संग्रह *टोकरी में दिगंत*)
लेखिका : अनामिका
अनुवाद : मनीषा अराय सोनी
पृष्ठ : 236, मूल्य : ₹300/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-934-4

उजास
(पुरस्कृत मराठी कहानी-संग्रह *आलोक*)
लेखक : आसाराम लोमटे
अनुवाद : राजेन्द्र बारहठ
पृष्ठ : 172, मूल्य : ₹220/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-605-3

कविता री किलकारी
(राजस्थानी बाल कविता-संग्रह)
संपादन : सीमा भाटी
पृष्ठ : 165, मूल्य : ₹260/-
प्रथम संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-723-4

संस्कृत

संस्कृतकथामहोदधि (भाग–1)
संपादक : रमाकांत पांडेय
पृष्ठ : 580, मूल्य : ₹800/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-433-2

संस्कृतकथामहोदधि (भाग–2)
संपादक : रमाकांत पांडेय
पृष्ठ : 436, मूल्य : ₹600/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-524-7

आचार्य रामप्रसाद त्रिपाठी
(विनिबंध)
लेखक : सुधाकर मिश्र
पृष्ठ : 100, मूल्य : ₹100/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-324-3

साहित्यपाठोनिधिमंथनम्
संपादक : अभिराज राजेन्द्र मिश्र
पृष्ठ : 436, मूल्य : ₹1000/-
संस्करण : 2024
ISBN : 978-93-6183-358-8

संताली

डोंग सेरेन्ज (संताली गीत)
संपादक : जोबा मुर्मू
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹120/-
ISBN : 978-93-6183-831-6

राजनगर
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास 'राजनगर' का संताली अनुवाद)
लेखक : अमियभूषण मजुमदार
अनुवाद : सालखन हांसदा
पृष्ठ : 468, मूल्य : ₹370/-
ISBN : 978-93-6183-611-4

सिंधी

कांव ऐं करो पानी
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास 'कव्वे और काला पानी')
लेखक : निर्मल वर्मा
अनुवाद : सरिता शर्मा
पृष्ठ : 186, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-93-5548-481-9

कहेन खे चवण था नाटक कला
(नाट्य कला पर निबंध का अनुवाद)
लेखक : शंभु मित्र
अनुवाद : जयप्रकाश मसंद
पृष्ठ : 32, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-454-3

सिंधी लोक साहित्य जी एंथोलॉजी
(सिंधी साहित्य पर लेखों का संकलन)
संपादन : जेठो लालवाणी
पृष्ठ : 268, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-93-5548-453-6

बारोमास
(पुरस्कृत मराठी उपन्यास 'बारोमास')
लेखक : सदानंद देशमुख
अनुवाद : शोभा लालचंदाणी
पृष्ठ : 476, मूल्य : ₹550/-
ISBN : 978-93-5548-455-0

कोई बियो ना
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह 'कोई दूसरा नहीं')
अनुवाद : रश्मि रमाणी
पृष्ठ : 156, मूल्य : ₹350/-
ISBN : 978-93-6183-351-9

तमिऴ

इलक्कियम एन्राल एन्ना?
(तमिऴ साहित्य पर परिसंवाद आलेख)
संपादन : एस. कार्लोस (तमिऴवन)
पृष्ठ : 168, मूल्य : ₹240/-
ISBN : 978-93-6183-246-8

बंटीइन सूर्य दादा
(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत गुजराती कहानियाँ)
लेखिका : पुष्पा अंताणी
अनुवाद : पी. सरस्वती
पृष्ठ : 64, मूल्य : ₹130/-
ISBN : 978-93-6183-237-6

कानगथिल नलवाज़्वु
(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
लेखक : ओम गोस्वामी
अनुवाद : अलमेलु कृष्णन
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹160/-
ISBN : 978-93-6183-837-8

सीर्थिर्था निलयम
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
लेखक : मित्र सैन मीर
अनुवाद : उषा रमण
पृष्ठ : 512, मूल्य : ₹775/-
ISBN : 978-93-5548-520-5

पी.एल. सामी (विनिबंध)
लेखक : सिलंबु ना. सेलवरासु
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-401-1

थेरनिथेदुक्कपट्टा तमिऴ तुलिप्पा (हाइकु) कट्टुराइगळ
(हाइकु निबंध संकलन)
संपादन : पुदुवै युगभारती
पृष्ठ : 288, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-93-6183-086-0

सीरार्गलिन आच्ची
(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह)
लेखक : असद रज़ा
अनुवाद : पी. सरस्वती
पृष्ठ : 72, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-6183-281-9

नलिवुत्रा मरम
(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत मैथिली कहानियाँ)
लेखक : मुरलीधर झा
अनुवाद : पी. सरस्वती
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-454-7

ओरु पेन्न मानिन कान्न मलुम पीरा कथाईगळ
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
लेखक : मोहन भंडारी
अनुवाद : पेननेसन
पृष्ठ : 216, मूल्य : ₹250/-
ISBN : 978-93-6183-869-9

ओर ईल्लाईयात्रा नोडीप्पोज़हुधु
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
लेखिका : परमिता सतपथी
अनुवाद : पुदुवै युगभारती
पृष्ठ : 400, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-93-6183-057-0

इलवरासरिन कन्नवु
(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत पंजाबी कृति)
लेखक : कुलबीर सिंह सूरी
अनुवाद : अलमेलु कृष्णन
पृष्ठ : 72, मूल्य : ₹75/-
ISBN : 978-93-6183-917-7

ओलिरुम पथै

(बाल साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत सिंधी कृति)

लेखक : जगदीश लछाणी

अनुवाद : आलमेलु कृष्णन

पृष्ठ : 56, मूल्य : ₹75/-

ISBN : 978-93-6183-580-3

मणि मणियाई

(पुरस्कृत मणिपुरी कहानी-संग्रह)

लेखक : एलांगबम रजनीकांत सिंह

अनुवाद : भूमा वीरवल्ली

पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-93-6183-828-6

उन ओव्वोरु तोडुथलिलुम

(पुरस्कृत संस्कृत कविताएँ)

लेखक : हर्षदेव माधव

अनुवाद : अलमेलु कृष्णन

पृष्ठ : 160, मूल्य : ₹280/-

ISBN : 978-93-6183-798-2

सी. बालसुंदरनार (विनिबंध)

लेखक : बी. मथिवानन

पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-054-9

एन. सुब्बु रेड्डियार (विनिबंध)

लेखक : टी. विष्णुकुमारन

पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-785-2

श्री अन्नै : ओरु अवथाराथिन महिमाई

(पुरस्कृत अंग्रेज़ी जीवनी)

लेखक : के.आर. श्रीनिवास अयंगर

अनुवाद : प्रेमा नंदकुमार

पृष्ठ : 1335, मूल्य : ₹1500/-

ISBN : 978-93-6183-550-6

मु. अरुणाचलम (विनिबंध)

लेखिका : जे. सुदर्विझी

पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-699-2

पुनर्मुद्रण

परुवम

(कन्नड कालजयी उपन्यास)

लेखक : एस.एल. भैरप्पा

अनुवाद : पावन्नन

पृष्ठ : 928, मूल्य : ₹950/-

ISBN : 978-93-6183-668-8

(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

आराचार

(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)

लेखिका : के.आर. मीरा

अनुवाद : एम. सेंथिलकुमार

पृष्ठ : 784, मूल्य : ₹850/-

ISBN : 978-93-6183-644-2

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

सरस्वतीचंद्रन (गुजराती उपन्यास)

लेखक : गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी

अनुवाद : डी.के. जयरामन

पृष्ठ : 288, मूल्य : ₹465/-

ISBN : 978-93-6183-212-3

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पुथिया तमिळ इलक्किया वरलरू : खंड-1

(प्राचीन तमिळ साहित्य)

संपादन : सिर्पी बालसुब्रमणियम एवं नील पद्मनाभन

पृष्ठ : 432, मूल्य : ₹430/-

ISBN : 978-93-6183-395-3

(चौथा पुनर्मुद्रण)

पुथिया तमिळ इलक्किया वरलरू : खंड-2

(मध्यकालीन तमिळ साहित्य)

संपादन : सिर्पी बालसुब्रमणियम एवं नील पद्मनाभन

पृष्ठ : 464, मूल्य : ₹465/-

ISBN : 978-93-6183-952-8

(चौथा पुनर्मुद्रण)

पुथिया तमिळ इलक्किया वरलरू : खंड-3

(आधुनिक तमिळ साहित्य)

संपादन : सिर्पी बालसुब्रमणियम एवं नील पद्मनाभन

पृष्ठ : 976, मूल्य : ₹965/-

ISBN : 978-93-6183-192-8

(चौथा पुनर्मुद्रण)

ज़कारियाविन कथाईगळ
(मलयाळम् कहानी-संग्रह)
लेखक : पॉल ज़कारिया
अनुवाद : के.वी. जयश्री
पृष्ठ : 312 मूल्य : ₹350/-
ISBN : 978-81-260-4444-3
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

तिरुग्नानसंबंदर (विनिबंध)
लेखक : सु. वेंकटरमन
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2368-6
(चौथा पुनर्मुद्रण)

तिरुवल्लुवर (विनिबंध)
लेखक : महाराजन
अनुवाद : एन. मुरुगैयन
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-198-6
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

तोल्काप्पियर (विनिबंध)
लेखक : पेरियाकरुप्पन 'तमिझन्नल'
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-622-6
(सातवाँ पुनर्मुद्रण)

थुरवी वेंधर श्री नारायण गुरु
(विनिबंध)
लेखक : टी. भास्करन
अनुवाद : विजयकुमार कुनिस्सेरी
पृष्ठ : 152, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-4204-3
(चौथा पुनर्मुद्रण)

सूफ़ी मैग्नानी गुणांगुड़ी मस्तान साहिब
(विनिबंध)
लेखक : यू. अलीबावा
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-3161-0
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

जे. कृष्णमूर्ति (विनिबंध)
लेखिका : शांता रमेश्वर राव
अनुवाद : अक्कलूर रवि
पृष्ठ : 136, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-5399-5
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

कु. अळगिरीसामी (विनिबंध)
लेखक : वेली रंगराजन
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-2207-8
(चौथा पुनर्मुद्रण)

मरैमलै अदिगळ (विनिबंध)
लेखक : इलंकुमरन
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-7201-743-X
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

पेरियाज़वार (विनिबंध)
लेखक : एम.पी. श्रीनिवासन
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0712-5
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

थिरु. वी. का
(विनिबंध)
लेखक : एम.आर.पी. गुरुसामी
पृष्ठ : 82, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-0355-3
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

चेम्मीन
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
लेखक : तकषी शिवशंकर पिल्लै
अनुवाद : सुंदर रामसामी
पृष्ठ : 320, मूल्य : ₹365/-
ISBN : 978-93-5548-395-9
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण, 2024)

करुंकुंद्रम (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
लेखक : ममंग दई
अनुवाद : कन्नैयन दक्षिणामूर्ति
पृष्ठ : 320, मूल्य : ₹290/-
ISBN : 978-93-87567-57-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण, 2024)

नक्कीरर (विनिबंध)
लेखक : अईक्कन
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-3158-0
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

ना. पार्थसारथी (विनिबंध)
लेखक : तिरुप्पुर कृष्णन
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-81-260-1435-0
(चौथा पुनर्मुद्रण)

अरिग्नर अन्ना (विनिबंध)
लेखक : एस. षन्मुगसुंदरम
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-646-2
(आठवाँ पुनर्मुद्रण)

पेरियार ई.वे.रा. (विनिबंध)
लेखक : अरु. अज़गप्पन
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-5548-659-2
(दसवाँ पुनर्मुद्रण)

मन्नुम मनिथरुम (कन्नड उपन्यास)
लेखक : शिवराम कारंत
अनुवाद : टी.बी. सिद्दलिंगैया
पृष्ठ : 648, मूल्य : ₹700/-
ISBN : 978-93-87567-57-3
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

थट्टकम
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
लेखक : कोविलन
अनुवाद : निर्माल्य
पृष्ठ : 424, मूल्य : ₹400/-
ISBN : 978-81-260-2091-1
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

वा. रामासामी (विनिबंध)
लेखक : सु. वेंकटरमन
पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹50/-
ISBN: 978-93-5548-060-6
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

थिरुग्नानसंबंदर
(विनिबंध)
लेखक : सु. वेंकटरमन
पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-2368-6
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

वाणीदासन कविता थिरट्टु
(वाणीदासन के गीतों का संकलन)
संपादन : महाराजन
पृष्ठ : 304, मूल्य : ₹185/-
ISBN : 978-81-260-4370-5
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

जयकांतन (विनिबंध)
लेखक : के.एस. सुब्रमणियन
पृष्ठ : 80, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-93-6183-051-8
(चौथा पुनर्मुद्रण)

परिधिमार कलाकार
(विनिबंध)
लेखक : वी.एस. गोविंदन
पृष्ठ : 124, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-2463-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

मायिलाई सीनी वेंकटासामी
(विनिबंध)
लेखक : वी. आरसु
पृष्ठ : 136, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-1720-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

कानगा कन्नी
(बाल विज्ञान कथा)
लेखक : 'कल्वी' गोपालकृष्णन
पृष्ठ : 78, मूल्य : ₹45/-
ISBN : 978-93-5548-646-2
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

कु. अऴगिरिसामी (विनिबंध)
लेखक : वेली. रंगराजन
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-2207-8
(चौथा पुनर्मुद्रण)

सुफ़ी मेगनानी गुनंगुडी मस्तान साहिब (विनिबंध)
लेखक : यू अलीबाबा
पृष्ठ : 144, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-3161-0
(चौथा पुनर्मुद्रण)

सेइगुथंबी पावलर (विनिबंध)
लेखक : एम. अब्दुल करीम
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-1248-X
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

वी.ओ. चिदंबरनार (विनिबंध)
लेखक : एम. आर. आरसू
पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹50/-
ISBN : 978-81-260-1713-9
(आठवाँ पुनर्मुद्रण)

थिरिकुडारसप्पाकविरायर (विनिबंध)

लेखक : ए मुथैया

पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-93-6183-939-9

(चौथा पुनर्मुद्रण)

मुदियारासन (विनिबंध)

लेखक : आर. मोहन

पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-93-6183-219-2

(चौथा पुनर्मुद्रण)

आंडाल (विनिबंध)

लेखक : के. ए. मानवालन

पृष्ठ : 96, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-81-7201-633-6

(आठवाँ पुनर्मुद्रण)

कडिथा इलक्कियम (पत्र संकलन)

संपादन : आर. कामरासू

पृष्ठ : 320, मूल्य : ₹200/-

ISBN : 978-81-260-5333-9

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

कुऴनथई पाडलगल (बालगीत)

संपादन : पूवन्नन

पृष्ठ : 200, मूल्य : ₹115/-

ISBN : 978-81-260-4118-3

(दूसरा पुनर्मुद्रण)

उमरु पुलवर (विनिबंध)

लेखक : सी. नैनार मोहम्मद

पृष्ठ : 128, मूल्य : ₹50/-

ISBN : 978-81-260-0895-4

(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

कु. अऴागिरीसामी कथाईगल (अऴागिरीसामी की कहानियाँ)

संपादन : कि. राजनारायणन

ISBN : 978-81-260-1490-3

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

पथु पाट्टु आराइची

संपादन : मा. रसमणिक्कनर

पृष्ठ : 688, मूल्य : ₹520/-

ISBN : 978-81-260-5198-4

(तीसरा पुनर्मुद्रण)

तेलुगु

कालिपटनम रामाराव

(विनिबंध)

लेखक : वी. वी. ना. मूर्ति

पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-384-7

पामुलपार्थी वेंकट नरसिंह राव

(विनिबंध)

लेखक : अप्पारसु कृष्णाराव

पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-

पहला संस्करण : 2025

ISBN : 978-93-6183-115-7

पुल्लेला श्रीरामचंद्रुदु

(विनिबंध)

लेखिका : पी. शशिरेखा

पृष्ठ : 118, मूल्य : ₹100/-

पहला संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-757-9

पर्व

(एस.एल. भैरप्पा के कन्नड उपन्यास का अनुवाद)

अनुवाद : जी. लक्ष्मीनारायण

पृष्ठ : 788, मूल्य : ₹700/-

संस्करण : तीसरा, 2024

ISBN : 81-260-1556-X

(पुनर्मुद्रण)

मरेवरु लेरु

(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह 'कोई दूसरा नहीं' का अनुवाद)

लेखक : कुँवर नारायण

अनुवाद : सी. भवानी देवी

पृष्ठ : 176, मूल्य : ₹185/-

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN : 978-93-6183-523-0

उर्दू

पंडित हरिचंद अख्तर

(विनिबंध)

लेखक : पंकज पराशर

पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-81-19499-33-5

राजिंदर मनचंदा बानी

(विनिबंध)

लेखक : जावेद अनवर

पृष्ठ : 112, मूल्य : ₹100/-

ISBN : 978-93-6183-400-4

पंडित मेला राम वफ़ा
(विनिबंध)
लेखक : टी.आर. रैना
पृष्ठ : 92, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-848-4

इस्मत चुगताई (विनिबंध)
लेखक : एम. असदुद्दीन
अंग्रेज़ी से उर्दू अनुवाद : जावेद हसन
पृष्ठ : 129, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-873-6

शुजा खावर (विनिबंध)
लेखक : फ़ारूक़ अरगली
पृष्ठ : 88, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-269-7

नैय्यर मसूद (विनिबंध)
लेखक : शुएब निज़ाम
पृष्ठ : 95, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-069-3

क़ाज़ी अब्दु सत्तार (विनिबंध)
लेखक : हुमायूँ अशरफ़
पृष्ठ : 104, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-881-1

पत्थर फेंक रहा हूँ
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह
का उर्दू अनुवाद)
लेखक : चंद्रकांत देवताले
उर्दू अनुवाद : चंद्रभान ख़याल
पृष्ठ : 213, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-81-19499-67-0

विनायक (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
लेखक : रमेश चंद्र शाह
उर्दू अनुवाद : असद रज़ा
पृष्ठ : 312, मूल्य : ₹380/-
ISBN : 978-93-6183-340-3

ताज़ा हवा की ताबिशें
(उर्दू कविता-संग्रह)
लेखक : चंद्रभान ख़याल
पृष्ठ : 116, मूल्य : ₹220/-
ISBN : 978-93-6183-096-9

द ब्लैक हिल
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
लेखक : ममंग दई
उर्दू अनुवाद : फरहत उस्मानी
पृष्ठ : 360, मूल्य : ₹500/-
ISBN : 978-93-6183-864-4

एक तारीख़ अहद
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कथेतर साहित्य 'एन एरा ऑफ़ डार्कनेस' का उर्दू अनुवाद)
लेखक : शशि थरूर
उर्दू अनुवाद : अज़ीज़ परिहार
पृष्ठ : 435, मूल्य : ₹550/-
ISBN : 978-93-6183-495-0

टोंग लिंग एक्सप्रेस
(बाल कहानियों का संग्रह)
अंग्रेज़ी अनुवाद : निवेदिता सेन
उर्दू अनुवाद : रईस सिद्दीकी
पृष्ठ : 248, मूल्य : ₹300/-
ISBN : 978-93-6183-883-5

गोपीचंद नारंग (विनिबंध)
लेखक : अज़ीज़ परिहार
पृष्ठ : 72, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-992-4

वारिस किरमानी (विनिबंध)
लेखक : सगीर इफ़राहीम
पृष्ठ : 105, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-822-4

आनंद नारायण मुल्ला (विनिबंध)
लेखक : ज़हीर अली
पृष्ठ : 95, मूल्य : ₹100/-
ISBN : 978-93-6183-773-9

मैं मेले का वाकिफ़कार
(पुरस्कृत डोगरी कविता-संग्रह)
लेखक : केहरि सिंह मधुकर
उर्दू अनुवाद : पूरन चंद्र शर्मा
पृष्ठ : 94, मूल्य : ₹150/-
ISBN : 978-93-6183-575-9

वार्षिक लेखा
2024-2025

वार्षिक लेखा 2024-2025

तुलनपत्र

आय एवं व्यय लेखा

वित्तीय विवरण का अनुसूची निर्माण

प्राप्ति और भुगतान लेखा

लेखा पर टिप्पणियाँ

सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र

सामान्य भविष्य निधि का आय एवं व्यय लेखा

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश की अनुसूची

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

साहित्य अकादेमी
तुलन–पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2025

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	5,04,05,744	2,98,96,223
आरक्षित और अधिशेष	2	-	-
नियत/अक्षय निधि	3	40,68,62,771	39,11,25,464
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	9,18,21,946	8,71,93,295
चालू दायित्व और उपबंध	7	19,17,59,393	9,48,86,209
योग		**74,08,49,854**	**60,31,01,191**
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	28,98,43,623	25,30,52,961
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	1,00,00,000	1,00,00,000
नियत	10	-	-
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	44,10,06,231	34,00,48,230
विविध व्यय (एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)			
योग		**74,08,49,854**	**60,31,01,191**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	24		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	25		

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(अनामिका सिंह)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2025	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	4,53,997	2,78,327
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	47,41,68,466	52,52,54,706
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	1,59,050	1,63,351
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	5,02,73,444	12,21,13,016
प्राप्त आय	17	27,21,874	43,26,508
अन्य आय	18	5,64,502	49,64,351
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	(5,20,045)	30,57,512
योग (ए)		**52,78,21,288**	**66,01,57,770**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	18,39,58,952	16,52,17,069
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	32,29,02,060	39,64,90,558
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	22	5,73,243	4,21,377
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय			
ब्याज	23	-	-
मूल्य मूल्यह्रास (अनुसूची 8 के अनुरूप वर्ष के अंत में कुल योग)			
योग (बी)		**50,74,34,255**	**56,21,29,004**
आय पर व्यय का आधिक्य (ए–बी)		2,03,87,033	9,80,28,766
पूर्व अवधि मदें		-	-
अतिरिक्त साधारण मदें–सेवानिवृत्ति/मूल्यह्रास		1,22,488	(75,99,072)
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) पूँजी निधि में अग्रेनीत		2,05,09,521	9,04,29,694
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	24	-	-
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	25	-	-

हमारे समक्ष प्रस्तुत पुस्तकों और वाउचरों के आधार पर संकलित।

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(अनामिका सिंह)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2025	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण, यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–1

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
आय और व्यय लेखा		
वर्ष के आरंभ में शेष	2,98,96,223	(6,05,33,471)
जमा संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
घटा कुल आय/व्यय का शेष स्थानांतरित	2,05,09,521	9,04,29,694
आय और व्यय लेखा से	-	-
एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट		
वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)	**5,04,05,744**	**2,98,96,223**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–2

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
आरक्षित और अधिशेष		
1. आरक्षित पूँजी		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
2. आरक्षित पुनर्मूल्यांकन		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
3. विशेष आरक्षित		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित		
आदिशेष	-	-
वर्ष के दौरान आय की अधिकता / (घाटा)	-	-
जमा : सामान्य रिज़र्व बंद		
संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
जमा : पूर्व अवधि समायोजन	-	-
घटा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–3

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
नियत/अक्षय निधियाँ	संलग्न संलग्नक के अनुसार		
(ए) निधियों का आदि शेष		39,11,25,464	37,55,76,591
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i दान/अनुदान			
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति		2,40,00,000	2,02,12,856
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय		-	-
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			
बैंक ब्याज		-	-
प्रकाशनों/वीडियो फ़िल्में/काग़ज़		-	-
पुस्तकालय एवं भेंट की गई पुस्तकें		3,08,928	1,71,240
अन्य जमा/समायोजन		39,146	30,57,512
योग (बी)		2,43,48,074	2,34,41,608
योग (ए+बी)		**41,54,73,538**	**39,90,18,199**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i **पूँजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्ति		-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि		23,016	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन		-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास		80,28,561	78,92,735
अन्य		5,59,191	-
योग		86,10,768	78,92,735
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि		-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण		-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज		-	-
अन्य प्रशासनिक व्यय		-	-
योग		-	-
योग (सी)		**86,10,768**	**78,92,735**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)		**40,68,62,771**	**39,11,25,464**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	31 मार्च 2025
नियत/अक्षय निधि	चालू वर्ष		
(ए) निधियों का आदि शेष	**22,12,83,513**	**16,98,41,951**	**39,11,25,464**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i **दान/अनुदान**	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	2,40,00,000	-	**2,40,00,000**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	-
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**	-	-	-
बैंक ब्याज	-	-	-
प्रकाशन/वीडियो/फ़िल्में/काग़ज़	-	-	-
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	3,08,928	-	**3,08,928**
अन्य जमा/समायोजन	39,146	-	**39,146**
योग (बी)	**2,43,48,074**	-	**2,43,48,074**
योग (ए+बी)	**24,56,31,587**	**16,98,41,951**	**41,54,73,538**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i **पूंजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	23,016	-	**23,016**
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	80,28,561	-	**80,28,561**
अन्य जमा/समायोजन	-	5,59,191	**5,59,191**
योग	**80,51,577**	**5,59,191**	**86,10,768**
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-
योग	-	-	-
योग (सी)	**80,51,577**	**5,59,191**	**86,10,768**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**23,75,80,011**	**16,92,82,760**	**40,68,62,771**

जारी– अनुसूची–3, अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	31 मार्च 2024
	गत वर्ष		
(ए) निधियों का आदि शेष	**20,87,92,152**	**16,67,84,439**	**37,55,76,591**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i **दान/अनुदान**	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	2,02,12,856	-	**2,02,12,856**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	3,562,275
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			-
बैंक ब्याज	-	-	103,707
प्रकाशन/वीडियो/फ़िल्में/कागज़	-	-	-
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	1,71,240	-	**1,71,240**
अन्य जमा/समायोजन	-	30,57,512	**30,57,512**
योग (बी)	**2,03,84,096**	**30,57,512**	**2,34,41,608**
योग (ए+बी)	**22,91,76,248**	**16,98,41,951**	**39,90,18,199**
(सी) **निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए**			
i **पूंजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	78,92,735	-	**78,92,735**
अन्य जमा/समायोजन	-	-	-
योग	**78,92,735**	-	**78,92,735**
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-
योग	-	-	-
योग (सी)	**78,92,735**	-	**78,92,735**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**22,12,83,513**	**16,98,41,951**	**39,11,25,464**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–4

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 **वित्तीय संस्थाएँ**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4 **बैंक**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ग) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
(घ) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–5

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 वित्तीय संस्थाएँ	-	-
4 बैंक :		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 आवधिक जमा	-	-
8 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची–6

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
आस्थगित जमा दायित्व :		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) उपदान के प्रावधान	5,58,10,084	5,20,78,351
(ग) अवकाश भुनाने के प्रावधान	3,60,11,862	3,51,14,944
(घ) अन्य	-	-
योग	**9,18,21,946.00**	**8,71,93,295**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची– 7

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
चालू दायित्व और उपबंध		
(ए) चालू दायित्व		
1 स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
पुस्तकालय के सदस्य	1,35,04,093	1,21,21,342
अन्य	43,33,907	12,41,907
2 विभिन्न लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	-
(ख) अन्य	2,57,41,486	1,47,79,815
(ग) गतावधि चेक व्युत्क्रमण	2,42,651	2,00,409
3 प्राप्त अग्रिम		
(क) ग्राहकों से अग्रिम	6,95,04,349	1,21,87,767
4 प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(क) सुरक्षित ऋण / उधार	-	-
(ख) असुरक्षित ऋण / उधार	-	-
5 कानूनी दायित्व :		
(क) अतिशोध्य	-	-
(ख) अन्य	5,036	53,328
6 अन्य चालू दायित्व :		
(क) सा.भ.नि. लेखा	-	-
(ख) देय पेंशन	7,54,518	7,98,510
(ग) देय वेतन	3,82,656	4,74,968
(घ) अन्य कॉण्ट्रा भुगतान	438	438
7 अव्ययित अनुदान शेष	4,87,50,000	3,09,06,948
योग (ए)	**16,32,19,134**	**7,27,65,432**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–7

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
चालू दायित्व और उपबंध		
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	30,00,000	13,20,436
3. अधिवर्षिता / पेंशन	21,00,000	21,00,000
4. संचित अवकाश भुनाना	2,47,695	2,47,695
5. व्यापार वारंटी / दावे	3,08,160	5,00,000
6. अन्य देय लेखापरीक्षा शुल्क	-	1,70,188
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	1,33,88,861	1,13,63,572
8. उपदान के प्रावदान	92,11,143	61,34,486
9. अवकाश भुनाने के प्रावधान	2,84,400	2,84,400
10. पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	-	-
योग (बी)	**2,85,40,259**	**2,21,20,777**
योग (ए+बी)	**19,17,59,393**	**9,48,86,209**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण		कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
		मूल्यह्रास की दर %	वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
ए.	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1	भूमि	-	86,95,884	-		-	86,95,884	-	-	-	86,95,884	86,95,884	
2	भवन	10%	46,250,559	-	-	-	4,62,50,559	3,54,50,407	10,80,015	-	3,65,30,422	97,20,137	1,08,00,152
3	सयंत्र और तंत्र	15%	15,92,85	-	-	-	1,59,285	93,583	9,855	-	1,03,438	55,847	65,702
4	वाहन	15%	34,04,431	-	-	-	34,04,431	1,99,614	-	-	22,73,287	11,31,144	13,30,758
5	फ़र्नीचर और जुड़नार	15%	48,530,694	522,080	1,80,99,254	23016	6,71,29,012	3,63,31,061	23,12,999	-	3,86,44,060	2,84,84,952	1,21,99,633
6	कार्यालय उपकरण	15%	44,516,097	223,900	18,11,486	-	4,65,51,483	3,42,07,510	10,20,119	-	3,52,27,629	1,13,23,854	1,03,08,587
7	कंप्यूटर/परिधीय	40%	27,361,954	1,161,279	22,68,177	-	3,07,91,410	2,38,30,268	23,30,821	-	2,61,61,089	46,30,321	35,31,686
8	विद्युतीय प्रस्थान	10%	94,22,24	2,487	75,973	-	10,20,684	7,85,510	19,719	-	8,05,229	2,15,455	1,56,714
9	पुस्तकालय में पुस्तकें	40%	45,110,127	181,858	5,76,848	-	4,58,68,833	4,32,50,769	9,31,856	-	4,41,82,625	16,86,208	18,59,358
10	पुस्तकालय पुस्तकें–भेंट स्वरूप	0%	10,19,907	-	3,08,929	-	13,28,836	5,58,121	1,23,563	-	6,81,684	6,47,152	4,61,786
	योग		**225,991,162**	**20,91,604**	**2,31,40,667**	**23,016**	**25,12,00,417**	**17,65,80,902**	**80,28,561**	**-**	**18,46,09,463**	**6,65,90,954**	**4,94,10,260**
बी.	**पूँजीगत कार्य प्रगति पर/ पूँजीगत अग्रिम**		203,642,701	13,174,241	64,35,727	-	2,32,52,669	-	-	-	-	22,32,52,669	20,36,42,701
	कुल योग		**203,642,701**	**13,174,241**	**64,35,727**	**-**	**22,32,52,669**	**-**	**-**	**-**	**-**	**22,32,52,669**	**20,36,42,701**
	योग (ए+बी)		**429,633,863**	**19,609,968**	**2,95,76,394**	**23,016**	**47,44,53,086**	**17,65,80,902**	**80,28,561**	**-**	**18,46,09,463**	**28,98,43,623**	**25,30,52,961**
	गत वर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		205,607,066	1,63,97,203	39,86,893	-	22,59,91,162	16,37,43,395	1,28,37,507	-	17,65,80,902	4,94,10,260	4,18,63,671
	पूँजीगत कार्य प्रगति पर		159,484,465	2,05,77,658	2,35,80,578	-	20,36,42,701	-	-	-	-	20,36,42,701	15,94,84,465
	गत वर्ष का कुल योग		**365,091,531**	**3,69,74,861**	**2,75,67,471**	**-**	**42,96,33,863**	**16,37,43,395**	**1,28,37,507**	**-**	**17,65,80,902**	**25,30,52,961**	**20,13,48,136**
1	भूमि												
	फ़्रीहोल्ड	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे पर दिया	0%	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	8,695,884	-	-	8,695,884	8,695,884
	कुल योग (1)		**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**86,95,884**	**-**	**-**	**-**	**-**	**86,95,884**	**86,95,884**
2	भवन												
	फ़्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे की भूमि पर	10%	10,025,384	-	-	-	1,00,25,384	63,01,243	3,72,414	-	66,73,657	33,51,727	37,24,141
	स्वामित्व फ़्लैट्स/परिसर	10%	36,225,175	-	-	-	3,62,25,175	2,91,49,164	7,07,601	-	2,98,56,765	63,68,410	70,76,011
	कुल योग (2)		**46,250,559**	**-**	**-**	**-**	**4,62,50,559**	**3,54,50,407**	**10,80,015**	**-**	**3,65,30,422**	**97,20,137**	**1,08,00,152**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–8, अनुलग्नक

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	मूल्यह्रास की दर %	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
3	**संयंत्र मशीनरी और उपकरण**												
	तकनीकी उपकरण	15%	159,285	-	-	-	1,59,285	93,583	9,855	-	1,03,438	55,847	65,702
	कुल योग (3)		**159,285**	**-**	**-**	**-**	**1,59,285**	**93,583**	**9,855**	**-**	**1,03,438**	**55,847**	**65,702**
4	**वाहन**												
	मोटर, कार/स्कूटर	15%	3,404,431	-	-	-	34,04,431	20,73,673	1,99,614	-	22,73,287	11,31,144	13,30,758
	कुल योग (4)		**3,404,431**	**-**	**-**	**-**	**34,04,431**	**20,73,673**	**1,99,614**	**-**	**22,73,287**	**11,31,144**	**13,30,758**
5	**फ़र्नीचर, जुड़नार**												
	फ़र्नीचर	10%	38,070,014	301,535	17,071,905	-	5,54,43,854	2,88,99,398	18,00,850	-	3,07,00,248	2,47,43,606	91,70,616
	स्थायी कैबिनेट्स, अलमारियाँ आदि	10%	884,511	24,00	607,110	-	15,15,621	1,66,556	1,04,551	-	2,71,107	12,44,514	7,17,955
	वोल्टेज स्टेबलाइजर्स, यूपीएस सिस्टम	15%	76,504	97,738	233,858	23,016	3,85,084	38,042	37,969	-	76,011	3,09,073	38,462
	जल वितरक	15%	52,260	27,455	-	79,715		26,483	7,985	-	34,468	45,247	25,777
	जल शोधक	15%	24,298	-	-	-	24,298	13,517	1,617	-	15,134	9,164	10,781
	एयर कूलर	15%	35,872	11,960	-	-	47,832	19,956	4,181	-	24,137	23,695	15,916
	एयर कंडीशनर	15%	7,673,924	58,992	186,381	-	79,19,297	68,07,021	1,52,863	-	69,59,884	9,59,413	8,66,903
	नादप्रभु केम्पेगोड़ा मेट्रो स्टेशन पर किताब घर	15%	1,713,311	-	-	-	17,13,311	36,00,88	20,2983	-	56,3071	11,50,240	13,53,223
	कुल योग (5)		**48,530,694**	**522,080**	**18,099,254**	**23,016**	**6,71,29,012**	**3,63,31,061**	**23,12,999**	**-**	**3,86,44,060**	**2,84,84,952**	**1,21,99,633**
6	**कार्यालय उपकरण**												
	कार्यालय उपकरण	15%	43,763,100	223,900	1,425,625	-	17,13,311	3,60,088	2,02,983	-	5,63,071	11,50,240	13,53,223
	फैक्स मशीन, स्कैनर	15%	25,263	-	-	-	4,54,12,625	3,38,87,604	9,26,217	-	3,48,13,821	1,05,98,804	98,75,496
	उपस्थिति मशीन	15%	204,819	-	28,669	-	25,263	14,517	1,612	-	16,129	9,134	10,746
	फ़ोटो कॉपियर	15%	175,000	-	279,990	-	2,33,488	1,03,112	17,406	-	1,20,518	1,12,970	1,01,707
	सीसीटीवी कैमरे	15%	109,999	-	59,602	-	4,54,990	90,500	33,674	-	1,24,174	3,30,816	84,500
	मोबाइल फ़ोन	15%	20,000	-	-	-	1,69,601	64,293	11,326	-	75,619	93,982	45,706
	कूलर	15%	31,392	-	-	-	20,000	11,458	1,281	-	12,739	7,261	8,542
	हार्ड डिस्क	15%	115,485	-	17,600	-	31,392	8,711	3,402	-	12,113	19,279	22,681
	नाद प्रभू केंपेगोड़ा मैट्रो स्टेशन पर किताब घर	15%	-	-	-	-	1,33,085	12,130	16,823	-	28,953	1,04,132	1,03,355
	वैक्यूम क्लीनर	15%	71,039	-	-	-	71,039	15,185	8,378	-	23,563	47,476	55,854
	कुल योग (6)		**44,516,097**	**223,900**	**1,811,486**	**-**	**4,65,51,483**	**3,42,07,510**	**10,20,119**	**-**	**3,52,27,629**	**1,13,23,854**	**1,03,08,587**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–8, अनुलग्नक

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	मूल्यह्रास की दर %	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
7	**कंप्यूटर/परिधीय**												
	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर परिधीय	40%	2,68,43,204	11,61,279	2 2,68,177	-	3,02,72,660	2,33,44,124	23,17,779	-	2,56,61,903	46,10,757	34,99,080
	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	40%	5,18,750	-	-	-	5,18,750	4,86,144	13,042	-	4,99,186	19,564	32,606
	कुल योग (7)					-	**3,07,91,410**	**2,38,30,268**	**23,30,821**	-	**2,61,61,089**	**46,30,321**	**35,31,686**
8	**विद्युतीय अधिष्ठान**												
	विद्युतीय अधिष्ठान	10%	9,42,224	2,487	7 5,973	-	10,20,684	7,85,510	19,719	-	8,05,229	2,15,455	1,56,714
	कुल योग (8)					-	**10,20,684**	**7,85,510**	**19,719**	-	**8,05,229**	**2,15,455**	**1,56,714**
9	**पुस्तकालय पुस्तकें**												
	पुस्तकालय पुस्तकें	40%	9,42,224	2,487	75,973	-	4,58,68,833	4,32,50,769	9,31,856	-	4,41,82,625	16,86,208	18,59,358
	कुल योग (9)		**4,51,10,127**	**1,81,858**	**5,76,848**	-	**4,58,68,833**	**4,32,50,769**	**9,31,856**	-	**4,41,82,625**	**16,86,208**	**18,59,358**
10	पुस्तकालय पुस्तकें/उपहार	40%	10,19,907	-	3,08,929	-	13,28,836	5,58,121	1,23,563	-	6,81,684	6,47,152	4,61,786
	कुल योग (10)		**10,19,907**	1,81,858	5,76,848	-	**13,28,836**	**5,58,121**	**1,23,563**	-	**6,81,684**	**6,47,152**	**4,61,786**
	कुल योग		22,59,91,162	20,91,604	23,140,667	**23,016**	**25,12,00,417**	**17,65,80,902**	**80,28,561**	-	**18,46,09,463**	**6,65,90,954**	**4,94,10,260**
बी.	**पूँजीगत कार्य प्रगति पर पूँजीगत अग्रिम**												
	अन्य		-	-	-	-	-	-	-	-	-		
	शौचालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	मॉडयूलर वर्कस्टेशन		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	ए.सी. प्लांट पुस्तकालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	प्रोर्टबल शौचालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	किताब घर एवं चार दीवारी निर्माण आदि बेंगळूरफ		-	24,16,105	-	-	-	-	-	-	24,16,105	24,16,105	
	सिविल कार्य (कोलकाता)		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	डक्टेबल ए.सी.		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	द्वारका स्थित भवन निर्माण		12,00,06,349	-	-	-	12,00,06,349	-	-	-	-	12,00,06,349	12,00,06,349
	बेंगळूरु स्थित भवन निर्माण		8,12,20,247	1,22,74,241	62,35,727	-	9,97,30,215	-	-	-	-	9,97,30,215	8,12,20,247
	दिल्ली जल बोर्ड की पानी की लाइन का स्थानांतरण	-	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-
	दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन का स्थानांतरण	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	
	गैस आधारित स्प्रिंकलर सिस्टम		-	9,00,000	2,00,000	-	11,00,000	-	-	-	-	11,00,000	-
	कुल योग		**20,36,42,701**	**1,31,74,241**	**64,35,727**	-	**22,32,52,669**	-	-	-	-	**22,32,52,669**	**20,36,42,701**
	चालू वर्ष का योग		**4 2,96,33,863**	**1,52,65,845**	**2,95,76,394**	**23,016**	**47,44,53,086**	**17,65,80,902**	**80,28,561**	-	**18,46,09,463**	**28,98,43,623**	**25,30,52,961**
				4,48,19,223									

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–9

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025		31 मार्च 2024	
<u>नियत/अक्षय निधियों से निवेश</u>	राजस्व	योग	राजस्व	योग
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-		
3 शेयर	-	-		
4 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-	-	
5 समानुषंगी और संयुक्त उद्यम	-	-	-	
6 **अन्य**	-	-	-	
– आवधिक जमा–संग्रह निधि/सा.भ.नि.	10,000,000	10,000,000	10,000,000	10,000,000
योग	**10,000,000**	**10,000,000**	**10,000,000**	**10,000,000**

अनुसूची–10

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025		31 मार्च 2024	
<u>निवेश–अन्य</u> **योग**	राजस्व	योग	राजस्व	योग
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-
3 शेयर	-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स	-	-	-	-
5 समानुषंगी तथा संयुक्त उद्यम	-	-	-	-
6 अन्य	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–11

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025		31 मार्च 2024	
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	**राजस्व**	**योग**	**राजस्व**	**योग**
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ				
1 वस्तुसूची				
(क) स्टोर एंड स्पेयर्स	-	-	-	-
(ख) लूज टूल्स	-	-	-	-
(ग) प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक	-			
तैयार माल	-	-	-	-
अकादेमी प्रकाशन	16,10,84,700	16,10,84,700	14,92,68,934	14,92,68,934
अपरोक्ष प्रकाशन	1,08,385	1,08,385	1,08,545	1,08,545
वीडियो फ़िल्में एवं सी.डी.	7,08,050	7,08,050	7,15,850	7,15,850
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-
काग़ज़ : अपने पास	48,77,565	48,77,565	1,36,46,374	1,36,46,374
काग़ज़ : मुद्रणलयों में	25,43,206	25,43,206	61,02,248	61,02,248
2 विविध लेनदार				
(क) छः माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	72,66,523	72,66,523	79,55,714	79,55,714
(ख) अन्य	37,01,165	37,01,165	77,65,414	77,65,414
3 हाथ में शेष धन या बकाया राशि				
(जिसमें चेक/ड्राफ्ट रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल हैं)	6,17,171	6,17,171	5,44,458	5,44,458
4 बैंक में शेष धन				
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :				
–चालू खातों पर	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-
–बचत खातों पर	15,34,44,055	15,34,44,055	3,03,62,489	3,03,62,489
(ख) ग़ैर–अनुसूचित बैंकों के साथ :				
–चालू खातों पर	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-
–बचत खातों पर	-	-	-	-
5 डाकघर बकाया राशि	-	-	-	-
बचत खातों में				
योग (ए)	**33,43,50,820**	**33,43,50,820**	**21,64,70,026**	**21,64,70,026**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2025

अनुसूची–11

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025		31 मार्च 2024	
ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ आदि (जारी)	**राजस्व**	**योग**	**राजस्व**	**योग**
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ				
1 ऋण				
(क) स्टॉफ	2,74,369	2,74,369	2,78,469	2,78,469
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो समान गतिविधियों/कार्यों में संलिप्त हैं	-	-	-	-
(ग) **अन्य–**सा.भ.नि. अग्रिम	-	-	-	-
2 अग्रिम और अन्य राशियों जिन्हें नकदी अथवा सदृश्य अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है				
(क) पूंजी खातों पर	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-
(ग) **अन्य**				
स्रोतों से कर कटौती	3,05,079	3,05,079	6,38,638	6,38,638
प्रतिभूति जमा	27,75,396	27,75,396	47,37,297	47,37,297
पूर्व भुगतान खर्चे	4,81,625	4,81,625	12,01,712	12,01,712
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	78,04,201	78,04,201	34,33,523	34,33,523
अन्य वसूली योग्य	-	-		-
–कर्मचारियों को अग्रिम	1,09,970	1,09,970	35,676	35,676
–बाहरी पार्टी को अग्रिम	75,34,147	75,34,147	81,91,100	81,91,100
–पूंजीगत अग्रिम	8,54,60,131	8,54,60,131	10,39,70,099	10,39,70,099
3 प्रोद्भूत आय				
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	19,10,493	19,10,493	10,91,690	10,91,690
(ख) निवेशों पर–अन्य	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-
4 प्राप्त करने योग्य दावे	-	-	-	-
योग (बी)	**10,66,55,411**	**10,66,55,411**	**12,35,78,204**	**12,35,78,204**
(योग) (ए+बी)	**44,10,06,231**	**44,10,06,231**	**34,00,48,230**	**34,00,48,230**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–12

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
बिक्री / सेवाओं से प्राप्त आय		
1. **बिक्री से प्राप्त आय**		
(क) तैयार माल की बिक्री	-	-
(ख) कच्चे माल की बिक्री	-	-
(ग) कचचे स्क्रैप की बिक्री	-	-
2. **सेवाओं से आय**		
(क) सभागार रखरखाव रसीद	4,39,000	2,60,000
(ख) फ़ोटोकॉपी शुल्क	14,997	18,327
योग	**4,53,997**	**2,78,327**

अनुसूची–13

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
अनुदान / इमदाद (अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
1. **भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा**		
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	17,33,66,919	16,73,45,119
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	26,93,94,600	22,01,59,000
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	2,40,00,000	3,00,00,000
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	5,00,000	5,00,000
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	-	5,26,50,998
–अकादेमी सेल–उन्मेष	-	23,30,163
–अकादेमी सेल–राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेषा	-	8,88,450
–अकादेमी सेल–सेम स्काई जी20 काव्य संकलन	-	-
–विशेष सेल–रामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	4,87,50,000	-
6 **अन्य**		
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	30,906,947	
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(4,87,50,000)	(3,09,06,947)
घटा : वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(2,40,00,000)	(2,02,12,856)
घटा : वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य प्रगति पर अग्रिम में ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	-	-
घटा : संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**47,41,68,465.80**	**52,52,54,706**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–14

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
शुल्क / अंशदान		
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. वार्षिक शुल्क / अंशदान	-	-
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	-
4. परामर्श शुल्क	-	-
5. **अन्य**		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	1,59,050	1,63,351
बुक क्लब सदस्यता शुल्क	-	-
योग	**1,59,050**	**1,63,351**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–15

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
बैंक की एफ.डी.आर. निवेश से प्राप्त ब्याज राशियाँ	-	-
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित	-	-
योग	**-**	**-**
नियत / अक्षय पूंजी में स्थानांतरित		

विवरण	अन्य निवेश	
	चालू वर्ष	गत वर्ष
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित		
योग	**-**	**-**
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–16

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
रॉयल्टी, प्रकाशनों इत्यादि से प्राप्त आय		
1 रॉयल्टी से प्राप्त आय	-	29,485
2 अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	4,95,43,556	12,13,69,310
3 अन्य	-	-
(ग) भारतीय साहित्य पर ऑनलाइन सामग्री की बिक्री (जे.एस.टी.ओ.आर.)	7,29,888	7,14,221
योग	**5,02,73,444**	**12,21,13,016**

अनुसूची–17

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
प्राप्त ब्याज		
1 **सशर्त जमा**		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	11,34,370	27,97,788
(ख) ग़ैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	8,18,803	7,63,916
2 **बचत ख़ातों पर**		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	4,54,361	5,09,713
(ख) ग़ैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत खाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3 **ऋणों पर**		
(क) कर्मचारी / स्टॉफ़	3,11,488	2,55,091
(ख) अन्य	-	-
4 **ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ**		
(क) आयकर रिफ़ंड पर ब्याज	2,852	-
योग	**27,21,874**	**43,26,508**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–18

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
अन्य आय		
1 **परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय**		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ		-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) ग़ैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	-	4,816
2 निर्यात को प्रोत्साहन	-	-
3 विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4 **विविध आय**		
(क) अन्य विविध प्राप्तियाँ	1,48,602	32,64,444
(ख) कर्मचारियों का सी.जी.एच.एस. अंशदान	4,15,900	4,05,950
(ग) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	-	11,49,141
(घ) नेताजी सुभाषचंद्र बोस	-	1,40,000
योग	**5,64,502**	**49,64,351**

अनुसूची–19

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार/चढ़ाव)		
(ए) अंत शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	16,19,01,135	15,00,93,329
–कच्चा माल (काग़ज़)	74,20,771	1,97,48,622
(बी) आदि शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	(15,00,93,329)	(13,40,13,003)
–कच्चा माल (काग़ज़)	(1,97,48,622)	(3,27,71,436)
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए–बी)	**(5,20,045)**	**30,57,512**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–20

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
स्थापना व्यय			
(क)	वेतन, मज़दूरी और भत्ते	14,08,05,639	13,02,07,459
(ख)	एनपीएस में योगदान	79,46,253	68,37,279
(ग)	कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर हुए ख़र्च तथा आवाधिक लाभ	2,94,71,845	2,25,30,622
(घ)	अन्य निधियों में योगदान	-	-
(ङ)	कर्मचारी कल्याण व्यय	-	-
(च)	**अन्य**		
	–चिकित्सा सुविधाएँ	43,31,526	44,26,848
	–अवकाश यात्रा सुविधा	14,03,689	12,14,861
	योग	**18,39,58,952**	**16,52,17,069**

अनुसूची– 21

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	2,69,400	6,10,948
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	25,48,147	17,25,673
(ग) दूरभाष एवं डाक–व्यय	29,74,829	28,27,031
(घ) पेंशन	7,01,30,323	6,53,69,282
(ङ) अन्य आकस्मिक व्यय	3,97,883	3,57,909
(च) वाहन अनुरक्षण	1,90,233	2,11,690
(छ) किराया, परिकर एवं कर	3,50,12,602	3,58,25,246
(ज) प्रचार एवं प्रसार गतिविधियों के लिए व्यय	20,55,36,859	27,94,82,155
(झ) अन्य संयुक्त सेवाएँ	21,58,029	35,34,106
(ञ) कानूनी शुल्क	31,45,738	30,16,274
(ट) यात्रा ख़र्च	1,33,751	2,50,813
(ठ) व्यवसायिक शुल्क	3,81,940	1,72,548
(ड) पीओए सीजीएचसी नई दिल्ली	22,326	94,114
(ढ) जीपीएफ ब्याज आय में कमी	-	30,12,769
योग	**32,29,02,060**	**39,64,90,558**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2025	31 मार्च 2024
वेतन, मजदूरी और भत्ते		
(क) मूल वेतन	6,97,81,724	6,82,41,696
(ख) महँगाई भत्ता	3,70,24,339	3,15,17,820
(ग) मकान किराया	2,15,58,728	1,85,04,793
(घ) यात्रा भत्ता	92,24,225	88,78,644
(ङ) बच्चों का शिक्षा भत्ता	14,08,592	13,50,854
(च) व्यक्तिगत वेतन	2,800	53,800
(छ) वर्दी भत्ता	16,59,140	1,70,000
(ज) परिलब्धियाँ	-	14,21,640.00
(झ) नकद भत्ता	11,449	13,285
(ञ) स्टाफ़ वेतन एवं भत्ते–कार्यालय का सुधार	1,30,060	-
(ट) वेतन बकाया	4,582	54,927
कुल योग	**14,08,05,639**	**13,02,07,459**
पेंशन		
(क) पेंशन	6,72,75,963	4,88,11,808
(ख) पेंशनभोगियों को महँगाई भत्ता	2,64,604	1,41,61,627
(ग) पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता	-	5,20,300
(घ) अतिरिक्त पेंशन	-	9,75,235
(ङ) पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	25,89,756	9,00,312
कुल योग	**7,01,30,323**	**6,53,69,282**
कर्मचारी की सेवानिवृत्ति लाभ पर व्यय		
(क) उपदान	1,43,76,194	65,39,321
(ख) पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन	65,93,877	1,11,11,635
(ग) अवकाश नकदीकरण	79,39,929	41,61,102
(घ) अर्धवेतन अवकाश	5,61,845	7,18,564
कुल योग	**2,94,71,845**	**2,25,30,622**
किराया, परिकर एवं कर		
(क) वार्षिक रखरखाव अनुबंध	10,38,415	12,96,930
(ख) बिजली/पानी शुल्क	45,93,708	41,73,421
(ग) किराया	2,93,80,479	3,03,54,895
कुल योग	**3,50,12,602**	**3,58,25,246**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–21, अनुलग्नक

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष (2024–2025)				गत वर्ष (2023–2024)			
	गतिविधियों का संवर्द्धन एवं प्रसार	सामान्य	एन.ई.	टी.एस.पी.	योग	सामान्य	एन.ई.	टी.एस.पी.	योग
ए	**अकादेमी सेल**								
01	बाल साहित्य पुरस्कार	51,41,147	4,59,019	99,373	**56,99,539**	43,08,577	4,63,686	1,36,445	**49,08,708**
02	राजभाषा कार्यक्रम	4,35,316	-	-	**4,35,316**	3,66,415	-	-	**3,66,415**
03	कुमारस्वामी फ़ैलोशिप	33,322	-	-	**33,322**	3,85,061	-	-	**3,85,061**
04	भाषाओं का विकास	-	-	30,67,843	**30,67,843**	-	-	25,31,925	**25,31,925**
05	भारतीय काव्य का विश्वकोश	6,69,098	-	-	**6,69,098**	7,04,199	-	-	**7,04,199**
06	फ़ैलोशिप	5,47,147	-	-	**5,47,147**	13,570	-	-	**13,570**
07	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	1,81,38,531	14,56,643	2,80,401	**1,98,75,575**	1,90,57,213	13,00,871	9,68,655	**2,13,26,739**
08	आधुनिकीकरण एवं सुधार	2,55,31,070	-	-	**2,55,31,070**	2,17,71,561	-	-	**2,17,71,561**
09	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	1,18,55,621	1,14,065	-	**1,19,69,686**	1,51,24,038	1,80,180	-	**1,53,04,218**
10	प्रकाशन योजनाएँ	3,60,34,687	4,40,658	46,647	**3,65,21,992**	5,94,86,300	34,28,969	79,733	**6,29,95,002**
11	प्रेमचंद्र फ़ैलोशिप	1,01,629	-	-	**1,01,629**	1,26,978	-	-	**1,26,978**
12	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	1,72,053	-	-	**1,72,053**	1,27,913	-	-	**1,27,913**
13	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	4,91,37,889	7,07,118	3,74,221	**5,02,19,228**	7,26,55,311	6,26,260	5,17,649	**7,37,99,220**
14	अनुवाद योजनाएँ	64,86,320	9,66,803	1,11,054	**75,64,177**	39,35,796	9,81,460	83,710	**50,00,966**
15	पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	6,45,062	-	-	**6,45,062**	14,40,804	-	-	**14,40,804**
16	युवा पुरस्कार	48,29,739	3,92,601	99,231	**53,21,571**	41,23,739	3,73,980	1,55,814	**46,53,533**
17	ट्रांसलेटिंग इंडिया	5,29,032	-	-	**5,29,032**	12,52,453	-	-	**12,52,453**
18	टैगोर नेशनल फैलोशिप	39,174	-	-	**39,174**	29,530	-	-	**29,530**
19	योग	-	-	-	-	23,30,163	-	-	**23,30,163**
20	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	46,094			**46,094**	5,26,50,998			**5,26,50,998**
21	राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष	59,39,314			**59,39,314**	62,86,204			**62,86,204**
22	नेताजी सुभाष चंद्र बोस	-			-	8,88,450			**8,88,450**
23	अकादेमियाँ सेल–उन्मेष	3,00,00,000			**3,00,00,000**				
	कुल योग	**19,63,12,245**	**45,36,907**	**40,78,770**	**20,49,27,922**	**26,70,65,273**	**73,55,406**	**44,73,931**	**27,88,94,610**
बी	**एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना**								
19	एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना	6,08,937	-	-	**6,08,937**	5,87,545	-	-	**5,87,545**
	कुल योग	**19,69,21,182**	**45,36,907**	**40,78,770**	**20,55,36,859**	**26,76,52,818**	**73,55,406**	**44,73,931**	**27,94,82,155**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–22

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान, इमदाद आदि पर ब्याज		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान		
i) राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	5,73,243	4,21,377
ii) राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता के लिए एन.ई.	-	-
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद	-	-
योग	**5,73,243**	**4,21,377**

अनुसूची–23

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वित्त शुल्क		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2024–25	गत वर्ष 2023–24	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2024–2025	गत वर्ष 2023–24
1. आदि शेष				**II. अनुदान प्राप्त**			
(क) हाथ रोकड़		5,44,457	5,68,670	**(क) भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा**			
(चैक/ड्राफ्ट और टिकट सहित)				–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		16,33,081	1,76,54,881
(ख) बैंक में जमा				–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		5,400	-
चालू खातों में		-	-	–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		60,00,000	-
जमा खातों में		-	-	–अकादेमी सेल–राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष		-	44,19,837
बचत खातों में		3,03,62,489	10,19,32,109		-	-	
2. प्राप्त अनुदान				**2. व्यय**			
(क) भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा				(क) स्थापना व्यय (अनुसूची 20 के अनुरूप)	**10**	17,37,30,966	16,74,79,427
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		17,50,00,000	18,50,00,000	(ख) प्रशासनिक व्यय (अनुसूची 21 के अनुरूप)	**11**	11,45,76,965	11,52,80,680
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		26,94,00,000	22,01,59,000	(ग) पूर्व अविध के व्याय	**11A**	6,34,537	-
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		3,00,00,000	3,00,00,000				
–अकादेमी सेल–टी.एस.पी. राजस्व सामान्य		5,00,000	5,00,000	**3. विभिन्न योजनाओं/परियोजनाओं के अंतर्गत भुगतान**			
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना		-	5,26,50,998	(क) परियोजनाएँ/योजनाएँ			
–अकादेमी सेल–उन्मेष		-	-	अकादेमी राजस्व	**12**	17,43,28,993	19,99,31,731
–अकादेमी सेल–पुस्तकायन		-	-	राज्य अकादेमियों और अन्य संस्थानों को सहायता	**12**	3,60,804	4,21,377
–अकादेमी सेल–राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन		-	-	अकादेमी राजस्व एनई	**12**	43,43,307	70,82,117
–अकादेमी सेल–संस्कृत समुन्मेष		-	-	अकादेमी सेल–टीएसपी. राजस्व सामान्य	**12**	39,73,866	44,32,849
–अकादेमी सेल–द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन			67,50,000	अकादेमी स्वच्छता कार्य योजना	**12**	5,00,000	4,96,314
–संविधान की 75वीं वर्षगांठ का स्मरणोत्सव		4,87,50,000	8,88,450	अकादेमी उन्मेष	**12**	46,094	5,26,50,998
3. निवेशों से आय		-	-	अकादेमी पुस्तकायन	**12**	-	2330163
(क) नियत/अक्षय निधियों		-	-	अकादेमी राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष	**12**	-	888450
(ख)स्वपूंजी (अन्य निवेश)				अकादेमी द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन	**12**	-	-
				4. निवेश और जमा की गई राशियाँ			
4. प्राप्त ब्याज				(क) नियत/अक्षय निधियों से		-	-
(क) बैंकों में जमा राशि पर ब्याज	**1**	14,27,765	30,44,883	(ख) अपनी निधि से (निवेश–अन्य)		-	-
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	**1**	3,11,488	2,55,485	**5. स्थायी परिसंपत्तियों पर व्यय तथा पूंजी पर अधारित कार्य प्रगति पत्र**		-	-
5. अन्य आय				(क) स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	**13**	2,38,00,000	81,78,476
(क) माल/सेवाओं की बिक्री से आय	**2**	11,83,885	9,92,548	(ख) कार्य प्रगति पर व्यय की गई पूँजी	**13**	2,00,000	-
(ख) फीस एवं अंशदान से आय	**3**	1,59,050	1,63,351	**6. कार्य प्रगति पर घन/ऋणों की वापसी**			
(ग) रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	**4**	5,41,52,884	5,04,60,250	(क) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को			
(घ) विविध आय/प्राप्तियाँ	**5**	5,64,502	49,64,351	(ख) राज्य सरकार को		-	-
				(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध कराने वालों को		-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2024–25	गत वर्ष 2023–24	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2024–2025	गत वर्ष 2023–24
6. उधार ली गई राशि							
कोई अन्य रसीद				**7. वित्त शुल्क (ब्याज)**			
(क) कर्मचारियों द्वारा चुकाए गए ऋण	6	53,600	3,01,600	**8. अन्य भुगतान**	14	49,500	73,234
(ख) वापसी योग जमा	7	64,36,652	10,08,116	(क) कर्मचारियों को अग्रिम	15	-	33,069
(ग) लिया हुआ रसीदें और भुगतान	8	-	438	(ख) सिक्योरिटी डिपॉजिट दिया गया	16	1,90,57,454	5,50,94,671
(घ) अन्य देय	9	5,84,55,420	83,09,969	(ग) अन्य (वसूली योग्य)		-	-
				9. सामान्य आरक्षित		-	5,94,996
				10. समापन शेष			
				(क) हाथ में रोकड़		6,17,171	5,44,457
				(ख) बैंक में जमा राशि			
				चेक/ड्राफ्ट और स्टाम्प सहित			
				(i) चालू खातों में			
				(ii) जमा खातों में			
				(iii) बचत खातों में		15,34,44,055	3,03,62,489
कुल योग	**67,73,02,192**		**66,79,50,217**	**कुल योग**		**67,73,02,192**	**66,79,50,217**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(अनामिका सिंह)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2025	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक–असाधारण

31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
असाधारण वस्तुएँ		
जमा :		
पूर्व अवधि की आय	900,000	-
घटा :		
पूर्व अवधि मूल्यह्रास	-	4,944,772
पूर्व अवधि की व्यय	(777,512)	2,654,300
अन्य असाधारण मदें	-	-
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (ग़ैर–वित्त पोषित)	-	-
(क) सेवानिवृत्ति उपदान के लिए प्रावधान	-	-
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण के लिए प्रावधान	-	-
योग	122,488	7,599,072

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज प्राप्त	1		
संग्रह निधि पर ब्याज		9,73,404	25,35,170
बचत बैंक खाते पर ब्याज		4,54,361	5,09,713
कुल योग		**14,27,765**	**30,44,883**
सावधि जमा पर ब्याज		3,11,488	2,55,485
बैंक बचत खाते पर ब्याज		-	-
कुल		**3,11,488**	**2,55,485**
कुल योग		**17,39,253**	**33,00,368**
माल और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त व्यय	2		
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय			
सभागार रखरखाव प्राप्ति		4,39,000	2,60,000
फ़ोटोकॉपी शुल्क		14,997	18,327
इंडियन लिटरेचर (जेएसटीओआर)		-	-
ऑनलाइन साहित्य सामग्री की बिक्री से प्राप्ति		7,29,888	7,14,221
योग		**11,83,885**	**9,92,548**
शुल्क और सदस्यता से प्राप्त आय	3		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क व्यय		1,59,050	1,63,351
बुक क्लब सदस्यता		-	-
योग		**1,59,050**	**1,63,351**
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त व्यय	4		
रॉयल्टी से प्राप्त व्यय		-	29,485
अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय		5,41,52,884	5,04,30,765
योग		**5,41,52,884**	**5,04,60,250**
विविध प्राप्तियाँ	5		
खोई पुस्तक पर पुस्तकालय द्वारा वसूली		-	4,816
विविध प्राप्तियाँ		1,48,602	32,64,444
सीजीएचएस में कर्मचारी योगदान की वसूली		4,15,900	4,05,950
उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र		-	11,49,141
नेताजी सुभाष चंद्र बोस		-	1,40,000
योग		**5,64,502**	**49,64,351**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	**6**		
स्टाफ कंप्यूटर अग्रिम		2,000	50,000
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		51,600	2,51,600
योग		**53,600**	**3,01,600**
प्रतिदेय जमा राशियाँ	**7**		
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता से प्राप्त		14,39,251	3,51,800
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता को प्रतिदेय		(56,500)	(59,300)
वर्ष के दौरान प्राप्त बयान राशि		42,56,910	37,74,574
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		(11,64,910)	(30,58,958)
प्राप्य सुरक्षा जमा			
वर्ष के दौरान वापस की गई जमा राशि		23,81,928	-
वर्ष के दौरान जमा की गई राशि		(4,20,027)	-
योग		**64,36,652**	**10,08,116**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान	**8**		
जी.एस.एल.आई.सी.			
प्राप्ति		8,59,009	13,67,682
भुगतान		(8,82,881)	(13,67,244)
कुल योग		**(23,872)**	**438**
एल.आई.सी.			
प्राप्ति		2,22,412	2,19,517
भुगतान		(1,98,540)	(2,19,517)
कुल योग		**23,872**	**-**
जीपीएफ ऋण की वसूली			
प्राप्ति		13,64,000	14,98,550
भुगतान		(13,64,000)	(14,98,550)
कुल योग		**-**	**438**
अन्य देय			
देनदारों से प्राप्त अग्रिम	**9**		
वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		7,59,04,311	2,91,95,265
वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		(1,79,46,239)	(1,78,48,659)
कुल योग		**5,79,58,072**	**1,13,46,606**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
वर्ष के दौरान देनदारों से वसूली			
वर्ष के दौरान देय		1,46,75,798	3,20,13,076
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(1,41,78,450)	(3,50,80,203)
कुल योग		**4,97,348**	**(30,67,127)**
बाहरी पार्टियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		-	3,790
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	**3,790**
अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		4,63,22,000	7,17,04,385
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(4,63,22,000)	(7,17,04,385)
कुल योग		-	-
पूँजी अग्रिम			
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा		-	26,700
निटाये गए		-	**26,700**
वर्ष के दौरान छोड़ गए			
कुल योग		**5,84,55,420**	**83,09,969**
स्थापना व्यय	10		
स्टाफ वेतन और भत्ते			
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
मूल वेतन		6,97,81,724	6,82,41,696
महँगाई भत्ता		3,66,71,237	3,10,58,956
मकान किराया भत्ता		2,15,58,728	1,85,04,793
यात्रा भत्ता		91,94,087	88,39,431
बच्चों का शिक्षा भत्ता		14,08,592	13,50,854
व्यक्तिगत वेतन		2,800	53,800
वर्दी भत्ता		16,59,140	1,70,000
परिलब्धियाँ		-	14,21,640
नकद भत्ता		11,449	13,285
स्टाफ वेतन और भत्ते–कार्यालय का सुधार		1,30,060	-
एन.पी.एस. को अंशदान		79,19,146	68,04,937
वेतन बकाया		4,582	54,927
कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवांत हितलाभ पर व्यय			
उपदान		86,19,172	89,56,590
पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन		65,93,877	1,11,11,635
अर्धवेतन अवकाश		5,61,845	7,18,564
अवकाश नकदीकरण		39,66,356	45,60,899
अवकाश चिकित्सा सुविधाएँ		42,44,482	44,02,559
अवकाश यात्रा रियायत		14,03,689	12,14,861
योग		**17,37,30,966**	**16,74,79,427**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
प्रशासनिक व्यय	11		
लेखा परीक्षा तथा लेखा शुल्क		2,69,400	1,45,268
प्रकाशन एवं लेखन सामग्री		23,83,843	16,52,805
टेलीफ़ोन तथा डाक शुल्क		27,60,944	27,16,427
अन्य आकस्मिक व्यय		3,75,097	3,57,909
वाहनों का रखरखाव		1,74,765	1,94,048
पेंशन			
पेंशन		6,72,52,647	4,88,11,808
पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ता		-	1,41,61,627
पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता		-	5,20,300
अतिरिक्त पेंशन		-	9,75,235
पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा		-	-
किराया, दरें और कर			
वार्षिक रखरखाव अनुबंध		17,98,787	7,42,565
बिजली/पानी का शुल्क		8,59,081	12,13,156
किराया		44,58,807	41,73,224
अन्य संयुक्त सेवाएँ		2,87,97,370	3,00,48,192
कानूनी शुल्क		21,54,096	32,80,150
यात्रा खर्चे		30,09,448	30,16,274
व्यावसायिक शुल्क		67,734	2,15,263
स.भ.नि. ब्याज आय की कमी		1,92,620	43,660
जीपीएफ ब्याज आय की कमी		-	30,12,769
पीओएसीजीएचएस नई दिल्ली		22,326	-
योग		**11,45,76,965**	**11,52,80,680**
प्रशासनिक व्यय	11ए		
पूर्व अवधि का व्यय		6,34,537	-
योग		**6,34,537**	-
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	12		
सामान्य			
01 बाल साहित्य पुरस्कार		50,73,027	42,77,577
02 राजभाषा कार्यक्रम		4,12,560	3,63,915
03 भाषाओं का विकास		6,40,298	-
04 फ़ेलोशिप		5,35,264	13,570
05 साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		1,60,69,643	1,74,11,202

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
06	आधुनिकीकरण एवं सुधार		2,34,74,115	2,05,93,692
07	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि		1,08,99,389	1,39,80,150
08	प्रकाशन योजनाएँ		2,32,12,544	5,55,49,925
09	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना		1,60,053	1,27,913
10	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ		4,65,79,333	6,97,40,400
11	अनुवाद योजनाएँ		57,39,382	36,61,741
12	पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं में सुधार		3,85,722	14,16,013
13	युवा पुरस्कार		45,11,625	40,39,739
14	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	6,79,993
15	भारतीय अनुवाद		5,29,032	12,50,453
16	टैगोर राष्ट्रीय फ़ैलोशिप		39,174	29,530
17	**योग**		-	-
18	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		33,322	3,82,736
19	कुमारस्वामी फ़ैलोशिप		97,475	1,26,978
20	प्रेमचंद फ़ैलोशिप		59,37,035	62,86,204
21	पुस्तकायन		3,00,00,000	-
	कुल योग		**17,43,28,993**	**19,99,31,731**
	राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता			
	राज्य अकादेमियों को सहायता		3,60,804	4,21,377
	राज्य अकादेमियों को सहायता तथा अन्य संस्थानों के लिए एन.ई.		-	-
	कुल योग		**3,60,804**	**4,21,377**
	एन.ई.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		4,48,019	4,63,686
02	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		13,96,293	12,65,371
03	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		1,14,065	1,46,164
04	प्रकाशन योजनाएँ		3,94,582	32,36,574
05	लेखकों को सेवाएँ		7,02,463	6,25,260
06	अनुवाद योजनाएँ		9,31,284	9,71,082
07	युवा पुरस्कार		3,56,601	3,73,980
	कुल योग		**43,43,307**	**70,82,117**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	टी.एस.पी.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		98,373	1,36,445
02	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		30,51,993	25,31,925
03	बिक्री का प्रचार (विज्ञापन) आदि		2,68,401	9,68,655
04	प्रकाशन योजनाएँ		46,647	46,651
05	लेखकों को सेवाएँ		3,74,221	5,17,649
06	अनुवाद योजनाएँ		50,000	83,710
07	युवा पुरस्कार		84,231	1,47,814
	कुल योग		**39,73,866**	**44,32,849**
	एस.ए.पी.			
	स्वच्छता कार्य योजना		5,00,000	4,96,314
	कुल योग		**5,00,000**	**4,96,314**
	उन्मेष			
	उन्मेष		46,094	5,26,50,998
	कुल योग		**46,094**	**5,26,50,998**
	राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेष			
	राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन संस्कृत समुन्मेषा		-	23,30,163
	कुल योग		-	**23,30,163**
	द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन			
	द सेम स्काई जी20 काव्य संकलन		-	**888450**
	कुल योग		-	**8,88,450**
	विशेष सेल–भारत महोत्सव			
	भारत महोत्सव–इज़राइल		-	-
	भारत महोत्सव–स्पेन		-	-
	भारत महोत्सव–थाईलैंड		-	-
	भारत महोत्सव–नेपाल		-	-
	कुल योग		-	-
	विशेष सेल–श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी			
	श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
	कुल योग		**18,35,53,064**	**26,82,33,999**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13		
	वाहन		-	9,91,276
	फर्नीचर और जुड़नार		1,83,36,739	29,90,632
	कार्यालय उपकरण		20,19,220	12,30,919
	कंप्यूटर / परिधीय		26,46,021	22,79,302
	विद्युतीय संस्थापन		78,460	(5,341)
	पुस्तकालय की पुस्तकें		7,19,560	6,91,688
	योग		**2,38,00,000**	**81,78,476**
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय			
	कैपिटल डब्ल्यूआईपी		2,00,000	-
	कुल योग		**2,00,000**	-
	कार्य प्रगति पर व्यय			
	कार्य प्रगति पर व्यय		-	-
	कुल योग		**2,40,00,000**	**81,78,476**
	स्टॉफ़ (परिसंपत्तियों) को प्रदत्त ऋण	14		
	स्टॉफ़ कंप्यूटर अग्रिम		49,500	50,000
	स्टॉफ़ वाहन अग्रिम		-	-
	स्टॉफ़ भवन निर्माण अग्रिम		-	23,234
	योग		**49,500**	**73,234**
	वसूली योग्य प्रतिभूति जमा	15		
	प्राप्ति योग्य प्रतिभूति जमा			
	वर्ष के दौरान जमा राशि		-	5,81,075
	वर्ष के दौरान जमा राशि प्रतिदाय		-	5,48,006
	योग		**33,069**	**33,069**
	अन्य प्राप्ति योग्य	16		
	देनदारों द्वारा दिए गए अग्रिम			
	वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
	योग		-	-
	बाहरी पार्टी को दिया गया अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
	योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	अग्रिम पूंजी			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	3,46,00,000
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
	योग		**-**	**3,46,00,000**
	अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		65,37,777	58,64,843
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(64,63,483)	(58,70,922)
	योग		**74,294**	**(6,079)**
	अस्थायी स्थानांतरण			
	भुगतान		-	-
	प्राप्ति		-	-
	योग		**-**	**-**
	ब्याज प्रोद्भूत			
	वर्ष के दौरान देय		-	-
	वर्ष के दौरान दिए गए		-	-
	योग		**-**	**-**
	वसूली योग्य कर			
	वसूली योग्य आयकर		-	34,807
	वर्ष के दौरान प्रतिदाय आयकर		-	-
	योग		**-**	**34,807**
	विविध लेनदार			
	वर्ष के दौरान देय		2,11,92,980	2,43,79,951
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(96,54,032)	(61,62,195)
	योग		**1,15,38,948**	**1,82,17,756**
	अन्य चालू दायित्व			
	वर्ष के दौरान देय		21,31,95,282	19,49,41,750
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(21,20,45,161)	(19,39,77,080)
	योग		**11,50,121**	**9,64,670**
	टी.डी.एस./आयकर			
	प्राप्ति		1,64,84,523	2,05,30,932
	भुगतान		(1,64,77,277)	(2,05,26,815)
	योग		**7,246**	**4,117**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	जी.एस.टी.			
	प्राप्ति		10,94,988	9,81,883
	भुगतान		(10,68,213)	(9,81,883)
	योग		**26,775**	**-**
	जी.एस.टी. (टी.डी.एस.)			
	प्राप्ति		(12,86,241)	(24,81,282)
	भुगतान		12,86,669	24,81,282
	योग		**428**	**-**
	सा.भ.नि.			
	प्राप्ति		-	-
	भुगतान		-	-
	योग		**-**	**-**
	एन.पी.एस.			
	प्राप्ति		1,37,37,865	1,18,23,356
	भुगतान		(1,36,43,095)	(1,17,45,668)
	योग		**94,770**	**77,688**
	अर्जित रॉयल्टी			
	अर्जित रॉयल्टी		13,20,436	-
	योग		**13,20,436**	**-**
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य			
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य		43,62,811	-
	योग		**43,62,811**	**-**
	पूर्वदत्त व्यय			
	वर्ष के दौरान जारी		4,81,625	12,01,712
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
	कुल योग		**4,81,625**	**12,01,712**
	योग		**1,90,57,454**	**5,50,94,671**

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र : यथातिथि 31–03–2025

2023–2024	दायित्व	2024–2025		2023–2024	परिसम्पत्तियाँ	2024–2025	
	सा. भ. नि. खाता				**निवेश (लागत पर)**		
9,67,10,384	01–04–2024 को शेष	**9,52,15,564**			**आवधिक जमा एवं बॉण्ड** (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			1,98,951	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	1,98,951	
1,48,56,000	कर्मचारियों का सा.भ.नि. में अंशदान	1,33,65,000		2,32,23,152	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	1,49,30,728	
-	अन्य परिवर्धन	-		5,54,24,391	यूको बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	5,54,24,391	
63,18,007	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	62,12,454		**7,88,46,494**			**7,05,54,070**
2,11,74,007		**1,95,77,454**					
	वर्ष के दौरान कटौती :				**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.**		
1,48,00,000	अंतिम निकासी	1,49,72,418		6,80,295	01–04–2024 को शेष	64,12,064	
-	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-		57,31,769	जमा : वर्ष के दौरान प्रोदभूत ब्याज	55,87,075	
78,68,827	पूर्ण और अंतिम भुगतान	1,26,26,610		-	घटा : परिपक्वता पर प्राप्त ब्याज	-	
2,26,68,827		2,75,99,028		**64,12,064**			**1,19,99,139**
9,52,15,564					**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस**		
				8,455	01–04–2024 को शेष	20,225	
	नई पेंशन योजना			11,770	जमा : 2024–25 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	10,781	
1,52,384	01–04–2023 को शेष	**1,52,384**	**87,193,990**	-	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	-	
-	**वर्ष के दौरान परिवर्धन :**			**20,225**			**31,006**
-	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	-					
-	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	एन.पी.एस. आवधिक पर अर्जित/प्राप्त ब्याज	-		31,00,894	01–04–2024 को शेष	22,32,344	
-		-		6,30,000	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	12,58,000	
	वर्ष के दौरान कटौती :			-	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
-	01–04–2023 को पी.एफ.आर.डी.ए. में शेष	-		14,98,550	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	14,66,000	
-	घटा : राशि पी.एफ.आर.डी.ए. में स्थानांतरित	-		**22,32,344**			**20,24,344**
		-					
	परिवर्धन				**अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.**		
-	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-		96,464	01–04–2024 को शेष	2,71,184	
				(96,464)	घटा : वर्ष के दौरान स्रोत पर टैक्स कटौती	(2,71,184)	
-	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	-		94,681	जमा : साहित्य अकादेमी से प्राप्ति योग्य राशि	2,71,184	
				1,76,503	जमा : वर्ष के दौरान स्रोत पर कर कटौती	1,61,243	**4,32,427**
-		-		**2,71,184**			
1,52,384		-	**1,52,384**				
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा				**बैंक शेष**		
(30,12,769)	01–04–2023 का शेष	66,878		76,52,515	एस.बी. खाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	23,02,430	**23,02,430**
30,12,769	जमा : अंशदान में अधिशेष स्थानांतरण	-		**76,52,515**			
66,878	घटा : आय पर व्यय का आधिक्य	(69,836)					
66,878			**(2,958)**				
9,54,34,826	**योग**		**8,73,43,416**	**9,54,34,826**	**योग**		**8,73,43,416**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(अनामिका सिंह)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2025	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2024 से 31–03–2025

2023–2024	प्राप्तियाँ	2024–2025		2023–2024	भुगतान	2024–2025	
63,18,007	सा.भ.नि. के ग्राहकों को ब्याज दिया गया	62,41,242		59,63,741	<u>निवेश पर ब्याज</u> निवेश पर प्राप्त ब्याज	5,984,282	
138	बैंक शुल्क	7,248		12,954	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	14,628	
-	अन्य कटौतियाँ	-		4,08,328	स्वीप खाते पर प्राप्त ब्याज	17,97,44	
				-	**अन्य अधिशेष**		
63,18,145			**62,48,490**	**63,85,023**			**6,178,654**
	<u>आय से अधिक व्यय</u>	(69,836)					
66,878	टी/एफ की होने वाली हानि		**(69,836)**				
63,85,023	**योग**		**61,78,654**	**63,85,023**	**योग**		**6,178,654**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(अनामिका सिंह)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2025	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2024 से 31–03–2025

2023–2024	प्राप्तियाँ	2024–2025		2023–2024	भुगतान	2024–2025	
	आदि बैंक शेष				**सा.भ.नि. खाता**		
1,11,37,675	केनरा बैंक	76,52,515		1,48,00,000	अंतिम निकासी	1,49,40,418	
-	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	-	**76,52,515**	-	अग्रिम का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
1,11,37,675				78,68,827	पूर्ण एवं अंतिम निबटान	1,26,26,610	**2,75,67,028**
				2,26,68,827			
	सा.भ.नि. लेखा						
1,78,68,769	कर्मचारियों का अंशदान	1,33,82,000			**राष्ट्रीय पेंशन योजना**		
-	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	-		-	एन.पी.एस. में निवेश	-	
-	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	-	**1,33,82,000**	-	कर्मचारी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
1,78,68,769				-	अकादेमी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
	ग्राहकों को अग्रिम						
14,98,550	वर्ष के दौरान ग्राहकों को पुनः दी गई अग्रिम राशि	14,14,000			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	कर्मचारी अंशदान	-		6,30,000	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	12,55,000	
-	आवधिक जमा पर ब्याज	-	**14,14,000**	-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	**12,55,000**
14,98,550				**6,30,000**			
	प्राप्त ब्याज				**निवेश**		
3,87,212	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–केनरा बैंक	2,72,759		-	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	-	
-	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–यूको बैंक	-		-	सा.भ.नि. निवेश पर प्राप्त ब्याज	2,50,00,002	
61,015	बैंक बचत खातों पर ब्याज	1,94,372		-	वर्ष के दौरान एन.पी.एस. में निवेश	-	**2,50,00,002**
-	आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**4,67,131**	-			
4,48,227					**साहित्य अकादेमी से वसूली योग राशि**		
	निवेश			1,742	स्रोत पर काटा गया कर	27,297	**27,297**
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	3,32,72,147		**1,742**			
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-					
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–आई.डी.बी.आई.	-					
-	फलैक्सी बॉण्ड	-	**3,32,72,147**		**अन्य व्यय**		
-				-	सा.भ.नि. ग्राहक को दिया गया आकलित ब्याज	-	
				137	बैंक शुल्क	28,788	**36,036**
	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित			**137**		7,248	
-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	-				
-					**बैंक अंत शेष**		
		-		76,52,515	केनरा बैंक	23,02,430	
				-			**23,02,430**
				76,52,515			
3,09,53,221	**योग**		**5,61,87,793**	**3,09,53,221**	**योग**		**5,61,87,793**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(अनामिका सिंह)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 4 जून 2025	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची : यथातिथि 31 मार्च 2025

निवेश									ब्याज		
क्र. सं.	एफ्.डी.संख्या	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	ब्याज दर%	31–03–2025 को ब्याज का अंकित मूल्य	परिपक्वता मूल्य	प्राप्ति योग्य सकल ब्याज	31–03–2024 तक प्रोद्भूत	2024–2025 के दौरान प्रोद्भूत	प्रोद्भूत ब्याज पर टी.डी. एस. कटौती	31–03–2025 को कुल प्रोद्भूत ब्याज
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/92	09/02/2024	09/02/2025	6.9%	1,98,951	2,12,933	13,982	1,772	**11,979**	1,198	-
	योग 1				-	-	-	-	**11,979**	**1,198**	-
	सा.भ.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
7	एफ.डी.आर. सं. 18250310115923	19/10/2022	19/10/2024	7.20%	3,00,00,000	3,46,02,181	46,02,181	32,75,079	**13,67,518**	-	-
8	एफ.डी.आर. सं. 18250310115930	19/10/2022	19/10/2024	7.20%	2,54,24,391	2,93,24,646	39,00,255	27,75,563	**11,24,692**	-	-
	एफ.डी.आर. सं. 182503110140758	21/10/2024	19/09/2025	7.30%	2,93,24,646	3,13,31,165	20,06,519		**9,62,924**	-	9,62,924
	एफ.डी.आर. सं. 182503110140857	28/10/2024	26/09/2025	7.30%	2,99,00,000	3,19,45,887	20,45,887		**9,39,995**	-	9,39,995
	एफ.डी.आर. सं. 182503110140949	28/10/2024	27/09/2025	7.30%	47,42,597	50,67,106	3,24,509		**18,789**	-	-
	योग 2				**11,93,91,634**	**13,22,70,985**	**1,28,79,351**	**60,50,642**	**44,13,918**	**-**	**19,02,919**
	सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 140062447153/1	19/10/2022	15/08/2024	7.00%	1,16,11,576	1,31,79,397	15,67,821	7,72,510	3,33,011	33,301	-
2	एफ.डी.आर. सं. 140062447420/1	19/10/2022	15/08/2024	7.00%	1,18,16,449	1,31,79,397	13,62,948	7,72,510	3,33,011	33,301	-
3	एफ.डी.आर. सं. 140169397829/1	15/08/2024	08/11/2024	-	1,30,14,775	1,31,43,586	1,28,811	-	**1,28,811**	**12,881**	-
4	एफ.डी.आर. सं. 140169398129/1	15/08/2024	08/11/2024	-	1,30,14,775	1,31,43,586	1,28,811	-	**1,28,811**	**12,881**	-
5	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/93	09/02/2025	09/02/2026	6.85%	2,11,504	2,26,368	14,864	-	2,093	209	1,884
6	एफ.डी.आर. सं. 14000548738/2	08/11/2024	26/01/2026	7.40%	1,00,00,000	1,09,33,140	9,33,140	-	2,75,064	29,372	2,45,692
7	एफ.डी.आर. सं. 14000548738/1	08/11/2024	26/01/2026	7.40%	1,00,00,000	1,09,33,140	9,33,140	-	2,75,064	29,372	2,45,692
8	एफ.डी.आर. सं. 140194388638/2	08/11/2024	26/01/2026	7.40%	25,00,000	27,28,389	2,28,389	-	**15,157**	**1,514**	-
9	एफ.डी.आर. सं. 140194388638/1	08/11/2024	26/01/2026	7.40%	25,00,000	27,28,389	2,28,389	-	67,363	7,193	60,170
	योग 3			-	**7,46,69,079**	**8,01,95,392**	**55,26,313**	**15,45,020**	**15,58,385**	**1,60,024**	**5,53,438**
	कुल योग (1+2+3)			-	**19,40,60,713**	**21,24,66,377**	**1,84,05,664**	**75,95,662**	**59,84,282**	**1,61,222**	**24,56,357**

31-03-2025 को समाप्त वर्ष के लिए वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

31-03-2025 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भूमिका

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करने वाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करने वाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालांकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का 1955-56 का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1956 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नै में एक उप-कार्यालय है।

अनुसूची-24- महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परपिाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) गैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूंजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यहास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचारा गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय को उस वर्ष से 5 वर्षों की अवधि में बट्टे खाते में डाल दिया गया है, जिस वर्ष से व्यय आरंभ किया गया था।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधार पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्रा ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधार पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु सेवा-निवृत्ति पर देय उपदान के प्रति देयता प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर प्रदान की जाती है।

(10.2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर कर्मचारियों को संचित अवकाशों के लाभों को भुनाने का भी प्रावधान है।

अनुसूची-25—प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है— रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद माँगे :
आयकर- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
बिक्री कर - रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो (कुल अग्रिम) शून्य है (गत वर्ष रु. शून्य), को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि— रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2025 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूँजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशियाँ	निधियों के नाम	अनुसूची सं.	राशियाँ
संग्रह निधि	1	1,00,00,000	तदनुसार निवेश	9	1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	23,75,80,011	स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	28,98,43,623
प्रकाशन निधि	3	16,92,82,760	स्टॉक प्रकाशन	11	16,93,21,206
अग्रिम पूँजी	11	51,379,415	निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11	-
वर्तमान दायित्व	7	8,84,196	निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11	-
स्टॉक प्रकाशन से	11ए	39,147	निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11	-
योग		**49,616,559**	**151,11,37,676**		**49,61,65,529**

5. चालू परिसंपत्तियाँ

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. सेवानिवृत्ति लाभ

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेड संस्थान द्वारा जारी 'कर्मचारी लाभ पर लेखा मानक-15 का अनुपालन न करने के संबंध में सीएजी लेखा परीक्षा अवलोकन का अनुपालन करने के संबंध में अकादेमी ने वित्त वर्ष 2018-19 से उनके अनुरूप सेवानिवृति देयता की मान्यता की दिशा में अपनी नीति में परिवर्तन किया है।

तदनुसार उसने इसके अंतर्गत दिए गए विवरणों के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर अवकाश नकदीकरण के प्रति अपनी सेवानिवृत्ति लाभ देयता को मान्यता दी है। 31 मार्च 2024 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए बीमांकक मूल्यांकन के प्रासंगिक सार को पुन: प्रस्तुत किया गया है।

ग्रेच्युटी प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2024 से 31-03-2025 तक	01-4-2023 से 31-03-2024 तक
ब्याज लागत	45,99,539	47,74,791
वर्तमान सेवा लागत	33,74,144	28,74,159
विगत सेवा लागत	-	-
योजना परिसंपत्ति पर अपेक्षित लाभ	-	-
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त कुल बीमांकित लाभ/हानि	64,02,512	(17,41,653)
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	14,376,195	59,07,297

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2024 से 31-03-2025 तक	01-4-2023 से 31-03-2025 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	1,33,88,861	1,13,63,572
ग़ैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	5,58,10,084	5,20,78,351
कुल देयता	6,91,98,945	6,34,41,923

3-7 : तुलनपत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2024 से 31-03-2025 तक	01-4-2023 से 31-03-2024 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	6,34,41,922	6,58,59,192
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	1,43,76,195	59,07,297
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(86,19,172)	(83,24,566)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	6,91,98,945	6,34,41,923

अवकाश नकदीकरण प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2024 से 31-03-2025 तक	01-4-2023 से 31-03-2024 तक
ब्याज लागत	29,90,584	30,19,569
वर्तमान सेवा लागत	28,18,973	24,58,233
योजना परिसंपत्ति पर अपेक्षित लाभ	-	-
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त कुल बीमांकित लाभ/हानि	21,30,372	(5,23,463)
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	79,39,929	49,54,339

3.4 वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2024 से 31-03-2025 तक	01-4-2023 से 31-03-2024 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	92,11,141	61,34,486
ग़ैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	3,60,11,862	3,51,14,944
कुल देयता	4,52,23,003	4,12,49,430

3.6 : तुलनपत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2024 से 31-03-2025 तक	01-4-2023 से 31-03-2024 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	4,12,49,430	41,649,227
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	79,39,929	49,54,339
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(39,66,356)	(53,54,137)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति)परिभाषित इतिशेष	4,52,23,003	4,12,49,430

7. कराधान

अकादेमी को अपने कार्यक्रम और गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित किया जाता है। आयकर अधिनियम 1961 के अनुच्छेद 12ए के तदनुसार, अकादेमी की आय को कर से छूट दी गई है। आयकर अधिनियम 1961 के अंतर्गत कर योग्य आय न होने को ध्यान में रखते हुए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(8.1) आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधार पर गणना : शून्य
तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (परागमन सहित)

	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(8.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन—	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	शून्य
(ख)	वित्तीय संस्थाओं/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	उन्मेष और यू.ए.आई. भुगतान	₹ 18,47,910/-
(घ)	अन्य व्यय	शून्य
(8.3)	अर्जन :	
	एफ़.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य	शून्य

9. अनुदान उपयोग

अकादेमी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित है। इसके अतिरिक्त, यह अपने प्रकाशन और बैंक ब्याज आदि की बिक्री के माध्यम से कुछ राजस्व भी उत्पन्न करती है। 31 मार्च 2025 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदानों/वित्तीय सहायता की संक्षिप्त स्थिति इस प्रकार है :

विवरण	राजस्व वेतन 1	राजस्व सामान्य 2	राजस्व सी.सी.ए. 3	राजस्व एन.ई. 4	टी.एस.पी 5	एस.ए.पी. 6	उन्मेष 7	पुस्तकायन 8	योग (1 से 8)
01/04/2024 को अव्ययित आदिशेष	-	3,09,06,946	-	-	-	-	-	-	3,09,06,946
संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	17,50,00,000	26,94,00,000	3,00,00,000	-	5,00,000	-	48,75,000	52,36,50,000	49,59,48,448
संस्कृति मंत्रालय को अनुदान अभ्यर्पित/ प्रतिदाय/वापस लौटाया	(16,33,081)	(5,400)	(60,00,000)	-	-	-	-	-	(76,38,481)
अन्य प्राप्तियाँ	**3,64,047**	**11,40,35,869**	-	**43,25,370**	**39,73,866**	**-**	**46,094**	**-**	**12,27,45,246**
योग ए	**17,37,30,966**	**41,43,37,415**	**2,40,00,000**	**43,25,370**	**39,73,866**	**5,00,000**	**46,094**	**4,87,50,000**	**66,96,63,711**
व्यय	17,37,30,966	28,99,19,236	2,40,00,000	43,25,370	39,73,866	5,00,000	**46,094**	**-**	49,64,95,531
अन्य भुगतान	**-**	**1,91,06,954**	-	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**19,160,954**
योग बी	**17,37,30,966**	**30,90,26,190**	**2,40,00,000**	43,25,370	**39,73,866**	**5,00,000**	**46,094**	**-**	**51,56,02,485**
31/03/2025 को अव्ययित अंत शेष	-	**10,53,11,226**	-	-	**-**	**-**	**-**	**4,87,50,000**	**15,40,61,226**

10. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, जिससे उन्हें चालू वर्ष के आँकड़ों के साथ तुलनीय बनाया जा सके।

11. अनुसूची 1 से 25 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलनपत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2025 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

12. जैसा कि सी एंड एजी ने अपने एसएआर 2022-23 में इंगित किया है, सा.भ.नि. का तुलनपत्र, आय और व्यय खाता तथा प्राप्ति और भुगतान खाता पृथक-पृथक तैयार किया है।

13. जैसा कि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सी एंड एजी) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 2023-24 में उल्लेख किया है, वर्ष 2023-24 के दौरान अकादेमी ने भारत के लगभग 100 प्रसिद्ध संस्कृत कवियों की विस्तृत जानकारी वाला एक विशाल ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया, जिसकी लागत ₹9.00 लाख रही। इस व्यय को 'अन्य प्रकाशसनिक व्यय' (अनुसूची-21) के अंतर्गत राजस्व व्यय के रूप में दर्ज किया गया, जबकि इसे पूंजीगत व्यय के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए था। इस बिंदु पर विचार किया गया है और लेखा पुस्तकों में उपयुक्त प्रविष्टि कर दी गई है।

14. जैसा कि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सी एंड एजी) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 2023-24 में उल्लेख किया है, अकादेमी ने अक्तूबर 2023 में ₹ 7,000/- और 10,000/- के 2 चेक जारी किए थे। तुलन पत्र की तिथि ये चेक अमान्य हो चुके थे। अत: एस.ए.आर. के निरीक्षण के अनुसार, वर्ष 2024-25 में इनकी सुधारात्मक प्रविष्टि लेखा पुस्तकों में दर्ज कर दी गई है।

15. जैसा कि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सी एंड एजी) ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट 2023-24 में उल्लेख किया है, अकादेमी की पुस्तकालय पुस्तकों में अकादेमी द्वारा स्वयं प्रकाशित पुस्तकों का ₹17,416/- मूल्य शामिल नहीं किया गया था। अत: एस.ए.आर. के निरीक्षण के अनुसार, अकादेमी की स्वयं प्रकाशित पुस्तकों घे भी पुस्तकालय की पुस्तकों (स्थायी संपत्तियों) में ₹17,416/- के रूप में शामिल कर लिया गया है।

ह./-	ह./-	ह./-	ह./-
(अनामिका सिंह)	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
वरिष्ठ लेखाकार	**उपसचिव**	**उपसचिव**	**सचिव**
	लेखा	**प्रशासन**	

दिनांक : 04.06.2025
स्थान : नई दिल्ली

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी (सा.अ.) के लेखाओं पर अभिमत

अभिमत

1. हमने साहित्य अकादेमी (सा.अ.) के वित्तीय विवरण का लेखा-परीक्षण किया है, जिसमें 31 मार्च 2025 तक की वित्तीय स्थिति का विवरण और समाप्ति वर्ष के आय और व्यय, प्राप्ति एवं भुगतान लेखा शामिल हैं और वित्तीय विवरण के टिप्पण, जिसमें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियाँ एवं सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के तहत आवश्यक वित्तीय नीति का सार शामिल है। लेखा-परीक्षण 31 मार्च 2029 तक के लिए सौंपा गया है।

2. इस लेखा-परीक्षण प्रतिवेदन में भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीसीएजी) की टिप्पणियाँ हैं, जो केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों, प्रकटीकरण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में हैं। नियम, क़ानून और विनियमों (उपयुक्तता और नियमितता) तथा क्षमता-सह-कार्यान्वयन पहलुओं आदि के पालन के बारे में वित्तीय लेन-देन पर लेखा-परीक्षण, यदि कोई है तो निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक महालेखा परीक्षक की लेखा-परीक्षा प्रतिवेदन में पृथक रूप से किए जाते हैं। हमारे विचार में साहित्य अकादेमी द्वारा दिए गए वित्तीय विवरण, वित्तीय नीतियों और उन पर टिप्पणियों तथा आगे दी गई पृथक लेखा-परीक्षण में बताए गए मामलों के आधार पर 31 मार्च 2025 तक स्वायत्त निकाय की वित्तीय स्थिति और उसके वित्तीय प्रदर्शन और लेखा के स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप समाप्त वर्ष की धन आपूर्ति के बारे में सही जानकारी देते हैं।

अभिमत का आधार

हमने अपनी लेखापरीक्षा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के महालेखा नियमों/मानकों/नियमावलियों/दिशानिर्देशों/मार्गदर्शन-टिप्पणियों/आदेशों/परिपत्रों आदि के आधार पर किया है। हमारे प्रतिवेदन के वित्तीय विवरण के लेखापरीक्षा के लिए लेखा-परीक्षक की ज़िम्मेदारियों वाले अनुभाग में हमारी ज़िम्मेदारियों के बारे में बताया गया है। हम वित्तीय विवरण की हमारी लेखापरीक्षा से संबंधित नैतिक आवश्यकताओं के अनुसार स्वायत्त निकाय से स्वतंत्र हैं और हमने इन आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी अन्य नैतिक ज़िम्मेदारियों को भी पूरा किया है। हमारा विश्वास है कि हमें जो लेखापरीक्षा साक्ष्य मिले हैं, वे हमारे अभिमत को आधार देने के लिए पर्याप्त और उचित हैं।

वित्तीय विवरण के लिए प्रबंधन की ज़िम्मेदारियाँ

साहित्य अकादेमी का शासी निकाय खातों के समान प्रारूप के अनुसार वित्तीय विवरण तैयार करने और निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करने के लिए ज़िम्मेदार है और आंतरिक नियंत्रण के लिए भी ज़िम्मेदार है, क्योंकि प्रबंधन यह तय करता है कि ऐसे वित्तीय विवरण तैयार करना ज़रूरी है, जो धोखाधड़ी या ग़लती की वजह से किसी भी तरह की ग़लतबयानी से मुक्त हो।

वित्तीय विवरण के लेखा परीक्षा के लिए लेखा-परीक्षक की ज़िम्मेदारियाँ

हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि पूरे वित्तीय विवरण में किसी भी धोखाधड़ी या ग़लती की वजह से कोई ग़लत जानकारी न हो, और एक लेखापरीक्षक प्रतिवेदन जारी करना जिसमें नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के लेखापरीक्षा नियमों/मानकों/नियमावलियों/दिशानिर्देशों/मार्गदर्शन-टिप्पणियों/आदेशों/परिपत्रों आदि के अनुरूप हमारा अभिमत शामिल हो।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की ओर से
ह./-
(सौरव कुमार जयपुरियार)
महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय व्यय), नई दिल्ली

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 29.12.2025

नियंत्रक महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2025 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

ए. सामान्य

ए.1 चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम, आदि (अनुसूची-11) में ₹ 9.31 करोड़ की राशि और अन्य वसूली योग्य क्षेत्र शामिल थे। ₹ 9.31 करोड़ में से ₹ 9.07 करोड़ 1992-93 से 2023-24 की अवधि से संबंधित थे। अकादेमी को इन पुराने अग्रिम को समायोजित करने के लिए प्रभावी क़दम उठाने चाहिए। विगत प्रतिवेदन में भी इस ओर इंगित किया गया था, लेकिन अकादेमी ने कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की।

ए.2 अकादेमी की वर्ष 2024-25 की सामान्य भविष्य निधि तुलन-पत्र के अनुसार, सामान्य भविष्य निधि के तहत परिसंपत्तियों में ₹7.06 करोड़ रुपये के निवेश शामिल नहीं हैं। जबकि निवेश की अनुसूची के अनुसार, 31.03.2025 तक निवेश का मूल्य ₹8.92 करोड़ था। इसे लेखापरीक्षा को जानकारी देकर मिलाना होगा।

बी. प्रबंधन पत्र

इस पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उन्हें सुधार के लिए अलग से जारी प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रबंधन के ध्यान में लाया गया है।

सी. आंतरिक नियंत्रण का मूल्यांकन

i) आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

साहित्य अकादेमी के पास आंतरिक लेखापरीक्षण हेतु कोई पृथक आंतरिक लेखापरीक्षा विभाग नहीं है और अकादेमी की आंतरिक लेखापरीक्षा 2024-25 तक चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म द्वारा किया गया है।

ii) आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

(ए) वैधानिक लेखापरीक्षा के लिए प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावपूर्ण नहीं थी क्योंकि 2008-09 से 2024-25 तक की अवधि के लिए 30 लेखापरीक्षा परिच्छेद बाकी थे।

iii) अचल संपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

(ए) भूमि और भवनों तथा वाहनों का भौतिक सत्यापन मार्च 2024 तक और लकड़ी के सामान एवं स्थावर द्रव्य तथा कंप्यूटर और सहायक उपकरणों का मार्च 2022 तक प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया।

(बी) साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय और उप-क्षेत्रीय कार्यालय की संपत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया गया है।

iv) भंडार के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

(ए) लेखन और अन्य उपभोग्य सामग्री का प्रत्यक्ष सत्यापन 2020-21 तक किया गया है।

(बी) वित्त वर्ष 2024-25 के लिए पुस्तकालय का प्रत्यक्ष सत्यापन अभी प्रक्रिया में है।

v) **वैधानिक बकाया के भुगतान में नियमितता**

vi) 31 मार्च 2025 तक छह महीने से अधिक के वैधानिक बकाया से संबंधित कोई भी भुगतान बकाया नहीं था।

डी. सहायता अनुदान

वर्ष 2024-25 के लिए प्राप्त सहायता अनुदान और उसके उपयोग का विवरण निम्न प्रकार है:

(करोड़ रुपये में)

वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान	52.37
विगत वर्ष का अव्ययित शेष	3.09
वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ	12.27
कुल उपलब्ध निधि	67.73
भारत सरकार को अध्यर्पित निधियाँ	0.76
वर्ष के दौरान व्यय	51.56
अव्ययित शेष	**15.41**

इस प्रकार, वर्ष के अंत में साहित्य अकादेमी के पास 15.41 करोड़ रुपये अव्ययित शेष राशि थी।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की ओर से
ह./-
(सौरव कुमार जयपुरियार)
महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय व्यय), नई दिल्ली

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 29.12.2025

"प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित लेखाओं पर अभिमत और पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।"

प्रबंधन पत्र का अनुलग्नक

1. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि (अनुसूची-11) के तहत दिखाए गए ₹4.82 लाख के अग्रिम भुगतान व्यय में क्षेत्रीय कार्यालय (चेन्नई - 21,190+ कोलकाता - 11,001+ मुंबई - 29,368/-) से जुड़ी ₹0.62 लाख की राशि शामिल है। जबकि दी गई जानकारी के अनुसार यह राशि पहले ही वर्ष 2024-25 के व्यय के तौर पर सुनिश्चित की जा चुकी है। अत: चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि के तहत अग्रिम भुगतान व्यय के तौर पर इसे शामिल करने से चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि के साथ-साथ कॉर्पस/कैपिटल फंड को ₹0.62 लाख अधिक दिखाया गया।
2. वर्ष 2024-25 के दौरान साहित्य अकादेमी ने 2023-24 के समय के बिजली और टेलीफोन के व्यय का भुगतान किया, जो क्रमश: ₹1.73 लाख और ₹ 0.28 लाख था और इसे वर्ष के व्यय के तौर पर दिखाया गया। इसके अलावा, विगत वर्ष के लेखा में इन व्ययों के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया था। इस कारण व्यय को ₹ 2.01 लाख अधिक और पिछले समय के व्यय को न्यून दिखाया गया।
3. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि (अनुसूची-11) में 31 मार्च 2025 तक ₹1.09 करोड़ के अलग-अलग देनदार शामिल थे। ₹1.09 करोड़ में से ₹0.73 करोड़ 1987-88 से 2023-24 की अवधि के थे। अकादेमी को इन लंबे समय से लंबित देनदारों की समीक्षा करनी चाहिए और यदि आवश्यक हो तो लंबे समय से बकाया संदिग्ध देनदारों के लिए प्रावधान बनाना चाहिए। पिछले प्रतिवेदन में भी इस ओर इंगित किया गया था, लेकिन अकादेमी ने कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की है।
4. महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियों की अनुसूची की लेखा नीति 6, एएस 15 में निर्धारित प्रकटीकरण आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती है।